पिता और पुत्र

तुर्गनेव

नवयुग-साहित्य माला—१

पिता और पुत्र

[रूस के प्रख्यात उपन्यासकार श्री आइवन तुर्गनेव के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास The Fathers and Sons का अविकल अनुवाद]

—+*+—

अनुवादक—

ठाकुर राजबहादुर सिंह

प्रकाशक—

नवयुग-साहित्य-मन्दिर,

पोस्ट बक्स ७८, दिल्ली

—:○:—

मूल्य दो रुपये

प्रकाशक—

नवयुग-साहित्य-मन्दिर,

पोस्ट बक्स ७८,

दिल्ली

प्रथम बार—२०००

अप्रैल, १९३३ ई०

मुद्रक—

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,

नया बाज़ार, दिल्ली

पिता और पुत्र

प्रकाशक की ओर से—

विज्ञान के आधुनिक आविष्कारों की बदौलत संसार बहुत छोटा हो गया है। प्राचीन काल में जिन बातों का प्रचार एक प्रान्त और एक देश में सैकड़ों वर्ष परिश्रम करने पर भी नहीं हो पाता था, आज वैज्ञानिक-विभूतियों के प्रसाद-स्वरूप अपेक्षाकृत अल्प समय में ही उनका अन्तर्राष्ट्रीय प्रसार हो जाता है।

जिस समय हमारे देश का सौभाग्य-सूर्य अत्यन्त उन्नत अवस्था में था, यहाँ से दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, गणित और अन्य विभिन्न विषयों का ज्ञान अन्य देशों में जाता था। सम्राट् अशोक, हर्षवर्द्धन और चन्द्रगुप्त आदि के काल में हमारे उपदेशक ब्रह्मा, स्याम, चीन, जापान, सुमात्रा, जावा और बाली आदि देशों और द्वीपों में धर्म-प्रचारार्थ जाया करते थे। यदि हम उस समय की बातों को अतीत होने के कारण भूला भी दें, तो भी मुग़ल-साम्राज्य के समय में हमारे देश का कितना साहित्य फ़ारसी और अरबी में अनूदित होकर अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस, अरब और मिस्र आदि देशों में पहुँचा, इसका प्रमाण इतिहास के पृष्ठ भली भाँति दे सकते हैं।

क्या कारण था कि उस समय भारत का साहित्य विदेशी बड़े चाव से पढ़ते और उसका अपनी-अपनी भाषाओं में उल्था करवाते थे? इसे समझने के लिए अधिक बुद्धि-प्रयोग की आवश्यकता नहीं है। कारण केवल यही है कि उस समय भारत सम्पन्न था, सभी विद्याएँ यहाँ काफ़ी उन्नति कर चुकी थीं और यहाँ के विद्वान्

और विचारक संसार के महानतम ज्ञानदाता समझे जाते थे। इसी कारण उस समय भारत का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व था।

आज अभाग्यवश भारत वह भारत नहीं रहा—वह सभी दृष्टि से राष्ट्रों की दौड़ में पीछे रहगया है, उसके ज्ञान, विज्ञान, दर्शन और साहित्य—सबकी अवस्था ख़राब होगई है। अब वह पद-दलित होकर बहुत-सी बातों में विदेशों का मुहताज होगया है। सभी जाग्रत और उन्नत राष्ट्र जीवन-कला के प्रत्येक क्षेत्र में अपूर्व और असाधारण विकास कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में यह स्वाभाविक है कि भारत भी सभी प्रगतिशील राष्ट्रों की विशिष्ट गति-विधि से परिचित होना चाहे, और जिन-जिन विषयों में जो-जो देश अग्रसर होते जा रहे हैं, उनसे तद्विषयक साहित्य अपनी भाषा में अनूदित कर अपने देशवासियों का ज्ञान-भाण्डार बढ़ाये।

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है और देश की अधिकांश जनता द्वारा, समझी, बोली, पढ़ी और लिखी जाती है। इसलिये अधिकांश जनता में किसी भी विषय का प्रचार करने के लिये हिन्दी का सहारा लेना आवश्यक है। हमने निश्चय किया है कि संसार का विशिष्ट साहित्य—जिसमें कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, काव्य, इतिहास, राजनीति, जीवनचरित, विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि, साहित्य की परिभाषा में आनेवाले प्रायः सभी विषय होंगे—हिन्दी-भाषा में यथा-सम्भव स्वल्प मूल्य में प्रकाशित किया जाय। काम बहुत बड़ा है। इसके लिये हमें प्रत्येक विषय के विशेषज्ञों के सहयोग की आवश्यकता होगी और उनके अनुवादों को सुसम्पादितकर इस रूपमें सर्वसाधारण के सम्मुख उपस्थित करना होगा, जिससे अधिकाधिक संख्या में लोग लाभ उठा सकें।

विज्ञान और शिल्प आदि जो क्रियात्मक विषय हैं, उनका अनुवाद उन विषयों के विशेषज्ञों द्वारा ही कराया जायगा। हम जानते हैं कि इस कार्य में हमें यथेष्ट कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, परन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि यदि हिन्दी-भाषा-भाषी जनता ने हमारे साथ सहयोग किया, तो हम इस प्रयत्न में सफल हो सकेंगे।

सर्वप्रथम हमने उपन्यास में हाथ लगाया है, और आरम्भ में रूस के महान् कलाकार श्री आइवन तुर्गनेव की प्रख्यात् रचना के "Fathers and Sons"-नामक अंग्रेज़ी-अनुवाद का अविकल हिन्दी-अनुवाद श्री ठाकुर राजबहादुर सिंह से कराकर प्रकाशित कर रहे हैं। अनुवादक-महोदय का परिचय देने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि पाठक उनके और भी कितने ही अनुवाद पढ़ चुके होंगे, जिन्हें अन्य प्रसिद्ध प्रकाशन-संस्थाओं ने प्रकाशित किये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के विषय में केवल इतना कह देना ही पर्याप्त है कि रूस में इस पुस्तक के प्रकाशित होने के समय पर इससे अधिक और किसी उपन्यास की बिक्री नहीं हुई थी। इस पुस्तक की इतनी ख्याति केवल इसलिये हुई कि इसमें पुरानी और नई पीढ़ी के व्यक्तियों के राजनीतिक विचारों के संघर्ष का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया गया है। हमारे देश में इस समय वह अवस्था आगई है, जो इस पुस्तक के कथा-काल में रूस की थी। पाठक इसे पढ़ते हुए जगह-जगह पर ऐसा अनुभव करेंगे, मानो वे अपने ही देश के प्रगतिशील नवयुवकों और दक़ियानूसी पिताओं के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त कथानक में सफल और विफल प्रेम का जैसा हर्ष-

विषादमय अन्त दिखाया गया है, वह अद्भुत और मर्मस्पर्शी है। हमें आशा है कि हिन्दी के उदीयमान औपन्यासिक इसके चित्रण से बहुत कुछ सीखेंगे, क्योंकि इस उपन्यास में मानव-मनोवृत्ति का सूक्ष्म विश्लेषण (जिसका कि हमारे देश के कथाकारों में एक तरह से अभाव ही है) बड़े ही उत्तम ढंग से किया गया है।

हमें आशा है कि हिन्दी-जगत् हमारे इस विराट् आयोजन में यथाशक्ति योग देकर हिन्दी-साहित्य के एक बहुत बड़े अभाव की पूर्त्ति में सहायक होगा।

एक बार विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से किसी ने पूछा कि आपने 'घर और बाहर'-नामक उपन्यास किस उद्देश्य से लिखा है, तो उन्होंने उत्तर दिया कि मैं किसी उद्देश्य या प्रोपेगैन्डा की दृष्टि से उपन्यास नहीं लिखा करता; मैं तो इसलिये लिखता हूँ कि लिखना चाहता हूँ। वास्तव में, रवीन्द्र बाबू का यह कथन कला के मौलिक सिद्धान्त का प्रतिपादक है। इस (सिद्धान्त) का प्रचार भारत में दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। कला, कला के लिए (Art for art's sake) आजकल कलाकारों की ज़बान पर है। इसीलिये कोरे आदर्शवाद की दृष्टि से लिखे हुए साहित्य का आदर कला की क़द्र करनेवालों में कम होता जा रहा है।

तुर्गनेव का प्रस्तुत उपन्यास हमें यथार्थवाद की ओर ले जाता है। इसमें शिक्षा, परिणाम और भाव-प्रवणता ढूँढनेवालों को शायद निराश होना पड़े। इस उपन्यास में निहिलिस्टों के आचार्य बज़ारोव का चरित्र-चित्रण बड़े ही स्वाभाविक ढंग से किया गया है—उसमें सभी मानवीय कमज़ोरियाँ हैं। वह ज़मींदारों का विरोध करता है, किसानों का पक्ष लेता है; पर उसका सारा विरोध केवल नये विचारों और रूस की नई पीढ़ी के विश्वविद्यालयों में शिक्षा-प्राप्त सहज-स्वभाविक स्वातंत्र्य-प्रियता का द्योतक है। वह जिन किसानों का पक्ष लेकर रईसों और ज़मींदारों से लड़ता है, उनसे कृतज्ञता और धन्यवाद-प्रदर्शन की भी आशा रखता है, और अपने कार्य की यथेष्ट क़द्र न देखकर

झुँझला उठता है—वह किसी सुन्दरी के प्रेम-पाश में भी अपने को बाँधने का प्रयत्न करता है; पर उसमें विफल होजाने पर उसके लिये अंगूर खट्टे होजाते हैं, और वह अपने अनुचर आरकाडी को, जो उसी की भाँति प्रेम-प्रपंच में पड़कर सफल होता नज़र आता है, फटकारता है कि तुम निहिलिस्टवाद में पड़ने-योग्य नहीं हो—यहाँ प्रेम-पाठ नहीं, रक्त-पाठ पढ़ाया जाता है। निहिलिस्टवाद में ऐसे मनुष्यों के लिये स्थान नहीं है। इस प्रकार आत्म-प्रवंचन-पूर्ण और सैद्धान्तिक क्रियात्मिकता-शून्य होते हुए भी बज़ारोव की प्रकृति में एक ऐसी धुन है, जो उसे चुप नहीं बैठने देती—उसमें ज्ञान की भूख है, जिसकी शान्ति के लिये वह सदा वैज्ञानिक खोज में लगा रहता है।

पिट्रोविच-बन्धु को तुर्गनेव ने उस समय के रूसी ज़मींदारों के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित किया है, जो निहिलिस्टवाद के जन्म के समय रूस में मौजूद थे। उनका विश्वास था कि किसानों और गुलामों को अनन्त काल तक दबाये रक्खा जा सकता है और हम अनन्तकाल तक ज़मींदारी करते हुए किसानों से सदा मन-माने काम लेने के लिये ही धराधाम पर उतरे हैं। पाल पिट्रोविच और बज़ारोव के द्वंद्व-युद्ध का प्रधान कारण यद्यपि थेनिइका से दोनों के गुप्त-प्रेम का परिणाम था—किन्तु दोनों के सैद्धान्तिक और राजनीतिक विरोध का क्रमिक विकास भी आंशिक रूप में उसका कारण हुआ है। कला के प्रति बज़ारोव में जो उदासीनता और घृणा के भाव थे, तुर्गनेव ने उनका बड़ा ही व्यंग-पूर्ण वर्णन किया है, साथ ही पुराने विचार के ज़मींदारों के हृदय में कला के प्रति कैसा अनुराग था, इसका भी वर्णन लेखक ने भली भाँति निभाया है।

इस उपन्यास के स्त्री-पात्रों में एना सर्जीवना विशेष उल्लेख-नीय है। वह धन-सम्पन्ना, विदुषी, महत्त्वाकांक्षिणी और परम रूपवती विधवा है। वाह्य उपकरणों से वह अपने मन को दबाती है, किन्तु उसका मन न-जाने दिन-रात किस अज्ञात वस्तु की खोज में व्याकुल रहता है। बज़ारोव के प्रति उसके आकर्षण और विकर्षण का वर्णन ऐसा सूक्ष्म मनोवृत्तिपूर्ण है कि इसे उपन्यास का अतिशय कोमल भाग कह सकते हैं। दूसरी स्त्री, जो पाठकों को अधिक आकर्षक दिखाई देगी, वह है बज़ारोव की माँ। उस वृद्धा महिला के चरित्र में भारतीयता कूट-कूटकर भरी हुई है—पुत्र-प्रेम अन्ध-विश्वास और मातृत्व की मात्रा का चित्रण बड़ी ही ख़ूबसूरती से किया गया है।

यह उपन्यास पहले-पहल रूस के एक प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र में (जो उस समय नये आन्दोलन का समर्थक था) धारावाही रूप में निकला था। बाद में, यह पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ, और रूस तथा सारे पश्चिमी यूरोप में, इसकी इतनी आलोचनाएँ और प्रत्यालोचनाएँ हुईं, जितनी शायद ही उस समय किसी और उपन्यास की हुई हो। इस उपन्यास की ख्याति का मुख्य कारण यह था, कि इसमें पुरानी और नई पीढ़ी के लोगों का विचार-संघर्ष दिखलाया गया था, और दोनों के दृष्टि-बिन्दुओं का जैसा सच्चा और सहानुभूतिपूर्ण वर्णन तुर्गनेव ने किया है, वैसा उस समय के किसी अन्य लेखक ने नहीं किया।

स्वयं सम्पन्न होते हुए भी टालसटाय की भाँति तुर्गनेव का श्रेणीवाद में विश्वास नहीं था। इस बात को भी वह नहीं मानते थे कि ज़मींदारों को किसानों की अपेक्षा विशेष सुविधाएँ और

अधिकार प्राप्त होने चाहिएँ। फिर भी वह मानव-प्रकृति से प्रेम करते थे और दोनों पक्षों की बुराइयों और भलाइयों की तह तक पहुँचना चाहते थे। इस उपन्यास के लिखने का विचार उन्हें केण्टतार के समुद्र-तट पर सन् १८८६ में हुआ था। उस समय गुलामों को मुक्ति मिल चुकी थी और नई पीढ़ी के लोगों के मन में नये विचारों का एक तूफ़ान-सा उठ रहा था। उस समय की विचार-धारा का पूर्णतया अध्ययन करके ही उन्होंने कला की यह स्थायी चीज़ लिखी, जिसमें दुखान्त-सुखान्त का सम्मिश्रण, प्राचीनता और नूतनता का संघर्ष तथा अनुदार विचार के पिताओं और क्रान्तिकारी विचार के पुत्रों का सुन्दर और सुललित चरित्र चित्रित किया गया है।

१

"पीटर ! क्या अभी तक वे लोग दिखाई नहीं पड़े ?"

बात सन १८५९ ई० की है। मई का महीना था और २० वीं तारीख़। चालीस वर्ष का एक अधेड़ पुरुष नंगे सिर, बिरजिस के ऊपर मैली-सी जाकेट पहने गाड़ियों के एक अड्डे पर दिखायी दिया। अड्डे के पासवाली इमारत के बरामदे में आकर उसने जिस व्यक्ति से उपरोक्त प्रश्न किया, वह उसका नौकर पीटर था। पीटर नवयुवक था। उसका चेहरा गोल और भरा हुआ था, और आँखें छोटी तथा अलसायी हुई। उसकी ठोड़ी पर थोड़े-से पीले रंग के रोयें भी उगे थे।

सड़क पर एक गर्वपूर्ण दृष्टि डालकर नौकर ने मालिक की तरफ़ रुख़ किया। उसके कान में बालियाँ थीं और बालों में

पोमेड लगी थी। चाल-ढाल ऐसी कृत्रिमतापूर्ण थी कि देखते ही उसे आधुनिक फ़ैशन और नयी रोशनी का नवयुवक कहने के लिये विवश होना पड़ता। मालिक की ओर देखकर उसने उत्तर दिया—"नहीं साहब, मुझे तो नहीं दिखायी दिये।"

"सच ?" मालिक ने फिर पूछा।

"जी हाँ।" नौकर ने जवाब दिया।

मालिक ने यह जवाब सुनकर ठंडी साँस ली, और एक बेंच पर बैठ गया। जबतक वह पाँव नीचे लटकाये बेंच पर बैठा-बैठा कभी बायीं और कभी दाहिनी ओर नज़र दौड़ा रहा है, तब तक यदि पाठक उसके व्यक्तित्व का कुछ विस्तृत परिचय प्राप्त करलें, तो बुरा न होगा।

इस भद्र पुरुष का नाम है निकोलाई पिट्रोविच किरसानोव, और उक्त अड्डे से पन्द्रह वर्स्ट* के फ़ासले पर इसकी दो सौ प्राणियों† की छोटी-सी जायदाद है, या जैसा कि बाद में उसने अपनी आराज़ी विभाजित करके उसको 'खेत' के रूप में सुसंगठित किया था, इसे उसके कथनानुसार "दो हज़ार देसिआतिनी‡

* वर्स्ट लगभग पौन मील के बराबर होता है।

† उस समय चूंकि रूस में दास-प्रथा प्रचलित थी, अतः जायदाद की छुटाई-बड़ाई का अनुमान उसमें रहने और काम करनेवाले गुलामों की संख्या से लगाया जाता था।

‡ देसिआतिनी लगभग तीन एकड़ या १४५२० वर्ग गज़ के बराबर होता है।

की ज़मींदारी" कह सकते हैं। इसका पिता सन् १८१२ ई० के फ़ौजी जनरलों में से था, जिसने अपना सारा जीवन सैनिक सेवा में व्यतीत कर दिया था—पहले एक ब्रिगेड का कमाण्डर हुआ और फिर एक डिवीज़न का सेनापति नियुक्त हो गया। वह हमेशा सूबों में नियुक्त होता था, जहाँ उसका ओहदा उसे एक विशिष्ट स्थान का अधिकारी बनाये रखता था।

निकोलाई पिट्रोविच का जन्म दक्षिणी रूस में हुआ था। यहीं उसका बड़ा भाई पाल भी पैदा हुआ था। चौदह वर्ष की अवस्था तक उसने कठोरतापूर्ण वातावरण में शिक्षा प्राप्त की, जहाँ गवर्नरों, मुसाहबों और अन्य सैनिक अफ़सरों की दैनिक धूम रहती थी। उसकी माँ कोलियाज़िन-परिवार की थी, जिस का किशोरावस्था का नाम ऐगथी और बाद का ऐगथोकलिआ कुज़मिनिश्रा किरसानोव था। वह शान-बान में एक अफ़सर की स्त्री की भाँति रहती थी—और बड़े घेर की बढ़िया टोपी तथा सुन्दर रेशमी वस्त्र पहनती थी। गिरजे में वह सबसे पहले पहुँचती थी, और बड़ी ही वाक्-चपल और ऊँचे स्वर में बात करने वाली महिला थी। उसका नियम था कि नित्य प्रातःकाल उठकर अपने लड़कों को हाथ का चुम्बन देती थी और रातको सोते समय उन्हें आशीर्वाद देते नहीं थकती थी। सारांश यह कि वह इस प्रकार का जीवन व्यतीत करती थी जो उसके लिये पूर्णतः अनुकूल था। फ़ौजी जनरल का पुत्र होने के कारण निकोलाई पिट्रोविच को कोई विशेष वीरता का कार्य न दिखा सकने पर

भी (वरन् परीक्षा होने पर तो वह कायर सिद्ध हो सकता था) अपने भाई पाल का अनुसरण करते हुए सेना में भर्ती होना पड़ा; पर दुर्भाग्यवश जिस दिन उसके कमीशन* का समाचार आया, उसी दिन उसका पैर टूट गया और दो मास तक बिस्तरे पर पड़े रहने के बाद आराम भी हुआ, तो लँगड़ाना नहीं बन्द हुआ और वह सदा के लिये सेना के अयोग्य होगया। उसके पिता को जब अन्य झंझटों से छुट्टी मिली, तो उसने अपने लड़के को सिविल-सर्विस के लिये योग्य बनाने के विचार से समुचित शिक्षा दिलाने का विचार किया, और अठारह वर्ष की अवस्था में निकोलाई सेण्ट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय का विद्यार्थी बना। इन्हीं दिनों उसके भाई को गारदों की एक टुकड़ी में कमीशन मिला। ऐसी अवस्था में इसके पिता ने अपनी जायदाद दोनों लड़कों के नाम करके उसका प्रबन्ध पृथक् रूपसे इलिया कोलियाज़िन के हाथों सौंप दिया, जो इन लड़कों का मामा और तत्कालीन रूसी सरकार का प्रसिद्ध अफ़सर था। इसके बाद निकोलाई का पिता अपने डिवीज़न को लौट गया और वहीं सपत्नीक रहने लगा। केवल कभी-कभी वह अपने लड़कों को बादामी फुल्सकेप कागज़ पर टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखे हुए पत्र भेजा करता था, जिनमें नीचे अद्भुत लिपि में

---

* कमीशन किसी भी सैनिक अफ़सर को तब दिया जाता था, जब रूसी सरकार उसे स्थायी रूप से सरकारी अफ़सर स्वीकार कर लेती थी।

"पीटर किरसानोव मेजर जनरल" के दस्तख़त होते थे। १८१५ ई० में निकोलाई पिट्रोविच को विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त हुई और उसी वर्ष जनरल किरसानोव एक सैनिक प्रदर्शन में यथेष्ट क्षमता न दिखा सकने के कारण नौकरी से पृथक् हो गया, तथा उसने अपना निवास-स्थान बदलकर सेण्ट पीटर्सबर्ग में रहने का निश्चय किया। दुर्भाग्यवश जब वह तावरीशेस्की बाग़ के निकट मकान किराये पर लेकर इंग्लिश क्लब का मेम्बर बनने का विचार कर रहा था, उन्हीं दिनों उसका शरीरान्त होगया। उसकी मृत्यु के थोड़े ही दिनों बाद ऐगथोकलिआ कुज़्मीनिश्ना का भी देहावसान हो गया, क्योंकि राजधानी का शिथिल जीवन उसके लिये कभी अनुकूल नहीं सिद्ध हुआ; उसे वही पुराने ढंग का खुले जल-वायुवाला देहाती जीवन अधिक पसन्द था। अपने माता-पिता के जीवन-काल में ही निकोलाई पिट्रोविच अपने मकान-मालिक प्रिपोलोवेंस्की की लड़की को प्रेम करने लगा था। प्रिपोलोवेंस्की तत्कालीन रूसी सरकार की सिविल सर्विस में था। माता-पिता को निकोलाई की इस प्रेम-चेष्टा ने काफ़ी घबराहट में डाल दिया था। लड़की न केवल रूपवती थी, वरन् वह पूर्णतः सुशिक्षिता और सुसंस्कृत भी थी। वह तत्कालीन समाचारपत्रों में 'विज्ञान' पर लेख लिखा करती थी। निकोलाई उस पर ऐसा रीझा कि माता-पिता के देहान्त की शोक-अवधि समाप्त होते ही उसने उससे शादी करली, और प्रान्तीय सरकार की मिनिस्टरी का जो सम्मानपूर्ण पद अपने पिता के प्रभाव से उसे प्राप्त

हुआ था, उसे लात मार दिया। इसने वैवाहिक जीवन का आनन्द लूटने के लिये जंगल के निकटस्थ एक आमोद-भवन में डेरा जमाया। किन्तु थोड़े ही दिनों बाद पति-पत्नी का जी यहाँ से ऊब उठा और यह युगल-जोड़ी एक छोटे और सुन्दर मकान में जा बसी, जिस में एक स्वच्छ सायबान और एक बड़ा ही ठण्डा ड्राइंग रूम था; किन्तु इस स्थान पर भी यह दम्पति स्थायी रूप से न रह सका और कुछ ही दिनों बाद सुदूर गाँव में जा बसा। उचित समय आने पर इसी जगह निकोलाई के एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम आरकाडी रक्खा गया। दोनों पति-पत्नी पूर्णतः सुख और शान्ति के साथ रहते थे। दोनों एक-दूसरे से कभी पृथक् नहीं हुए; साथ पढ़ते, साथ प्यानो बजाते और साथ-ही स्वर-में-स्वर मिलाकर गाते थे। स्त्री को फुलवाड़ी लगाने और चिड़ियाँ पालने का भी शौक़ था, वह शिकार करने और ज़मींदारी का प्रबन्ध करने में भी भाग लिया करती थी। इधर सुन्दर, सुखद और शान्त वातावरण मिलने के कारण आरकाडी का स्वास्थ्य पूर्णतः विकसित होने लगा। सन् १८४७ ई० में वह दस वर्ष का पूरा हुआ और तब तक वह इसी प्रकार आनन्दमय दिवस बिताता रहा। अन्ततः इसी वर्ष किरसानोव की स्त्री का शरीरान्त होगया। यह आघात ऐसा था, जिसे सुखी पति मुश्किल से सहन कर सकते हैं; किरसानोव को इतना दुःख हुआ कि कुछ ही सप्ताह में उसके बाल सफ़ेद हो गये। वह अपना दिल बहलाने के विचार से

विदेश चला गया; किन्तु दूसरे ही वर्ष वापस आने के लिये बाध्य हुआ। घर आकर वह बहुत दिनों तक तो अकर्मण्य-सा रहा, फिर उसे औद्योगिक-सुधार की धुन सवार हुई। १८५५ ई० में उसने अपने लड़के को सेण्ट पीटर्सबर्ग के विश्वविद्यालय में भेजा, इसलिये तीन वर्ष तक उसे राजधानी में ही अपने पुत्र के साथ जाड़े काटने पड़े। वहाँ रहते हुये वह बाहर बहुत ही कम जाता और अपने लड़के के विकसित तारुण्य के सुखद सम्पर्क का आनन्द लूटने की चेष्टा करता रहा। चौथे वर्ष में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयीं कि उसे जाड़े के दिनों में सेण्ट पीटर्सबर्ग छोड़ना पड़ा और अब मई, सन् १८५९ ई० में हम उसे इस अवस्था में देख रहे हैं, जब उसके बाल पक गये हैं, कपड़े मैले हैं, बदन कुछ झुक-सा गया है और शरीर से अधेड़पन के सभी लक्षण प्रकट हो रहे हैं। यहाँ वह अपने पुत्र को ग्रेजुएट बनकर आते हुए देखने की प्रतीक्षा में अधीर हो रहा है।

औचित्य के विचार से कहिये या (अधिक सम्भवतः) मालिक की नज़र से बचने के ख़याल से, नौकर ने दरवाज़े की तरफ़ हटकर अपना पाइप सुलगाया; किन्तु निकोलाई पिट्रोविच वहीं सिर झुकाये बैठा रहा, और उसकी आँखें सायबान की उन पुरानी सीढ़ियों पर लगी रहीं, जहाँ एक मोटी-ताज़ी चित-कबरी मुर्ग़ी अपने अस्तित्व से एक गन्दी और तुनकमिज़ाज बिल्ली (जो जँगले के पास बैठी थी) के क्रोध का पात्र

बन रही थी। इधर धूप प्रचण्ड होती जा रही थी, और पास के खलियान से राई के डाँठ की सोंधी सुगन्ध फैल रही थी। निकोलाई पिट्रोविच इस विचार में तल्लीन था कि मेरा बेटा आरकाडी ग्रेजुएट हो गया है! यही विचार उसके मस्तिष्क में बार-बार चक्कर लगा रहे थे। वह बार-बार इस बात की चेष्टा करता था कि किसी और विषय पर विचार करे, पर फिर भी वही विचार लौट-लौट कर उसके मस्तिष्क में भरने लगे। अन्ततः उसने अपनी स्वर्गीया पत्नी की याद की—"अगर वह आज मेरे साथ होती!" अब बार-बार यह अभिलषित विचार उसके मस्तिष्क में गूँजने लगा। इसी समय नीले रंग का एक मोटा कबूतर सड़क पर उतरा और कुवें के पास भरे हुए एक गड्ढे में पानी पीने के लिये लपका। ज्यों ही निकोलाई की नज़र उस पक्षी पर पड़ी, उसी क्षण उसके कानों में पहियों की खड़-खड़ाहट की आवाज़ सुनायी पड़ी।

"मैं समझता हूँ वे लोग आ रहे हैं।" नौकर ने दरवाज़े के अन्दर आते हुए साहसपूर्वक कहा।

निकोलाई पिट्रोविच उछलकर खड़ा हो गया और आखें फाड़-फाड़कर सड़क की ओर देखने लगा। हाँ, दीख तो रहे हैं—तीन घोड़ों की गाड़ी में विद्यार्थियों का एक दल, और बीच में एक परिचित और प्यारा मुख-मण्डल निकट आता दीख रहा है।

"आरकाशा, आरकाशा!" चिल्लाकर किरसानोव हाथ

हिलाता हुआ दौड़कर आगे बढ़ा। कुछ ही क्षण बाद वह एक नये ग्रेजुएट के धूप से मुरझाये, धूल से परिवेष्ठित रोमहीन कपोल चूम रहा था।

२

"हाँ, पर पहले ज़रा मुझे बदन तो साफ़ कर लेने दो पिताजी!" आरकाडी ने अपने तारुण्यपूर्ण और स्पष्ट स्वर में, जो यात्रा की थकान के कारण कुछ मोटा हो गया था, कहा। "देखो, मेरे बदन की तमाम गर्द तुम्हारे शरीर में लग रही है।" पिता के प्यार का जवाब देते हुए उसने फिर कहा।

"ओह, इससे क्या बिगड़ जायगा।" निकोलाई पिट्रोविचने अपने पुत्र के नीले अंगरखे के कालर पर थपकियाँ लगाकर उसी स्नेह-सिक्त भाव से मुस्कराकर कहा। इसके बाद वह अपने प्यारे पुत्र को आलिंगन से छोड़कर उसे अपने साथ-साथ सरायके आँगन की ओर ले चलते हुए बोला—"इधर से आओ, घोड़े शीघ्र ही तैयार हो जायँगे।"

इस समय वह एक ऐसे हर्षातिरेक की अवस्था में था कि वह तुतला और हकलाकर बोलने लगा था, और उसे अपने विचार व्यक्त करने के लिये शब्द नहीं मिलते थे। आरकाडी ने उसे बोलने से रोका।

"पिताजी," उसने कहा—"पहले मैं अपने मित्र बज़ारोव का परिचय तुम से करादूँ, जो मेरा अन्यतम सुहृद है और जिसके सम्बन्ध में मैं प्रायः तुम्हें पत्रों में लिखा करता था। यह बड़े प्रेम से हमारा घर देखने मेरे साथ आया है।"

निकोलाई पिट्रोविच फ़ौरन मुड़ा, और लटकनदार पेटी से कसा हुआ लम्बा कोट पहने हुए एक छरहरे बदन के युवक के पास पहुँचा, जो सब लड़कों के साथ ही गाड़ी से उतरा था। निकोलाई के हाथ बढ़ाने पर अपरिचित ने भी हाथ बढ़ा दिया।

"मैं आपसे मिलकर वास्तव में प्रसन्न हुआ!" निकोलाई पिट्रोविच ने मुस्कराकर कहा—"आपने जो कृपा करके हमारे यहाँ पधारने का कष्ट किया है, इसके लिये मैं आपका परम कृतज्ञ हूँ। आह, मैं आशा करता हूँ कि, कि······पर पहले क्या मैं आपका नाम पूछ सकता हूँ?"

"इवजिनी वैसिलिच।" आगन्तुक ने धीमे पर बलयुक्त स्वर में, कोट का कालर नीचा करके अपना चेहरा अधिक स्पष्ट रूप में प्रकट करते हुए, कहा। वह लम्बे और पतले क़द का युवक था। उसका मस्तक ऊँचा और ऊपर की तरफ़ चौड़ा तथा नाक की ओर पतला था। उसकी आँखें नीली और

चेहरा हल्के गलमुच्छों से युक्त था। जिस समय उसके मुँह पर मुस्कराहट दिखायी पड़ी, उसी क्षण मालूम होगया कि उसमें आत्म-विश्वास और बुद्धि कूट-कूटकर भरी हुई है।

"भाई इवजिनी वैसिलिच" निकोलाई पिट्रोविच ने कहा— "मुझे विश्वास है कि जबतक आप हमारे यहाँ रहेंगे, समय अच्छी तरह ही गुज़रेगा।"

बज़ारोव ने अपने ओठों को कुछ हिलाया; पर सिवा सिर पर से टोपी उठा देने के और कोई उत्तर नहीं दिया। टोपी उठाते ही मालूम होगया कि उसका सिर ऐसे सुन्दर घुँघराले बालों से ढका हुआ है, जिनका रंग विलक्षण है।

"अच्छा, आरकाडी," निकोलाई पिट्रोविच ने अपने पुत्र की ओर रुख़ करके कहा—"क्या घोड़े अभी जुतवा दिये जायँ, या कुछ देर सुस्ताना पसन्द करोगे?

"सुस्तायेंगे घर चलकर पिताजी। घोड़े जुतवा लीजिए।"

"अच्छा, अभी लो," पिता ने जवाब दिया—"पीटर, जल्दी तैयार करो भई!"

चतुर और अभ्यस्त नौकर होने के कारण पीटर अपने छोटे मालिक के पास नहीं आया, न उसने हाथ मिलाने की ही अभिलाषा की; केवल दूर से झुककर सलाम करके ही वह सन्तुष्ट होगया, और अब वह आँगन के फाटक से अदृश्य हो चुका था।

मैं आया तो कोलिअश्का* में हूँ, पर बड़ी गाड़ी के लिये

*छोटी गाड़ी।

भी तीन बढ़िया घोड़े लाया हूँ ।"

इसके बाद आरकाडी ने, सेण्ट पीटर्सबर्ग से प्रस्थान करते समय मकान-मालिक की ओर से भेंट किया हुआ, जल पिया, और बज़ारोव पाइप सुलगाकर साईस के पास गया, जो इस समय घोड़े खोल रहा था।

"कोलिअश्का में तो सिर्फ़ दो ही आदमी चढ़ सकते हैं," निकोलाई पिट्रोविच ने कहा—"इसलिये मैं इस कठिनाई में पड़-गया हूँ कि तुम्हारे दोस्त कैसे......"

"ओह, वह बड़ी गाड़ी में चल सकता है," आरकाडी ने बीच में ही टोककर कहा—"इसके अलावा, उसके साथ कोई तकल्लुफ़ का बर्ताव करने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि वह यद्यपि देखने में असाधारण है, पर स्वभाव का बड़ा सादा आदमी है; तुम्हें खुद मालूम हो जायगा कि वह कैसा है ।"

निकोलाई पिट्रोविच का कोचवान घोड़े पास लाया, तो बज़ारोव ने साईस को सम्बोधन करके कहा—

"चलो मियाँ, तैयार हो जाओ !"

"तुमने सुना मित्युशा ?" दूसरे साईस ने जेब में हाथ डाले हुए कहा—"इन साहब ने तुम्हें 'मियाँ' कहा है । और तुम सच-मुच मियाँ हो भी ।"

जवाब में मित्युशा ने अपनी टोपी पीछे को उकसा ली और पसीने से तर घोड़े की पीठ पर से लगाम उठाली ।

"जल्दी चलो भाइयो !" निकोलाई पिट्रोविच ने ऊँचे स्वरमें

कहा—"जल्दी पहुँचाओ! घर पहुँचकर सबको एक-एक गिलास वोद्का* पिलाऊँगा।"

सब तैयार हो गये। पिता और पुत्र कोलिअश्का में सवार हुए। पीटर कोचवान के बगल में बैठ गया। बज़ारोव बड़ी गाड़ी में ही बैठा और गाड़ी में पीछे लगे हुए मुलायम गद्दे पर उठँग गया। अन्ततः यह दल अड्डे से चल पड़ा।

———

*अंगूर की शराब।

३

"यह सोचकर कितनी ख़ुशी होती है कि तुम ग्रेजुएट होकर अपने घर आ गये," निकोलाई पिट्रोविच ने आरकाडी के घुटने और कन्धे पर थपकी देकर कहा—"अहा हा, कैसे आनन्द की बात है!"

"और चाचा किस तरह हैं? हैं तो ख़ैरियत से?" आरकाडी ने पूछा। यह प्रश्न करने का कारण यह था कि यद्यपि वह अपनी वापसी पर शुद्ध और बाल-सुलभ हर्ष प्रकट कर रहा था, फिर भी उसे यह समझने की स्वाभाविक बुद्धि थी कि बात-चीत का सिलसिला भावावेश समाप्त होने के बाद साधारण विषयों पर आयेगा।

"हाँ, तुम्हारे चाचा बहुत अच्छी तरह हैं। असल में वह

भी यहाँतक आकर तुम से मिलनेवाले थे; पर अन्त में उनका विचार बदल गया।"

"क्या तुम्हें बहुत देर इन्तज़ार करना पड़ा है?" आरकाडी ने पूछा।

"हाँ, पाँच घण्टे।"

"प्यारे पिताजी!" कहकर आरकाडी ने पिता की ओर झुककर प्रगाढ़ चुम्बन लिया। निकोलाई पिट्रोविच ओठों के अन्दर ही मुस्कराकर रह गया।

"मेरे पास तुम्हारे लिये एक बड़ा शानदार घोड़ा है," पिता ने कहा—"तुम अभी उसे देखोगे। तुम्हारे कमरे को भी फिर से सजा दिया गया है।"

"और बज़ारोव के लिये भी कोई कमरा है?"

"हाँ, उसके लिये भी मिल जायगा।"

"और तुम इसे ख़ूब ख़ुश रखना। मैं तुम से कह नहीं सकता कि मैं इसे कितना चाहता हूँ।"

"पर तुम इसे बहुत दिनों से तो नहीं जानते, क्यों?"

"नहीं—बहुत दिनों से तो नहीं।"

"मेरा ख़याल है, मैंने गत वर्ष जाड़े में इसे सेण्ट पीटर्सबर्ग में नहीं देखा था। यह किस विषय में ज़्यादा दिलचस्पी रखता है?"

"ख़ासकर प्रकृति-विज्ञान में। पर सच तो यह है कि इसे प्रत्येक विषय का ज्ञान है, और अगले साल यह डाक्टर बनने जा रहा है।

"अच्छा ! तो यह चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन कर रहा है ?" निकोलाई पिट्रोविच ने कहा। इसके बाद कुछ देर तक दोनों चुप रहे।

"पीटर," निकोलाई ने हाथ से इशारा करते हुये कहा—"इन किसानों में कुछ अपने भी हैं न ?"

पीटर ने इशारा की हुई दिशा में दृष्टि डाली, और एक पगडण्डी पर कुछ छकड़े जाते देखे। छकड़ों में जुते हुए घोड़ों को लगाम नहीं लगी थी, और हर गाड़ी में दो या तीन किसान अपने-अपने अंगरखों के बटन खोले बैठे थे।

"जी हाँ, इन में से कुछ अपने भी हैं।" पीटर ने जवाब दिया।

"तो ये किधर जा रहे हैं ? शहर को ?"

"हाँ,—या फिर शराब की दुकान की ओर जा रहे होंगे।"

अन्तिम शब्द कुछ घृणा-व्यंजक भाव से कहे गये थे, साथ ही पीटर ने कोचवान की ओर भी आँख मारकर इस अभिप्राय से इशारा किया था कि वह उसकी सहानुभूति प्राप्त करे; पर कोचवान पुराने ख़याल का आदमी था, इसलिये वह आधुनिक (सुधार-सम्बन्धी) आन्दोलनों में कोई भाग नहीं लेता था। पीटर की बात और इशारे से उसके चेहरे पर किसी प्रकार का भाव दिखाई नहीं दिया।

"इस साल मेरे किसानों ने मुझे बहुत तकलीफ़ दी है," निकोलाई पिट्रोविच ने अपने पुत्र से कहा—"ये लोग दशमांश

देने से बार-बार इन्कार करते हैं। क्या कार्यवाही की जाय इनके साथ ?"

"और तुम जो किराये पर मज़दूर रखते हो, वे क्या सन्तोषजनक रीति से काम करते हैं ?"

"बिल्कुल नहीं," निकोलाई पिट्रोविच ने कहा—"ये लोग बिगड़ गये हैं, यही तो रोना है। इनमें काम करने की तो ताक़त ही नहीं रही है, और ये न-सिर्फ़ मेरे औज़ार ख़राब कर रहे हैं, बल्कि ज़मीन को भी बग़ैर-जुती छोड़ देते हैं। क्या ज़मींदारी के प्रबन्ध में तुम्हारी कुछ रुचि है ?"

"पर हमारे घर पर छाया का सबसे अधिक अभाव है।" आरकाडी ने प्रश्न को टालते हुए कहा।

"हाँ, पर मैंने उत्तर के छज्जे से मिलता हुआ एक चँदवा लगवा दिया है, जिससे हम लोग खुली हवा में भोजन कर सकें।"

"पर इस से तो मकान एक डाक-बँगला-सा जँचेगा न ? इससे कुछ फ़ायदा नहीं होगा। पर यहाँ की हवा बहुत अच्छी है। सारे वायु-मण्डल में सोंधी-सोंधी खुशबू भरी हुई है और यह नीलाकाश !"

बोलते-बोलते आरकाडी सहसा रुक गया, और बड़ी गाड़ी की ओर नज़र डालकर चुप हो गया।

"हाँ, मैं तुमसे बिल्कुल सहमत हूँ," निकोलाई पिट्रोविच ने जवाब दिया—"इसका कारण यह है कि तुम्हारा जन्म यहीं

हुआ था। इस जगह का विशेष महत्व तो होना ही है।"

"पर आदमी के जन्म-स्थान को विशेष महत्व का स्थान नहीं दिया जा सकता पिताजी!"

"सच?"

"हाँ, बिल्कुल नहीं दिया जा सकता।"

निकोलाई पिट्रोविच ने पुत्र के मुख की ओर देखा, और फिर आधे वर्स्ट गाड़ी चली जाने तक दोनों में बातचीत नहीं हुई। अन्ततः निकोलाई पिट्रोविच ने कहा—

"मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने तुम्हें यह लिखा था या नहीं कि तुम्हारी बुढ़िया दाई इगोरोवना संसार से चल बसी।"

"चल बसी? ओह, गरीब बुढ़िया! पर प्रोकोफ़िच का क्या हाल है?—वह तो ज़िन्दा है न?

"हाँ वह तो जीवित है और वैसा ही है—उसकी वही बकने-झकने की आदत है। असल में तुम देखोगे कि मैरिनो में कोई भी ख़ास परिवर्तन नहीं हुआ है।"

और कारिन्दा भी वही है?"

"नहीं; एक नया रक्खा है, क्योंकि मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मुझे कोई भी मुक्त गुलाम* आसपास नहीं मिल सकता। मतलब यह कि ऐसे उत्तरदायित्वपूर्ण स्थान के लिये मैं ऐसे

---

*अभिप्राय उन गुलामों से है जो अवधि पूरी होने, या ख़ास रक़म अदा कर देने पर मुक्त कर दिये जाते थे।

आदमी पर विश्वास नहीं कर सकता था।" आरकाडी ने पीटर की ओर आँखों से संकेत किया, इसलिये निकोलाई पिट्रोविच ने अपना स्वर ज़रा धीमा कर लिया—"यह ? इसको ऐसी बातें सुनाने में कोई हर्ज नहीं; यह तो मेरा व्यक्तिगत सेवक है। पर कारिन्दा तो मैंने एक ऐसे आदमी को रक्खा है जो व्यापारिक श्रेणी का है। वेतन २५० रूबल* सालाना देना पड़ता है, और वह योग्य आदमी है; लेकिन—" इतना कहकर निकोलाई पिट्रोविच माथा खुजाने लगा, जिससे मालूम होता था कि व मन-ही-मन किसी विषय का संकल्प-विकल्प कर रहा है—"मुझे यह कहना चाहिए कि यद्यपि मैंने तुमसे यह कह दिया है कि मैरिनो में तुम्हें कोई खास परिवर्तन नहीं मिलेगा, पर यह बात सर्वांशतः सत्य नहीं है, खासकर यह देखते हुए कि मेरा तुम्हें इस विषय में सावधान कर देना कर्त्तव्य है कि, कि—" निकोलाई पिट्रोविच असल बात कहते हुए हिचकिचाया—फिर फ्रेंच-भाषा में बोला—"शायद एक कठोर नीतिज्ञ की दृष्टि में मेरी खरी बात असंगत जँचे; फिर भी मैं तुमसे नहीं छिपाऊँगा, और न यह बात तुमसे छिपी ही रह सकती है कि इस विषय में मेरे सदा अपने ही विचार रहे हैं कि पिता और पुत्र में कैसा सम्बन्ध रहना चाहिए। साथ ही, इसका यह मतलब भी नहीं है कि तुम्हें मेरी बातों पर विचार करने का कोई अधिकार नहीं है। बल्कि मेरी उम्र में—खैर, साफ़ तौरपर यों

*एक सिक्का जो लगभग डेढ़ रुपये के बराबर होता है।

कह सकते हैं कि जो लड़की तुम्हें ब्याही जायगी, उसने मेरी यह बात सुनली है कि—"

"तुम्हारा मतलब थेनिश्का से है ?" आरकाडी ने पूछा।

निकोलाई पिट्रोविच का चेहरा लाल होगया।

"उसकी बात इतने ज़ोर से मत कहो," पिता ने उपदेश के ढंग पर कहा—"हाँ, वह अपने ही यहाँ रह रही है। मैंने उसे घर में इसलिये रख लिया कि अन्दर के हमारे दो कमरे ख़ाली पड़े थे। पर इस इन्तज़ाम में परिवर्तन ज़रूर करना पड़ेगा।"

"ऐसा क्यों, पिताजी ?"

"क्योंकि तुम्हारे साथ तुम्हारा यह दोस्त भी तो चल रहा है, और इसलिये भी कि—ख़ैर, इससे बात बिगड़ जायगी।"

"बज़ारोव के सम्बन्ध में आप कोई चिन्ता न करें। वह इन बातों से कहीं ऊपर है।"

"तुम यह कहते हो; पर मैं बुराई की ओर पहले ध्यान देता हूँ।"

"पिताजी," आरकाडी ने विरोध करते हुए कहा—"आप की बात से तो यही मालूम होता है कि आप अपने पर ही आरोप कर रहे हैं; पर वास्तव में आप अपने को किसी बात के लिये भर्त्सना का पात्र नहीं बनाते।"

"नहीं, बनाता तो हूँ।" निकोलाई पिट्रोविच ने जवाब दिया। उसका चेहरा लाल होगया।

"नहीं, पिताजी, तुम नहीं बनाते," आरकाडी ने प्रेम-पूर्ण

मुस्कराहट के साथ पिता के प्रति एक विशेष समादर और उच्चता का भाव प्रदर्शित करते हुए नम्रतापूर्वक दुहराया—"आख़िर पिताजी, इस बात पर इतना क्यों उखड़ रहे हैं ?" उसने सोचा।

"इसके बारे में अब कुछ न कहो," उसने अनिच्छापूर्वक अपनी अवस्था-वृद्धि और स्वच्छन्दता का सहारा-सा लेते हुए कहा। पुत्र की इस बात से निकोलाई पिट्रोविच ने उसकी ओर देखा, जो अभी माथा खुजाकर विचार-मग्न-सा हो रहा था। उसी समय ऐसा मालूम हुआ, मानो उसके हृदय में किसी ने छुरी भोंकदी है। पहले की तरह अब भी उसने मन-ही-मन अपने को दोषी ठहराया।

"यह हमारे खेत फिर आगये।" कुछ देर चुप रहने के बाद उसने कहा।

"अच्छा।" आरकाडी ने जवाब दिया—"और वह सामने का जंगल भी तो, मैं समझता हूँ, हमारा ही है ?"

"हाँ; सिर्फ़, सिर्फ़—मैंने इसे बेच दिया है, और इस साल यह कट जायगा।"

"आपने बेच क्यों डाला ?"

"इसलिये कि मुझको रुपयों की ज़रूरत थी। इसके अतिरिक्त, जिस ज़मीन में जंगल है, यह किसानों को दी जायगी।"

"क्या ? किसानों को, जो दशमांश भी नहीं अदा करते ?"

"हाँ, सम्भवतः। पर कभी-न-कभी तो वे हमें दे ही देंगे।"

"जंगल बेचने का मुझे बड़ा अफ़सोस है।" आरकाडी ने कहा, और फिर दृश्य देखने में लग गया।

जिस दृश्य के बग़ल से होकर यह दल सफ़र कर रहा था, उसे मनोहर तो नहीं कह सकते, क्योंकि थोड़ी-बहुत वन्य हरियाली को छोड़ चारों ओर क्षितिज से मिले हुए खेत-ही-खेत नज़र आते थे। कहीं-कहीं बीच में झाड़ियों के टुकड़े भी अवश्य ही दिखायी दे जाते थे; पर नालों के किनारे फैली हुई झाड़ियाँ देखकर कैथेराइन* के दिनों की पैमाइश याद आ जाती थी। साथ ही ये लोग टेढ़े-मेढ़े और ऊबड़-खाबड़ किनारोंवाले नाले, गाँव-गँवई और छोटी-मोटी टूटी-फूटी झोंपड़ियों के पास से गुज़रते दिखलायी देते थे। क़ब्रगाहों के पास टूटे-फूटे गिरजे दिखायी देते थे, जिन पर से छिली हुई चूनाकारी उनकी प्राचीनता का प्रमाण दे रही थी, और जिनके क्रास मानों किसी भी क्षण टूट पड़ने की धमकी दे रहे थे। यह सब दृश्य देखकर आरकाडी का हृदय सिकुड़ा जा रहा था। इसके अतिरिक्त सड़क के किनारे जो किसान आरकाडी की नज़र पड़ते थे, उनके बदन पर कपड़ों के नाम को चीथड़े के अतिरिक्त और कुछ नहीं दीखता था—किसानों के चौपाये भी वैसे ही मरियल नज़र आते थे। सड़कों के पार्श्वस्थित वृक्ष पत्ते झड़ जाने और छाल छूट जाने के कारण ऐसे खड़े दीखते थे, मानों कोई भिखमंगा दैन्य-भाव से कुछ पाने की आशा लगाये खड़ा है। अन्ततः कीचड़ से

---

* रूस की सम्राज्ञी।

ढकी हुई दुबली-पतली गायें गड्ढों के चारों ओर उगी हुई घासों को ऐसी आतुरता से चर रही थीं, जैसे उन्हें कभी चारा मिला ही नहीं था। इन (पशुओं) के चमड़े सिकुड़ रहे थे और ऐसा मालूम होता था कि उन्हें किसी पशु-भक्षी राक्षस के पंजे से छुड़ाकर वहाँ लाया गया है। इन बेचारे पशुओं की दुर्दशा देख-कर दर्शक के मन में यही विचार उठते थे कि वह वसन्त के सुरम्य सौन्दर्य को न देखकर शीतकाल के भूखे भूत को देख रहा है, जो झंझावत, कुहरे और बर्फ़ की झड़ी लिये हुए सामने से आरहा है।

"यह ज़िला उपजाऊ और सम्पन्न नहीं मालूम होता," आरकाडी ने कहा—"बल्कि यह कहना चाहिए कि यह ज़िला न तो समृद्धिशाली ही है, न यहाँ किसी प्रकार के काम की ही बहुतायत है। फिर भी क्या इसकी यही अवस्था क़ायम रहने देनी चाहिए ? नहीं ! हमें शिक्षा की आवश्यकता है। पर शिक्षा का प्रबन्ध कैसे किया जाय; शिक्षा-प्रचार के लिये क्या योजना की जाय ?"

आरकाडी यह कहने के बाद भी विचारों में डूबा रहा। उसे अब ऐसा प्रतीत हुआ, मानो धरातल पर वसन्त का साम्राज्य स्थापित हो गया है और उसके चारों ओर स्वर्णमयी हरीतिमा छायी हुई है—वृक्ष, झाड़ियाँ और पौधे लहलहा रहे हैं और वसन्त-कालीन पछवा हवा के झोंके उन पर झूम रहे हैं। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि लवा पक्षी का अनवरत गान उसके

कानों में सुधा भर रहा है और उस गान से दिशा-विदिशाएँ—बद्ध जलाशय और पर्वत के अन्तराल—भर गये हैं और खेतों में जमे हुए सुकोमल नाज के पौधों पर पक्षियों का झुण्ड उड़ रहा है ।

आरकाडी चकित होकर चारों ओर देखता रहा और ऐसा करते समय उसके पूर्व-विचार धीरे-धीरे विलीन होने लगे । थोड़ी ही देर बाद वह जैसे उस विचार-क्षेत्र से बिल्कुल पृथक् होगया। उसने अपना सफ़री अंगरखा निकाल दिया और पिता की ओर ऐसी बाल-सुलभ सरलता से ताकने लगा कि निकोलाई पिट्रोविच उसका दूसरा चुम्बन लेने से अपने को न रोक सका ।

"अब हमें थोड़ी ही दूर और चलना है," पिट्रोविच ने कहा—"यह उँचाई हम और पार करलें, तो मकान की छत दिखलायी देने लगेगी । और हम लोग एक साथ अब कैसा सुन्दर समय बितायेंगे, आरकाशा ! तुम ज़मींदारी के इन्तज़ाम में भी चाहो तो मेरी सहायता कर सकोगे, और मुझे और तुम्हें एक दूसरे को निकट से भली भाँति पहचानने का मौक़ा भी मिलेगा ।"

"हाँ; और वसन्त में तुम्हारा घर आना तो बड़ा ही विमुग्ध-कारी है । फिर भी मैं यह नहीं कह सकता कि मैं पुश्किन की इन पंक्तियों से असहमत हूँ कि—

"हे वसन्त ! ऋतुराज; प्रेम के रूप तुम !—
मुझे तुम्हारी शोभा यह भाती नहीं ।"

"आरकाडी," बज़ारोव ने बड़ी गाड़ी पर से पुकारा—"ज़रा दियासलाई तो देना; मेरे पास पाइप सुलगाने के लिये नहीं रही है ।"

निकोलाई पिट्रोविच ने तुरन्त अपना पद्योच्चारण बन्द कर दिया और आरकाडी (जो बड़े आश्चर्य और कुछ सहानुभूति के साथ पिता के काव्य-प्रेम का नमूना सुन रहा था) ने जल्दी से दियासलाई की डिबिया निकालने के लिये जेब में हाथ डाला और पीटर के हाथ मैच-बक्स दूसरी गाड़ी में पहुँचा दिया।

"बदले में एक सिगार तो ले लोगे ?" बज़ारोव ने कहा।

"क्यों नहीं।" आरकाडी ने जवाब दिया ।

पीटर ने डिबिया लौटाते समय एक मोटी और काली सिगार भी आरकाडी के हाथ में दी, जो बज़ारोव ने दी थी। आरकाडी ने फ़ुर्सत पाकर सिगार जलायी, और अपने चारों ओर कडुवा और तीव्र गन्ध का धुवाँ छोड़ने लगा । निकोलाई पिट्रोविच-जैसे जन्म से ही तम्बाकू न पीनेवाले आदमी के लिये अपनी नाक को हटाना कठिन होगया। (यद्यपि ऐसा करने में उसने काफ़ी पटुता से काम लिया, क्योंकि उसे भय था कि कहीं घृणा-प्रदर्शन से उनका पुत्र अप्रसन्न न हो जाय।)

चौथाई घंटे के बाद गाड़ियाँ एक नयी काष्ठ-निर्मित कोठी के पास जा खड़ी हुईं, जो भूरे रंग में रँगी हुई थी और जिसमें लाल रंग की लोहिया छत थी । कोठी का नाम था मैरिनो या नोवैया स्लोबोदा। किसान लोग इसे "बोबिली शुतोर" भी कहा करते थे ।

४

बरामदे में आगतों के स्वागत के लिये नौकरों की भीड़ नहीं जमा थी—केवल एक बारह वर्ष की लड़की थी। उसके साथ एक युवक और था, जो रंग-रूप में पीटर से मिलता-जुलता, और ख़ाकी वर्दी पहने हुए था। वर्दी के किनारे बेल लगी थी और बटन गिलट के थे। यह पाल किरसानोव का नौकर था। उसने चुपचाप छोटी गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया और बड़ी गाड़ी के फाटक का भी हुक खींच लिया। इसके बाद तीनों सज्जन उतरे और एक अँधेरे और ख़ाली हाल में होकर गुज़रे (दरवाज़े के पीछे से झाँककर एक युवती ने इनकी ओर देखा), और आगे जाकर एक आधुनिक ढङ्ग के सुसज्जित कमरे में पहुँचे।

"अब हम फिर अपने घर में आगये !" निकोलाई पिट्रोविच ने टोपी उतारकर बाल सहलाते हुए कहा—"अब हमें खाना खाकर तब लेटना चाहिए !"

"हाँ, कुछ-न-कुछ खालेना ठीक होगा।" बज़ारोव ने अँगड़ाई लेते हुए एक सोफ़े पर बैठकर कहा।

"बहुत ठीक; मैं अभी खाना परोसने का इन्तज़ाम करता हूँ।" कहकर निकोलाई पिट्रोविच उठ खड़ा हुआ। "और यह प्रोकोफ़िच आ रहा है।" उसने फिर कहा।

पिट्रोविच के उपरोक्त वाक्य कहने के साथ ही कमरे में एक साठ वर्ष के वृद्ध आदमी ने प्रवेश किया। उसके बाल सफ़ेद थे, और शरीर पतला तथा साँवला। उसने दारचीनी के रंग का एक लम्बा कोट पहन रक्खा था, जिसमें पीतल के बटन लगे थे और गहरे लाल रंग का कालर। पास आकर वह प्रसन्नता से मुस्कराया और आरकाडी से हाथ मिलाने के बाद मेहमान के सामने झुककर आदर-प्रदर्शन किया। इसके बाद वह व्यक्ति दोनों हाथ पीछे की ओर करके दरवाज़े की तरफ़ बैठ गया।

"अब लड़का घर आ गया है, प्रोकोफ़िच !" निकोलाई पिट्रोविच ने कहा—"आख़िर आ गया। और तुम्हें यह शरीर से कैसा दीख रहा है ?"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा !" बुड्ढे ने फिर मुस्कराकर कहा। फिर क्षण-भर बाद उसने अपनी घनी भवें तानकर

पूछा—"क्या मेज़ तैयार करूँ ?"*

"हाँ, अगर आप चाहें ?" निकोलाई पिट्रोविच ने बज़ारोव की तरफ़ रुख़ करके कहा।

"खाने के पहले," पिट्रोविच ने फिर पूछा—"क्या आप अपने कमरे में जाना चाहेंगे ?"

"नहीं, धन्यवाद। पर कृपया मेरा सन्दूक वहाँ रखवा दीजिए और यह कपड़ा भी।" कहकर बज़ारोव अपना अंगरखा उतारने लगा।

"ज़रूर। प्रोकोफ़िच, महाशयजी का कोट लेते जाओ।"

बुड्ढे खानसामाँ ने बड़ी सावधानी के साथ बज़ारोव का कोट सँभाला और चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया।

"और तुम आरकाडी ?" निकोलाई पिट्रोविच ने कहा—"क्या तुम अपने कमरे में चलोगे ?"

"हाँ, मैं चलकर ज़रा हाथ-मुँह धोना चाहता हूँ।" आरकाडी ने दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए कहा। इसी समय मध्यम क़द का एक व्यक्ति जो गहरे रंग का अँग्रेज़ी सूट, अच्छे फ़ैशन का नीचा कालर और बढ़िया बूट पहने था, दरवाज़े के अन्दर आया। यह व्यक्ति था पाल पिट्रोविच किरसानोव। यद्यपि पाल की उम्र केवल पैंतालीस वर्ष की थी, पर उसके बाल चाँदी-से सफ़ेद हो चुके थे, चेहरा पीला, बिना झुर्री का और ऐसा सुगठित था जैसे सुन्दर रुखानी से गढ़कर बनाया गया

---

* आशय भोजन परोसने से है।

हो। सौन्दर्य के सभी चिह्न, और उसकी काली, चमकीली और विशाल आँखें, अब भी अद्भुत आकर्षण रखती थीं; उसके परिपुष्ट सुललित मुख-मण्डल से युवावस्था का सुडौलपन टपकता था, और वह विशिष्ट सौष्ठव अभी तक लुप्त नहीं हुआ था, जो बीस वर्ष की अवस्था के बाद साधारणतः दिखायी नहीं देता।

पाजामे की जेब में से उसने अपना पतला हाथ निकाला। उसके नाखून लम्बे और गुलाबी रंग के थे। आस्तीन की कफ़ सफ़ेद रंग की और ऐसी मोटी थी कि उसके अन्दर हाथ और भी पतला दिखलायी देता था। हाथ निकालकर उसने अपने भतीजे की ओर बढ़ा दिया। इस यूरोपियन ढङ्ग के हाथ मिलाने की आरम्भिक रस्म के बाद उसने रूसी प्रथा के अनुसार तीन बार आरकाडी का चुम्बन लिया—अर्थात्, अपनी सुगन्ध-सिञ्चित मूँछों से भतीजे के कोमल कपोल का स्पर्श करके कहा—"तुम्हें बधाई!"

इसके बाद निकोलाई पिट्रोविच ने बज़ारोव से उसका परिचय कराया। इस बार पाल पिट्रोविच ने अपनी लचीली उँगलियों को आगे बढ़ाकर एक हल्की मुस्कराहट के बाद हाथ उल्टे जेब में डाल लिया।

"मैं सोचने लगा था कि तुम अब आओगे ही नहीं," पाल ने एक प्रिय ढंग से कन्धे हिलाते हुए अपनी श्वेत दन्त-पंक्ति दिखाकर कहा—"तुम्हें देरी क्यों हो गयी? क्या बात हो गयी थी?"

"कुछ नहीं," आरकाडी ने कहा—"यों ही चलने में कुछ

देरी हो गई। इसी देरी का तो यह फल है कि इस वक्त भेड़िये को भी भूख लगी है—पिताजी, प्रोकोफ़िच से कहदो कि जल्दी करे, मैं अभी वापस आता हूँ।"

"ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।" कहकर बज़ारोव फ़ौरन उठकर उसके साथ हो लिया।

"यह, तुम्हारा मेहमान कौन है?" पाल पिट्रोविच ने अपने भाई से पूछा।

"आरकाडी का दोस्त, और उसके कथनानुसार बड़ा ही बुद्धिमान आदमी है।"

"यह यहीं ठहरेगा?"

"हाँ।"

"बालोंका शौक़ीन आदमी है?"

"ज़रूर।"

इस विषय में पाल पिट्रोविच ने फिर कुछ नहीं कहा; पर उँगलियों से मेज़ पर खटका लगाते हुए बोला—

"मैं समझता हूँ, हमारे आरकाडी पर भी कुछ रंग चढ़ा है। कुछ भी हो, यह वापस आगया, मुझे यही खुशी है।"

भोजन के समय थोड़ी बातें हुईं। ख़ासकर बज़ारोव ने मुश्किल से मुँह खोला। हाँ, उसने खाना ज़रूर पेट भरकर खाया। सिर्फ़ निकोलाई पिट्रोविच अपने 'कृषक-जीवन' पर अनेक घटनाओं का उदाहरण दे-देकर बकवाद करता रहा, और भावी शासन-विधान की कार्यवाहियों, समितियों, डेपुटेशनों और देश

में मशीनें बढ़ाने तथा अन्य विषयों पर बहुत-कुछ कह गया।

पाल पिट्रोविच भोजन के समय कमरे में चेहलक़दमी करता रहा, क्योंकि उसने भोजन में भाग न लेकर केवल एक गिलास लाल शराब पर ही सन्तोष किया था। वह निकालाई के वार्तालाप के बीच-बीच में केवल "ओह !", "खूब !", "हाँ !" कह दिया करता था। आरकाडी की बातों में सेण्ट पीटर्सबर्ग की गपशप की छाया काफ़ी थी, यद्यपि वह इस बात से पूर्णतः अवगत था कि अब वह जिस स्थान पर एक नवयुवक की हैसियत से बातें कर रहा है, वहीं वह केवल एक शिशु के रूप में रह चुका है। दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि वह अनावश्यक रूप से ज़बान रोककर बोलता था। 'पिताजी' के लिये वह कई बार अन्य पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते-करते रुका, यद्यपि यह सच है कि उसने इन शब्दों का उच्चारण करते समय कठिनाई का अनुभव किया। अपने को अधिक शान्त बनाने की प्रबल इच्छा से उसने भोजन के साथ आवश्यकता से अधिक शराब पी और सब तरह की शराबों का थोड़ा-थोड़ा मज़ा चखा। इधर प्रोकोफ़िच ओंठ चबाते हुए अपनी नज़र नये मालिक पर गड़ाये रहा।

भोजन समाप्त होने पर लोग अपने-अपने कमरे में चले गये।

"तुम्हारे चाचा अजीब आदमी जान पड़ते हैं," बज़ारोव ने आरकाडी के बिछौने के पास बैठते हुए कहा—"ऐसा सौन्दर्य

तो देश में ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा! इनकी उँगलियों के नाखून ऐसे सुन्दर हैं कि उनके लिये उन्हें सुन्दरता का सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार मिल सकता है।"

"तुम उन्हें अभी नहीं जानते।" आरकाडी ने कहा—"अपने समय में यह पूरे शेर थे, कभी मैं तुम्हें इनका इतिहास सुनाऊँगा। कितनी ही स्त्रियाँ इनके सौन्दर्य पर मुग्ध होकर पागल होगयी थीं।"

"तब तो मुझे यह समझना चाहिए कि इनके लिये स्मृतियों पर जीवित रहने के अतिरिक्त और कोई साधन नहीं है," बज़ारोव ने कहा—"क्योंकि यहाँ तो कोई बन्धन दीखता नहीं। मैंने उन्हें अच्छी तरह देखा है—अपने जीवन-भर में मैंने किसी के कालर में इतनी चमक नहीं देखी थी, न इतनी सफ़ाई और कोमलता के साथ किसी की दाढ़ी बनी देखी थी। फिर भी ये बातें काफ़ी परिहासजनक मालूम होती हैं, तुम्हारा क्या विचार है?"

"हाँ,—शायद हो सकती हैं। पर हैं तो वे विलक्षण पुरुष!"

"अवश्य,—सचमुच सुन्दरता की मूर्ति हैं। तुम्हारे पिता भी काफ़ी सुन्दर हैं, क्योंकि यद्यपि वे वाहियात कविताएँ सुनाने लगते हैं, और चाहे शिल्प-उद्योग के सम्बन्ध में उनके कैसे ही विचार हैं, पर उनका हृदय शुद्ध है।"

"सचमुच वे स्वर्ण-हृदय पुरुष हैं।"

"फिर भी आज उनकी घबराहट देखी थी?"

आरकाडी ने इस तरह सिर हिलाया, मानों इस प्रकार की कमज़ोरियों से वह नितान्त अनभिज्ञ है।

"सचमुच अद्भुत हैं!" बज़ारोव ने कहा—"और ये मन-मौजी रईस इतने बढ़ते हैं कि पलड़ा ही पलट देते हैं। अच्छा, अब रात भर के लिये बिदा! मेरे कमरे में एक अंग्रेज़ी वाश-स्टैण्ड* लगा है, फिर भी कमरा बन्द नहीं होगा! ऐसी चीज़ों के लगाने के लिये प्रोत्साहन देना चाहिए, क्योंकि ये 'उन्नति' के चिह्न हैं।"

बज़ारोव चला गया, और आरकाडी एक प्रकार की सुखानुभूति में गोते लगाने लगा। अपने ही आनन्ददायक घर में, अपने ही सुपरिचित बिछौने पर, तथा अपने ही प्रिय परिजनों—कदाचित् उसकी अहर्निशि परिश्रमशीला दाई—के बनाये ओढ़ने के नीचे सोने में कैसा अपूर्व सुख है। इगोरोवना का विचार आते ही उसने ठंडी साँस ली और उसकी आत्मा को स्वर्गीय शक्ति को सौंपा। पर उसने अपनी ओर से कोई प्रार्थना नहीं की।

थोड़ी देर में वह और बज़ारोव—दोनों सोगये; पर घरके कई आदमी अभी जाग रहे थे—विशेषतः निकोलाई पिट्रोविच चूँकि अपने पुत्र की वापसी पर खूब उमंग में भरा हुआ था, इसलिये बिछौने पर लेटने के बाद भी उसने मोमबत्ती जलती

---

* स्नानादि करते समय वस्त्र रखने के लिये लकड़ी या धातु के बने हुए खंम्भ।

छोड़ दी थी, और दोनों हाथों के सहारे सिर पकड़े हुए गम्भीर विचार में मग्न था।

निकोलाई का भाई पाल भी अपने अध्ययन के कमरे में आधी रात तक जागता रहा। एक कोने में आराम-कुर्सी पर, जिसके सामने दहकते कोयलों की अँगीठी रक्खी थी, वह अब भी सारे कपड़ों से लैस ज्यों-का-त्यों बैठा था; सिर्फ़ बूट को बदलकर उसने सादे स्लीपर पहन लिये थे। वह हाथ में 'गैलीनानी'-नामक पत्रिका का नया अङ्क लिये हुए था और उसकी आँखें अँगीठी पर जमी हुई थीं, जिसमें से एक टेढ़ी लपक निकल-निकल कर फिर अन्दर घुस जाती थी। यह बात ईश्वर ही जान सकता है कि उसके विचार कहाँ चक्कर लगा रहे थे; किन्तु वे (विचार) केवल भूतकाल तक ही सीमित नहीं थे, इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि उसके चेहरे पर एकाग्रता-पूर्ण उदासी छायी हुई थी, जो उस अवस्था में नहीं देखी जाती, जब मनुष्य अपनी भूतकालीन स्मृतियों में तल्लीन होता है।

मकान के पिछले भाग के एक छोटे कमरे में नीली जाकेट पहने और काले बालों पर सफ़ेद रूमाल बाँधे सन्दूक़ पर थेनिश्का नामक लड़की अभी तक बैठी थी। वहाँ बैठे-बैठे वह सामने के एक खुले दरवाज़े को ध्यान लगाये ताक रही थी, जिसके अन्दर पालने में एक शिशु निद्रामग्न था और उसके साँस लेने की आवाज़ वहाँ तक साफ़ सुनायी दे रही थी।

———

५

दूसरे दिन बज़ारोव सब से तड़के उठकर मकान के बाहर निकला।

"ओह," उसने चारों ओर नज़र दौड़ाकर मन-ही-मन कहा—"यह कोई दर्शनीय जगह नहीं है।"

अपनी आराज़ी का विभाजन करते समय निकोलाई पिट्रोविच को वाध्यतः चार देसिआतिनी चौरस ज़मीन छोड़ देनी पड़ी थी, जिस पर उसने नौकरों के लिये क्वार्टर और फुटकर मकान बनवा लिये थे। उसी जगह उसने बाग़ लगवा-कर तालाब भी खुदवा दिया था और दो कुवें भी बँधवा दिये थे। किन्तु छोटे वृक्ष बढ़ नहीं सके, तालाब में काफ़ी पानी नहीं ठहर सका, और कुवों का पानी खारी होगया। केवल फलहीन वृक्षों

की बाढ़ वहाँ ज़रूर अच्छी हुई, जिनकी छाया में बैठकर लोग चाय पीने या खाना खाने के अभ्यस्त थे। थोड़ी ही देर में बज़ारोव ने बाग़ का तमाम रास्ता छान मारा। अस्तबल और चौपायों का बाड़ा देखा, और रास्ते में मिलनेवाले दो ग़ुलाम बालकों से मित्रता कर ली, जिन्हें साथ लेकर वह लगभग एक वर्स्ट की दूरी पर किसी दलदल में मेंढक पकड़ने के लिये चला गया।

"मेंढक पकड़कर आप क्या करेंगे सरकार?" ग़ुलाम लड़कों में से एक ने पूछा।

"उन से बड़ा काम निकलेगा।" बज़ारोव ने जवाब दिया। उस (बज़ारोव) में अपने से अल्पमतिवालों पर अपनी बातका विश्वास जमाने की अद्भुत क्षमता थी; यद्यपि वह ऐसे व्यक्तियों से छलपूर्ण व्यवहार नहीं करता था; पर साथ ही उसके व्यवहार में तीव्रता की मात्रा का नितान्त अभाव नहीं था। "देखो, मैं मेंढकों को चीरकर देखना चाहता हूँ कि उनके पेट के अन्दर क्या काम होता है। तुम और हम भी एक तरह के मेंढक ही हैं; फ़र्क़ इतना ही है कि हम अपने पिछले पैरों* पर चलते हैं। इस चीर-फाड़ की क्रिया से हमें मालूम हो जायगा कि हमारे शरीर के अन्दर क्या काम होता है।"

"पर इससे आपको फ़ायदा क्या होगा?"

---

*पिछले पैरों का मतलब पाँवों से है। जन्तु-विज्ञान के अनुसार मनुष्य के हाथों को 'अगले-पैर' कह सकते हैं।

"इससे ? फ़ायदा यह होगा कि अगर तुम बीमार पड़ो, और मुझे तुम्हारा इलाज करना पड़े, तो मैं दवा देने में कोई ग़लती न कर बैठूँगा।"

"तब तो आप डाक्टर हैं ?"

"हाँ।"

"सुनता है वसीका, साहब कह रहे हैं कि हम और तुम भी एक प्रकार के मेंढक हैं। मैंने क्या कहा था !"

"मैं मेंढकों को नहीं पसन्द करता।" सात वर्ष के लड़के वसीका ने कहा। उसके पैरों में जूते नहीं थे, सिर सफ़ेद था, पोशाक पीली थी और कालर सख़्त।

"तुम मेंढकों को क्यों नहीं पसन्द करते ?" बज़ारोव ने पूछा—"क्या तुम समझते हो कि वे तुम्हें काट लेंगे ? नहीं ! चलो, पानी में चलो !"

इधर निकोलाई पिट्रोविच बिस्तरे से उठ चुका था। आरकाडी के पास जाकर जो उसने देखा, तो वह पहले ही कपड़े-लत्ते से लैस होकर तैयार था। पिता और पुत्र दोनों अपनी भूमि और मकान के निरीक्षण के लिये चल पड़े। कुछ दूर जाकर दोनों मकान के पास वृक्षों के नीचे बैठ गये। वहाँ सायबान के पास ही एक मेज़ पर चाय उबल रही थी—उसी क्षण वह लड़की भी आगयी, जो कल उन लोगों के आने पर मिली थी। उसने आते ही तीक्ष्ण स्वर में कहा—

"थिवोडोसिया निकोलावना की तबियत आज अच्छी नहीं

है, इसलिये वे नाश्ते के लिये नहीं आ सकतीं। उन्होंने पूछा है कि आप लोग खुद चाय ढाल लेंगे, या वे दुनियाशा को भेज दें?"

"मैं खुद ढाल लूँगा," निकोलाई पिट्रोविच ने कुछ शीघ्रता-पूर्वक कहा—"आरकाडी, क्या तुम चाय में क्रीम (मलाई) या लेमन (नींबू का रस) डालना पसन्द करोगे?"

"क्रीम।" आरकाडी ने जवाब दिया। क्षण-भर रुकने के उसने फिर कहा—"पिताजी........."

निकोलाई पिट्रोविच ने घबराकर पुत्र की ओर देखा।

"हाँ?" उसने कहा।

आरकाडी ने आँखें नीची करलीं।

"अगर मेरा प्रश्न अविवेकपूर्ण मालूम हो, तो क्षमा करें," उसने कहा—"पर गत रात्रि आपकी खरी बातें सुनकर मुझे कुछ कहने का साहस हुआ है। मैं समझता हूँ, आप इससे क्रुद्ध न होंगे।"

"नहीं, नहीं! कहो।"

"तो मैं यह पूछने का साहस करता हूँ कि थेनिश्का नाश्ते में क्या इसीलिये नहीं शामिल हुई कि मैं यहाँ हूँ?"

निकोलाई पिट्रोविच ने अपना मुख-मण्डल ज़रा-सा फेर लिया।

"सम्भव है यही बात हो," अन्ततः उन्होंने कहा—"मेरी यह धारणा है कि वह हर मौक़े पर लज्जालुता का परिचय देती है।"

आरकाडी ने अपने पिता की ओर ध्यान से देखा।

"पर उसे शर्म क्यों करनी चाहिए?" उसने पूछा—"पहली बात तो यह है कि आप मेरे विचारों से अवगत हैं," (उसने ये शब्द बड़ी आत्म-तुष्टि के साथ कहे), "और, दूसरी बात यह है कि आप यह नहीं सोच सकते कि मैं आपके जीवन और आपकी आदतों में बाल-बराबर दख़ल भी नहीं दूँगा? नहीं; मुझे तो निश्चय है कि आपका चुनाव कभी ख़राब नहीं हो सकता; और अगर आपने इस लड़की को इस मकान में रहने की आज्ञा देदी है, तो इसका यह मतलब है कि वह इसके योग्य है। कुछ भी हो, बेटे को बापके निश्चय पर आपत्ति करने का अधिकार नहीं है—सो भी मुझ-जैसे लड़के के लिये, जिसके पिता आप हैं, जिन्होंने अपने पुत्र की स्वतंत्रता में कभी बाधा नहीं डाली?"

आरम्भ में आरकाडी के स्वर में कुछ प्रकम्पन था, क्योंकि वह यही नहीं समझता था कि वह कोई 'उच्च' बात कह रहा है, वरन् उसके साथ यह बात भी सोच रहा था कि वह अपने पिता के सामने व्याख्यान दे रहा है; किन्तु ऐसी अवस्था में मनुष्य का अपना ही स्वर अपने ऊपर प्रभाव डालता है, और इस नियम के अनुसार आरकाडी ने अन्तिम शब्द काफ़ी दृढ़ता और गम्भीरतापूर्वक कहे।

"मैं तुम्हें इसके लिये धन्यवाद देता हूँ आरकाडी," निकोलाई पिट्रोविच ने हल्की आवाज़ में कहा। इस समय उसकी उँगलियाँ माथा खुजलाने में लगी हुई थीं—"तुम्हारा अनुमान

भी ग़लत नहीं है, क्योंकि अगर लड़की इस योग्य न होती, तो जैसा कि तुमने समझा है, मैं हर्गिज़ ऐसा न करता; यह बात मेरे लिये तुच्छ नहीं है। मैं अगर तुम्हें यह समझाने की ज़रूरत न समझता कि तुम्हारे आगमन के दूसरे ही दिन यहाँ आने में वह एक प्रकार की झिझक का अनुभव करती होगी, तो यह बातें कहता भी नहीं।"

"तो 'मैं' जाकर 'उस' से मिल आऊँ?" आरकाडी ने कुर्सी से उठते हुए पुनः उच्चता का भाव मन में लाते हुए कहा—"मैं खुद जाकर उसे समझा दूँ कि उसे मुझसे पृथक् रहने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

निकोलाई पिट्रोविच भी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"आरकाडी," उसने कहा—"कृपा करो। मैंने अभी तक तुम्हें सावधान नहीं किया था कि—"

पर उसकी बात पर ध्यान दिये बिना ही आरकाडी वहाँ से लम्बा बना। क्षण-भर तो निकोलाई पिट्रोविच उसकी ओर देखता रहा—फिर घबराकर कुर्सी पर गिर गया। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। यह बतलाना कठिन है कि वह अपने और पुत्र के भावी सम्बन्ध की विलक्षणताओं पर विचार कर रहा था, और यह सोच रहा था कि अगर आरकाडी इस प्रकार बाधा डालने का कार्य न करता, तो वह उसकी कैसी प्रतिष्ठा करता, अथवा वह अपनी कमज़ोरियों के लिये अपने आपको धिक्कार रहा था। सम्भवतः उसमें उपरोक्त भावनाओं का एक

सम्मिश्रण केवल तर्क या अनुमान के रूप में था। पर यह तर्क-भावनाएँ उसके हृदय की गहराई में जड़ नहीं जमा सकी थीं, क्योंकि हृदय की गति बढ़ जाने पर भी उसके चेहरे का रंग नहीं उड़ा था।

थोड़ी ही देर में शीघ्रतापूर्वक आनेवाले पैरों की आहट सुनायी पड़ी और आरकाडी उसी स्थानपर फिर आ पहुँचा।

"मैंने उससे परिचय कर लिया!" उसने मीठे, हास्यपूर्ण और विजय-सूचक स्वर में कहा—"सचमुच उसकी तबियत आज ठीक नहीं है; पर यह बात भी सच है कि वह कुछ देर में यहाँ आयेगी। और तुमने मुझसे यह क्यों नहीं बतलाया कि मेरे एक छोटा भाई भी है? ऐसा जानता, तो मैं कल रात को ही उसका चुम्बन ले आता, जैसा कि अब लेकर आरहा हूँ।"

निकोलाई पिट्रोविच कुछ कहने की चेष्टा कर रहा था—और उठकर किसी प्रकारकी सफ़ाई देना चाहता था; पर आरकाडी प्रेमपूर्वक उसका गला पकड़कर लटक गया।

"यह क्या? फिर आलिंगन?" पाल पिट्रोविच ने उन दोनों के पीछे आकर कहा।

वास्तव में पाल के आगमन से न तो पिता को अप्रसन्नता हुई न पुत्रको, क्योंकि ऐसी अवस्थाएँ चाहे कैसी ही मर्म-स्पर्शिनी क्यों न हों, पर इनसे शीघ्र छुटकारा पाने की इच्छा सबको होती है।

"तुम्हें ताज्जुब किस बात पर होरहा है?" निकोलाई पिट्रो-

विच ने प्रसन्नतापूर्वक पूछा—"याद रक्खो, कि मैंने आरकाशा को सदियों से नहीं देखा है—कम-से-कम कल रात से !"

"मैं आश्चर्य नहीं कर रहा हूँ," पाल पिट्रोविच ने कहा—"बल्कि मैं तो खुद इसका आलिंगन करना चाहूँगा।"

आरकाडी ने अपने चाचा के पास पहुँचकर अपने सुकोमल कपोल पर सुगन्धित मूँछों का एक और चुम्बन ग्रहण किया। इसके बाद पाल पिट्रोविच मेज़पर बैठ गया। उसने प्रातःकालीन सुन्दर अंग्रेज़ी ढंगका सूट पहन रक्खा था, सिरपर एक छोटी-सी फ़ेज़ टोपी लगा रक्खी थी, और असावधानी के साथ ढीली-सी टाई बाँध रक्खी थी, जिससे मालूम होता था कि वह ग्राम्य-जीवन की बन्धनहीनता का आनन्द ले रहा है। क़मीज़ के सख़्त कालर पर अत्यन्त स्वच्छतापूर्वक बनी हुई ठोड़ी फब रही थी।

"आरकाडी?" उसने पूछा—"तुम्हारा नया दोस्त कहाँ है?"

"कहीं बाहर गया है। प्रातःकाल सैर के लिये जाने से वह शायद ही कभी चूकता है। पर उसकी ओर किसी प्रकार का ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह तकल्लुफ़-पसन्द बिल्कुल नहीं है।"

"मैं भी ऐसा ही समझता हूँ," पाल ने अपनी व्यावहारिक सावधानी दिखलाकर रोटी के एक टुकड़े पर मक्खन लगाते हुए कहा—"क्या वह यहाँ बहुत दिनों तक ठहरेगा?"

"हाँ, जब तक चाहेगा, ठहरेगा। असल में वह अपने पिता के पास जा रहा है।"

"इसके पिता कहाँ रहते हैं ?"

"यहाँ से कोई अस्सी वर्स्ट की दूरी पर इसी सूबे में। मैं समझता हूँ, वहाँ उनकी एक छोटी-सी जायदाद है। पहले वे फ़ौजी डाक्टर थे।"

"अच्छा! कल रात से ही मैं सोच रहा था कि मैंने कहीं यह नाम सुना है। निकोलाई, तुम्हें याद है कि इस नाम का कोई डाक्टर पिताजी के डिवीज़न* में था ?"

"हाँ, था तो।"

"तो वह डाक्टर इसी लड़के का पिता होगा। और हाँ!" पाल पिट्रोविच ने अपनी मूँछें एंठते हुए कहा—"तुम्हारा बज़ारोव वास्तव में है क्या ?" उसने फिर आरकाडी से पूछा।

"है क्या ?" आरकाडी ने मुस्कराकर दुहराया—"चाचा, क्या तुम सचमुच जानना चाहते हो कि वह क्या है ?"

"हाँ, अगर तुम बता सको।"

"वह एक निहिलिस्ट है।"

"क्या ?" निकोलाई पिट्रोविच ने कहा। पाल ने भी छुरी की धार से लगे हुए मक्खन को ऊपर उठाये रक्खा।

"निहिलिस्ट!" आरकाडी ने कहा।

"निहिलिस्ट ?" निकोलाई पिट्रोविच ने फिर पूछा—"मैं समझता हूँ यह शब्द लैटिन भाषा के 'निहिल' या 'नथिंग'† से

---

* सैनिक टुकड़ी।

† कुछ नहीं=शून्य।

बना होगा। मेरी समझ में इसका मतलब यह होगा कि ऐसा आदमी जो 'किसी भी चीज़' को नहीं मानता।"

"या ऐसा आदमी जो किसी चीज़ से 'सम्बन्ध' न रखता हो।" पाल पिट्रोविच ने फिर मक्खन उठाते हुए कहा।

"नहीं, ऐसा आदमी जो प्रत्येक वस्तु की समीक्षा तर्क के दृष्टिकोण से करता है।" आरकाडी ने संशोधन करते हुए कहा।

"पर ये तो दोनों ही बातें एक हैं ?" पाल पिट्रोविच ने कहा।

"नहीं, नहीं। निहिलिस्ट वह आदमी है जो किसी भी 'अधिकारी' के सामने नहीं झुकता, या किसी भी सिद्धान्त को केवल विश्वास के आधार पर नहीं मान लेता, चाहे वह (सिद्धान्त) कैसा ही पवित्र क्यों न हो।"

"इसका परिणाम क्या होता है ?" पाल पिट्रोविच ने पूछा।

"वह तो व्यक्ति पर निर्भर है। किसी के लिये यह शुभ है, और किसी के लिये नाशकारक।"

"अच्छा। पर हम वयःप्राप्त लोग तो इसका और ही अर्थ लगाते हैं। हम पुरानी पीढ़ीवालों का तो यह ख़याल है कि निहिलिस्ट उसी को कहते हैं, जिसका कोई सिद्धान्त न हो। (पाल पिट्रोविच ने ये शब्द काफ़ी नम्रतापूर्वक कहे। उसका उच्चारण भी फ्रेंच की कोमलता से संयुक्त था; पर आरकाडी के उच्चारण में इस बात का अभाव था)—सिद्धान्तों के बिना जीवन-क्षेत्र में एक क़दम भी नहीं रक्खा जा सकता, न साँस

ही ली जा सकती है। भगवान तुम्हारी तन्दुरुस्ती क़ायम रक्खे, और तुम्हें जनरल का ओहदा दे, 'निहिल महाशयो'—कैसे उच्चारण करते हैं इसका ?"

"'निहिलिस्ट महाशयो।'" आरकाडी ने स्पष्ट स्वर में कहा।

"ठीक है। पहले इस देश में हेजेलिस्टों का बोलबाला था, अब निहिलिस्टों की बढ़ती हो रही है—ईश्वर तुम्हें तन्दुरुस्ती और जनरल का पद दे, पर देखना यह है कि तुम एक नितान्त शून्य और वायु-रहित आकाश में क्योंकर स्थित रह सकते हो। ज़रा घण्टी बजाना निकोलाई, मेरा कोको पीने का समय हो गया है।"

निकोलाई पिट्रोविच ने घण्टी बजायी और दुनियाशा को आवाज़ भी दी; पर उसकी बजाय थेनिश्का आती दिखायी दी। यह एक तेईस वर्ष की नव युवती थी, फिर भी उसका शरीर पीलासा और अत्यन्त कोमल दीखता था। उसकी आखें और केश काले, ओंठ बच्चों के से लाल और कुछ मोटे-से, तथा हाथ सुकोमल थे। उसने स्वच्छ सूती गाउन पहन रक्खा था और कन्धों पर एक नया नीला रूमाल डाल रक्खा था। हाथ में वह कोको की एक बड़ी प्याली लिये हुए थी। पास आकर उसने लज्जालु-भाव से प्याली पाल पिट्रोविच के सामने रख दी। उस समय उसके पीले कपोलों पर क्षण-भर के लिये लालिमा छा गयी। वह कुछ देर तक मेज़ के पास आँखें नीची किये और

मेज़ पर उँगलियाँ टेके खड़ी रही। यद्यपि ऐसा मालूम होता था कि वह अपने यहाँ आने पर अफ़सोस कर रही है; तो भी उसकी आकृति से यह प्रतीत होता था, जैसे वह यहाँ आना अपना अधिकार समझती है।

पाल पिट्रोविच ने भवें चढ़ाकर देखा, और निकोलाई पिट्रोविच घबरा-सा गया।

"गुड् मार्निंग थेनिश्का* !" निकोलाई ने कहा।

"गुड् मार्निंग !" थेनिश्का ने अपने धीमे और स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया। इसके बाद उसने आँखें फेरकर आरकाडी की ओर देखा, और आरकाडी प्रिय भावना से उसकी ओर देखकर मुस्करा उठा। अन्त में वह धीरे-धीरे प्रमत्त चाल से वहाँ से वापस चली गयी। उसकी चाल में एक प्रकार की विशेषता थी।

कुछ देर तक तीनों ही चुप रहे। पाल पिट्रोविच ने कोको पीने के बाद सिर उठाया।

"निहिलिस्ट महाशय शीघ्र ही हम लोगों को अपने सत्संग का सौभाग्य प्रदान करेंगे।" पाल ने सहसा कहा।

बात सच निकली। फुलवाड़ी के दूसरे छोर पर बज़ारोव क़दम बढ़ाते हुए आता दिखलायी दिया। उसके जाकेट और पाजामे पर कीचड़ की मोटी तह जमी थी और उसके पुराने ढंग की टोपी में दल-दल में उगे हुए पौधों के काँटेदार फूल

---

*सुबह की सलाम।

चिपटे हुए थे। हाथ में उसने एक छोटा-सा झोला ले रक्खा था। झोला रह-रहकर फूलता और पचकता था, जिससे मालूम होता था कि उसमें कोई चीज़ ऐसी रक्खी है जो सजीव है और उकस-पुकस रही है। वह लम्बी डग भरकर उस चबूतरे के पास पहुँचा, जिसपर ये तीनों नाश्ते की मेज़ पर बैठे उसकी ओर देखा रहे थे। आते ही उसने सबको सिर झुकाकर कहा—

"गुड् मार्निंग सज्जनो ! मुझे देरी हो गयी, माफ़ कीजिएगा। मैं अभी आ रहा हूँ—ज़रा पहले मैं अपने क़ैदियों को रख आऊँ।"

"कैसे क़ैदी हैं यह ?" पाल पिट्रोविच ने पूछा—"क्या जोंकें हैं ?"

"नहीं, मेंढक हैं।"

"आप इन्हें खाते हैं, या पालते हैं ?"

"मैं इन्हें परीक्षण के लिये पकड़ता हूँ।" कहकर वह बेपर्वाही के साथ मकान की तरफ़ चला गया।

"दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यह इन्हें हलाल करेगा," पाल पिट्रोविच ने कहा—"इसका यह मतलब है कि यह सिद्धान्तों की अपेक्षा मेढकों पर अधिक विश्वास रखता है।"

आरकाडी ने अपने चाचा की ओर भर्त्सनापूर्ण दृष्टि से देखा, निकोलाई पिट्रोविच ने भी अपने कन्धे हिलाये, जिस से

पाल को मालूम हो गया कि उसकी दिल्लगी बेमौक़े की हुई है। उसने तुरन्त वार्तालाप का विषय बदलकर ज़मींदारी के प्रबन्ध और नये कारिन्दे की नियुक्ति की चर्चा छेड़ दी।

६

बज़ारोव घर से वापस आकर मेज़ के पास बैठ गया, और चुपचाप चाय पीने लगा। दोनों भाइयों ने उसकी ओर देखा। आरकाडी ने क्रुद्ध-भाव से अपने पिता और चाचा की ओर देखा।

"आप बहुत दूरतक टहलने चले गये थे?" अन्ततः निकोलाई पिट्रोविच ने पूछा।

"जंगल के पास दलदल तक। हाँ, एक बात याद आगयी, आरकाडी। मैंने जंगली मुर्ग़ों के पाँच झुण्ड उड़ाये हैं। शायद तुम उनके शिकारके लिये जाना पसन्द करोगे?"

"तो क्या आप शिकार नहीं करते?"

"जी नहीं।"

"इसका मतलब यह है कि आपको सब से ज़्यादा चिकित्सा-शास्त्र का का शौक़ है ?" पाल पिट्रोविच ने पूछा।

"जी, चिकित्सा-शास्त्र मुझे प्रिय है—विशेषकर प्रकृति-विज्ञान को मैं अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक पसन्द करता हूँ।"

मैंने सुना है कि 'जर्मनिक' लोगों ने इस विषय में बड़ा परिश्रम किया है ?" (पाल ने जर्मन को 'जर्मनिक' व्यंग-भाव से कहा, किन्तु उसके इस कटाक्ष पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।)

"सच है," बज़ारोव ने बेपर्वाही के साथ कहा—"वास्तव में इस विषय में तो जर्मन लोग हमारे उस्ताद हैं।"

"आप जर्मनों के सम्बन्ध में ऐसे उच्च विचार रखते हैं ?" पाल पिट्रोविच ने अपेक्षाकृत नम्र शब्दों में कहा, यद्यपि वह बज़ारोव से पहले काफ़ी रुष्ट मालूम पड़ता था। उस (पाल) का अमीराना स्वभाव, बज़ारोव का नितान्त शिष्टाचार-शून्य व्यवहार सहन करने के अनुकूल नहीं था। उसकी दृष्टि में यह डाक्टर का लड़का न केवल विनयशीलता से वञ्चित था, बल्कि वह वास्तव में कठोर स्वर में और अनिच्छापूर्वक प्रश्नों का उत्तर देता था। साथ ही उसके स्वर में रुखाई-सी भरी होती थी।

"वास्तव में उस देशके विद्वान् अपने अन्दर कुछ शक्ति रखते हैं।" बज़ारोव ने उत्तर दिया।

"ठीक है। और हमारे रूसी विद्वानों के सम्बन्ध में शायद आपकी सम्मति कम स्तुतिपूर्ण होगी ?"

"यदि आप कहने की आज्ञा दें, तो सच्ची बात तो यही है।"

"इससे तो आपकी प्रशंसनीय शालीनता प्रकट होती है।" पाल पिट्रोविच ने अपने शरीर को ज़रा झुकाकर सिर हिलाते हुए कहा—"पर इसका क्या कारण है, जैसा कि आरकाडी ने अभी हमें बतलाया है, कि आप किसी विषय में किसी को अधिकारी नहीं मानते ? क्या आप अधिकारियों पर विश्वास नहीं करते ?"

"विश्वास क्यों करूँ ? संसार में क्या कोई चीज़ विश्वसनीय है ? किन्तु यह निश्चित बात है कि यदि मुझसे तथ्यपूर्ण बात कही जाय, तो मैं उससे सहमत हो सकता हूँ—बस इतना ही।"

"अच्छा, तो जर्मन लोग केवल तथ्यों तक ही सीमित रहते हैं ?" पाल पिट्रोविच ने चेहरे से एक भिन्न भाव प्रकट करते हुए कहा। ऐसा मालूम होता था कि उसका दिमाग़ सातवें आसमान पर पहुँच गया है।

"नहीं, सब जर्मन नहीं।" बज़ारोव ने जँभाई लेकर कहा। स्पष्ट बात यह थी कि वह उस बहस को जारी नहीं रखना चाहता था। इधर पाल पिट्रोविच ने आरकाडी की ओर देख-कर कहा—"तुम्हें यह मानना पड़ेगा कि तुम्हारे मित्र शिष्टाचार ख़ूब जानते हैं !"

"रही मेरी बात," उसने बात जारी रखते हुए आकर्षक ढंग से चेष्टापूर्वक कहा—"सो मैं, एक मरणशील और श्रम-शील आदमी होने के नाते जर्मनों का पक्ष नहीं लेता। यह सच

है कि इस श्रेणी में मैं रूसी-जर्मनों को नहीं सम्मिलित करता, जो एक प्रकार के मुसाफ़िर हैं, बल्कि मैं उन जर्मनों को लेता हूँ, जो जर्मनी में ही रहते हैं। मैं उनकी बात नहीं मान सकता। कोई समय था जब जर्मनी ने शिलर और,······और क्या नाम था उसका ?···गेटे जैसे महान् लेखक पैदा किये थे। इन दोनों लेखकों के प्रति मेरा भाई काफ़ी प्रशंसा के भाव रखता है। पर अब तो जर्मन राष्ट्र पूर्णतः रसायन-शास्त्रियों और जड़वादियों का राष्ट्र हो गया है।"

"एक अच्छा रसायन-शास्त्री आपके बीसों कवियों के बराबर होता है।" बज़ारोव ने कहा।

"ठीक है," पाल पिट्रोविच अपनी भवों को ज़रा इस प्रकार झुकाकर, जैसे वह सोने का उपक्रम कर रहा हो, बोला—"हाँ, तब तो मैं यह समझता हूँ कि आप कला को न मानकर विज्ञान पर विश्वास करते हैं ?"

"मैंने आप से पहले ही कह दिया कि मैं विश्वास किसी भी बात पर नहीं करता। आख़िर विज्ञान है क्या चीज़—मेरा मतलब सामूहिक या व्यापक विज्ञान से है ? विज्ञान व्यापार और पेशे के रूप में भी स्थित रह सकता है; किन्तु व्यापक विज्ञान के सम्बन्ध में यह बात लागू नहीं होती।"

"बहुत अच्छा। किन्तु आप जो ढंग अख़्तियार कर रहे हैं, वह मनुष्य की अन्य आवश्यकताओं के सम्बन्ध में बिल्कुल शून्य में परिणत हो जाता है ?"

"यह क्या ?" सहसा बज़ारोव ने उत्तर दिया—"क्या यहाँ कोई सैद्धान्तिक परीक्षा हो रही है ?"

पाल पिट्रोविच का चेहरा पीला हो गया," और निकोलाई पिट्रोविच ने बहस में दखल देने का यही उचित अवसर समझा।

"नहीं, इस विषय पर फिर बहस करली जायगी," उसने कहा—"और फिर, इवजिनी वैसिलिच महोदय, आपके विचारों से पूर्णतः अवगत होजाने के बाद हम लोग अपने विचार प्रकट करेंगे। व्यक्तिगत रूप से मुझे इस बात की ख़ुशी है कि आप प्रकृति-विज्ञान में दिलचस्पी रखते हैं। उदाहरण के रूप में मुझे अभी हाल में मालूम हुआ है कि लीबिग* ने भूमि के विकास के बारे में कई आश्चर्यजनक आविष्कार किये हैं। फलतः सम्भव है कि आप मुझे कृषि-सम्बन्धी मामलों में कुछ महत्वपूर्ण परामर्श दे सकें।"

"मैं हमेशा आपकी सेवा के लिये तैयार मिलूँगा," बज़ारोव ने कहा—"पर लीबिग से हमें क्या मतलब ? पुस्तक पढ़ने के पहले अक्षर-ज्ञान की आवश्यकता होती है। अभी तो हमने क, ख भी नहीं शुरू किया।"

"आप निहिलिस्ट हैं, यह तो स्पष्ट हो गया।" निकोलाई पिट्रोविच ने कहा। फिर वह ज़रा उच्च स्वर में बोला—"फिर

---

* जेस्टर फ्रीर वान लीबिग (१८०३-१८७३ ई०) एक प्रख्यात जर्मन रसायन-शास्त्री था, जिसने कृषि-रसायन का आविष्कार किया था।

भी आप समय-समय पर मुझे सहायता देते रहें। पाल, मैं समझता हूँ, अब कारिन्दे से बात करने का वक्त हो गया है।"

पाल पिट्रोविच कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"हाँ," उसने किसी की ओर देखे बिना ही कहा—"सचमुच पाँच वर्ष तक देहात में रह जाना बड़ा ही बुरा हुआ, इससे हमारे मानसिक उत्कर्ष का ह्रास हो गया, क्योंकि हम उच्च कोटि के मनुष्यों से बिल्कुल पृथक् हो गये हैं। अगर कोई मूर्ख है, तो यह देखकर वह और भी मूर्ख बन जाता है कि कोई चाहे सीखी हुई बात को न भूलने का कितना ही प्रयत्न क्यों न करे, किन्तु धीरे-धीरे एक के बाद दूसरे आविष्कार इस बात को सिद्ध कर देते हैं कि हमने जो ज्ञान-सम्पादन किया है, वह तुच्छ है और धीमान लोग उसकी चर्चा व्यर्थ समझते हैं, तथा हम समय से बहुत पीछे रह गये हैं। पर ऐसे मामले में किया क्या जाय? यह बात स्वतः प्रमाणित है कि नयी पीढ़ी के लोग हम से अधिक ज्ञान रखते हैं।"

इसके बाद पाल धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़ा। निकोलाई पिट्रोविच भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

"क्या पाल पिट्रोविच हमेशा यहीं रहते हैं?" दोनों भाइयों के चले जाने के बाद बज़ारोव ने आरकाडी से पूछा।

"हाँ, यहीं रहते हैं; पर सुनो इवजिनी, तुमने मेरे चचा के साथ बड़े कठोर ढङ्ग से वार्तालाप किया है। तुमने उन्हें क्रुद्ध कर दिया।"

"क्या ? तो क्या मैं इन दहक़ानी अमीरों की चापलूसी करूँ, चाहे इनका व्यवहार बिलकुल ही छल और कृत्रिमता से भरा हुआ क्यों न हो ? पाल पिट्रोविच की प्रकृत्ति ऐसी ही थी तो उन्हें सेंट पीटर्सबर्ग में ही रहना चाहिए था । इनकी पर्वाह मत करो । जानते हो, मैं एक अद्भुत जल-जन्तु का नमूना लाया हूँ । उसका नाम है 'डाइटिसकस मार्जिनेटस' । इसे जानते हो ? तुम्हें दिखाऊँगा ।"

"मैंने तुमसे इनका इतिहास बतलाने का वादा किया था न?

"किनका ? जल-जन्तुओं का ?"

"नहीं; चाचा का । इससे तुम्हें मालूम हो जायगा कि वह ऐसे आदमी नहीं हैं, जैसा तुमने समझ रक्खा है; वे तो ऐसे पुरुष हैं जो करुणा के पात्र होते हैं; उपहास के नहीं ।"

"मैं इस पर बहस नहीं करना चाहता । पर तुम उनके भक्त कैसे बन गये ?"

"नहीं, हमें हमेशा न्याय्य-व्यवहार करना चाहिए ।"

"मैं तुम्हारा अभिप्राय नहीं समझ रहा हूँ ।"

"अच्छा तो सुनो ।"

इसके बाद आरकाडी ने जो कहानी सुनायी, उसका वर्णन अगले पृष्ठों में मिलेगा ।

७

"अपने भाई की तरह पाल पित्रोविच किरसानोव ने भी आरम्भिक शिक्षा घर पर ही प्राप्त की थी और उसके बाद सरकारी फ़ौज में भर्ती हुए थे। अपने सजीलेपन और सौन्दर्य के कारण वह बचपन से ही मशहूर थे। उनमें आत्म-विश्वास, और विनोदप्रियता की वह आदत स्वभाव से ही थी, जो सबको प्रसन्न रखने की एक विशेषता रखती है। इसीलिये उन्हें जब अफ़सरी का कमीशन* प्राप्त हुआ, तो वह समाज में स्थिति बनाने, अपने पैर जमाने और अपनी विनोदप्रियता को

---

*उस समय रूस में अफ़सरी का कमीशन तब मिला करता था, जब किसी को सरकारी नौकरी में अफ़सर के पद पर स्थायी रूप से नियुक्त कर लिया जाता था।

चरितार्थ करने के लिये लोगों से खूब मिलने-जुलने लगे। जुआ खेलकर धन उड़ाने की बुरी लत भी उन्हें लग गयी। किन्तु ये सब चीज़ें लोगों में उनका व्यक्तित्व चमकाने के लिये उपयुक्त सिद्ध हुई—स्त्रियाँ उन पर मरने लगीं और पुरुष ईर्ष्या करने। इन्हीं दिनों उन्होंने किराये का एक मकान लिया, जिसमें उन्होंने अपने भाई को भी, जिन्हें स्वभाव से भिन्न होने पर भी वे वास्तव में प्रेम करते थे, साथ रक्खा। दोनों भाइयों में और बातों के साथ यह असमानता भी थी कि निकोलाई पिट्रोविच का मुख-मण्डल छोटा, दयालुतापूर्ण, अधिक उदास तथा आँखें छोटी और काली थीं। वह पड़े-पड़े पढ़ते रहने और किसी भी बात से उत्तेजित न होने के अभ्यस्त थे; कभी किसी सामाजिक कार्य में भाग लेना पड़ता, तो वह घबरा उठते। इसके विपरीत पाल पिट्रोविच को कभी शाम के वक्त़ किसी ने घर पर देखा ही नहीं; शारीरिक स्फूर्ति दिखाने में वह मशहूर थे और साहसपूर्ण कार्य किया करते थे। यह पाल का ही दम था, जिसने उस ज़माने के अमीर युवकों में व्यायाम का प्रचार किया था। पढ़ने के नाम को तो उन्होंने अधिक-से-अधिक पाँच-छः फ्रेंच उपन्यास पढ़े थे। अट्ठाईस वर्ष की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते वह कप्तान बन गये, और उनका भविष्य और भी उज्ज्वलतर दिखायी देने लगा था; किन्तु जैसा कि आगे बतलाया जायगा, अकस्मात् सारी बातें एकदम पलट गयीं।

"उस समय के सेण्ट पीटर्सबर्ग के समाज में कभी-कभी रा······नाम की एक राजकुमारी अनिश्चित समय का अन्तर दे-देकर दिखलायी दिया करती थीं, जिस की स्मृति अब भी जीवित प्रतीत होती है। उसकी शादी यद्यपि एक ऊँचे घराने के सुन्दर (किन्तु कुछ-कुछ बेवकूफ़) पति के साथ हुई थी, पर उसके कोई सन्तान नहीं थी, और वह कभी बिना किसी उद्देश्य के अकस्मात् विदेश-यात्रा के लिये चल देती, तो कभी अप्रत्याशित रूप में पुनः रूस में आधमकती। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि वह एक अद्भुत प्रकार का जीवन व्यतीत करती थी और सर्वसाधारण में एक दुश्चरित्रा स्त्री समझी जाती थी। वह सब प्रकार की विलास-सामग्री से लिप्त रहती थी, बाल-नृत्यों में तब तक नाचती रहती, जब थककर बिल्कुल बेक़ाबू नहीं हो जाती। शाम को खाना खाने के पूर्व अँधेरे ड्राइङ्ग रूम की धीमी रोशनी में युवकों के साथ हास-परिहास करती थी। फिर भी आश्चर्य की बात यह थी कि जब रात अधिक बीतती तो वह रोने लगती और ज्यों-ज्यों रात अधिक बीतती उसका रोना, प्रार्थना करना, हाथ मलना बढ़ता जाता था, यहाँ तक कि वह आराम नहीं कर सकती थी और सुबह होने तक कमरे में टहलती रहती, या अगर प्रार्थना की पुस्तक के पास बैठ भी जाती, तो उसका सारा शरीर पीला, निर्जीव और ठंडा हो जाता था; किन्तु सूर्योदय के साथ ही वह फिर सांसारिक स्त्रियों की तरह गाड़ी में बैठकर इधर-उधर

फिरती, सबसे हँसती-बोलती और विक्षेप में डालने वाली प्रत्येक वस्तु पर जा गिरती थी। उसके सौन्दर्याकर्षण का ढंग भी निराला था, क्योंकि यद्यपि वैसे तो उसे कोई सुन्दरी न कहता (पर यह देखते हुए कि सौन्दर्य की ख़ास वस्तु नेत्र हैं, जो छोटे होने के पर भी अद्भुत चितवनवाले थे), किन्तु उसके केशों का रङ्ग और वज़न शुद्ध सोने-जैसा था, और वे लम्बाई में घुटने चूमते थे। वह चितवन!—वह ऐसी चितवन थी, जो साहस और तल्लीनता के समय उदासीनतायुक्त मालूम होती थी; किन्तु वह होती ऐसी रहस्ययुक्त थी कि जिस समय उसकी ज़बान से वाहियात और अवाञ्छनीय शब्द भी निकल रहे हों, तो भी उस (चितवन) में एक सूक्ष्म और असाधारण बात दीखती थी। उसका पहनावा अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि का था।

"यह स्त्री पाल पिट्रोविच को एक बाल-नृत्य में मिली; और वहाँ वह उसके साथ नाचे। तो भी, यद्यपि नाचते समय उसने मुँह से एक शब्द भी ऐसा नहीं निकाला कि जिससे उसकी बुद्धिमत्ता का पता चलता, फिर भी वह (पाल) उस पर मुग्ध हो गये, और एक हर मामले में विजय प्राप्त करने के अभ्यस्त होने के कारण, यहाँ भी उन्होंने विजय प्राप्त की। किन्तु आश्चर्य की बात तो यह थी कि इस सफलता पर भी वे ठंडे नहीं हुए, वरन् दिन-पर-दिन अधिक दृढ़ता और अतृप्ति के साथ उससे सम्बद्ध होने लगे। वह स्त्री ऐसे स्वभाव की थी, कि आत्म-समर्पण के बाद भी उसके अन्दर कोई ऐसी बात अविकल रूपसे गुप्त

मालूम होती रहती थी, जिसपर वह (पाल) आरम्भ से ही अधिकार नहीं कर सके थे—यह बात ऐसी थी, जिसे आजतक कोई नहीं समझ सका है। उसी आत्मा में क्या बात थी, यह ईश्वर ही जानता है। ऐसा मालूम होता था कि वह किसी रहस्य-पूर्ण शक्ति के अधीन है, जिसके अस्तित्व तक से वह नितान्त अपरिचित है, और वही शक्ति उसे मन-माने खेल खिला रही है—यहाँतक कि उस (शक्ति) की हुंकार को वह अपने क़ाबू में नहीं रख सकती। उसके व्यवहार में सदैव अनेक असंगतताएँ पायी जाती थीं, और जो-कुछ दो-चार पत्र उसने पाल पिट्रोविच को लिखे और भेजे, (जिन्हें यदि उसका पति देख पाता, तो उसे सन्देह हुए बिना न रहता) वे उस अवस्था के थे, जब उस की उन (पाल) से अधिक घनिष्टता नहीं हो पायी थी। जिस समय उसका प्रेम सफल होने लगा, वह अनमनी-सी रहने लगी; अपने प्रेमी के साथ मुस्कराना और दिल्लगी तक करना उसने छोड़ दिया और वह उनकी ओर देखने और उनकी बात सुनने तक में अनिच्छा प्रकट करने लगी। वास्तव में उस समय ऐसा भी अप्रत्याशित अवसर आया, जब उसकी यह अनिच्छा कभी-कभी भयानक घृणा के रूप में परिवर्तित हो जाती थी और उसके चेहरे से जड़ता के भाव व्यक्त होते थे; ऐसा मालूम होता था कि उसका मुख किसी मृत स्त्री का है। ऐसी अवस्था में वह अपने शयानागार में जाकर अन्दर से किवाड़ बन्द कर लेती थी। उसकी दासी चाबी के सूराख़ से कान लगाकर सुनती,

तो उसकी विषाद और निराशा से भरी हुई सिसकियाँ सुनाई देती थीं। अक्सर पाल पिट्रोविच जब ऐसी नाज़ुक मुलाक़ात से वापस लौटते, तो उनका हृदय ऐस कड़ुवेपन और झुँझलाहट के आवेश से पूर्ण होता था, जो अटल असफलताओं के समय उत्पन्न होता है। वह व्याकुल होकर मन-ही-मन कहते—'मैं और क्या चाह सकता था ?' वह सदा इस प्रकार बोलते थे, मानों उसके हृदय में कोई गुप्त पीड़ा हो रही है।

"एक बार उन्होंने उस स्त्री को एक ऐसी अँगूठी दी, जिसके नग में स्फिंक्स* का चित्र खुदा था।

'क्या ?' वह तुनककर बोली—'तुम मुझे स्फिंक्स दे रहे हो ?'

"हाँ," उन्होंने उत्तर दिया—"तुम खुद स्फिंक्स हो।"

'मैं ?' उसने धीरे से रहस्यमयी आँखे उठाकर पूछा—"तुम चापलूसी कर रहे हो !"

"यह कहकर वह मुस्करा पड़ी, पर उसकी आँखों में एक ऐसा भाव दियायी दिया, जो पहले कभी दृष्टिगोचर नहीं हुआ था।

"उस समय भी जब वह राजकुमारी पाल को प्रेम करती थी, उनको कठिनाइयों की सीमा नहीं थी; पर जब शीघ्र ही उसने उनकी ओर से मुँह मोड़ लिया, तो वे पागल-से हो गये।

---

*ग्रीक पौराणिक गाथाओं में वर्णित एक राक्षस जिसका धड़ सिंह का और मुख स्त्री का माना जाता है।

ईर्ष्याकुल होकर उन्होंने उसे आराम नहीं करने दिया; बल्कि उसके पीछे यहाँ तक पड़ गये कि अन्त में उनके लगातार के सन्देशों से उकताकर वह विदेश-यात्रा को चली गयी। फिर भी पाल पिट्रोविच ने न तो अपने दोस्तों की प्रार्थना पर ध्यान दिया, न अपने उच्च अफ़सरों का परामर्श माना, और इस्तीफ़ा देकर राजकुमारी के पीछे लग गये। चार वर्ष तक ये उसका पीछा करते रहे। कभी वह इन्हें दीखती, कभी ग़ायब हो जाती—और यद्यपि वे अपने इस कृत्य पर बराबर लज्जा का अनुभव करते रहे और अपनी आत्महीनता पर घबरा उठे; पर इससे उनके व्यवहार में कोई भी अन्तर नहीं आया—उसकी मूर्ति—उसकी छलपूर्ण, मोहिनी और लुभावनी मूर्ति—जो उनकी आँखों के सामने हमेशा नाचा करती थी, उनके हृदय में गहरी जड़ पकड़ गयी। अन्ततः बादेन-नगर में वे दोनों एक बार फिर मिले; और यद्यपि उन्हें उसके इस बार के व्यवहार से प्रतीत हुआ कि इससे बढ़कर प्रेम उसने उन्हें कभी किया ही नहीं था; पर एक मास भी नहीं पूरा हो पाया था कि फिर बिगाड़ हो गया और इस बार की जुदाई आख़िरी जुदाई हो गयी। वह अग्नि-शिखा की भाँति अन्तिम लपक दिखाकर चली गयी। यह सच है कि इस पार्थक्य का अनुमान उन्होंने पहले से ही कर लिया था; फिर भी वे उसके साथ मित्रता निभाने का प्रयत्न इस प्रकार करते रहे, मानों ऐसी स्त्रियों के साथ सदा दोस्ती क़ायम रखना कोई सम्भव बात है। बादेन से

चुपचाप निकल जाने के बाद वह सदा चतुरतापूर्वक उनकी नज़र बचाती रही और इस प्रकार उसने उनका मनोरथ विफल कर दिया। रूस लौटकर उन्होंने पूर्ववत् जीवन व्यतीत करना चाहा, पर किसी भी तरह पुरानी लकीर पर नहीं चल सके। जिस प्रकार विष-बुझे तीर का मारा आदमी व्याकुल होकर इधर-उधर फिरता है, उसी प्रकार वे फिर समाज में सब बन्धनों को मानते हुए इधर-उधर फिरते रहे। नहीं, उन्हें दो-तीन नयी विजय प्राप्त करने का गौरव भी प्राप्त हुआ। परन्तु नहीं; वे जो बात चाहते थे, वह न तो स्वयं प्राप्त कर सकते थे, न औरों के लिये ही वह प्राप्य हो सकती थी, क्योंकि उनकी आरम्भिक शक्ति चली जा चुकी थी, और उनके बाल धीरे-धीरे सफ़ेद होने लगे थे। क्लब में जाकर वह बेकार और रोगी-से बैठे रहते थे, अधिक हुआ तो कभी-कभी अविवाहित नवयुवकों के साथ बहस भी कर लिया करते थे। यही उनका पेशा हो गया था। हम लोग जानते ही हैं कि यह मनुष्य को निकृष्टतर बनानेवाले चिह्न हैं। इसीलिये उन्होंने शादीका विचार भी त्याग दिया।

"इस प्रकार दस वर्ष निष्फल और फीके ढंग से व्यतीत हो गये। फिर भी पाल के लिये यह समय बीतने में बहुत शीघ्रता हुई, क्योंकि संसार में कहीं भी समय इतनी जल्दी नहीं गुज़रता जैसा रूस में (हाँ, क़ैद में ज़रूर कुछ समय काटकर वर्षों की अवधि शीघ्र समाप्त कर दी जाती है।); इसके बाद अन्ततः एक रात को क्लब में खाना खाते समय उन्होंने सुना कि

राजकुमारी का देहान्त हो गया—और पेरिस में देहान्त के समय उसे उन्मांद रोग हो गया था। यह खबर सुनकर वह कुर्सी से उठ खड़े हुए और क्लब के कमरों में टहलने लगे। उनका चेहरा मुर्दों का सा हो गया था; टहलते-टहलते कभी-कभी ताश खेलनेवालों की मेज़ों के पास रुककर वे देख लेते थे—इसी प्रकार घर लौटने के समय तक वे वहाँ टहलते रहे। समय हो जाने पर वे घर के लिये रवाना हुए। ज्यों ही वे घर पहुँचे, तो उन्हें एक पार्सल मिला, जिसमें वही अँगूठी थी, जो उन्होंने राजकुमारी को दी थी। उसके नग पर जहाँ स्फिंक्स का चित्र था, उस पर क्रास* खुदा था। अँगूठी के साथ एक पत्र भी था, जिसमें लिखा था कि क्रास के द्वारा वह रहस्य हल हो गया है।

"यह बात उस समय (सन् '४८ के आरम्भ) की है, जब निकोलाई पिट्रोविच की स्त्री का देहान्त हो गया था और वे सेण्ट पीटर्सबर्ग में रहने लगे थे, और चूँकि निकोलाई का विवाह और पाल की प्रेमिका के प्रणय का आरम्भ एक ही समय में हुआ था, अतः पाल अपने भाई से उन्हीं दिनों से नहीं मिल पाये थे, जब से वे (निकोलाई) गाँवों में आकर रहने लगे थे। यह सच है कि पाल विदेश से लौटकर निकोलाई के पास आये थे और दो मास उनके साथ रहना चाहते थे तथा इस प्रकार उनकी प्रसन्नता पर बधाई देना चाहते थे; पर पाल एक

* धनाकार (+) धार्मिक चिह्न।

सप्ताह से अधिक नहीं ठहरे, क्योंकि दोनों भाइयों की स्थिति में बड़ा अन्तर हो गया था, और अब भी, यद्यपि वह अन्तर निकोलाई की स्त्री—मेरी माँ—का शरीरान्त हो जाने और पाल की स्मृतियाँ (जिन्हें राजकुमारी की मृत्यु के बाद वे भूल जाने की चेष्टा कर रहे थे) नष्ट हो जाने के कारण, थोड़ा-बहुत लुप्त हो गया है, फिर भी, मैं कहता हूँ, दोनों की स्थितियों में अन्तर विद्यमान है, क्योंकि निकोलाई पिट्रोविच अपने पूर्व जीवन पर सन्तोष प्रकट कर सकते हैं और अपने नवयुवक पुत्र—मुझ—को देखकर परितुष्टि का अनुभव कर सकते हैं, पर पाल पिट्रोविच अब भी अकेले और अविवाहित हैं, और उन धुँधले दिनों में प्रवेश करने जा रहे हैं, जब आशा का स्थान शोक ग्रहण कर लेता है, और जवानी को खदेड़कर वृद्धावस्था शीघ्र आ घेरने-वाली होती है। पाल पिट्रोविच के लिये यह समय बड़ा ही दुःखद है; अपने भूत-काल को खोकर उन्होंने अपना सर्वस्व खो दिया।

"'मैं तुम्हें मैरिनो चलने के लिये आमन्त्रित नहीं करूँगा'" निकोलाई ने अपने भाई से कहा था—'मेरी स्त्री के जीवन-काल में भी वह स्थान तुम्हारे लिये उपयुक्त नहीं सिद्ध हुआ, और अब तो वहाँ तुम्हारी जान ही निकल जायगी।'

"'ओह, उन दिनों तो मैं युवक था; बेवकूफ़ी और गर्व के मारे चूर हो रहा था,' पाल पिट्रोविच ने जवाब दिया—'अब चाहे मैं अधिक बुद्धिमान न हो गया होऊँ; पर अब मैं कम-से-

कम अपेक्षाकृत शान्त ज़रूर हो गया हूँ। इसलिये अगर तुम चाहो, तो मैं वहाँ चलकर स्थायी रूप से रह सकता हूँ।'

"जवाब में निकोलाई पिट्रोविच ने पाल का आलिंगन किया, और यद्यपि उन्हें यहाँ आये डेढ़ वर्ष हो गये; पर पाल ने अभी तक यह जगह नहीं छोड़ी—उन दिनों में भी वे यहाँ से कहीं नहीं गये, जब जाड़ों में निकोलाई पिट्रोविच अपने पुत्र के—मेरे—साथ रहने पीटर्सबर्ग चले गये थे। इधर उन्होंने पुस्तकों का अध्ययन शुरू कर दिया है और विशेष रूप से अंग्रेज़ी किताबें पढ़ने के शौक़ीन हो गये हैं। अपना जीवन भी उन्होंने अंग्रेज़ी आदर्श के अनुसार बनाना शुरू कर दिया है। वे अपने पड़ोसियों के पास शायद ही कभी जाते हैं और अधिक हुआ, तो चुनाव की सभाओं तक चले जाते हैं, जहाँ नियमानुसार ये चुपचाप बैठे रहते हैं, पर कभी-कभी पुराने विचार के ज़मींदारों के सामने नरम दल की बातें सुनाकर उन्हें खिजाने का आनन्द लिया करते हैं। नयी पीढ़ी के लोगों से वे बिल्कुल पृथक् रहते हैं। दोनों दलों के लोग यद्यपि उन्हें अहङ्कारी समझते हैं, फिर भी उनकी इज़्ज़त करते हैं। वे उनकी सुसंस्कृत अमीरी चाल-ढाल के कारण और इनके पूर्व जीवन की कथा सुनकर ही ऐसा करते हैं। उनके पहनने-ओढ़ने का ढङ्ग और खान-पान की उच्चता भी उनकी प्रतिष्ठा-वृद्धि का कारण है। वे सब से अच्छे होटल में सब से सुन्दर जगह प्राप्त करते और प्रदि दिन बहुमूल्य चीज़ें खाते हैं। लुई फ़िलिप के दरबार में इन्होंने ड्यूक आफ़ वेलिंगटन के साथ

खाना खाया था और हमेशा अपने साथ चाँदी के पात्र और सफ़री स्नानपात्र रखते हैं, दुष्प्राप्य सुगन्धियों का सेवन करते हैं और ताश के विख्यात खिलाड़ी हैं। इन सब कारणों से उनकी प्रतिष्ठा सर्वत्र अनिवार्य हो गयी है। महिलाएँ भी उन्हें आकर्षक दुखिया समझती हैं; पर इधर बहुत दिनों से उन्होंने उन (महिलाओं) से मिलना-जुलना बन्द कर रक्खा है।

"समझे भाई इवजिनी," आरकाडी ने कहानी समाप्त करते हुए कहा—"मेरे चचा को तुमने ग़लत समझा है। इसके अतिरिक्त मैं यह कहना भूल गया कि उन्होंने अनेक बार अपना सारा रुपया (जो जायदाद का न होकर उनकी स्वार्जित सम्पत्ति थी) लगाकर मेरे पिता को सर्वनाश से बचाया है, और ज़रूरत पर वे हरेक की मदद के लिये तैयार रहते हैं, ख़ासकर किसानों का पक्ष विशेष रूप में लेते हैं, यद्यपि उनसे बातें करते समय वे मुंह बनाकर बोलते हैं, और बातचीत शुरू करने के पहले यू-डी-कोलन* खूब सूँघ लेते हैं।"

"हम सब जानते हैं कि इस प्रकार के लोगों का क्या मतलब होता है।" बज़ारोव ने कहा।

"शायद ऐसा ही हो। तो भी उन का हृदय शुद्ध है; वे मूर्ख भी नहीं हैं। मुझे तो उन्होंने बड़े ही उपयोगी आदेश दिये हैं—ख़ासकर स्त्रियों के सम्बन्ध में उनके उपदेश बड़े ही सुन्दर हैं।"

---

* एक सुगन्धित तरल पदार्थ।

"अह, हा! क्यों नहीं, दूध का जला छाछ फूँक-फूँककर पीता है, यह बात सच है।"

"संक्षेप में मैं यही कहूँगा," आरकाडी ने कहा—"कि वे अब एक ऐसे दुखी आदमी हैं कि जिसका दुःख दूर करने का कोई उपाय नहीं रहा है; ऐसे आदमी नहीं हैं जिस से घृणा की जाय।"

"पर उनसे घृणा कौन कर रहा है?" बज़ारोव ने कहा—"मैं तो सिर्फ़ यही कहता हूँ कि जिस आदमी ने एक स्त्री के प्रेम पर अपना सर्वस्व निछावर कर दिया और अब दाँव हार जाने पर चिड़चिड़े मिज़ाज का होकर बेकार हो गया है, मैं कहता हूँ वह तो मनुष्य—मर्द—है ही नहीं। तुम कहते हो कि वह दुखी हैं और तुम्हें उनके विषय में अवश्य ही मेरी अपेक्षा अधिक ज्ञान है; पर यह भी स्पष्ट है कि उन्होंने अभी तक अपनी मूर्खता नहीं छोड़ी है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि चूँकि वे बहुधा 'गैलिगनानी' का अध्ययन किया करते हैं, और हर महीने एक किसान को ऋण के बन्धन से मुक्त कर देते हैं, इसलिये वे अपने को कृतकृत्य समझते हैं।"

"पर ज़रा यह भी तो सोचो कि वे किस ज़माने के पले हुए हैं," आरकाडी ने प्रतिवाद करते हुए कहा—"उस समय का भी तो विचार करो, जब उन्होंने संसार में जीवन-यात्रा आरम्भ की थी!"

"किस ज़माने के 'पले हुए' हैं?" बज़ारोव ने जवाब में कहा—"इस से क्या, मनुष्य को अपने आप अपना पालन

करना चाहिए, जैसे मैं अपना पालन कर रहा हूँ—रही उनके 'ज़माने' की बात, सो मैं, या कोई भी अन्य आदमी, ज़माने पर क्यों निर्भर करे ? बल्कि चाहिये तो यह कि उल्टे ज़माना हम पर निर्भर करे। नहीं, दोस्त, दोष तो इन्द्रिय-लोलुपता और ओछेपन का है, क्योंकि आख़िर स्त्री-पुरुष के तुच्छ रहस्यपूर्ण सम्बन्धों का निर्माण किस चीज़ से होता है ? एक शरीर-शास्त्र-वेत्ता की हैसियत से हम ठीक-ठीक जानते हैं, कि उन सम्बन्धों का निर्माण किन चीज़ों से होता है। आँख की रचना को ही लो। जिस आनुमानिक आधार की बातें तुम करती हो, वह इसमें कैसे लागू हो सकता है ? इस प्रकार का वार्तालाप कोरा काल्पनिक और वाहियात है और यह हल्कापन और कृत्रिमता से ओतप्रोत है। चलो, उन जन्तुओं का निरीक्षण करें।"

इसके बाद दोनों मित्र बज़ारोव के कमरे में गये, जहाँ उसने पहले से ही डाक्टरी चीर-फाड़ का वातावरण उपस्थित कर दिया था और तमाम कमरे में सस्ते तम्बाकू की सी दुर्गन्ध फैल रही थी।

———

८

जब निकोलाई पिट्रोविच अपने नये कारिन्दे से बातें करने लगा, तो पाल के लिये वहाँ देर तक ठहरना कठिन हो गया। कारिन्दा एक लम्बे क़द और चञ्चल आँखों वाला आदमी था। वह निकोलाई की प्रत्येक बात पर स्निग्ध और मीठे स्वर में "बहुत अच्छा! जो हुक्म!!" कहता था। ज़मींदारी की प्रबन्ध-प्रणाली को हाल में ही एक नये आधार पर पुनर्संङ्गठित किया गया था, और उसके फल-स्वरूप ऐसी चीख़-पुकार मची हुई थी, जैसी बग़ैर तेल लगाये गाड़ी के पहियों से आवाज़ निकलती है, या कच्ची लकड़ी का फर्नीचर बनाने पर सूखते ही उसका बुरा हाल होजाता है। यद्यपि निकोलाई पिट्रोविच ने अपने मन से विषण्णता का भाव दूर कर दिया था, पर इस नयी

व्यवस्था से उत्पन्न परिस्थिति के कारण वह प्रायः उदास रहता और ठंडी साँसें लिया करता था। वह इस बात की स्पष्टता को सोचता था कि उसका काम बिना रुपये के बढ़ नहीं सकता, और रुपये की कमी अब उसे स्पष्टतः दीख रही थी। आरकाडी का यह बयान कि पाल पिट्रोविच कभी-कभी अपने भाई की मदद कर दिया करता है, पूर्णतः सच थी, क्योंकि कई मौक़ों पर भाई की घबराहट देखते ही पाल पिघल उठता और चुप-चाप खिड़की के पास जाकर जेब में हाथ डालकर कहता—"रुपये मैं देता हूँ !" और उस कथन की पूर्ति करता। पर जिन दिनों की बात हम कर रहे हैं, पाल के पास नक़द रुपये नहीं थे; इसीलिये वह कहीं अन्यत्र टरक जाना ज़्यादा पसन्द करता था, ख़ासकर इसलिये भी कि ज़मींदारी के प्रबन्ध की ज़रा-ज़रा-सीं बातों से उसे कष्ट होता था और उसने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि यद्यपि उस प्रबन्ध-प्रणाली की अपेक्षा कोई सुगमतर पद्धति बतलाने में वह असमर्थ है, तो भी वह इस बात को समझता था कि इसमें दोष निकोलाई का ही है।

"वह पूर्ण चतुरता के साथ काम नहीं कर पाता," पाल कहा करता था—"ये लोग उसे यत्र-तत्र धोखा दिया करते हैं।"

दूसरी तरफ़ निकोलाई, पाल की चतुरता पर काफ़ी विश्वास रखता था और हमेशा उसकी सलाह लिया करता था।

"मैं कमज़ोर हूँ और जैसे बनता है समय काट देता हूँ।" वह कहा करता—"सारी ज़िन्दगी यों ही बिता दी है; लेकिन

तुमने ज़िन्दगी बेकार नहीं गँवायी है—तुम इस काम को अच्छी तरह जानते हो, तुम्हारी नज़र बहुत तेज़ है।"

पाल पिट्रोविच इस बात का कोई उत्तर नहीं देता था। वह अपने भाई की आँखें खोलने का प्रयत्न किये बिना ही प्रश्न को टाल देता था।

निकोलाई पिट्रोविच के अध्ययन-कक्ष से निकलकर पाल उस सायबान में आया जो मकान के अगले और पिछले भाग को अलग करता था और एक तंग दरवाज़े के पास पहुँचकर किसी अनिश्चित विचार को लिये हुए वहीं रुका रहा। क्षण-भर मूँछें नोचते रहने के बाद वह पैर ज़मीन पर सँभालकर रखते हुए चौकन्ना हो चौखट के पास पहुँचा।

"कौन है?" थेनिश्का ने अन्दर से कहा—"अन्दर आ जाओ।"

"मैं हूँ।" पाल पिट्रोविच ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

वह एकदम कुर्सी पर से उठ खड़ी हुई और गोद का बच्चा दाई को देकर (जिसे वह लेकर बाहर चली गई) अपने शरीर पर के कपड़े सँभालने लगी।

"तुम्हें तकलीफ़ दी, माफ़ करना," पाल पिट्रोविच ने उसकी ओर देखे बिना ही कहा—"पर मेरे यहाँ आने का मतलब यह है कि मैं ने सुना है तुम किसी को शहर भेज रही हो, सो क्या मेरे निजी इस्तेमाल के लिये थोड़ी-सी हरी चाय मँगवा सकोगी?"

"मँगा दूँगी," थेनिश्का ने कहा—"कितनी चाहिए?"

"मैं समझता हूँ आधा पौण्ड काफ़ी होगी। पर यह कैसा परिवर्तन हो गया!" उस ने कमरे के चारों ओर नज़र डालते हुए और विशेष रूप से थेनिश्का के मुख पर दृष्टि जमाते हुए कहा—"ख़ासकर ये पर्दे खूब अच्छे रहे।" अन्तिम वाक्य उसने तब कहा, जब यह समझ लिया कि थेनिश्का ने उसके 'परिवर्तन' का अर्थ नहीं समझा।

"जी हाँ—ये पर्दे अच्छे रहे। इन्हें खुद निकोलाई ही लाये थे, और ये यहाँ बहुत दिनों से टँग रहे हैं।"

"पर पिछली बार जब मैं तुम्हारे पास आया था, उस बात को बहुत दिन हो गये। अब यह जगह काफ़ी आरामदेह आलूम होती है। क्यों है न?"

"जी हाँ, इसके लिये निकोलाई पिट्रोविच को धन्यवाद है।" थेनिश्का ने धीरे से कहा।

"और यहाँ तुम्हें वहाँ की अपेक्षा अधिक आराम है या नहीं?" पाल पिट्रोविच ने नम्रता के साथ कहा। उसके मुख-मण्डल पर हास्य की रेखा बिल्कुल नहीं थी।

"जी, है।"

"और वहाँ अब तुम्हारे कमरों में कौन रहता है?"

"धोबिन।"

"ओह?"

पाल पिट्रोविच चुप हो गया, और थेनिश्का मन-ही-मन सोचने लगी कि वह (पाल) शीघ्र ही वहाँ से वापस चला

जायगा। पर पाल उस जगह से टस-से-मस नहीं हुआ, और थेनिश्का को उसके सामने खड़ी रहना पड़ा। घबराहट के मारे वह अपनी उँगलियाँ खोलने और बन्द करने लगी।

"तुमने बच्चे को यहाँ से क्यों हटवा दिया ?" अन्ततः पाल ने पूछा—"मैं तो बच्चों को प्यार करता हूँ। ज़रा मुझे उसको दिखला दो।"

घबराहट और प्रसन्नता के मारे थेनिश्का का मुँह लाल हो गया; और यद्यपि पाल पिट्रोविच उसे घबराहट में डालने का अभ्यस्त था; पर इस प्रकार का सम्बोधन वह कभी-कभी ही करता था।

"दनियाशाँ !"* उसने पुकारा। घर के प्रत्येक व्यक्ति को वह इसी प्रकार अन्य पुरुष बहुवचन में पुकारा करती थी—"मितिया को यहाँ लाओ, जल्दी करो! पर पहले उसे कपड़े पहना लो।" यह कहकर वह दरवाजे की ओर लपकी।

"कोई हर्ज नहीं!" पाल पिट्रोविच ने कहा।

"पर मैं अभी वापस आती हूँ।" कहकर वह बाहर निकल गयी।

अकेले खड़े-खड़े पाल ने चारों ओर बारीकी से निगाह डाली।

---

* फ्राँसीसी की तरह रूसी भाषा में भी सम्भाषण या सम्बोधन में नौकर-नौकरानी का नाम बहुवचन में लेना आदर-सूचक समझा जाता है।

वह छोटा और नीचा कमरा साफ़ और सुखदायक मालूम होता था, शीतल और शान्तिदायक सुगन्ध चारों ओर फैल रही थी। दीवार के सहारे सीधे पायों की कुर्सियाँ रक्खी थीं, जिन्हें स्वर्गीय जनरल ने पोलैन्ड के युद्ध के समय ख़रीदा था। एक कोने में पलँग बिछा था, जिस पर मलमल का बिछौना बिछा था, उसके पास ही एक बड़ा सन्दूक़ रक्खा था, जिस पर लोहे की पत्तियाँ जड़ी हुई थीं। उसके सामनेवाले कोने में अद्भुत करामातवाले साधु निकोलाई की विशाल, पर धुवें से मैली मूर्ति रक्खी हुई थी। साधु के मुख-मण्डल के चारों ओर फैले हुए प्रकाशवृत्त के ऊपर लाल धागा बँधा हुआ था। खिड़कियों पर गत वर्ष के अचार मुरब्बों से भरे हुए मर्तबान, जिनका मुँह पक्की मोहर से बन्द किया गया था, सजाकर रक्खे हुए थे। उनके ढकनों पर थेनिश्का के हस्ताक्षरों में "करौंदा" लिखा हुआ था। निकोलाई पिट्रोविच को यह चीज़ ख़ास तौर से पसन्द थी। छत से एक लम्बी रस्सी के सहारे एक पिंजरा लटक रहा था, जिसमें सिस्किन-पक्षी* बार-बार चहचहाकर ऐसा कूदता उछलता और पिंजड़े को इधर से उधर ले जाता था कि उसके लिये कटोरियों में रक्खे हुए दाने फ़र्श पर गिर रहे थे। दीवार पर दराज़ के ऊपर निकोलाई पिट्रोविच के घटिया पुराने और विभिन्न फ़ैशन के चित्र टँगे हुए थे, जिन्हें उसने एक

---

* तोते के रङ्ग का हरा पक्षी, जिसकी बोली बड़ी प्यारी होती है।

सफ़री फ़ोटोग्राफ़र से उतरवाया था। इन्हीं चित्रों के पास थेनिश्का का एक उससे भी घटिया चित्र लटक रहा था, क्योंकि उसमें चित्र की काली चौखट के अन्दर केवल एक नेत्र-हीन मुखाकृति कातर भाव प्रकट करती हुई अस्पष्ट-सी दिखायी दे रही थी, और थेनिश्का के चित्र के ऊपर एक चित्र इर्मोलोव का था, जिसमें वह एक बड़ा अँगरखा पहने भयानक रूप से तेवरी चढ़ाये काकेशस पर्वत की ओर देख रहा था। इर्मोलोव के ठीक सिरे पर एक रेशमी पिनकुशन* लटक रहा था, जिसकी आकृति जूते की सी थी।

लगभग पाँच मिनट के बाद पास के कमरे से किसी के कपड़े की सरसराहट और बातचीत की फुसफुसाहट की आवाज़ आयी। दराज़ में से पाल पित्रोविच ने एक मैली और कुत्ते के कान-जैसी टेढ़ी-मेढ़ी पुस्तक निकाली, जो मैसाल्स्की कृत 'दी स्ट्रीलित्सी' थी। उसने पुस्तक के कई पृष्ठ उलट-पुलटकर देखे। सहसा किवाड़ खुले और थेनिश्का मितिया को गोद में लिये हुए अन्दर आयी। बच्चे को अब उसने एक नया वस्त्र पहना रक्खा था और उसके गले में तसबीह डाल दी थी। उसका चेहरा धोकर साफ़ कर दिया गया था और बाल झाड़कर संवार दिये थे। बच्चा खर्राटे की आवाज़ के साथ साँस ले रहा था, अपने सारे शरीर को ऐंठ रहा था और एक स्वस्थ बालक की भाँति दोनों छोटी-छोटी बाहें झकझोर रहा था। उस नये

* एक डिबिया जिस में आलपीनें चुभोकर रक्खी जाती हैं।

और सुन्दर परिधान ने भी उसपर प्रभाव डाल दिया था और उसका चेहरा ख़ुशी के मारे खिला पड़ता था। थेनिश्का ने अपने केश भी साफ़ कर लिये थे और वस्त्र ठीक-ठाक करके परिष्कृत ढंग से अन्दर आयी थी—किन्तु यह सब न करती, तो भी कोई हर्ज नहीं था; क्योंकि संसार में एक सुन्दरी माता की गोद में एक स्वस्थ बालक से बढ़कर और क्या शोभा हो सकती है ?

"कैसा प्यारा बच्चा है !" पाल पिट्रोविच ने अपनी तर्जनी से मितिया की भारी ठुड्डी गुदगुदाते हुए कोमल भाव से कहा। बच्चे ने सिस्किन पक्षी की ओर देखकर मुस्करा दिया।

"ये चाचा हैं।" थेनिश्का ने बच्चे की ओर झुककर उसे धीरे से हिलाते हुए कहा। दनियाशा ने सुगन्धित धूनी जलाने के लिये खिड़की पर अब भी जलती हुई मोमबत्ती रख छोड़ी थी, और उसके नीचे एक दो कापेक* डाल रक्खे थे।

"कितने दिनका हुआ यह ?" पाल पिट्रोविच ने पूछा।

"छः महीने का। इस महीने की ग्यारह तारीख़ को सात महीने का होगा।"

"नहीं आठ का, थिवोडोसिआ निकोलाइवना।" दनियाशा ने डरते-डरते संशोधन किया।

"नहीं, सात का।"

इसी समय बच्चा रो उठा और उसने अपनी आँखें माँ के स्तन

*कापेक लगभग डेढ़ पैसे के बराबर होता है।

की ओर करके सहसा अपनी छोटी उँगलियों से उसका मुँह और नाक ढक दी।

"बदमाश!" माँ ने बच्चे के हाथ से अपना मुँह छुड़ाये बिना ही कहा।

"यह भाई को पड़ा है।" पाल पिट्रोविच ने कहा।

"तो और किसको पड़ता।" माँ ने उत्तर दिया।

"हाँ," पाल ने अपने को अर्द्ध-सम्बोधन करते हुए कहा—"मैं समानता देख रहा हूँ।" उसने तरुणी थेनिश्का पर उदासीन दृष्टि डालकर कहा।

"यह चाचा हैं।" उसने फिर बच्चे से कहा; पर इस बार उसकी आवाज़ धीमी थी।

"ओह पाल! तुम यहाँ हो!" निकोलाई पिट्रोविच ने सहसा पीछे से आकर पुकारा।

पाल पिट्रोविच ने घूमकर उसकी ओर देखा और भवें चढ़ालीं; किन्तु भाई के चेहरे पर प्रसन्नता और कृतज्ञता के भाव ऐसी सहृदयता के साथ व्यक्त हो रहा था कि पाल से जवाब में सिवा मुस्करा देने के और कुछ नहीं बन पड़ा।

"बड़ा सुन्दर बच्चा है यह तुम्हारा।" बड़े भाई ने कहा। फिर घड़ी की ओर देखकर बोला—"मैं यहाँ सिर्फ़ चाय ख़रीदने का इन्तज़ाम करने के लिये आया था।" इसके बाद वह वहाँ से इस प्रकार सटक गया, जैसे उसका वहाँ आने से कोई विशेष सरोकार न रहा हो।

"वह यहाँ अपने ही मन से आये थे न ?" निकोलाई ने सवाल किया।

"जी हाँ, अपने-ही मन से," लड़की ने जवाब दिया—"किवाड़ खटखटाकर अन्दर आगये।"

"और आरकाशा ? वह भी तुमसे मिलने आया था ?"

"नहीं। हाँ, एक बात पूछनी है, क्या मैं उन कमरों में फिर जाकर रह सकती हूँ ?"

"तुम वहाँ फिर क्यों जाना चाहती हो ?"

"मेरे लिये वे कमरे इनकी अपेक्षा अधिक सुविधाजनक हैं।"

"मैं ऐसा नहीं समझता," निकोलाई पिट्रोविच ने माथा खुजाते हुए अनिश्चितता के भाव से कहा—"पहले तुम्हारे वहाँ रहने का एक कारण था; पर अब वह कारण दूर हो गया है।"

"गुड मार्निंग नन्हें बदमाश!" पिट्रोविच ने सहसा प्रफुल्लित होकर बच्चे की ओर बढ़ते हुए उसका कपोल चूमकर कहा। फिर ज़रा झुककर उसने थेनिश्का का हाथ चूमा—जो मितिया के लाल वस्त्र पर दूध-सी सफ़ेदी के साथ लिपट रहा था।

"तुमने ऐसा क्यों किया, पिट्रोविच ?" वह आँखें नीचे किये हुए बोली। फिर भी जब उसने आँखें ऊपर उठायीं और भवों के नीचे चमकती हुई आँखों से पिट्रोविच की ओर देखकर वह चाव के साथ मुस्करायी, तो उसका रिक्त हास वास्तव में आकर्षक मालूम हुआ।

निकोलाई पिट्रोविच और थेनिश्का के प्रथम-मिलन के

सम्बन्ध में यहाँ कुछ हाल बताया जा सकता है। तीन वर्ष पहले एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि पिट्रोविच को सुदूर देहात में स्थित एक सराय में रात काटनी पड़ी। जिस कमरे में वह ठहरा, उसकी अद्भुत स्वच्छता और बिछौने की सफ़ेदी देखकर वह दंग रह गया। "स्पष्ट है," उसने मन-ही-मन सोचा—"कि मकान-मालकिन कोई जर्मन महिला है।" पर पीछे मालूम हुआ कि सराय की मालकिन जर्मन नहीं, एक पचास वर्ष की रूसी बुढ़िया थी, जो बढ़िया वस्त्र पहनती थी और जिसकी सुन्दरता, बुद्धि तथा बोलचाल पूर्णतः सुसंस्कृत मालूम होती थी। नाश्ता करने के बाद पिट्रोविच ने उस महिला के साथ बड़ा लम्बा वार्तालाप शुरू कर दिया और वह स्त्री उसे बड़े अच्छे स्वभाव की मालूम हुई। भाग्यवश उन्हीं दिनों वह (पिट्रोविच) अपने नये मकान में आ चुका था, और, चूँकि बद्ध गुलामों को बराबर रक्खे रहने की उसकी इच्छा नहीं थी, इसलिये वह मज़दूरी देकर घरेलू काम लेने के विचार से नौकरों की तलाश करने लगा; इधर व्यापार मन्दा हो जाने के कारण (उपरोक्त) बुढ़िया की सराय में मुसाफ़िर कम टिकने लगे थे, जिसके कारण उसकी आमदनी बहुत घट गयी। अन्त में इन सब अवस्थाओं पर विचार करके निकोलाई पिट्रोविच ने उससे प्रस्ताव कर दिया कि वह उसके घर चलकर उसकी घर-गृहस्थी का कार्य सँभाल सकती है। इस प्रस्ताव पर वह विधवा (अपनी छोटी कन्या थेनिश्का को साथ लेकर

आने के लिये) तैयार हो गयी। इसके अनुसार दो सप्ताह के अन्दर ही एरिना सविश्ना अपनी लड़की को लेकर मेरिनो आ पहुँची और पिट्रोविच के बनवाये हुए नये मकानात के कमरों में डेरा डाला। थेनिश्का की उम्र उस समय केवल सोलह वर्ष की थी। उसकी माँ ने उसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। बहुत थोड़े लोगों ने उस (थेनिश्का) को देखा था, क्योंकि वह कुछ ऐसी लजीली और शान्त प्रकृति की थी कि केवल रविवार को ही निकोलाई पिट्रोविच गिरजे में उसे थोड़ा-बहुत देख सकता था। इस प्रकार एक वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया।

किन्तु एक दिन तड़के ही एरिना पिट्रोविच के अध्ययन-कक्ष में आयी और सदा ही भाँति उससे नमस्कार करने के बाद प्रार्थना की कि उसकी लड़की की आँख में चूल्हे की चिनगारी पड़ गयी है, वह बहुत बेचैन है, इसलिये वह कृपापूर्वक चलकर उसका इलाज करदे। अधिकांश समय बैठे-बैठे बितानेवाले आदमियों की तरह पिट्रोविच में भी बहुत-सी दवाइयाँ पास रखकर नीम-हकीम बनने का दम भरने की आदत थी—यही नहीं, ख़ास ज़रूरतों पर काम आनेवाली होम्योपैथिक औषधियों की उसने सूची भी तैयार करली थी। उसने तुरन्त एरिना को हुक्म दिया कि वह अपनी लड़की को वहाँ लाये। थेनिश्का ने जब सुना कि मालिक ने उसे अपने कमरे में बुलवाया है, तो वह बहुत घबरा गयी, पर बाध्य हो माँ के पीछे-पीछे चली। निकोलाई पिट्रोविच उसे खिड़की के पास ले गया और उसका मस्तक अपने हाथों में

पकड़कर सूजी हुई आँख का निरीक्षण किया। इसके बाद उसने आँख में कोई 'लोशन'* डालने का एक नुस्खा लिखा, और स्वयं वह दवा तैयार करके अपने रूमाल में से एक टुकड़ा फाड़ उसे दवा में डुबोकर बतलाया कि किस प्रकार उस कपड़े से आँख आसानी से धोयी जा सकती है। थेनिश्का ने सभी बातें ध्यान से सुनीं और कमरे में से बाहर जाने की चेष्टा करने लगी। "मूर्ख छोकरी, मालिक का हाथ चूमे बिना ही चली जा रही है!" एरिना ने पुकारकर कहा। इसके पश्चात् निकोलाई पिट्रोविच ने लड़की की ओर हाथ बढ़ाने की बजाय उतावलेपन के भाव से उसकी माँग चूमली। थेनिश्का की आँख तो शीघ्र ही अच्छी हो गयी; पर निकोलाई पिट्रोविच के मन पर जो एक गहरी छाप पड़ गयी, वह जल्दी न दूर हो सकी। उसकी आँखों के सामने हमेशा एक शुद्ध, सुकोमल और भयातुरतापूर्ण भाव से ऊपर उठा हुआ मुख-मण्डल नाचा करता था, उसे सदा यही मालूम होता था कि उसकी दोनों हथेलियों के बीच में सिमटे हुए केश दब रहे हैं, लगातार उसे यही मालूम होता था कि उसकी आँखों के सामने अनवरत रूप से किसी के निष्कपट ओष्ठ-द्वय स्पष्ट दीख रहे हैं, जिनके भीतर मोती के समान चमकीली दन्त-पंक्तियाँ प्रत्यक्ष दिखायी दे रही हैं। फल यह हुआ कि अब पिट्रोविच गिरजे में थेनिश्का को देखने के लिये अधिक जाने लगा और उसे बातचीत में लगाने की ज़्यादा कोशिश करने

* एक प्रकार की तरल औषधि।

लगा। पर लड़की पर लज्जालुता सदा विजय पाती गयी, और एक मौक़ेपर जब वह पिट्रोविच को एक राई के खेत में होकर जानेवाली एक तंग पगडण्डी में मिली, तो रास्ते से मुड़कर खेत में घुस गयी और नाज के खूब ऊँचे उपजे हुए खेत में छिपकर खड़ी हो गयी। फिर भी वह पिट्रोविच की नज़र न बचा सकी। उसने फ़ौरन लड़की का सिर अनाज के पौधों के बीच में से देख लिया और थेनिश्का की चौकन्नी आँखों की ओर देखकर बोलाः—

"गुड् मार्निंग, थेनिश्का ! मैं तुम्हें नहीं सताऊँगा।"

"गुड् मार्निंग, साहब !" उसने धीरे से कहा। किन्तु अपनी जगह से वह जौ-भर भी नहीं हिली।

ज्यों-ज्यों समय बीतने लगा, थेनिश्का अपने मालिक से बार-बार मिलते रहने की अभ्यस्त हो चली, और जब वास्तव में उसकी लज्जालुता धीरे-धीरे दूर होने का समय आने लगा, तो एक दिन उसकी माँ का हैज़े से देहान्त हो गया। अब बड़ी ही द्विविधा-जनक अवस्था आ पहुँची! अब वह नव-यौवना थेनिश्का जिसने अपनी माँ से संयमशीलता और परिष्कृति का पाठ पढ़ा था, क्या करे और कहाँ जाय? अन्ततः उसकी तरुणावस्था और एकान्तवास तथा निकोलाई पिट्रोविच की सहृदयता और साधुता का जो परिणाम हुआ, उसके वर्णन की आवश्यकता नहीं है।

"अच्छा, भाई साहब तुम्हारे पास आये थे ?" पिट्रोविच ने फिर पूछा—"तुम कह रही हो न कि किवाड़ खटखटाकर अन्दर आ गये थे ?"

"हाँ, किवाड़ खटखटाकर अन्दर आ गये थे।"

"अच्छा! मितिआ को यहाँ लाओ।"

निकोलाई बच्चे को हाथ में लेकर छत की ओर उछालने लगा। यह एक ऐसी परीक्षित क्रिया थी, जिससे बच्चा बहुत खुश हो जाता था, पर माँ चुपचाप सन्न खींचे, बच्चे की उछाल के साथ अपने हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया करती थी।

इधर पाल पिट्रोविच लौटकर अपने अध्ययन-कक्ष को आया, जिस में चारों ओर गुलाब के फूलोंवाली अब्री चिपकायी हुई थी और हथियार टँगे थे। फ़र्श पर धारीदार फ़ारसी दरियाँ बिछी थीं। एक बबूल की लकड़ी की पुरानी आलमारी, एक सुन्दर मेज़, कुछ पीतल की मूर्तियाँ और एक चूल्हा, यही वहाँ का सामान था। अन्य सब फ़र्नीचर हैज़िल* की लकड़ी के थे, जिनमें आवश्यकतानुसार हरे रंग की मख़मल जड़ी हुई थी। एक सोफ़ा पर लेटकर पाल ने दोनों हाथ सिर के पीछे लगा लिये और लगा छत की ओर देखने। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि जो विचार उससे मस्तिष्क में चक्कर लगा रहे हैं, उन्हें दीवारों से भी छिपाने की आवश्यकता है। यह सोचकर वह उठा और खिड़की के सामने से भारी पर्दों के बन्धन खोल दिये तथा फिर सोफ़े पर आ लेटा।

---

* सुपारी के प्रकार का एक वृक्ष।

६

उसी दिन बज़ारोव ने भी थेनिश्का से परिचय प्राप्त किया। परिचय उस समय हुआ, जब बज़ारोव आरकाडी के साथ बाग़ में टहलते हुए यह बतला रहा था कि बाग़ के कुछ वृक्ष—विशेषतः बलूत—उतने नहीं बढ़ सके, जितने बढ़ने चाहिएँ। बज़ारोव ने कहाः—

"इस जगह तुम जितने भी सरो के वृक्ष लगा सको, लगाओ—और अगर यहाँ की मिट्टी में कुछ चिकनी मिट्टी भी मिला सको, तो सनोवर और नीबुओं के वृक्ष भी यहाँ खूब बढ़ सकते हैं। उदाहरण के लिये इस झुरमुट की वृद्धि को ही लो, इसकी वृद्धि का कारण बकायन और बबूल* का सम्मिश्रण

---

* बबूल का मतलब यहाँ एक प्रकार के विलायती बबूल से

है। इनमें से दोनों ही वृक्ष थोड़ा स्थान घेरते हैं। पर, ओहो ! ज़रा इधर देखो, कोई बैठा हुआ है !"

लता-कुञ्ज में तीन व्यक्ति बैठे हुए थे—थेनिश्का, दनियाशा और छोटा बच्चा मितिआ। बज़ारोव खड़ा हो गया और आरकाडी ने थेनिश्का के साथ अपने पूर्व-परिचय की सूचना दी। इसके बाद दोनों आगे चले गये। बज़ारोव ने पूछाः—

"यह कौन थी ?"

"तुम किस के बारे में पूछ रहे हो ?"

"मैं किस के बारे में पूछ रहा हूँ, यह तुम जानते हो। मेरे शब्द 'यह कौन थी ?' अस्पष्ट नहीं हैं।"

आरकाडी ने ज़रा व्याकुलता के साथ थेनिश्का का परिचय सुनाया।

"ओह !" बज़ारोव ने कहा—"तब तो तुम्हारे पिता की रुचि बुरी नहीं मालूम पड़ती। मैं तो प्रशंसा करूँगा। पर कैसी सुन्दरी रमणी है यह ! मुझे भी परिचय कर लेने दो।"

वह वापस लौटकर लता-कुञ्ज की ओर बढ़ा।

"इवजिनी !" आरकाडी ने घबराकर अपने दोस्त का पीछा करते हुए कहा—"खुदा के लिये सावधानी से काम लो !"

"डरो नहीं; मैं सब समझता हूँ। बेवकूफ़ नहीं हूँ।"

थेनिश्का के पास पहुँचकर उसने टोपी उतार ली।

है, क्योंकि असली (भारतीय) बबूल तो बहुत काफ़ी स्थान घेरनेवाले होते हैं।

"मुझे आत्म-परिचय देने की आज्ञा दीजिए," उसने नम्रता के साथ झुककर कहा—"मैं आरकाडी का दोस्त हूँ, और किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचाता।"

थेनिश्का उठ खड़ी हुई और चुपचाप बज़ारोव की ओर टकटकी बाँधे देखती रही।

"ओह, कैसा सुन्दर बच्चा है!" उसने फिर कहा—"तक-लीफ़ न कीजिए। मैंने कभी किसी बच्चे को आजतक नज़र नहीं लगायी। पर इसके गाल इतने सुर्ख़ क्यों हो रहे हैं? दाँत निकल रहे हैं क्या?"

"जी हाँ," थेनिश्का ने कहा—"चार दाँत निकल आये हैं, और मसूड़े कुछ सूज रहे हैं।"

"अच्छा मुझे देखने दीजिए। डरिये नहीं। मैं डाक्टर हूँ।"

यह कहकर उसने बच्चे को गोद में ले लिया। थेनिश्का और दनियाशा को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ कि बच्चा उसकी गोद में जाने से ज़रा भी नहीं हिचकिचाया, न डरा ही।

"अच्छा," बज़ारोव ने फिर कहा—"ठीक है, कोई डर नहीं, अब इसके बहुत से दाँत निकल आयेंगे। तो भी अगर कोई तकलीफ़ मालूम हो, तो मुझे ख़बर दीजिए। आपकी तबियत तो ठीक है?"

"जी हाँ, ईश्वर को धन्यवाद है!"

"मैं भी ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि माँ की तन्दुरुस्ती मुख्य चीज़ है। और आपकी?" उसने दनियाशा की ओर

रुख करके पूछा। दुनियाशा—जो ड्राइङ्ग रूम में अतिशय ओछे आचरण का परिचय देती थी, और रसोईघर में अत्यन्त नम्रता का—यह प्रश्न सुनकर खिलखिलाकर हँसती हुई बोली—

"अच्छा आपकी तन्दुरुस्ती ठीक मालूम होती है! अपने प्यारे को वापस लीजिए!"

बज़ारोव ने बच्चे को थेनिश्का की गोदी में दे दिया।

"आपके पास यह कैसा शान्त बना रहा!" थेनिश्का ने धीमे स्वर में कहा।

"बच्चे हमेशा मेरे साथ शान्त रहते हैं," बज़ारोव ने कहा—"मैं उन्हें खिलाना जानता हूँ।"

"और वे भी जानते हैं कि उनसे कौन प्रेम करता है।" दुनियाशा ने कहा।

"सच है," थेनिश्का ने अनुमोदन किया—"यद्यपि मितिआ शायद ही मेरे अलावा और किसी की गोद में जाता है।"

"क्या यह मेरी गोद में भी आयेगा?" आरकाडी ने साहसपूर्वक कहा। अब तक वह पीछे की ओर खड़ा था, पर अब लता-कुञ्ज की ओर बढ़कर पास आ गया। पर ज्यों ही वह मितिआ को फुसलाकर अपनी गोद में लेने लगा, बच्चा सिर पीछे हटाकर चिल्लाने लगा। यह एक ऐसी परिस्थिति थी, जिसने थेनिश्का को बहुत परेशान कर दिया।

"अच्छा फिर—जब यह मुझसे ज़रा हिल-मिल जायगा तब।" आरकाडी ने नम्रतापूर्वक कहा। और दोनों मित्र वहाँ से चले गये।

"इनका नाम क्या है ? बज़ारोव ने कुछ दूर जाने के बाद आरकाडी से पूछा।

"थेनिश्का थिवोडोसिया।" आरकाडी ने जवाब दिया।

"और इनकी अल्ल क्या है ?"

"निकोलेवना।"

"खूब ! मुझे जो बात इनमें सब से अधिक पसन्द आयी, वह है लज्जालुता का नितान्त अभाव। इनके इस स्वभाव की लोग निन्दा करते होंगे, पर यह सब वाहियात है। इन्हें लज्जा-शीलता की क्या ज़रूरत है ? इन्हें अब मातृत्व का महान् पद प्राप्त हो चुका है, फिर लज्जा करना कैसे उचित समझा जा सकता है।"

"मैं सहमत हूँ," आरकाडी ने कहा—"और मेरे पिता—"

"उनका विचार भी ठीक है।" बज़ारोव ने बात पूरी करने के ख़याल से कहा।

"नहीं, मैं यह नहीं मानता।"

"तुम एक व्यर्थ के उत्तराधिकारी का स्वागत नहीं करते ?"

"तुम्हें शर्म नहीं आती इवजिनी," आरकाडी ने क्रुद्ध होकर कहा—"मुझे ऐसा दुराशय होने का कलङ्क कैसे लगा सकते हो ? मेरा मतलब यह है कि मेरे पिता का विचार 'एक दृष्टि बिन्दु' से ठीक नहीं है। इसका मतलब तो यह नहीं होता कि उन्हें थेनिश्का से विवाह नहीं करना चाहिए था।"

"ओ हो !" बज़ारोव ने धीरे से कहा—"हम लोग कैसे

उच्च और शालीन बनते जा रहे हैं ! तुम अब भी विवाह-संस्कार को महत्त्व देते हो ? मुझे तुमसे ऐसी आशा नहीं थी।"

कुछ दूर तक दोनों निस्तब्ध-होकर चलते रहे।

"मैं तुम्हारे पिता की ज़मींदारी की व्यवस्था का निरीक्षण करता रहा हूँ। ढोर बहुत दुर्बल हैं, घोड़े बिल्कुल दुबले हो गये हैं, इमारतें भी जर्जरित-सी हो रही हैं, मज़दूर निखट्टूपन करते हैं, और मैं अभी तक नहीं समझ सका हूँ कि नया कारिन्दा मूर्ख है या बदमाश।"

"आज तुम्हें छिद्रान्वेषण ही सूझ रहा है ?"

"ज़रूर, इसका कारण यह है कि ये भले किसान तुम्हारे पिता को धोखा दे रहे हैं, जिससे यह लोकोक्ति चरितार्थ हो रही है कि रूसी किसान ख़ुदा की कमर तोड़ देगा।"

"मालूम होता है, मुझे शीघ्र ही अपने चाचा की इस राय से सहमत होना पड़ेगा कि तुम रूस के सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी रखते हो।"

"व्यर्थ बात है ! रूसियों की यह ख़ास बात है कि वे 'अपने' को बहुत तुच्छ समझते हैं। दो और दो मिलकर चार होते हैं; इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।"

"तो क्या प्रकृति भी व्यर्थ है ? आरकाडी ने प्रभात-कालीन हल्के प्रकाश में चमकते हुए खेतों पर प्रसन्नतापूर्ण दृष्टि डालकर पूछा।

"प्रकृति तो व्यर्थ 'है' ही—कम-से-कम जिस अर्थ में तुम

समझते हो उसमें। प्रकृति कोई गिरजाघर तो है नहीं; वह तो मज़दूरों—श्रमजीवियों—की पूजा का स्थल है।"

इसी समय दोनों मित्रों के कान बेला की मधुर तथा लम्बी आवाज़ की मिठास से भर गये। कोई चतुर किन्तु अनभ्यस्त कलावन्त शुबर्ट-कृत 'एरवार्टंग'-नामक पद्य की लय बजा रहा था। वह आमोदपूर्ण वाद्य समस्त वायु-मण्डल में मधु-मय माधुर्य प्रसारित कर रहा था।

"यह बाजा कौन बजा रहा है?" बज़ारोव ने आश्चर्य-पूर्वक पूछा।

"मेरे पिता।"

"क्या? तुम्हारे पिता बेला बजाते हैं?

"हाँ।"

"इस उम्र में?"

"हाँ,—अभी चवालीस ही वर्ष के तो हैं।"

बज़ारोव खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"माफ़ करना, पर इस ख़याल से, कि तुम्हारे पिता—जो चवालीस वर्ष के हो चुके हैं, परिवार के मालिक हैं और जो देश में सम्मानित समझे जाते हैं—बेला बजा रहे हैं, हँसी आगयी!"

यह कहकर भी वह हँसता ही गया, यद्यपि आरकाडी—जो बज़ारोव का प्रशंसक और मित्र था—ज़रा-सा मुस्कराया भी नहीं।

१०

दो सप्ताह तक मैरिनो में कोई विशेष घटना नहीं हुई। आरकाडी आराम से दिन व्यतीत करता था और बज़ारोव काम करने में मस्त था। यह कहा जा सकता है कि अपने मन-मौजी स्वभाव और शीघ्रतापूर्ण एवं संक्षिप्त भाषण के कारण बज़ारोव इस घर में एक अनोखा आदमी बन गया। विशेषतः थेनिश्का का व्यवहार उसके प्रति ऐसा स्पष्ट और लज्जाहीनता-पूर्ण हो गया कि एक रात मितिआ को तकलीफ़ होजाने के कारण उसने बज़ारोव को सोते से जगवा बुलाया। बज़ारोव ने आकर अपने सहज स्वभाव के अनुसार कुछ दिल्लगी करते और कुछ अँगड़ाई लेते हुए दो घण्टे तक बच्चे की शुश्रूषा में थेनिश्का को मदद दी। केवल पाल पिट्रोविच ही ऐसा व्यक्ति था, जो

बज़ारोव से हार्दिक घृणा करता था, क्योंकि उसका ख़याल था कि वह घमण्डी, रूखा, बना हुआ और गँवार है, और वह न केवल पाल पिट्रोविच किरसानोव के व्यक्तित्व की कोई प्रतिष्ठा नहीं करता, प्रत्युत् वह उसे घृणा की दृष्टि से भी देखता है। निकोलाई पिट्रोविच भी इस निहिलिस्ट युवक से कुछ-कुछ भयभीत रहता था, क्योंकि उसे सन्देह था कि आरकाडी पर बज़ारोव का जो प्रभाव पड़ेगा, उससे किसी प्रकार की भलाई की सम्भावना नहीं होगी। फिर वह बज़ारोव के वार्तालाप में काफ़ी दिलचस्पी लेता था और उसके रासायनिक या भौतिक परीक्षणों में ख़ुशी से भाग लेता था, जिसमें वह युवक डाक्टर (बज़ारोव) अपने अणुवीक्षण यंत्र द्वारा बराबर लगा रहता था। दूसरी ओर बज़ारोव का अनुशासन ज़रा कठोर होते हुए भी सारे नौकर उसे बेहद चाहने लगे थे, क्योंकि उन्होंने इस बात का अनुभव कर लिया कि वह अमीर कम है और उनके प्रति बन्धुत्व का अंश उसमें बहुत अधिक है। विशेषतः दुनियाशा तो उसके साथ आज़ादी से हँसी-मज़ाक और बातचीत करने और मतलब-भरी निगाहों के देखने की अभ्यस्त हो चली। इधर पीटर-जैसा कपटी और मूर्ख आदमी भी—जिसके माथे पर हमेशा सिकुड़न बनी रहती थी और जो दिन भर में अनेक प्रकार के व्यवहारों का परिचय देता था; अख़बार पढ़ने बैठता तो उसका एक-एक वाक्यांश समाप्त किये बिना उठने का नाम न लेता; अपने कोट पर बार बार ब्रुश करता रहता—सब कुछ होने पर—बज़ारोव से

मिलता, तो खुशी के मारे प्रफुल्लित हो उठता। वास्तव में यदि कोई नौकर बज़ारोव को नहीं चाहता था, तो वह था बुड्ढा ख़ानसामा प्रोकोफ़िच। वह जब कभी उस युवक डाक्टर को खाना परोसता तो उसकी नाक-भौं चढ़ी हुई देखी जाती। वह उसे पीठ-पीछे 'आडम्बरी' और 'ठग' कहा करता था और कई बार तो उसने अपने गलमुच्छों पर हाथ फेरकर यहाँ तक कह डाला था कि बज़ारोव पक्का सुवर है और वह—प्रोकोफ़िच—पाल पिट्रोविच की तरह एक अमीर आदमी है।

जून मास के आरम्भ में मैरिनो का मौसिम अत्यन्त सुहावना हो गया। वास्तव में साल-भर में यही मास सब से सुन्दर समझा जाता है। यह सच है कि इस वर्ष दूर-दूर के गावों से हैज़े की बीमारी फैलने के समाचार भी प्राप्त हुए, पर स्थानीय निवासियों के लिये ऐसे समाचारों का सुनना कोई असाधारण बात नहीं थी। बज़ारोव नित्य प्रातःकाल उठकर पैदल दो-तीन वर्स्ट की दूरी पर जाया करता; पर उसकी यह यात्रा केवल सैर के लिये नहीं हुआ करतो थी (क्योंकि वह उद्देश्यहीन यात्रा का अभ्यस्त नहीं था, वरन् वह वहाँ जाकर कुछ जड़ी बूटियाँ और कीड़े-मकोड़े बटोर लाया करता था) कभी-कभी वह आरकाडी को भी फुसलाकर साथ ले जाने में सफल हो जाता था; पर जब कभी ऐसा होता, तो वापसी में दोनों मित्रों में ऐसी बहस छिड़ जाती कि जिसमें आरकाडी अपने तर्क-युक्त प्रमाणों के ढेर-के-ढेर पेश करने पर भी परास्त हो जाता था।

एक दिन की बात है। बज़ारोव और आरकाडी प्रातःकाल भ्रमण करने के लिये गये थे; पर वापसी में उन्हें बहुत देरी हो गयी। निकोलाई पिट्रोविच उनकी टोह में बाग़ में होकर आगे जाने के लिये रवाना हुआ। वह ज्यों ही लता-कुञ्ज के पास पहुँचा, उसने उनकी आवाज़ और शीघ्रतापूर्वक पास आनेवाले पैरों की आहट सुनी। पिट्रोविच ऐसी जगह था, जो उन दोनों मित्रों की नज़र से ओझल थी।

"तुम मेरे पिता को समझ नहीं पाये हो।" आरकाडी कह रहा था।

निकोलाई पिट्रोविच यह सुनकर आगे न बढ़ आड़ में ही खड़ा रहा।

"हाँ, वे भले आदमी हैं," बज़ारोव ने कहा—"पर वे ऐसे आदमी हैं, जो इस ज़माने में बेकार हो चुके हैं; जिन का काम समाप्त हो चुका है।"

यद्यपि निकोलाई पिट्रोविच ने आरकाडी का जवाब सुनने के लिये कान लगा रक्खा था; पर आरकाडी ने कोई जवाब नहीं दिया। ऐसी अवस्था में बेचारा 'बेकार' आदमी एक-दो मिनट रुकने के बाद धीरे से पीछे की ओर लौट पड़ा।

"गत तीन दिनों से मैं उन्हें पुश्किन की कृतियों का अध्ययन करते देख रहा हूँ," बज़ारोव ने फिर कहा—"तुम्हें उन्हें समझा देना चाहिए कि इससे कोई भी लाभ नहीं होगा, क्योंकि अब वे लड़के नहीं हैं, और अब उन्हें इन वाहियात बातों से स्वतन्त्र

हो जाना चाहिए, उन्हें कल्पना-जगत् में भ्रमण करने की क्या ज़रूरत है ? उन्हें तो कोई ठोस चीज़ देनी चाहिए।

"उदाहरणार्थ ?"

"मुझे सोच लेने दो। आरम्भ में उन्हें बुश्नर* की 'पदार्थ और शिल्प' नामक पुस्तक दो।"

"अच्छा," आरकाडी ने स्वीकृति-सूचक स्वर में कहा—"'पदार्थ और शिल्प' नामक पुस्तक सरल ढंग से लिखी गयी है।"

उसी दिन निकोलाई पिट्रोविच जब अपने भाई के साथ बैठा था, तो उसने उससे कहा—

"मैं देख रहा हूँ कि हम दोनों—मैं और तुम— अब बेकार हो चुके हैं, और हमारा काम अब समाप्त हो चुका है। क्यों ठीक है न ? शायद बज़ारोव का यह कथन है भी सच। तो भी मैं यह मानता हूँ कि यद्यपि मैं आरकाडी से अधिक निकट पहुँचने की आशा करता आया हूँ, फिर भी मैं अभी पीछे ही हूँ, और वह बराबर आगे बढ़ता जारहा है। अब हम दोनों में से एक दूसरे को नहीं समझ पाते।"

"और वह बराबर आगे क्यों बढ़ता जा रहा है ?" पाल पिट्रोविच ने क्रुद्ध होकर पूछा—"वह हम लोगों से इतना दूर

---

*लडविग बुश्नर (१८२४-९९ ई०) प्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक था, जिसने औषधि-विज्ञान और पदार्थ-विज्ञान पर अनेक सुन्दर पुस्तकें जर्मन-भाषा में लिखी थीं।

क्यों है? इसके कारण वे विचार हैं, जो वह प्यारा 'निहिलिस्ट' उसके दिमाग़ में भर रहा है। मैं तो इस व्यक्ति से घृणा करता हूँ और इसे धूर्त समझता हूँ। मुझे यह भी निश्चय है कि मेंढक-वग़ैरह लाकर भी वह प्रकृति-विज्ञान में कोई उन्नति नहीं कर रहा है।"

"नहीं, हमें ऐसा नहीं कहना चाहिए, भाई। मैं तो उसे एक सुसंस्कृत और सुयोग्य आदमी समझता हूँ।"

"यदि ऐसा है भी, तो उसके अन्दर घृणित अभिमान तो है ही।"

"शायद अभिमान हो," निकोलाई पिट्रोविच ने कहा—"पर मालूम तो यही होता है कि इस प्रकार की, या ऐसी ही अन्य भावनाओं के बिना कुछ किया नहीं जा सकता। मैं जिस बात को समझ नहीं पाता, वह है अनुसरण-विधि। तुम जानते ही हो कि समय के साथ चलने के लिये मैंने क्या-क्या नहीं दिया—ज़मींदारी को पुनर्संगठित किया; खेतों का निर्माण ऐसी सुन्दर रीति से करवाया कि सूबे-भर में मेरा नाम मशहूर हो गया; पढ़ने-लिखने में भी मैं बराबर परिश्रम करता रहा, और साधारणतः मैं सदा इस बात की चेष्टा करता रहा कि जो कुछ भी करूँ, वह समय के अनुकूल हो। यह सब-कुछ होते हुए भी मैं अब यह सुनता हूँ कि मैं बेकार हो गया और मेरे काम का समय समाप्त हो गया! और भाई, मैं यह नहीं कह सकता कि मैं इस विचार को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं हूँ।"

"इसका कारण ?"

"इसका कारण है अनुसरण-विधि। आज मैं पुश्किन की कृति पढ़ रहा था (मैं समझता हूँ कंजड़िनों का प्रकरण था), सहसा आरकाडी कमरे में आगया। उसने चुपचाप दया-मिश्रित खेद के भाव और बाल-सुलभ कोमलता के साथ वह पुस्तक मेरे हाथ से खींच ली और मेरे सामने दूसरी पुस्तक—जो कोई जर्मन रचना थी—रख दी। यह करने के बाद वह मुस्कराया और मेरी वह पुश्किन-रचित पुस्तक काँख में दबाकर चला गया।"

"अच्छा! और वह कौन-सी पुस्तक थी, जो वह तुम्हारे सामने रख गया?"

"यह है।"

निकोलाई पिट्रोविच ने अपने कोट की जेब से बुश्नर की प्रसिद्ध पुस्तक के नवें संस्करण की एक प्रति निकालकर भाई को दी।

पाल पिट्रोविच ने उसके पृष्ठ उलट-पुलटकर देखे।

"हूँ!" उसने भिंची हुई आवाज़ से कहा—"आरकाडी तुम्हारी शिक्षा के सम्बन्ध में बहुत चिन्तित मालूम होता है। क्या तुमने यह पुस्तक पढ़ने की चेष्टा की है?"

"हाँ।"

"कैसी है यह?"

"भाई या तो मैं बेवक़ूफ़ हूँ, या इस (पुस्तक) का विषय ही

ऐसा रही है। मुझे तो इन दोनों में पहली बात ही अधिक युक्ति-युक्त प्रतीत होती है।

"मैं समझता हूँ कि इसका कारण यह होगा कि तुम अब जर्मन-भाषा भूल गये होगे?"

"नहीं, नहीं। मैं इसकी भाषा तो अच्छी तरह समझ लेता हूँ।"

पाल पिट्रोविच ने फिर पुस्तक के पृष्ठ उलटे, और भाई को कनखियों से देखा। क्षण-भर तक दोनों चुप रहे।

"हाँ, एक बात कहनी भूल गया था," निकोलाई पिट्रोविच ने वार्तालाप का प्रसंग बदल देने की इच्छा से कहा—"कोलियाज़िन का पत्र आया है।"

"मटवी इलिच से?"

"हाँ। ऐसा मालूम होता है कि वह अब······नगर पहुंच गया है, क्योंकि वहाँ सूबे-भर के गुलामों की मर्दुम-शुमारी होने-वाली है। उसने बड़े शिष्ट ढंग से आमंत्रित किया है कि सम्बन्धी के नाते वह आरकाडी के साथ तुमसे और मुझसे मिलकर बड़ा प्रसन्न होगा।"

"तो क्या तुम्हारा इरादा उसका निमंत्रण स्वीकार करने का है?" पाल पिट्रोविच ने पूछा।

"नहीं मेरा इरादा तो नहीं है। तुम्हारी क्या इच्छा है?"

"नहीं। हमें पचास वर्स्ट की दूरी पर खाना खाने के लिये जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैथ्यू ज़रा अपनी धाक ज़माना

चाहता है—और कुछ नहीं। उसका काम हमारे बग़ैर भी चल सकता है। पर प्रिवी कौंसिलरी का भी क्या ज़माना होता है। अगर मैं अब तक नौकरी पर होता और बराबर उसी में पिसता रहता, तो मैं खुद एडजुटेंट जरनल बन गया होता! जो कुछ भी हो, अब तो तुम्हारी तरह मैं भी बेकार आदमी बना रहना ही पसन्द करता हूँ।"

"ठीक है। अब वह समय आगया है, जब हमें क़ब्र की तैयारी करनी चाहिए।"

बात समाप्त करके निकोलाई पिट्रोविच ने ठंडी साँस ली।

"पर मैं इतनी जल्दी मौत के लिये नहीं तैयार होना चाहता," पाल ने कहा—"पहले ज़रा मेरे और आरकाडी के दोस्त से दो झड़प हो जाय। बेशक मैं इसकी तैयारी कर लूँगा।"

वास्तव में उसी शाम को झड़प हो भी गयी। पाल पिट्रो-विच ड्राइंग-रूम में क्रुद्ध-भाव से घुसते ही शत्रु से लड़ने का बहाना ढूँढ़ने लगा। किन्तु बहुत देर तक कोई बहाना हस्तगत नहीं हुआ, क्योंकि बज़ारोव दोनों भाइयों की उपस्थिति में बोलता बहुत कम था और आज शाम से ही वह कुछ अनमना-सा भी हो रहा था। उसने चुपचाप बैठकर चाय पी। पर पाल पिट्रोविच तो कमर कसकर आया था, और अधीरतापूर्वक कोई-न-कोई बहाना ढूँढ़ रहा था।

संयोग-वश एक पड़ोसी ज़मींदार की बात छिड़ी।

"वह तो एक छोटा-सा रईस है।" बज़ारोव ने शुष्क स्वर

में कहा। (ऐसा प्रतीत होता था कि उपरोक्त रईस से बज़ारोव की सेण्ट पीटर्सबर्ग में मुलाक़ात हो चुकी थी।)

"देखिए," पाल पिट्रोविच ने बाधा डालते हुए कहा—"आपके ख़याल में 'रईस' और 'रद्दी' का एक ही मतलब है न ?"

"मैंने 'छोटा-सा रईस' कहा है।" बज़ारोव ने बेपर्वाही के साथ सुकड़ते हुए कहा।

"ठीक है। इसका तो यह मतलब हुआ कि रईस भी वैसे ही हैं जैसे 'छोटे रईस' ? मैं कह सकता हूँ कि मेरी राय आपकी राय से नहीं मिलती। इस पर मैं यह भी कह सकता हूँ कि मैं, जो उदार और उन्नतिशील विचारों का समर्थक मशहूर हूँ, उसका कारण यह है कि मैं 'वास्तविक' रईसों की इज़्ज़त कर सकता हूँ। उदाहरण के लिये जनाब, (यह शब्द इतनी प्रखरता के साथ कहा गया कि बज़ारोव आँखें फाड़कर पाल की ओर देखने लगा।) उदाहरण के लिये इंग्लैण्ड के रईस-बर्ग को लीजिए। वे अपने अधिकारों में अणुमात्र की कमी न स्वीकार करते हुए भी दूसरों के अधिकारों की इज़्ज़त करना जानते हैं। दूसरों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए भी वे अपने कर्त्तव्य का पूर्णतः पालन करते हैं। यही कारण है कि इंग्लैण्ड अपनी स्वतंत्रता के लिये वहाँ के रईस-वर्ग का कृतज्ञ है और अंग्रेज़ रईस स्वयं उस स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं।"

"यह कहानी हम लोगों ने अनेक बार सुन रक्खी है!" बज़ारोव ने कहा—"पर आप क्या सिद्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं?"

"मैं यह साबित कर रहा हूँ," पाल पिट्रोविच ने उत्तर दिया—"कि व्यक्तिगत गौरव का कुछ-न-कुछ मान किये बिना और आत्म-प्रतिष्ठा का कुछ भाव रक्खे बिना (जो कि वास्तव में सच्चे रईसों की ही बपौती है) सामाजिक भवन और सार्वजनिक चेतनता की नींव दृढ़ नहीं हो सकती। मुख्य चीज़ व्यक्तित्व है जनाब, और मनुष्य का व्यक्तित्व उस चट्टान की तरह दृढ़ होना चाहिए, जिस पर समस्त समाज के ढाँचे का आधार होता है। उदाहरण के लिये, मैं जानता हूँ कि आप मेरी चाल-ढाल, पोशाक और सुपरिष्कृत रुचि का मज़ाक उड़ाते हैं। पर क्या ये बातें उस कर्तव्य का ध्यान रखकर की जाती हैं, जिनकी ओर मैंने अभी-अभी संकेत किया है? दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि मैं चाहे कैसे ही ठेठ देहात में क्यों न चला जाऊँ, फिर भी अपना व्यक्तित्व न खोऊँगा, क्योंकि मैं अपने व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा करता हूँ।"

"मुझे कहने दीजिए, पाल पिट्रोविच," बज़ारोव ने कहा—"आप कहते हैं कि आप अपने व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा करते हैं। बहुत अच्छी बात है। फिर भी आप यहाँ हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते हैं! इससे भला सार्वजनिक चेतनता को क्या मदद मिलेगी। अकर्मण्यता से तो आत्म-प्रतिष्ठा भी मुश्किल से क़ायम रह सकेगी?"

पाल पिट्रोविच का चेहरा ज़रा पीला पड़ गया।

"यह तो बिल्कुल ही दूसरा प्रश्न है," उसने कहा—"तो भी मैं इसका कारण नहीं बतला सकता। आपके सुन्दर शब्दों में मैं हाथ-पर-हाथ धरे बैठा रहता हूँ। केवल यह कह देना ही पर्याप्त होगा कि रईसी विचारों में 'सिद्धान्तों' का समावेश होता है, और आजकल जो लोग सिद्धान्तहीन जीवन व्यतीत करते हैं, उनमें सदाचार का उतना ही अभाव होता है, जितना नैतिकता का। यही बात मैंने आरकाडी के आने के दूसरे दिन उससे कही थी, वही आज आप से कह रहा हूँ। तुम मेरे इन विचारों से सहमत हो न निकोलाई ?"

निकोलाई ने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया, और बज़ारोव फिर बोल उठा—

"रईसी विचारों के क्या कहने हैं! उदारवाद, प्रगतिशीलता और सिद्धान्त! इन शब्दों के थोथेपन पर भी आपने कभी विचार किया है? आधुनिक रूस को इनकी ज़रूरत नहीं है।"

"तो फिर आपकी राय में किन की ज़रूरत है? आपकी बात सुनने के लिये तो यह मानना पड़ेगा कि हम मनुष्यता और मनुष्यता के विधानों को तलाक़ दे चुके हैं; जब कि, मुझे माफ़ कीजिएगा, ऐतिहासिक तर्क इनकी आवश्यकता को——"

"उस तर्क से हमें क्या मतलब? बग़ैर उसके हमारा काम अच्छी तरह चल सकता है।"

"वह कैसे?"

"जैसा कि मैंने कहा है, जब आप मुँह में रोटी का टुकड़ा डालना चाहते हैं, तो क्या आपको उसके लिये तर्क की ज़रूरत पड़ती है? इन बाधाओं को हमारे मार्ग में आने की ज़रूरत क्या है ?"

पाल पिट्रोविच ने घबराहट के साथ हाथ हिलाया।

"मैं आपकी बात नहीं समझता," उसने कहा—"मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप रूसियों की बेइज़्ज़ती करते हैं। आप, या कोई भी अन्य व्यक्ति, सिद्धान्तों और विधियों को कैसे अस्वीकार कर सकता है, यह मेरी समझ के बाहर की बात है। हमारे जीवन में क्रियाशीलताओं के लिये और आधार ही कौन-सा रहता है ?"

आरकाडी ने भी इस बार मुँह खोला।

"मैं ने और बज़ारोव ने आपसे कह दिया है," उसने कहा—"कि हम किसी भी प्रकार के अधिकार या प्रभुत्व को नहीं मानते।"

"बल्कि हम उपयोग के अतिरिक्त क्रिया का और कोई आधार ही नहीं मानते," बज़ारोव ने संशोधन करते हुए कहा—"इस समय सब से अधिक उपयोगी मार्ग अस्वीकृति का है। इसीलिये हम अस्वीकार करते हैं।"

"प्रत्येक चीज़ से अस्वीकार करते हैं ?"

"प्रत्येक चीज़ से।"

"क्या ? काव्य और कला इन दोनों चीज़ों से भी ?—मैं इसे भली भाँति व्यक्त नहीं कर सकता——"

"मैं फिर दुहराता हूँ कि मैं प्रत्येक चीज़ को अस्वीकार करता हूँ।" बज़ारोव ने अकथनीय बेपर्वाही का प्रदर्शन करते हुए भिड़ककर कहा।

पाल पिट्रोविच उसकी ओर ताकता रह गया। उसे इस बात की आशा नहीं थी। आरकाडी खुशी के मारे फूला नहीं समाता था।

"मुझे बोलने दीजिए," निकोलाई पिट्रोविच ने बीच में पड़ते हुए कहा—"आप कहते हैं कि आप प्रत्येक वस्तु को अस्वीकार करते हैं—बल्कि आप सभी चीज़ों को विनाश के हाथों में सौंप देते हैं। किन्तु आप को कुछ निर्माण भी तो करना चाहिए।"

"यह हमारा काम नहीं है," बज़ारोव ने कहा—"पहले मैदान साफ़ होना चाहिए।"

"हाँ, क्योंकि लोगों की वर्तमान अवस्था को इसीकी अवश्यकता है," आरकाडी ने समर्थन-पूर्वक कहा—"और इस आवश्यकता की पूर्ति करने के लिये हम लोग बाध्य हैं, ख़ासकर यह देखते हुए कि किसी को भी वैयक्तिक अहङ्कार करके सन्तुष्ट होने का कोई अधिकार नहीं है।"

इस अन्तिम वाक्य से बज़ारोव पूर्णतः प्रसन्न नहीं हुआ, क्योंकि इसमें तात्विक फटकार—बल्कि उसके शब्दों में 'भावावेश'—की मात्रा बहुत थी। किन्तु फिर भी उसने अपने शिष्य की बात का खण्डन नहीं किया।

"नहीं, नहीं !" पाल पिट्रोविच ने सहसा क्रुद्ध होकर कहा— "मैं नहीं समझ सकता कि आपकी कोटि के सज्जन, लोगों की माँगों और भावनाओं के प्रतिनिधित्व का पर्याप्त ज्ञान रख सकते हैं, क्योंकि रूसी लोग वैसे नहीं हैं, जैसे आप समझते हैं। उनके पास उनकी पवित्र परम्परा है; पूर्व-पुरुषों की कृतियाँ हैं। वे बिना विश्वास के जीवित नहीं रह सकते ।"

"मैं इस बात पर आपत्ति नहीं करता," बज़ारोव ने कहा— "बल्कि आपकी यह बात तो मैं मानने को तैयार हूँ ।"

"और मेरी यह बात मानते हुए भी——"

"मैं यह कहूँगा कि आप ने कुछ सिद्ध नहीं किया ।"

"हाँ, सिद्ध नहीं किया," आरकाडी ने दुहराया। उसकी अवस्था उस समय उस चौपड़ के खिलाड़ी की सी हो रही थी, जो विरोधी की ज़बर्दस्त चाल पहले से ही भाँपकर सचेष्ट शान्ति के साथ आक्रमण की प्रतीक्षा करता है।

"पर मैंने कुछ भी कैसे नहीं सिद्ध किया ?" पाल पिट्रोविच ने आश्चर्यान्वित होकर कहा—"क्या आपका यह मतलब है कि आप (रूसी) लोगों के विरुद्ध हैं ?"

"क्या खूब ! क्या सर्व-साधारण इस बात पर विश्वास नहीं करते कि जिस समय बादल गरजता है, तो ईश्वरीय दूत आली-जाह अपने रथ में बैठकर स्वर्ग-लोक को जाते हैं ? हम और आप इस बात से सहमत नहीं होते। असल बात तो यह है कि ऐसा विश्वास करनेवाले लोग भी रूसी हैं और मैं भी रूसी हूँ ।"

"नहीं, अभी-अभी जो बात आपने कही है, उसके कारण मैं अब आपको अपना देश-भाई मानने को तैयार नहीं हूँ।"

बज़ारोव ने सगर्व बेपर्वाही के साथ उत्तर दिया:—

"मेरे दादा ने अपने हाथों ज़मीन जोती थी। इसलिये आप अपने प्रिय किसानों से पूछिये कि हम दोनों में से किसे—आपको या मुझे—वह अपना सच्चा देश-भाई समझते हैं। आप तो उन (किसानों) से बात करना भी नहीं जानते!"

"और आप उनसे बात करते हुए भी उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं।"

"अगर वह उसे घृणा समझते हैं, तो ठीक है। आप मेरे विचारों को जितना चाहें कलङ्कित कर लीजिए; पर आपको यह किसने कहा है कि मेरे विचार किसी राष्ट्रीय भावना के फल-स्वरूप नहीं, वरन् यों-ही अकस्मात् ऐसे बन गये हैं, जब कि आप उस (राष्ट्रीय भावना) के ऐसे कट्टर समर्थक हैं?"

"ओह! हमें आप-जैसे निहिलिस्टों की भी तो ज़रूरत है न?"

"हम इस बात का फ़ैसला नहीं कर सकते कि हमें किन-किन की ज़रूरत है, जब कि हम देखते हैं कि आप-जैसे लोग भी अपने को उपयोगी समझते हैं।"

"महाशयो!" निकोलाई पिट्रोविच ने बाधा डालकर कुर्सी से उठते हुए कहा—"मेरी प्रार्थना है कि आप लोग व्यक्तिगत बातों को बीच में न लायें!"

पाल पिट्रोविच मुस्कराया और फिर उसने अपना हाथ भाई के कन्धे पर रखकर उसे ज़बर्दस्ती कुर्सी पर बिठा दिया।

"डरो नहीं," उसने कहा—"यह महाशय जिस गौरव की भावना से ऐसा तीखा मज़ाक उड़ा रहे हैं, वह मुझे आपे से बाहर नहीं होने देगी।"

इसके बाद उसने फिर बज़ारोव की ओर रुख़ किया।

"क्या आप अपने सिद्धान्त को नया समझते हैं?" पाल ने पूछा—"अगर यह बात है, तब तो आप अपना समय व्यर्थ गँवा रहे हैं। जिस जड़वाद की शिक्षा आप लोगों को देते फिरते हैं, उस पर अनेक बार वाद-विवाद हो चुका है और हर बार उसका 'दिवालियापन' प्रमाणित हो चुका है।"

"फिर आप विदेशी शब्द इस्तेमाल कर रहे हैं!" बज़ारोव ने कहा। इस समय वह अत्यन्त क्रुद्ध होता जा रहा था, और उसके चेहरे पर रूक्षता और लालिमा छा गयी थी—"पहली बात तो यह है कि हम निहिलिस्ट लोग किसी बात की शिक्षा ही नहीं देते। शिक्षा और उपदेश देने की प्रथा हमारे यहाँ नहीं है।"

"तो फिर आपके यहाँ क्या प्रथा है?"

"इस प्रकार के सत्य की घोषणा करना कि हमारे सरकारी नौकर रिश्वत खाते हैं, हमारे यहाँ पर्याप्त सड़कें नहीं हैं, व्यापार चौपट हो रहा है, एक भी सच्चा न्यायकर्त्ता देश में नहीं है, और—"

"ठीक-ठीक ! दूसरे शब्दों में आप और आपके मत वाले हमारे छिद्रान्वेषक (मैं समझता हूं यह शब्द ठीक है) हैं। अच्छा, मैं आपके अधिकांश छिद्रान्वेषणों को मानता हूँ, परन्तु—"

"हमारी दूसरी रीति है हमेशा गप्पें हाँकना, और सिवा बकते रहने के कोई काम न करना; अपने मतभेदों के सम्बन्ध में किसी तरह का कष्ट न उठाना, ख़ासकर यह देखते हुए कि यह एक ऐसा काम है, जिससे तुच्छता और सिद्धान्तवाद की वृद्धि होती है। निस्सन्देह, हमारे ऐसे नामधारी नेता किसी काम के नहीं हैं, विशेषतः इस बात का ख़याल रखते हुए कि वे व्यर्थ की बकझक में लगे रहते हैं और अपना बहुमूल्य जीवन कला, शान्त जीवन और धारासभा-वाद तथा उसके क़ानूनी मर्मों आदि, न जाने किन-किन विषयों पर बहस करने में व्यतीत करते हैं; जब कि हमें हमेशा आवश्यकता सार पदार्थ की रहती है। अन्ध-विश्वास के मारे हमारा गला घुटा जा रहा है, हमारे सारे व्यापारिक उद्योग इसलिये असफल होते हैं कि उनके लिये ईमानदार सञ्चालकों का अभाव है, और स्वतन्त्रता नामक जिस चीज़ के सम्बन्ध में सरकार हमेशा बकती आयी है, कभी उसके वास्तविक रूप को वह नहीं प्राप्त कर सकेगी। इसका कारण यह है कि जब तक रूसी किसानों को शराब की दुकानों पर जाकर मनमाने तौर पर शराब पीने की इजाज़त रहेगी, तब तक वह सभी तरह की लूट-खसोट इस देश में होने देते रहेंगे।"

"तब तो आपने यह निश्चय कर लिया कि आपका वास्तविक कार्य यही है कि आप लोग किसी भी एक चीज़ को गम्भीरतापूर्वक लेकर उसकी पूर्ति नहीं करना चाहते।"

"यही सही।" बज़ारोव ने क्रोधावेश में उत्तर दिया। वह ऐसे 'रईस' के सामने सहसा अपने विचारों को पूर्णतः प्रकट कर देने के कारण अपने-आप पर क्षुब्ध हो रहा था।

"आपने प्रत्येक चीज़ को अस्वीकार करने का निश्चय कर लिया है?"

"हाँ, हमने प्रत्येक चीज़ को अस्वीकार करने का निश्चय कर लिया है?"

"और इसीको आप निहिलिस्ट-वाद कहते हैं?"

"और इसीको हम निहिलिस्ट-वाद कहते हैं।"

पाल पिट्रोविच के शब्दों को ज्यों-का-त्यों दुहराते समय इस बार बज़ारोव ने अपने हृदय में गर्व का अनुभव किया।

पाल पिट्रोविच ने भवें चढ़ा लीं।

"अच्छा, अच्छा!" उसने बड़े शान्त स्वर में कहना शुरू किया—"निहिलिस्ट-वाद हमारी समस्त बुराइयों का विरोध करने के लिये चलाया गया है, और आप लोग हमारे रक्षक और सूरमा के काम पर नियुक्त हुए हैं! अच्छा, पर आप और आपके छिद्रान्वेषक-सहयोगी हम लोगों से किस बात में बढ़कर हैं? आप भी तो और लोगों की तरह गप्पें ही हाँका करते हैं।"

"नहीं, नहीं !" बज़ारोव ने कहा—"हम लोग और विषयों में चाहे ग़लती पर हों, पर इसमें हमारा कोई अपराध नहीं है।"

"तब तो आप कार्य करनेवाले हैं ? और हमेशा कार्य करने की तैयारी में भी लगे रहते हैं ?"

बज़ारोव ने इस बात का उत्तर नहीं दिया, यद्यपि पाल पिट्रोविच उत्तेजित होकर आपे से बाहर हो रहा था और मुश्किल से अपने-आप पर क़ाबू रख सका।

"हूँ !" पाल पिट्रोविच ने कहा—"आपके साथ काम करने का मतलब है विध्वंस में सहायक होना। पर इस प्रकार के ध्वंसात्मक कार्य से किसी प्रकार का लाभ कैसे हो सकता है, जबकि आप इसका अभिप्राय तक नहीं जानते ?"

"हम विध्वंस इसलिये करते हैं कि हम स्वतः शक्ति हैं।" आरकाडी बीच में ही बोल उठा।

पाल पिट्रोविच उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखने के बाद मुस्कराया।

"और शक्ति किसो को हिसाब देने के लिये उत्तरदायी नहीं होती।" आरकाडी ने आत्म-विश्वास के भाव से तनकर कहा।

"वाहियात बात है !" पाल के मुँह से निकला। वह अब अपने आपे से बाहर हो चुका था—"कभी आपने यह भी सोचा है कि आप अपने अभागे मत के लिये व्यवस्था क्या कर रहे हैं? आदमी तो क्या कोई देवता भी इन बातों को सुनकर धैर्य नहीं

रख सकता। 'शक्ति' के क्या कहने हैं! आप यह भी कह सकते हैं कि जंगली कलमक या असभ्य मंगोल भी शक्ति रखते हैं। ऐसी शक्ति से क्या लाभ? हम तो सभ्यता और उसके सुपरिणामों की क़द्र करते हैं। यह न कहिए कि उन सुपरिणामों की उपेक्षा की जा सकती है, ख़ासकर इस बात को देखते हुए कि एक छोटे-से-छोटा मुंशी या रद्दी-से-रद्दी प्यानो बजानेवाला भी एक दिन में पाँच कापेक* कमा लेता है, यह कहना पड़ेगा कि वह समाज के लिये आपकी अपेक्षा अधिक उपयोगी हैं। क्योंकि इस प्रकार का मनुष्य किसी उद्दण्ड मंगोलियन शक्ति की अपेक्षा संस्कृति का विशेष परिचायक होता है। आप अपने को 'भावी राष्ट्र' समझ सकते हैं, फिर भी आप एक कलमक-झोंपड़ी में बैठे रहने के अतिरिक्त और किसी काम के योग्य नहीं हैं। 'शक्ति' की एक ही रही! बड़े भले और बलवान हैं 'शक्ति'-वाले! मैं आपसे अर्ज़ कर देना चाहता हूँ कि आपकी संख्या में कुल चार आदमी हैं और एक लड़का, जबकि अन्य मत-वाले लाखों-करोड़ों की संख्या में हैं, और वे ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने पवित्र विश्वास को आप-जैसे लोगों द्वारा कुचले जाना स्वीकार नहीं करेंगे, बल्कि पहले वे आप-जैसे योग्य व्यक्तियों को ही कुचल डालेंगे।"

"हमें कुचलने दीजिए," बज़ारोव ने उत्तर दिया—"हमारी संख्या उससे कहीं अधिक है, जितनी आपने समझ रक्खी है।"

---

* कापेक लगभग एक पैसे के बराबर होता है।

"क्या ? क्या आप सचमुच विश्वास करते हैं कि आप सारे राष्ट्र में इन विचारों का प्रचार करने में सफल होंगे ?"

"एक छोटी-सी मोमबत्ती से," बज़ारोव ने जवाब दिया— "सारे मास्को में प्रचण्ड अग्नि-ज्वाला फैल गयी थी।"*

"यह तो एक ऐसा घमण्ड है, जिसमें शैतानियत और दिल्लगी भरी हुई है ! आप इसी प्रकार हमारे नवयुवकों को आकर्षित करेंगे, हमारे अनुभव-शून्य लड़कों के हृदयों पर अधिकार जमा बैठेंगे। उन्हीं लड़कों में से एक आपके पास बैठा हुआ है, और यह पूर्णतः आप की पूजा किया करता है।" (इस पर आरकाडी ने भवें चढ़ाकर ज़रा मुँह फेर लिया) "हाँ, नासूर बढ़ चुका है। क्योंकि मैंने सुना है कि रोम में कारीगरों ने पोप के भवन में जाने से इन्कार कर दिया है, और रैफेल को 'मूर्खता का द्वार' कहने लगे हैं—यह सब इसीलिये कि वे अधिकारी हैं ! फिर भी वे कारीगर ऐसे नीरस और निःसत्व हो जाते हैं कि उनके विचार 'फव्वारों की लड़कियों' आदि से ऊपर नहीं जाते, ज़िनका निर्माण वे अत्यन्त निकृष्ट रीति से करते हैं ! इन्हीं कारीगरों को मेरी समझ में आप बड़े सज्जन समझते हैं ?"†

"उन कारीगरों की ही तरह," बज़ारोव ने कहा—"मैं रैफेल को भी कौड़ी की चीज़ नहीं समझता। अब रहे स्वयं (वाहियात)

---

* यहाँ सन् १८१२ ई० के अग्नि-काण्ड की ओर संकेत है।

† अभिप्राय रोम के प्रासाद-निर्माणकर्ताओं की सरकशी से है।

कारीगर लोग, सो उनका मूल्य भी मैं इससे अधिक नहीं समझता।"

"शाबाश, शाबाश!" पाल पिट्रोविच चिल्ला उठा—"सुनो आरकाडी—सुनो, आजकल के नवयुवकों को इस तरह अपने विचार प्रकट करने चाहिएँ! अवश्य ही हमारे नवयुवक अब आपका पक्ष लेंगे? चूँकि पहले उन्हें स्कूलों में जाना पड़ता था, और उन्हें बेवकूफ़ रहना पसन्द नहीं था, इसलिये वे पढ़ते लिखते थे; पर अब तो उन्हें सिर्फ़ यही कहने की ज़रूरत रह गयी कि दुनियाँ में प्रत्येक चीज़ व्यर्थ है, और बस, काम बन गया। उनको इसीमें मज़ा आता है—और यह स्वाभाविक भी है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता था कि पहले ज़माने के मूर्ख आजकल निहिलिस्ट बन जायँगे।"

"आपकी आत्म-पर्याप्ति—यानी आत्म-प्रतिष्ठा अब आपको दूर लिये जा रही है," बज़ारोव ने स्थिर भाव से कहा—(आरकाडी की आँखें चमक रही थीं और उसका सारा शरीर क्रोध से जल रहा था) "पर हमारा विवाद बहुत दूर जा पहुँचा है। इसे समाप्त कीजिए। जब कभी आप ऐसा समझें कि हमारे घरेलू या सार्वजनिक जीवन में एक भी ऐसी व्यवस्था आप मुझे बतला सकते हैं, जो पूर्ण और निर्विवाद रूप में 'अक्षय' पायी जा सकती हो, तो मैं सहर्ष आपके विचार मान लूँगा।"

"इस प्रकार की लाखों-करोड़ों व्यवस्थाएँ मैं आपको बतला

सकता हूँ," पाल पिट्रोविच ने कहा—"उदाहरण के लिये ग्राम-पंचायत को ही ले लीजिए।"

बज़ारोव ने ओठ बिचकाकर घृणापूर्ण मुस्कराहट का प्रदर्शन किया।

"ग्राम पंचायत," उसने कहा—"यह तो एक ऐसा विषय है, जिस पर आप अपने भाई साहब से बहस कर सकते हैं, क्योंकि ये अनुभव द्वारा पंचायत और उसके माण्डलिक प्रतिबन्ध, बलात् संयम और अन्य उद्योगों का मतलब समझ रहे हैं।"

"अच्छा, तो फिर परिवार का ही उदाहरण लीजिए—किसानों में अब भी परिवार-पद्धति है।"

"मेरी समझ में इस प्रश्न की भी विस्तृत उधेड़-बुन आपको नहीं करनी चाहिए। पर देखिए। आप कम-से-कम दो दिन तक इन बातों पर विचार कर लीजिए (आपके लिये इतने समय की ज़रूरत है); और हमारी सामाजिक अवस्थाओं के विभिन्न और क्रमिक विकास पर पूर्णतः ध्यान देलीजिए। तब तक मैं और आरकाडी साथ जाकर—"

"जाकर दिल्लगी उड़ायँगे, मेरी समझ में ?"

"नहीं, जाकर मेढकों की चीर-फाड़ करेंगे। आओ आरकाडी। नमस्कार, सज्जनो !"

इसके बाद दोनों मित्र रवाना हो गये। दोनों भाई बैठे एक दूसरे की ओर देखने लगे।

"देखा," अन्ततः पाल पिट्रोविच बोला—"देखा तुमने आज-

कल के नवयुवकों—हम लोगों के उत्तराधिकारियों—को !"

"हम लोगों के उत्तराधिकारियों को,—हाँ।" निकोलाई पिट्रोविच ने निराश-भाव से कहा। वाद-विवाद के समय वह अत्यन्त दुःखपूर्ण-भाव से चुपचाप बैठा था। समय-समय पर आरकाडी की ओर वेदनामयी दृष्टि डाल लेने के अतिरिक्त वह और कुछ करने का साहस नहीं कर सका। पाल की ओर देखकर वह फिर बोला—"भाई, अभी-अभी मेरे मन में अद्भुत स्मृतियाँ चक्कर लगा गयी हैं। मुझे एक झगड़े की याद आ गयी, जो मैंने माँ से किया था। उस तकरार के समय माँ ज़ोर से चिल्लायी थी, और वह मेरी एक बात भी सुनने के लिये तैयार नहीं हुई। अन्ततः मैंने उससे कहा कि उसके लिये मेरी बात समझना असम्भव है, क्योंकि वह और मैं दोनों भिन्न पीढ़ी के व्यक्ति हैं। इस बात को सुनकर उसे और भी क्रोध आया, पर मैंने मन-ही-मन सोचा—'मैं और कर ही क्या सकता हूँ ? बात कड़वी सही, पर उसे सहनी ही पड़ेगी।' अब हमारी बारी आयी है; अब हमें हमारे उत्तराधिकारी कहेंगे कि हममें और उनमें एक पीढ़ी का अन्तर है, इसलिये दयापूर्वक यह कड़वी बात सहनी ही पड़ेगी।"

"तुम तो बड़े ही उदार और शिथिल हो गये हो," पाल पिट्रोविच ने विरोधपूर्वक कहा—"मैं तो यह समझता हूँ कि इन दोनों की अपेक्षा हम अधिक युक्तियुक्त हैं, चाहे हम पुराने ढंग से ही बात क्यों न करें और इस साहसपूर्ण आत्म-पर्याप्ति

का हममें कितना ही अभाव क्यों न हो। वास्तव में आजकल के नवयुवक घमण्ड के पुतले हैं। अगर हम इनसे पूछें कि तुम सफ़ेद शराब लोगे या लाल, तो ये फ़ौरन अपने भारी स्वर में बोल उठेंगे—'मैं तो लाल का ही अभ्यस्त हूँ।'"

"आपको और चाय चाहिए?" दरवाज़े से झाँककर थेनिश्का ने पूछा। वाद-विवाद के समय उसे अन्दर आने का साहस नहीं हुआ था।

"नहीं," निकोलाई पिट्रोविच ने कुर्सी से उठकर उसकी ओर जाते हुए कहा—"अब तुम अँगीठी हटवा दे सकती हो।"

इधर एक संक्षिप्त 'विदा'* का शब्द कहकर पाल पिट्रोविच अपने अध्ययन-कक्ष की ओर चला गया।

---

* रूसी प्रथा के अनुसार प्रतिदिन के प्रणाम करने में भी कुछ देर के लिये प्रथक् होने पर 'विदा' एवं 'फिर मिलने तक' आदि शब्दों का व्यवहार होता है।

११

आध घण्टे के बाद निकोलाई पिट्रोविच अपने उसी सुपरिचित लता-कुञ्ज के पास जा पहुँचा। उसके मस्तिष्क में उदासीनता के भाव चक्कर लगा रहे थे, क्योंकि उसके और उसके लड़के के विचारों का अन्तर स्पष्ट हो गया था। उसे यह भी मालूम हो गया था कि वह अन्तर दिन-पर-दिन बढ़ता ही जायगा! उसने जाड़ों के दिन सेण्ट पीटर्सबर्ग के आधुनिक कारखानों के निरीक्षण में व्यर्थ गँवाये थे, नवयुवकों के वार्तालाप सुनने का आनन्द उसने नाहक़ लिया था! उन (नवयुवकों) के उत्तेजना पूर्ण वाद-विवाद में अपनी एकान्त टिप्पणी घुसेड़ देने की प्रसन्नता उसने फ़जूल ही प्राप्त की थी।

"भाई कहता है कि हम लोग उनकी अपेक्षा अधिक युक्ति-

संगत हैं," उसने मन-ही-मन सोचा—"और मैं भी बिना किसी गर्व के कह सकता हूँ कि ये छोकरे हमारी अपेक्षा सत्य से बहुत दूर हैं। फिर भी मेरा विश्वास है कि उनके अन्दर कुछ बातें ऐसी हैं, जिनका हममें नितान्त अभाव है—कोई ऐसी बात है, जो उन्हें हमारी अपेक्षा अधिक निपुण बनाती है । वह चीज़ क्या है ? क्या वह युवावस्था है ? नहीं, वह केवल युवावस्था ही नहीं है। क्या यह बात है कि उनमें हमारी अपेक्षा 'रईसी' की भावना कम है ? सम्भवतः यही बात है।"

सिर नीचा करके उसने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

"फिर भी कविता-जैसी चीज़ को न मानना !" उसने गुन-गुनाकर कहा—"कला और प्रकृति के साथ सहानुभूति न रखना, कैसी खेद की बात है !"

वह सिर उठाकर चारों ओर इस प्रकार देखने लगा, मानो इस बात को समझने की चेष्टा कर रहा है कि संसार में कोई भी व्यक्ति प्राकृतिक जगत् के साथ सहानुभूति रक्खे बिना कैसे रह सकता है। सन्ध्या निकट आ रही थी और बाग़ से आधे वर्स्ट की दूरी पर स्थित एक वृक्ष की आड़ से स्थिर भूखण्ड पर सूर्य की किरणें दीख रही थीं। वृक्ष की पार्श्ववर्ती पगडण्डी पर एक किसान सफ़ेद टाँघन पर सवार जा रहा था, और यद्यपि घोड़े और सवार पर वृक्ष की छाया पड़ रही थी, फिर भी सवार स्पष्ट दिखायी दे रहा था और उसके घोड़े का एक-एक क़दम उठता साफ़ दीखता था ।

सूर्य की किरणें वृक्ष की सघनता को चीरकर ऐसी मनोहर चमक के साथ पार कर रही थीं कि पेड़ की एक-एक पत्ती और तना सब आरक्त आकाश के रंग में रँगे-से दीखते थे। चमगादड़ इधर से उधर चक्कर लगा रहे थे, वायु पूर्णतः निस्तब्ध थी, कहीं-कहीं एकाध मधु-मक्खियाँ बकायन के फूलों पर सुस्ती और निद्रालुता की आवाज़ में भिनभिना रही थीं और उनका एक झुण्ड वृक्ष के आपुष्पित पल्लव पर मँडला रहा था।

"ओह, कैसा सुन्दर दृश्य है यह!" निकोलाई के मुँह से बरबस निकल पड़ा। इस समय वह अपनी एक प्रिय कविता गा रहा था।

सहसा उसे आरकाडी और 'वस्तु और शिल्प' नामक पुस्तक की याद आ गयी और यद्यपि वह जहाँ बैठा था, वहाँ से नहीं हिला; पर अब उसने कविता का उच्चारण नहीं किया, और अपनी सारी मानसिक शक्ति अपने उस एकाकी, अनिश्चित और खेदपूर्ण विचारों में लगा दी। उसे सदा से भावनाओं का स्वप्न देखना बहुत प्रिय था; और जब से वह देहात में रहने लगा है, तब से उसकी यह प्रकृति और भी बढ़ गयी है। वह सोचने लगा कि अभी कुछ ही दिनों पहले उसने गाड़ियों के अड्डे पर बैठकर अपने पुत्र की प्रतीक्षा करते हुए क्या-क्या स्वप्न देखे थे। उस दिन से अब कितना परिवर्तन हो गया है, और उसके पुत्र तथा उसके बीच जो अस्पष्ट सम्बन्ध था, उसमें एक निश्चित गति का कैसा आविर्भाव हो गया है। इसके बाद उसके

सम्मुख उसकी स्वर्गीया पत्नी की मूर्ति आ उपस्थित हुई। उसे उसने उस रूप में नहीं देखा, जैसी वह अपने जीवन के अन्तिम दिनों में थी—अर्थात् उसका वह दयालु, गृह-प्रबन्ध-पटु एवं सञ्चयशील रूप न दिखायी देकर, किशोरावस्था का छरहरे बदनवाला चित्र दिखायी दिया, जिसकी निरीह आँखें प्रश्न-सूचक ढंगसे उसकी ओर देख रही थीं। निकोलाई की आँखों के सामने उस नवोढ़ा का चित्र स्पष्ट नाचने लगा। वही स्वच्छता-पूर्वक गुँथी हुई चोटी उसके गले पर लटक रही थी। उसे उस दिन की याद आ गयी, जब एक विद्यार्थी के रूप में उसने पहले-पहल अपने कमरे पर जानेवाले ज़ीने के पास उसे देखा था। उसे वह बात भी याद आ गयी, जब संयोग-वश एक दिन उस (लड़की) को धक्का लग जाने के कारण उसने रुककर माफ़ी माँगी थी, और 'माफ़ कीजिएगा' के अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सका था, जिस पर वह झुककर मुस्करायी थी और सहसा चौंककर भाग गयी थी; पर दूसरे ही क्षण फिर ज़ीने के पास आकर पीछे की ओर देखा था और फिर लज्जित होकर गम्भीर मुख-मुद्रा बना ली थी। आह, वह भीरुतापूर्ण प्रथम मिलन, वे अस्फुट और अर्द्ध-उच्चारित शब्द, वह लज्जापूर्ण मुस्कराहट, वह आनन्द और निराशा का बारी-बारी से आवेग, वैवाहिक प्रेम का मुग्धतापूर्ण आह्लाद! ये सब कहाँ चले गये! यह सच है कि वह उसकी स्त्री बनी थी, और उसे इतना सुख पहुँचाया था, जितना संसार के कुछ ही भाग्यवानों को मिला करता है;

पर ये विचार अब बार-बार उसके मस्तिष्क में क्यों आते हैं—"वे मधुमय दिवस सदैव के लिये क्यों नहीं स्थिर रहे, जिससे हम दोनों ऐसा जीवन व्यतीत करते, जिसमें मृत्यु का नाम भी न होता ?"

उसने अपने विचारों को क्रमवद्ध करने की चेष्टा नहीं की। उसके मस्तिष्क में यह विचार प्रधान रूप से व्याप्त हो रहा था कि वह उन परम सुन्दर दिनों के साथ पुनः अपना संसर्ग स्थापित करने के लिये सर्वस्व त्याग करने को प्रस्तुत है और इसके लिये वह केवल स्मृतियों की शक्ति का ही आश्रय न लेकर कोई दृढ़तर उपाय करेगा। वह एक बार फिर मरिया को अपने निकट देखना चाहता था और उसकी प्रिय मूर्ति को सजीव रूप में अपने पार्श्व में बद्ध करना चाहता था। इस समय उसकी विचित्र अवस्था हो रही थी।

"निकोलाई पिट्रोविच !" किसी निकटवर्ती स्थान से थेनिश्का ने पुकारा—"कहाँ हो ?"

इस पुकार को सुनकर उसके मन में एक ऐसी भावना का उदय हुआ, जिसे न तो घबराहट ही कह सकते हैं, न लज्जा ही। उसकी मृत स्त्री और थेनिश्का में किसी प्रकार के सादृश्य की सम्भावना नहीं थी, फिर भी उस समय उसके मन में कुछ ऐसा ही विचार आ गया और उसने खेद के साथ सोचा कि थेनिश्का ने उसे खोजने के लिये क्या यही अच्छा मौक़ा देखा था ! उसकी आवाज़ सुनकर न जाने कैसे निकोलाई को अपने पके

वालों, वृद्धावस्था और वर्तमान दशा का चित्र सामने स्पष्ट दिखायी पड़ा। क्षण-भर के लिये वह मोहक संसार, जिसमें वह अभी-अभी प्रविष्ट हुआ था, और जो भूतकाल की धूमिल तरंगों से निकल रहा था, प्रकम्पित होकर विलुप्त हो गया।

"यहाँ हूँ थेनिश्का," उसने कहा—"तुम चलो, मैं अभी आता हूँ।"

"यह दूसरी याददाश्त है कि मैं अब एक रईस हूँ।" उसने मन-ही-मन सोचा।

थेनिश्का बैठ गयी, और सहसा निकोलाई को स्मरण आया कि जब से वह विचार-सागर में डुबकी लगा रहा है, तब से कितनी रात बीत गयी। उसके चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था, केवल थेनिश्का का पीला और अस्पष्ट चेहरा उसके सामने दीख रहा था। वह उठकर घर की ओर चलना चाहता था; पर उसके स्नायु-तन्तु अभी शान्त नहीं हुए थे, और वह कभी पृथ्वी की ओर और कभी अगणित तारागणों से भरे हुए आकाश की ओर देखते हुए वहीं बाग में टहलने लगा। इस चेहलक़दमी को उसने तब तक जारी रक्खा, जब तक वह थक-कर बिल्कुल चूर नहीं हो गया; क्योंकि अब भी उसके हृदय से अस्पष्टता, निराशा और खलबली के भाव दूर नहीं हुए थे। यदि बज़ारोव उसकी इस मनोदशा को समझ पाता, तो वह कैसा हँसता! आरकाडी भी इन विचारों की निन्दा किये बिना न रहता, क्योंकि निकोलाई-जैसे चवालीस वर्ष की उम्रवाले

आदमी की आँखों से—जो एक रियासत का मालिक और गृहस्थी का सञ्चालक था—आँसुओं की धाराएँ बह चली थीं। बेला बजाने और आँसू बहाने की इन अवस्थाओं में कैसा महान् अन्तर था!

किन्तु फिर भी निकोलाई ने टहलना नहीं बन्द किया, क्योंकि वह अभी तक अपने मन को कमरे की रोशनी से जगमगाती हुई उन खिड़कियों की ओर ले जाने के लिये राज़ी नहीं कर सका, जो उसे अपने शान्त वातावरण में बुलाकर बाग़ के अँधेरेपन, हवा के झोकों और दुःख एवं आवेग की भावनाओं से उसका पिण्ड छुड़ाना चाहती थीं।

टहलते-टहलते रास्ते के मोड़ पर सहसा पाल पिट्रोविच उसके सामने आ गया।

"क्यों, बात क्या है?" पाल ने पूछा—"तुम भूत-जैसे सफ़ेद क्यों नज़र आ रहे हो। तबियत ख़राब है क्या? जाकर लेट क्यों नहीं रहते?"

निकोलाई पिट्रोविच ने थोड़े ही शब्दों में भाई को अपनी तबीयत का हाल बतलाया—और फिर घर की ओर मुड़ा। पाल पिट्रोविच बाग़ के दूसरे छोर तक सैर के लिये गया और स्वर्गीय कल्पना में डुबकी लगाने का उपक्रम करने लगा। फिर भी उसकी सुन्दर आँखों में तारों की चमक के अतिरिक्त और कोई बात नहीं दिखायी देती थी, क्योंकि वह भावुक नहीं था और उसकी शुष्क, असंतुष्ट, क्रुद्ध, नाज़ुक और

मनुष्य से घृणा करनेवाली आत्मा हवाई क़िले बनाने के योग्य नहीं थी।

"मैं बताऊँ तुम्हें," बज़ारोव ने उसी रात आरकाडी से कहा—"मेरे विचार में एक अद्भुत बात आयी है। तुम जानते हो, आज तुम्हारे पिता कहते थे कि किसी रिश्तेदार ने निमंत्रण भेजा है; किन्तु वे उसे स्वीकार नहीं करना चाहते। भला अगर हम दोनों—तुम और मैं—इस निमंत्रण को स्वीकार करलें, तो कैसा हो, ख़ासकर इस बात को देखते हुए कि निमंत्रण में तुम्हारा भी नाम है ? मौसिम अच्छा हो चला है, हम लोग गाड़ी पर मज़े में उस शहर तक पहुँच जायँगे। इस प्रकार हम-तुम संयोगवश कई दिनों तक अबाध रूप में परस्पर बातचीत भी कर सकेंगे।"

"तो क्या तुम वापस यहाँ फिर आओगे ?"

"नहीं। वहीं से मैं अपने पिता के पास चला जाऊँगा। वे सिर्फ़ तीस वर्स्ट के फ़ासले पर रहते हैं, और मैंने बहुत दिनों से न तो उन्हें ही देखा है, न माँ को ही। इसके अलावा बुड्ढे और बुढ़िया को ज़रा ख़ुश भी रखना चाहिए। उन लोगों—विशेषतः मेरे पिता—ने मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है और मैं उनका इकलौता बेटा हूँ।"

"तो क्या तुम बहुत दिनों तक घर ठहरोगे ?"

"नहीं। वहाँ ठहरना तो सुस्त बनना है।"

"तो वापसी में एक बार यहाँ फिर आना ?"

"अगर सम्भव हुआ। तो फिर हम लोग चलेंगे न?"

"जैसी तुम्हारी इच्छा।" आरकाडी ने बेपर्वाही के साथ कहा। वास्तव में वह बज़ारोव के प्रस्ताव से खुश हुआ था; पर केवल इस विचार से कि उसे अपना 'निहिलिस्ट-वाद' क़ायम रखना चाहिए, उसने अपने मनोभावों को प्रकट होने से रोक रक्खा।

दूसरे ही दिन दोनों मित्र······नगर को रवाना हुए। मैरिनों के युवक-दल में उनके चले जाने से शोक छा गया, और दनियाशा को तो इतना दुःख हुआ कि वह रो पड़ी। केवल दोनों वयःप्राप्त भाइयों ने अपेक्षाकृत स्वतंत्रता का अनुभव किया।

———

१२

······नगर—जहाँ हमारे मित्र-द्वय मेहमान बनकर जा रहे हैं, उस सूबे में स्थित है, जहाँ का गवर्नर ऐसे युवक, प्रगतिशील* और अत्याचारी गवर्नरों में से था, जो रूस में अनन्त यंत्रणा फैलाये रखना चाहते थे। अपने शासन के पहले वर्ष में उसने न केवल प्रान्तीय कौंसिल के प्रेसीडेण्ट से (जो एक पुराना स्टाफ़-अफ़सर, अश्व-विज्ञानविद् और कृषि-विशेषज्ञ था) झगड़ा किया; वरन् अपने स्टाफ़वालों से भी लड़ा—परिणाम यह हुआ कि जिस समय का यहाँ ज़िक्र किया जा रहा है, उस

---

*तत्कालीन रूसी राजनीतिज्ञों के दल-विशेष से सम्बन्ध रखनेवाले, जो उस समय के सरकारी नौकरों में अपेक्षाकृत प्रगतिशील विचार के समझे जाते थे, प्रगतिशील कहलाते थे।

वक्त यह कलह यहाँ तक बढ़ गयी थी कि सरकार को इस मामले की जाँच के लिये एक प्रतिनिधि भेजना पड़ा। इस (जाँच) का भार सरकार ने मटवी इलिच कोलियाज़िन पर डाला। यह कोलियाज़िन उस कोलियाज़िन का पुत्र था, जो कभी किरसानोव-बन्धु (पाल और निकोलाई) का अभिभावक रह चुका था। यह नये ख़यालात का आदमी समझा जाता था और यद्यपि इसकी अवस्था चालीस वर्ष से कुछ ऊपर ही रही होगी, फिर भी राजनीतिज्ञ बनने की इसमें अभिलाषा थी। इसके सीने पर तमग़ों के ढेर-के-ढेर लटकते थे (जिनमें से एक किसो छोटे विदेशी शासक का दिया हुआ भी था) और यह उसी गवर्नर की तरह—जिसकी कि वह जाँच करने आया था—प्रगतिशील विचार का समझा जाता था, और अपने-आप को स्वयं भी बहुत ऊँचा समझता था। किन्तु गर्वीले स्वभाव का होते हुए भी मटवी सदा एकरस रहनेवाली सादगी और दिल्लगीबाज़ी की आदत को नहीं दूर कर सका था। उससे कोई बात कही जाती, तो बड़ी प्रसन्नता से सुनता और दिल खोलकर ऐसा हँसता कि लोग उसे 'बुरा आदमी नहीं है' कहकर स्मरण किया करते थे। यह सच है कि ख़ास-ख़ास मौक़ों पर (अगर पुरानी लोकोक्ति दुहरायी जाय) वह 'कीचड़ उछालने में बड़ा पटु' था। वह बहुधा कहा करता कि "सरकारी काम में ताक़त दिखाना अनिवार्य होता है।" फिर भी वह जहाँ कहीं जाता, अन्त में लोग उसे बेवकूफ़ बनाते थे, और अधिक अनुभवी सरकारी

नौकर उससे हमेशा ख़ार खाये रहते थे। इसके अतिरिक्त एक बड़ा गुण उसमें यह भी था कि वह गीज़त* का बड़ा आदर करता था, और सब जगह यह बात सिद्ध करने की चेष्टा करता था कि वह (कोलियाज़िन) ऐसे आदमियों में नहीं है, जो लकीर पर चलनेवाले और दफ़्तरी हकूमत के अवसरप्राप्त चाकर होते हैं, वरन् वह एक ऐसा आदमी है जो सामाजिक जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण नये चमत्कार पर दृष्टि रखता है। मतलब यह कि अपने सम्बन्ध में इस प्रकारकी प्रशंसात्मक बातें उसने रट रक्खी थीं और साथ ही तत्कालीन साहित्य के विकास का भी अध्ययन (यद्यपि काफ़ी बेपर्वाही और दम्भ के साथ) किया था। और अन्तिम कार्य, जो उसने शायद ही कभी किया था, वह था सड़क पर जाते हुए विद्यार्थियों के जुलूस में भाग ले लेना। यद्यपि वह उम्र में विद्यार्थियों का ताऊ जंचता था, पर जुलूस में जाकर वह अपने को विद्यार्थी ही समझने लगता था। सारांश यह कि उसकी परिस्थितियों और तत्कालीन समय ने ऐसी अवस्था उत्पन्न कर दी थी कि एलेग्ज़ेण्ड्रा के ज़माने के उन सरकारी कर्मचारियों से इसकी नहीं पटी, जो उस समय सेण्ट पीटर्सबर्ग में व्यापार करनेवाली श्रीमती श्वित्सिन†

---

*फ्रांसिस पीर गुलाम गीज़त (१७८७-१८७४ ई०) प्रख्यात फ्रांसीसी राजसचिव, राजदूत और शिक्षा-विशेषज्ञ था।

†श्रीमती श्वित्सिन (१७८२-१८५७ई०) रूसी जनरल श्वित्सिन की स्त्री थीं।

के यहाँ स्वागत में जाने के पहले कैंडिला* के पृष्ठ पढ़ा करते थे। तो भी मटवी यद्यपि एक चतुर दरबारी था, पर दर-असल था धूर्त, क्योंकि वाह्याडम्बर कुछ भी क्यों न हो, उसमें सिवा यह जानने के कि दूसरों से अपनी रक्षा कैसे की जाती है (जो वास्तव में जीवन में बड़ी सफलता का साधन भी है), और कोई योग्यता या ज्ञान नहीं था। राज-काज में वह साधारण बुद्धि का उपयोग करने में भी असमर्थ था।

इस मौक़े पर उसने आरकाडी की अच्छी आव-भगत की, और सभ्यजनोचित हँसी-दिल्लगी से बातचीत की। किन्तु जब उसे मालूम हुआ कि किरसानोव-बन्धु इस मौक़े पर स्वयं नहीं आये हैं, तो उसका मन कुछ उदास होगया।

"तुम्हारे पिता तो हमेशा के ऐसे ही हैं।" उसने मख़मली वर्दी का पुछल्ला अलग करते हुए कहा। इसके बाद उसने एक युवक सिविलियन की ओर रुख़ कर के, जो कड़े बटनों की वर्दी पहने खड़ा था, क्रुद्ध भाव से पूछा कि वह क्या चाहता है। इस घुड़की से युवक सिविलियन (जिसके ओठों से ऐसा मालूम होता था कि वे हमेशा के लिये सी दिये गये हैं) अपने उच्च अफ़सर (मटवी) की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा और तनकर खड़ा हो गया। किन्तु मटवी जब एक बार अपने से नीचे

---

*इटिन बानेट-डि-मैबली-डि-कैंडिला एक फ्रांसीसी दार्शनिक (१७१५-८० ई०) था, जो ज्ञान का आधार केवल वाह्येन्द्रियों को मानता था।

अफ़सर पर धाक जमा लेता था, तो फिर उसकी ओर ध्यान नहीं देता था।

यहाँ कुछ शब्द बड़े अफ़सरों के सम्बन्ध में कह देना अनुचित न होगा। उनके लिये अपनी 'धाक जमाना' एक अत्यन्त प्रिय वस्तु है, और बहुतेरे अफ़सर इसके लिये सचेष्ट रहते हैं। विशेषतः नीचे लिखा ढंग तो उन लोगों की विशेष प्रिय चीज़ समझी जाती है। अंग्रेज़ों के कथनानुसार दूसरे शब्दों में इसे एक तरह की 'प्रार्थना' कह सकते हैं—सहसा बड़ा अफ़सर ऐसा रूप बना लेता है कि वह अपनी सारी बुद्धि लगाकर भी कोई बात नहीं समझता और ऐसा मुँह बना लेता है, मानो संसार का अनन्त होनहार उसी के हाथों में है। उदाहरण के लिये अगर बड़ा अफ़सर पूछ बैठे कि आज कौन-सा दिन है, और उसे (भयातुर और काँपती हुई ज़बान से) शुक्रवार बतलाया जाय तो—

"क्या ?" बड़ा अफ़सर गर्जकर कान खोलते हुए सुनने की चेष्टा करके कहेगा—"क्या ? क्या कहा तुमने ?"

"आ-ज-शु-क्र-वा-र है, हु-ज़ू-र।"

"क्या कहा ? शुक्रवार ? शुक्रवार का क्या मतलब ?"

"हु-ज़ू-र, शु-क्र-वा-र सप्ताह के दिनों में से एक है ?"

"इतनी-सी बात कहने के लिये तुम्हें इतना समय नहीं लगाना चाहिये था।"

मटवी भी इसी प्रकार का बड़ा अफ़सर था, यद्यपि वह अपने को उदार-दल का कहा करता था।

"आरकाडी," उसने कहा—"तुम अपना कार्ड* गवर्नर के यहाँ रख आओ। मैं यह इसलिये नहीं कहता कि इस प्रकार उस अधिकारी की चापलूसी की जाय, पर ऐसा आदेश तुम्हें इसलिये दे रहा हूँ कि गवर्नर एक अच्छा आदमी है, और मैं जानता हूँ कि तुम समाज में ज़रा सबसे मिलना-जुलना चाहोगे, क्योंकि मुझे आशा है कि तुम मिलनसार लड़के हो। परसों गवर्नर साहब एक ज़बर्दस्त बाल* दे रहे हैं।

"और आप उसमें जायँगे ?" आरकाडी ने पूछा।

"हाँ ज़रूर, मेरे पास तो उसके लिये टिकट आयेंगे," उसने आरकाडी से ज़रा अफ़सोस-सा ज़ाहिर करते हुए कहा—"मैं समझता हूँ, तुम नाचना जानते हो ?"

"जी हाँ, पर बड़े बुरे ढंग से।"

"कोई हर्ज नहीं। यहाँ सामाजिक विस्तार काफ़ी है, और तुम-जैसे नवयुवकों का बिना नाचे काम नहीं चल सकता। यह बात भी मैं इसलिये नहीं कह रहा हूँ कि मैं किसी भी तरह पुरानी बातों का पुजारी हूँ, न इसलिये कि बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन होना चाहिए, वरन् इसका कारण यह है कि बायरन-वाद अब रद्दी की टोकरी में फेंकने-योग्य हो गया है।

---

* विज़िटिंग कार्ड, जो परिचय प्राप्त करने के लिये भेजा जाता है।

† नृत्य-विशेष जिस में भोजन की दावत भी सम्मिलित होती है।

"पर मैं न तो बायरन-वादी ही हूँ, न—"

"अच्छा, मैं कुछ महिलाओं से तुम्हारा परिचय कराऊँगा—मैं ख़ुद तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा," मटवी इलिच ने आत्म-तुष्टि के भाव से कहा—"दर-असल, तुम्हारा समय यहाँ बड़े मज़े में कटेगा।"

इसी मौक़े पर एक नौकर ने आकर ख़बर दी कि सूबे के प्रधान ख़ज़ाञ्ची साहब मिलने के लिये पधारे हैं। ख़ज़ाञ्ची सौम्य आँखों वाला एक पुराना और अनुभवी आदमी था। उसके ओठों के चारों ओर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। वह प्रकृति का बड़ा प्रेमी था और वसन्त के सम्बन्ध में उसका कथन था कि "प्रत्येक पुष्प से मधु-मक्षिकाएँ अपना-अपना कर वसूल करती हैं।" ख़ज़ाञ्ची साहब के आते ही आरकाडी को वहाँसे खिसकने का मौक़ा मिल गया और वह वहाँ से चला आया।

"अच्छा," अन्ततः बज़ारोव ने कहा—"मैंने दो रस्सियाँ पकड़ रक्खी हैं, इसलिये मेरे लिये किसी दूसरे की शिकायत करना शोभाजनक नहीं है। चूँकि हम लोग यहाँ स्थानीय सिंहों का निरीक्षण करने आये हैं, इसलिये हमें इस समय यही काम करना चाहिए।"

इन दोनों नवयुवकों से गवर्नर वैसी ही सज्जनता के साथ मिला, जैसी (सज्जनता) उच्च सरकारी अफ़सर दिखा सकते हैं; किन्तु उसने इन्हें न तो बैठने की आज्ञा दी, न स्वयं बैठा। वह (गवर्नर) एक ऐसा आदमी था, जो हमेशा जल्दबाज़ो

और क्रोध का प्रदर्शन किया करता था । प्रतिदिन प्रातःकाल उठते ही वह सख्त वर्दी और कड़ी कालर पहनकर हुक्म देना शुरू कर देता और इस व्यस्तता के साथ काम करता कि कभी शान्ति से खाना नहीं खाता था। इसका प्ररिणाम यह हुआ कि वह प्रान्त-भर में बार्डेलो* के नाम से मशहूर हो गया, जिसकी उपमा न केवल प्रसिद्ध फ्रांसीसी शिक्षक से दी जाती थी, बल्कि उसे लोग 'बरडा'† तक कहते थे । आरकाडी और बज़ारोव को आगामी बाल-नृत्य के लिये आमंत्रित कर के गवर्नर ने दो ही मिनट बाद उन्हें इस प्रकार फिर निमंत्रित किया, मानो पहले उस बात की चर्चा ही नहीं हुई थी; इसी प्रकार उसने उन दोनों मिलनेवालों को परस्पर सगा भाई भी समझा और अनेक बार उन्हें "कैसरोव महाशयो" कहकर सम्बोधन किया।

अन्त में जिस समय दोनों गवर्नर से मिलकर घर की ओर जाने लगे, तो ठिगने क़द का एक आदमी, जो 'स्लैवोफिलों' की सी पोशाक पहने हुए था, पास से होकर जानेवाली एक गाड़ी से कूदकर 'इवजिनी वैसिलिच' का ऊँचा सम्बोधन कर के बज़ारोव से लिपट गया।

"ओ हो, तुम हो महाशय सितनीकोव ?" बज़ारोव ने पूछा—"तुम यहाँ क्योंकर आ गये ?"

---

* लुई बार्डेलो (१६३२–१७०३ ई०) जेसूट कालेज बार्जी का विख्यात प्रोफ़ेसर था।

† रूसी भाषा में 'वरडा' 'उबलती शराब' को कहते हैं।

"इत्तफ़ाक़ से," नवागन्तुक ने गाड़ी की ओर देखकर कोचवान से धीरे-धीरे हाँकने का इशारा करते हुए कहा—"मुझे अपने पिता से काम था; उन्होंने बुलाया था।" सितनीकोव ने सड़क के किनारे की मोरी लाँघते हुए फिर कहा—"तुम्हारे आने की ख़बर पाकर मैं तुम्हारे ठहरने की जगह पर गया।" (बात सच थी, क्योंकि दोनों जब लौटे, तो ठहरने के स्थान पर उन्हें उसका छोड़ा हुआ ऐसा विज़िटिंग कार्ड मिला, जिसके किनारे मुड़े हुए थे और एक तरफ़ फ्रांसीसी ढंग से उसका नाम छपा था तथा दूसरी ओर स्लावनिक ढंग से हस्ताक्षर किया हुआ था।)

"मैं समझता हूँ, गवर्नर के यहाँ से आ रहे हो?" ठिगने आदमी ने कहा—"यद्यपि हृदय से मुझे ऐसी आशा नहीं है।"

"तुम्हारी आशा व्यर्थ है।"

"तब तो अफ़सोस है कि मुझे भी उसे ख़ुश करना पड़ेगा। पर पहले अपने दोस्त से मेरा परिचय तो कराओ।"

"सितनीकोव—किरसानोव।" बज़ारोव ने बिना रुके ही कहा।

"बड़ा ख़ुश हुआ!" सितनीकोव ने एक क़दम पीछे रुककर आरकाडी की ओर रुख़ करते हुए कहा—"मैं आपकी बड़ी तारीफ़ सुन चुका हूँ, किरसानोव महाशय। मैं भी इवजिनी वैसिलिच का पुराना परिचित—पुराना शिष्य कहना अधिक उपयुक्त होगा—हूँ। इन्हीं के द्वारा मुझे आध्यात्मिक पुनर्जीवन मिला है।"

आरकाडी ने बज़ारोव के 'पुराने शिष्य' पर दृष्टि डाली, और ध्यानपूर्वक देखा कि उसका चेहरा छोटा, आलस्ययुक्त प्रसन्न, किन्तु फिर भी व्याकुलता के भाव से पूर्ण था। उसकी छोटी और घुसी हुई आँखें बेचैनी की सूचना दे रही थीं और ओठ प्रभावयुक्त मुस्कराहट के कारण इस प्रकार खुले रहते थे, जैसे काठ के बने हुए हों।

"आप जानते हैं," सितनीकोव ने फिर कहा—"जिस समय इवजिनी वैसिलिच ने मुझसे पहले-पहल कहा कि हमें हर प्रकार के अधिकारियों को उपेक्षा की दृष्टि से देखना चाहिए, मैं प्रसन्नता से गद्गद् हो गया था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानों मैं सहसा परिपक्व हो उठा हूँ। 'आह,' मैंने मन-ही-मन सोचा—'अनन्ततः मुझे वह आदमी मिल गया, जिसकी खोज थी!' हाँ, ज़रा एक बात कह दूँ—इवजिनी वैसिलिच, तुम्हें मेरी एक परिचिता महिला से मिलने के लिये आना पड़ेगा, जो अन्य बातों के अतिरिक्त तुम्हें भली भाँति समझ भी सकेगी, और तुम्हारे आगमन को लाल-चिट्ठियों* के आगमन का सा महत्त्व देगी। शायद तुम उसका नाम भी सुन चुके होगे?"

"नहीं, वह कौन महिला है?" बज़ारोव ने अनिच्छापूर्वक कहा।

---

* उन दिनों रूस में राजनीतिक लाल चिट्ठियों (Red Letters) का प्रकाशन असाधारण घटना का द्योतक समझा जाता था।

"श्रीमती कुर्काशिन, जिसका पूरा नाम इवडोकसिया कुकशिन है। वह न केवल एक अद्भुत चरित्रवाली, बुद्धिमती और प्रभावशालिनी महिला है, वरन् वास्तविक अर्थ में उसे एक 'उद्धारक' स्त्री कह सकते हैं। पर देखो तो सही, अगर हम तीनों उससे अभी मिलने चलें, तो कैसा हो ? यहाँ से दस-ही क़दम के फ़ासले पर तो वह रहती है। वह हमें खाना भी खिलायेगी। मैं समझता हूँ, तुमने अभी खाना तो नहीं खाया होगा ?"

"नहीं, अभी तो हम लोगों ने नहीं खाया है।"

"तो सब इन्तज़ाम ठीक हो जायगा। हाँ, मैं यह भी कह दूँ कि वह स्वतंत्र स्त्री है, यद्यपि है विवाहिता।"

"और रूपवती भी ?" बज़ारोव ने पूछा।

"न-हीं—रूपवती तो नहीं कहा जा सकता।"

"तो हमें उससे मिलने के लिये क्यों ले चल रहे हो ?"

"ओ हो ! तुम अपनी दिल्लगी से बाज़ न आओगे। पर याद रखना, वह हमें एक बोतल शैम्पेन* भी पिलायेगी।"

"जो मनुष्य के लिये क्रियात्मक रूप से ग्राह्य है !"

सितनीकोव खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"तो फिर चलें ?" उसने पूछा

"मैं निश्चय नहीं कर सकता।"

आरकाडी इसी मौक़े पर बोल उठा।

---

* उत्कृष्ट मदिरा।

"हम लोग स्थानीय व्यक्तियों का निरीक्षण करने आये हैं," उसने कहा—"तो फिर उनके निरीक्षण करने में क्या हर्ज है ?"

"सच बात है," सितनीकोव ने समर्थन किया—"और, आपको भी चलना ही पड़ेगा, किरसानोव महाशय। हमलोग आपको अकेले छोड़कर नहीं जायँगे।"

"क्या ? हम तीनों ही उसके यहाँ जा धमकें ?"

"हर्ज क्या है ? वह तो स्वयं एक विलक्षण स्त्री है।"

"और तुमने कहा है कि वह हम लोगों को एक बोतल शैम्पेन पिलायेगी।"

"हाँ, या हम में से प्रत्येक को एक-एक बोतल," सितनीकोव ने कहा—"मैं उसकी ज़मानत दे दूँगा।"

"काहे की ज़मानत दोगे ?"

"अपने सिर की।"

"थैली की ज़मानत ज़्यादा अच्छी होती; ख़ैर चलो चलें।

१३

जिस बँगले में अवदोतिया या इवडोकसिया निकितिश्ना कुकशिन रहती थी, वह मास्को के बँगलों की बानगी का बना था और······नगर की एक ऐसी सड़क पर स्थित था, जो हाल में ही जल चुकी थी। (जैसा कि हम जानते हैं, प्रत्येक पाँचवें वर्ष रूस की प्रान्तीय राजधानियाँ जलाकर ख़ाक में मिलादी जाया करती थीं) सामने के दरवाज़े के बग़ल में (एक फटे-से सिकुड़े विज़िटिंग कार्ड के ऊपर) एक घण्टी की मुठिया लगी हुई थी। मुलाक़ातवाले कमरे में जाने पर आगन्तुकों को एक स्त्री मिली, जो शक्ल-सूरत और पहनावे से दासी न जँचकर गृह-स्वामिनी की सहेली मालूम होती थी। यहाँ यह बतलाने की ज़रूरत मुश्किल से है कि ये दोनों बातें—घण्टी की मुठिया और

सहेली की नियुक्ति—इस बात की द्योतक थी कि गृह-स्वामिनी 'प्रगतिशीला' स्त्री है।

सितनीकोव के यह पूछने पर कि अवदोतिया निकितिश्ना अन्दर हैं या नहीं, पास के कमरे से पतले स्वर में आवाज़ आयी।

"ओ हो, तुम हो विक्टर ? अन्दर आजाओ।"

सहेली वहाँ से हटकर दूसरी ओर चली गयी।

"मैं अकेला नहीं आया हूँ।" सितनीकोव ने आरकाडी और बज़ारोव की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने के बाद अपना बड़ा कोट निकालते हुए कहा। कोट के नीचे उसने एक मुलायम कपड़े की जाकेट पहन रक्खी थी।

"कोई हर्ज नहीं," अन्दर से बोलनेवाले स्वर ने कहा—"आजाइए।"

तीनों ही युवक कमरे के अन्दर गये, जो अन्दर से देखने पर बैठक की बजाय एक कारख़ाना-सा मालूम पड़ता था। मेज़ों पर अनेक तरह के काग़ज़ात, चिट्ठियाँ और रूसी भाषा की पत्रिकाएँ (जिनमें से अधिकांश खोली भी नहीं गयी थीं) पड़ी थीं, फ़र्श पर पिये हुए सिगरेटों के अधजले छोटे-छोटे टुकड़े जहाँ-तहाँ पड़े हुए थे, और चमड़े की गद्दीवाले सोफ़ा पर एक महिला—अल्पवयस्क और भूरे बालवाली—मैला रेशमी गाउन पहने कुछ पीछे की ओर झुकी हुई आराम से लेटी हुई थी। उसकी मोटी कलाइयों में दो बड़ी चूड़ियाँ चिपटी हुई थीं और

सिर पर बूटेदार ओढ़नी थी। सोफ़ा से उठते हुए उसने बेपर्वाही के साथ मख़मली और रोयेंदार गोटवाली मफ़लर कन्धे पर डालकर आलस्यपूर्वक 'गुड् डे* विक्टर!' कहा, और उस (सितनीकोव) से हाथ मिलाया।

"बज़ारोव—किरसानोव," सितनीकोव ने यकायक बज़ारोव की सी नक़ल कर के दोनों का उस से परिचय कराया, जिस पर वह महिला शिष्टाचार के ढंग से "आप सकुशल हैं ?" कह-कर बज़ारोव की ओर स्थिर दृष्टि से देखने लगी। उसकी आँखें बड़ी और चमकदार थीं तथा नाक अनुपाततः छोटी और ऊपर को उभड़ी हुई। कुछ क्षण बज़ारोव को देखकर उसने कहा—"मैंने आपको पहले देखा है।"

यह कहकर उसने उससे हाथ मिलाया।

बज़ारोव ने भवें चढ़ालीं, क्योंकि यद्यपि इस स्वतंत्र महिला के स्पष्ट और रहस्यहीन मुख-मण्डल में कोई ऐसी बात नहीं थी, जो किसीको उसकी ओर जाने से पीछे रोके, तो भी उसके रूप में कुछ ऐसी बात थी, जिसे देखकर मुलाक़ाती को यह पूछने की इच्छा हो जाती थी कि "आप भूखी हैं, अथवा किसी बात से घबरायी या डरी हुई हैं ? आप हमेशा किस चीज़ की चाह में रहती हैं ?" सितनीकोव की तरह वह बोलती भी इस तरह से थी कि उसके प्रत्येक शब्द और प्रत्येक इंगित से ऐसी संयम-हीनता प्रकट होती थी कि कभी-कभी तो उसका बोलना ही भद्दा

*दिन का प्रणाम।

मालूम होता था। सारांश यह कि यद्यपि वह अपने को सीधी-सादी और सहृदया स्त्री समझती थी, फिर भी उसका बर्ताव ऐसा था कि उसे देखनेवाले को—चाहे वास्तव में उस (महिला) का अभिप्राय कुछ भी हो—यही निश्चय हो जाता था कि उसके दिल में कोई-न-कोई छल छिपा हुआ है, और वह प्रत्येक बात किसी 'मतलब' से कर रही है;—अर्थात् उसकी सादगी के अन्दर बेसादगी और कृत्रिमता भरी हुई है।

"हाँ, मैं आपसे पहिले मिल चुकी हूँ, बज़ारोव महाशय," उसने दुहराया (मास्को की तत्कालीन स्त्रियों की तरह वह भी पुरुषों को, घनिष्ट परिचय न होते हुये भी, केवल उनके आधे नाम से ही पुकारती थी) "आप सिगार पियेंगे ?"

"धन्यवाद," सितनीकोव बीच में ही बोल उठा—(वह आरामकुर्सी में एक पाँव के ऊपर दूसरा रक्खे हुए लेट रहा था) "हम लोगों को कुछ खिलाइये भी, क्योंकि यहाँ भूख के मारे बुरा हाल है। एक बोतल शैम्पेन भी मँगवा दे सकती हैं।"

"पूरे साइबेरिट* भुक्खड़ हो !" इवडोक्सिया ने मुस्करा कर (जिससे उसके ऊपरी मसूड़े ख़ासतौर से दिखायी पड़े) कहा—"क्यों बज़ारोव, हैं न यह ?"

"नहीं; मैं तो सिर्फ़ ज़िन्दगी के आनन्द भोगना पसन्द

---

* साइबेरिट, साइबेरिया निवासियों के से (अत्यधिक मांसाहार करनेवाले) स्वभाववालों को कहते हैं।

करता हूँ," सितनीकोव ने शानदार विरोध करते हुए कहा—"इससे उदार-दल-वादी बनने में भी कोई बाधा नहीं पड़ती।"

"पड़ती है, पड़ती है," इवडोकसिया ने कहा। उसने नौकर को खाना और शैम्पेन लाने का हुक्म दिया—"आपकी इस पर क्या राय है?" बज़ारोव की ओर रुख करके उसने पूछा—"मुझे निश्चय है कि आप मुझ से सहमत होंगे।"

"नहीं, मैं नहीं हूँ," उसने उत्तर दिया—"बल्कि मेरा तो यह विचार है कि रासायनिक दृष्टि-बिन्दु से भी गोश्त का टुकड़ा रोटी के टुकड़े से अच्छा होता है।"

"तो आप रसायन-शास्त्र पढ़ते हैं,?" इवडोकसिया ने पूछा—"मेरा भी रसायन-शास्त्र से बड़ा प्रेम है। वास्तविक बात तो यह है कि मैंने एक ख़ास तरह की लेई का आविष्कार किया है।"

"लेई का? आपने?"

"हाँ, मैंने। आप उसके इस्तेमाल का अनुमान तो लगाइये। उससे ऐसी गुड़ियाँ और पाइप* बन सकते हैं, जो टूट ही नहीं सकते। देखिए, आपकी तरह मैं भी क्रियात्मक प्रवृति की हूँ। पर अभी तक मैंने अपने अध्ययन का कोर्स समाप्त नहीं किया है। अभी मुझे लीबिग पढ़ना है। आपने 'बीदामस्ती' में प्रकाशित 'स्त्रियों के कार्य' शीर्षक किसलियाकोव का लेख पढ़ा है? अगर न पढ़ा हो, तो अवश्य पढ़ियेगा। (क्योंकि मैं समझती हूँ

* तम्बाकू पीने की नली।

कि आप स्त्रियों के प्रश्न में कुछ दिलचस्पी लेते हैं, और पाठ-शालाओं के प्रश्न से भी अनभिज्ञ नहीं हैं।) पर आपके दोस्त का विषय क्या है ? हाँ, और आपका नाम क्या है ?"

श्रीमती कुक्शिन ये प्रश्न ऐसी बेपर्वाही से कर रही थी कि उसे उनका जवाब सुनने की अभिलाषा नहीं थी। उसी प्रकार जैसे एक लड़का अपनी दायी से ऐसे-ऐसे प्रश्न करता है, जिनका आधार कोई जिज्ञासा-भाव नहीं होता।

"मेरा नाम आरकाडी निकोलाइविच किरसानोव है," आरकाडी ने स्वयं उत्तर दिया—"और मेरा ख़ास विषय है, कोई भी काम न करना।"

इवडोकसिया खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"कैसी अच्छी बात है !" उसने कहा—"तब तो आप धूम्र-पान भी न करते होंगे ? विक्टर, मैं तुम से नाराज़ हूं !"

"क्यों ?" सितनीकोव ने पूछा।

"क्योंकि मुझे अभी-अभी मालूम हुआ है कि तुम फिर उस निकम्मी औरत जार्जिस सैण्ड का पक्ष ले रहे हो। भला उसकी (जिसे शिक्षा और जीवन-शास्त्र आदि, किसी विषय का कुछ भी ज्ञान नहीं है) तुलना इमर्सन से कैसे की जा सकती है ? दर-असल मेरा तो विश्वास है कि उसने अपने जीवन में कभी गर्भ-विद्या का नाम भी नहीं सुना—यद्यपि आजकल इसका ज्ञान रक्खे बिना किसी का काम नहीं चल सकता।" इसके बाद वह हाथ हिलाते हुए विशेष भावापन्न होकर बोली—"पर इलीसीविच का

लेख बहुत सुन्दर था। बड़ा ही मेधावी सज्जन मालूम पड़ता है।" (केवल 'आदमी' की जगह 'सज्जन' कहना भी इवडोकसिया की आदत में शुमार था) बज़ारोव, आप आकर मेरे पास सोफ़े पर बैठ जाइये। आप चाहे न जानते हों, पर मैं आपसे बहुत डर रही हूँ।"

"आप मुझ से डर क्यों रही हैं ? (धृष्टतापूर्ण प्रश्न के लिये माफ़ कीजिएगा।)"

"क्योंकि आप एक भयानक सज्जन हैं—आप एक ऐसे क्षारवत् आलोचक हैं कि आपकी उपस्थिति में बोलते हुए मैं ऐसी मालूम पड़ती हूँ, जैसे किसी ऊसर की रानी हूँ ! ज़मींदारिन तो मैं हूँ ही, क्योंकि यद्यपि मैंने इरोथी नामक एक स्थानीय कारिन्दे को इन्तज़ाम के लिये नियुक्त कर लिया है (और उसे स्वतंत्रता-मिश्रित अधिकार भी दे रक्खा है), फिर भी प्रबन्ध का अन्तिम सूत्र मैं अपने ही हाथ में रखती हूँ। पर यह शहर तो रहने-योग्य नहीं है !—यद्यपि मैं ने इसे स्थायी रूप से अपना घर बना लिया है, पर मजबूरी से ही ऐसा किया है, क्योंकि और कोई चारा नहीं था !"

"शहर तो वैसा ही है, जैसे और शहर हुआ करते हैं।" बज़ारोव ने लापर्वाही से कहा।

"पर यहाँ रहने से लाभ बहुत कम है।" इवडोकसिया ने कहा—"इसीसे मुझे तकलीफ़ है। पहले जाड़ों के दिनों में मैं मास्को में रहा करती थी; पर अब कुकशिन महाशय को वहाँ

अकेले ही रहना पड़ता है। और अब मास्को भी तो वह मास्को नहीं रहा। वास्तव में मेरा विचार विदेश जाने का है। साल-भर से मैं बाहर जाने की तैयारी में हूँ।"

"मैं समझता हूँ आप पेरिस जायँगी ?"

"हाँ, और हीडलबर्ग भी।"

"हीडलबर्ग किसलिये ?"

"वहाँ हर बंसन* महोदय रहते हैं।"

बज़ारोव कोई और बात नहीं सोच सका।

"आप पीर सैपोज़नीकोव को जानते हैं ?" इवडोकसिया ने पूछा।

"नहीं, मैं तो नहीं जानता।"

"वह हमेशा लीदिया खोसटाटोव के यहाँ मिलते हैं।"

"मैं खोसटाटोव को भी नहीं जानता।"

"अच्छा, सैपोज़नीकोव मेरी यात्रा में पथ-प्रदर्शक का काम करेंगे। ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं स्वतन्त्र हूँ और मेरे कोई सन्तान नहीं है। मैं नहीं समझती कि मेरे मुँह से ईश्वर को धन्यवाद कैसे निकल गया।"

उसने अपनी तम्बाकू के धुवें से रँगी हुई उँगलियों से दूसरा

---

* राबर्ट विलियम बंसन (१८११-९९ ई०) रसायन-शास्त्री और प्रकृति विद्या-विशारद थे। उन्होंने मैगनीसियम(धातु-विशेष) का आविष्कार किया और किरछोव की सहायता से प्रकाश-वाहक तत्वों का विश्लेषण किया था।

सिगरेट उठाया और उसे चाटने के बाद ओठों के बीच में दबाकर दियासलाई जलायी। इसी समय नौकर तश्तरी लेकर आया।

"ओ हो, खाना आगया। आप भी कुछ खायेंगे न? विक्टर बोतल की काग खोलो। तुम्हारा यही काम है।"

"मेरा, हाँ मेरा!" सितनीकोव ने कहा और फिर खिल-खिलाकर हँस पड़ा।

"आपके शहर में कोई सुन्दरी स्त्री भी है?" बज़ारोव ने शराब की तीसरी गिलास चढ़ाकर पूछा।

"हाँ," इवडोकसिया ने जवाब दिया—"पर वे सब-की-सब समान-रूप से व्यर्थ हैं। उदाहरण के लिये मेरी सखी मैडम ओडिन्तसोव को ही लीजिए—वह कुरूपा नहीं है, और उसके विरुद्ध थोड़ी-सी सन्दिग्ध बदनामी (जिसका कोई मूल्य नहीं है) के अतिरिक्त और कोई बात नहीं है; किन्तु खेद की बात है कि उसके अन्दर स्वतन्त्रता या विचारों की असंकीर्णता का अभाव है, और सच पूछिए तो इस दिशा में उसके अन्दर कोई गुण नहीं है। स्त्रियों के पालन-पोषण की प्रणाली में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है। मैंने स्वयं इस विषय पर बहुत विचार किया है और अब इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि हमारी स्त्रियों में वास्तविक शिक्षा की कमी है।"

"हाँ, उनके साथ तो बस यही व्यवहार होना चाहिए कि सर्वत्र उनसे घृणा की जाय।" सितनीकोव ने इवडोकसिया की बात का समर्थन-सा करते हुए कहा। उसकी यह आदत थी कि

जहाँ कहीं चुटकी लेने या भाव व्यक्त करने की आवश्यकता होती, वहाँ उसे आनन्दपूर्ण ताव आ जाता था। तो भी, यद्यपि इस समय वह स्त्रियों की ख़ास आलोचना कर बैठा, उसे इस बात का सन्देह बिल्कुल नहीं था कि कुछ ही महीनों बाद उसे अपनी स्त्री की चरम अधीनता केवल इसलिये स्वीकार करनी पड़ेगी कि उसका नाम प्रिंसेज़ डरडोलिवोसोव होगा।

"नहीं, हमारी ये बातें किसी भी स्त्री को कोई लाभ नहीं पहुँचायेंगी," वह फिर बोला—"न कोई ऐसी है ही, जिस पर किसी गम्भीर विचारवाले पुरुष का ध्यान जा सके।"

"उन्हें इस बात की इच्छा करने की ज़रूरत भी मुश्किल से है कि हमारे वार्तालाप से उन्हें कोई लाभ पहुँचे!" बज़ारोव ने कहा।

"आप किनकी बातें कर रहे हैं?" इवडोकसिया ने पूछा।

"आजकल की अलबेली स्त्रियों की।"

"क्या? मैं समझती हूँ, आप इस विषय में प्रोधान* के विचारों से सहमत हैं?"

बज़ारोव उचककर बैठ गया।

"मैं किसीके भी विचारों से सहमत नहीं होता," उसने कहा—"मैं अपने निजी विचार रखता हूँ।"

"यह अपूर्व बात है!" सितनीकोव इस अद्भुत अवसर का

---

* पीर जोसेफ़ प्रोधान (१८०९-६५ई०) फ्रांसीसी विद्वान था, जो सम्राटों की सत्ता का विरोध करना समाज के लिये घातक समझता था।

लाभ उठाते हुए प्रसन्नता से चिल्ला उठा और जिस (बज़ारोव) की वह पूजा करता था, उसके सामने नाच-सा उठा।

"किन्तु मैकाले भी—" मैडम कुकशिन ने फिर कहना शुरू किया।

"मैकाले की क्या बात है!" सितनीकोव ने गर्जकर कहा—"हम अब उन पुतलों का पक्ष-समर्थन कैसे कर सकते हैं?"

"मैं उनका पक्ष-समर्थन नहीं कर रही हूँ," मैडम कुकशिन ने कहा—"मैं तो केवल स्त्रियों के अधिकार का पक्ष ले रही हूँ, जिसके लिये मैं शपथ ले चुकी हूँ कि आजीवन लड़ूँगी।"

"वाहियात—" सितनीकोव ने कहना शुरू किया—फिर क्षण-भर रुककर धीमे स्वर में बोला—"मैं उन (अधिकारों) को अस्वीकार नहीं करता।"

"पर तुम तो अस्वीकार करते ही हो, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम स्लैवोफिल* हो।"

"पर बात इसके विपरीत है, क्योंकि मैं स्लैवोफिल नहीं हूँ, यद्यपि मैं—"

"पर फिर भी तुम स्लैवोफिल हो, क्योंकि डोमोस्ट्राई† के

---

*एक तत्कालीन दल-विशेष के अनुयायी स्लैवोफिल कहलाते थे।

†सोलहवीं शताब्दी की एक रचना, जिसमें यह दिखलाया गया है कि रूसी पति का अपनी स्त्रियों पर कैसा असीम और भयानक अधिकार होता है।

सिद्धान्तों पर विश्वास करते हो और सदा स्त्रियों को कोड़े के बल पर चलाना चाहते हो।"

"कोड़ा भी अपनी जगह पर बुरी चीज़ नहीं होता," बज़ारोव ने कहा—"यह देखते हुए कि हम इसकी आख़िरी बूँद तक पहुँच चुके हैं—"

"किसकी आख़िरी बूँद तक?" इवडोकसिया ने पूछा।

"शराब की, माननीया अवदोतिया निकितिश्ना साहिबा; आपके रक्त की नहीं।"

"जब कभी मैं स्त्री-जाति के प्रति कोई भी कुशब्द सुनती हूँ, तो बेपर्वाही से नहीं टालती," इवडोकसिया ने कहा—"बड़ी भयानक बातें हैं। हमपर आक्रमण करने के पहले लोगों को माइकेल* की रचना डी-ली-आमर पढ़नी चाहिए। अद्भुत पुस्तक है। अब हमें प्रेम के सम्बन्ध में बातचीत करनी चाहिए।"

उसने अपनी विशाल बाहें सोफ़े की गद्दी पर फैला दीं।

कुछ देर तक स्तब्धता छायी रही।

"प्रेम के सम्बन्ध में क्या कहा जा सकता है?" अन्ततः बज़ारोव ने कहा—"आपने अभी-अभी किसी मैडम ओडिन्तसोव (मैं समझता हूँ, यही नाम था?) की चर्चा की थी। वह कौन हैं?"

"बड़ी ही सुन्दरी है," सितनीकोव ने ज़ोर से कहा—"बड़ी ही चालाक, धनी और विधवा स्त्री है। दुर्भाग्यवश उसका

---

* लुई माइकेल (१८३७-१९७६), एक फ्रांसीसी राजद्रोही था, जो बहुत दिनों तक लन्दन में रहा था।

विकास पर्याप्त रूप में नहीं हुआ है, पर हमारी इवडोकसिया के घनिष्ट सम्बन्ध से उसमें यह गुण भी आजायगा। इवडोकसिया, मैं तुम्हारे नाम का प्याला पीता हूँ! हमें प्रतिष्ठा-सूचक गान भी तो गाना चाहिए—'इ' टाक, इ' टाक, इ' टिन टिन टिन! इ' टाक, इ' टाक, इ' टिन टिन टिन!"

"शरारती, विक्टर!"

खाने में काफ़ी समय लग गया, क्योंकि शैम्पेन की पहली बोतल के बाद दूसरी आयी, और दूसरी के बाद तीसरी। तीसरी भी समाप्त हो गयी तो, चौथी ला हाज़िर की गयी। इवडोकसिया की गप्पें ख़त्म होने पर ही नहीं आती थीं। सितनीकोव भी उसके लिये अच्छा सहायक सिद्ध हुआ। दोनों ने विवाह का प्रश्न छेड़ दिया (ईर्ष्या और अधमता के परिणामों पर वार्तालाप हुआ), इस सवाल पर भी बहस हुई कि मनुष्य का जन्म वैयक्तिकता का ध्यान रखते हुए एकाकी हुआ है, या नहीं। इसके बाद इवडोकसिया प्यानो बजाने लगी और मदिरा से उन्मत्त होकर बाजे पर उँगलियों के चौड़े नाखून फेर-फेर कर मोटे गले से गाने का उद्योग करने लगी। पहले कुछ कंजड़िनों के गाने सुनाये, फिर—"स्वप्न में ग्राण्डा (प्रेमी) के सो (मर) जाने" का राग गाया। इस गीत में सितनीकोव ने सिर पर गुलूबन्द डालकर 'मरते हुए' प्रणयी की नक़ल करके इवडोकसिया के स्वर में स्वर मिलाकर गाने का अन्तिम पद गाया, जिसका आशय था कि "उष्ण चुम्बन ने तुम्हारे ओष्ठ-द्वय को मेरे अधरों से मिला दिया।"

अन्ततः आरकाडी से यह अवस्था सह्य नहीं हुई।

"महाशयो," उसने कहा—"बिल्कुल पागलख़ाने का दृश्य उपस्थित हो गया!"

इस पर बज़ारोव अँगड़ाई लेकर रह गया, क्योंकि वह पहले ही दो-चार तीक्ष्ण बातें कह चुका था—उसका ध्यान अधिकांश रूप में शैम्पेन की ओर लगा हुआ था। आख़िर वह उठा और आरकाडी को साथ लेकर मेज़बान महाशया से विदाई का एक शब्द कहे बिना ही कमरे से निकल आया। सितनीकोव भी इन्हें जाता देख पीछे हो लिया।

"अहा, हा!" सड़क पर आते ही उसने उछलकर कहा—"मैंने तुमसे कहा था न कि यह विलक्षण स्त्री सिद्ध होगी? इसकी-सी सारी स्त्रियाँ हो जायँ, तो क्या हो! यह अपने ढंग का एक चारित्रिक चमत्कार है।"

"और तुम्हारे पिता की जायदाद?" बजारोव ने भठियारख़ाने की ओर इशारा करके कहा—"यह भी तो 'चारित्रिक चमत्कार' है?"

सितनीकोव एकबार खिलखिलाकर हँसा। पर अपनी उत्पत्ति का ख़याल करके वह लज्जित हुआ, और यह नहीं समझ सका कि बज़ारोव की इस अप्रत्याशिक दिल्लगी से उसे बुरा मानना चाहिए, या भला।

१४

कई दिनों बाद गवर्नर के यहाँ बाल-नृत्य हुआ, और मटवी इलिच उसमें सम्मानित मेहमान के रूप में सम्मिलित हुआ। कौंसिल के प्रेसीडेण्ट (जिसकी गवर्नर के साथ अनबन थी) ने इस बात को बड़े विस्तार के साथ समझाया कि वह केवल मटवी की इज़्ज़त के ख़याल से ही इस नृत्य में सम्मिलित होने के लिये आया है। गवर्नर ने इस अवसर पर हुक्म देना जारी रक्खा। मटवी की नम्रता की बराबरी तो उस समय केवल उसकी तड़क-भड़क ही कर सकती थी। प्रत्येक आदमी से वह मुस्कराकर बोलता था—किसी पर कुछ रोब जमाता, तो किसी का सम्मान करता। महिलाओं के सामने वह पूर्ण प्रतिष्ठा से झुकता और कोमल शब्दों में अभिवादन करके हँसता था।

आदि से अन्त तक वह ऐसी प्रतिध्वनिकारी हँसी हँसता रहा, जो ऐसे बड़े आदमियों के लिये शोभाजनक होती है। फिर आरकाडी की पीठ ठोंककर उसने ज़ोर-ज़ोर से 'भतीजे' कह-कर सम्बोधन किया और इस प्रकार सब पर सिद्ध कर दिया कि एक कैसे सुन्दर और सुडौल नवयुवक को उसका भतीजा होने का सौभाग्य प्राप्त है और बज़ारोव को (जिसने बड़ी कठिनाई से एक पुराने ढंग का लम्बा कोट पहन रक्खा था) वह दूर से कृपापूर्ण दृष्टि से देखता था, जिससे उसके कपोल उभड़ आते थे, और प्रत्येक वाक्य वह ऐसी अस्पष्टता किन्तु शिष्टाचारपूर्वक बोलता था जिसमें "मैं," "हाँ" "बहुत अच्छा" की अधिकता होती थी। अन्त में उसने सितनीकोव का भी एक उँगली उठाकर और ओठों पर हँसी की रेखा लाते हुए स्वागत किया, और उसी क्षण मुँह दूसरी ओर करके मैडम कुकशिन (जो बिना पेटीकोट के सादे लिबास और गन्दे दस्ताने पहन-कर, किन्तु बालों में 'स्वर्गीय पक्षी' गूँथकर आयी थी) के प्रति पूर्ण आदर प्रदर्शित किया। बड़ी ही भीड़ जमा हो रही थी। छैल-छबीलों की बहुतयात थी। यह सच है कि अधिकांश सिविलियन आराम से बैठे गपशप करते रहे; पर सैनिकों ने नाचने में काफ़ी उत्साह-प्रदर्शन किया, विशेषतः एक फ़ौजी अफ़सर ने, जो छः सप्ताह पेरिस रहकर अभी-अभी वापस आया था और वहाँ से अनेक प्रकार की फ्राँसीसी बोली-ठठोली सीखकर आया था, पूरे फ़ैशन के साथ नृत्य के भाव

अदा किये। परन्तु फ्राँसीसी-भाषा का पूर्ण ज्ञान न होने के कारण उसने कितने ही शब्दों की मिट्टी-पलीद कर डाली। सारांश यह कि उसने रूसी और फ्राँसीसी भाषा की ऐसी खिचड़ी पकायी, जिसे फ्राँसीसी ऐसे अवसर पर अपने रूसी मित्रों की प्रतिष्ठा-रक्षा के लिये 'अच्छी फ्रेंच' कह दिया करते हैं।

हम पहले से ही जानते हैं कि आरकाडी नाचने में पटु नहीं था, और बज़ारोव तो ख़ैर नाचता ही नहीं था। इसी कारण दोनों ने एक कोने में बैठने की जगह चुनी थी। थोड़ी देर बाद सितनी-कोव भी इन दोनों के पास जा पहुँचा। चेहरे पर अभ्यस्त घृणा से पूर्ण मुस्कराहट लाकर तरह-तरह के व्यंग-वाण छोड़ते हुए सितनीकोव अहङ्कार-भाव से चारों ओर देख-देखकर कुछ आनन्द-सञ्चय-सा कर रहा था। किन्तु यकायक उसके चेहरे का रंग बदल गया और आरकाडी की ओर मुड़कर उसने सजीव ढंग से कहा—"मैडम ओडिन्तसोव यह आ रही है।"

सामने दृष्टि डालने पर आरकाडी ने दरवाज़े पर खड़ी हुई एक लम्बी स्त्री देखी, जो काले रंग का गाउन पहने हुए थी। उसकी मदमाती चाल देखकर वह स्तब्ध रह गया। उसके तीर-से सीधे बदन पर नज़र जाते ही उसकी दोनों लटकती हुई लम्बी और नंगी बाहों पर दृष्टि जाती थी, उसकी अदा देखकर आरकाडी आँखें खोले रह गया। उसके चमकीले बालों में गुँथे हुए फूल कन्धों पर झूल रहे थे और वह सहज-भाव से चुप-चाप, किन्तु असुषुप्त भाव से खड़ी थी और उसके श्वेत रंग के

मुख-मण्डल पर कठिनता से दृष्टि आनेवाली हँसी का भाव लिये हुए दोनों नेत्र चमक रहे थे। साधारणतः उस मुखाकृति को देखकर यही मालूम होता था कि उसके अन्दर कोई गुप्त किन्तु नम्र और दया-पूर्ण भाव छिपे हुए हैं।

"आप इस स्त्री को जानते हैं?" आरकाडी ने पूछा।

"बहुत घनिष्ठतापूर्वक जानता हूँ," सितनीकोव ने कहा—"आपका परिचय करा दूँ?"

"अगर आप चाहें तो; पर यह नाच का बाजा ख़तम हो लेने दीजिए।"

बज़ारोव का ध्यान भी मैडम ओडिन्तसोव की ओर आकर्षित हो चुका था।

"कैसी सुन्दर छबि है," उसने कहा—"कोई भी ऐसी सुन्दरी यहाँ नहीं है।"

ज्योंही नाच का बाजा समाप्त हुआ, सितनीकोव आरकाडी को मैडम ओडिन्तसोव के पास लिवाले गया, और यद्यपि आरम्भ में—या तो सितनीकोव की अधिक 'घनिष्टता' से कहिये, या उस (सितनीकोव) की अतिशयोक्ति के कारण—मैडम ओडिन्तसोव ने उसकी ओर आश्चर्यपूर्ण भाव से देखा; किन्तु जब उसने आरकाडी की परिवारिक अल्ल (किरसानोव) सुना, तो उसके चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखायी पड़ी और उसने स्वयं पूछा कि वह (आरकाडी) निकोलाई पिट्रोविच का पुत्र है क्या।

"जी हाँ।" आरकाडी ने उत्तर दिया।

"तब तो मैं आपके पिता से दो बार मुलाक़ात कर चुकी हूँ। मैंने उनकी बड़ी तारीफ़ भी सुनी है और आपसे परिचित होकर अत्यन्त प्रसन्न होऊँगी।"

इसी समय एक मुसाहिब ने आकर उससे नाचने की प्रार्थना की, जिसे उस (मैडम ओडिन्तसोव) ने स्वीकार कर लिया।

"तो आप नाचती भी हैं ?" आरकाडी ने अत्यन्त सम्मान-पूर्णभाव से कहा।

"जी हाँ, नाचती हूँ। आपने कैसे सोच लिया था कि मैं नाचती नहीं ? क्या इसलिये कि मेरी उम्र आपको अधिक मालूम पड़ती है ?"

"नहीं, नहीं, क्षमा कीजिए। कोई बात नहीं। तब तो शायद मैं भी आपके साथ मज़रका* नाचने की प्रार्थना कर सकूँगा ?"

"अगर आप चाहें।" उसने स्वीकृति-सूचक मुस्कराहट के साथ कहा। फिर उसने आरकाडी की ओर उसी 'उच्चता' के भाव से देखा, जिससे एक विवाहिता बड़ी बहन अपनी बहुत छोटे भाई को देखती है। यद्यपि वह आरकाडी की अपेक्षा उम्र में बहुत अधिक बड़ी नहीं थी (क्योंकि वह उसका उन्तीसवाँ साल था) फिर भी उसकी उपस्थिति में आरकाडी एक मदरसे जानेवाले लड़के से अधिक उम्र का नहीं जँचता था, और दोनों

* पोलैण्ड-देशीय नृत्य-विशेष।

की अवस्था में जितना अन्तर था, उससे कहीं अधिक मालूम होता था। इसके बाद मटवी इलिच शान के साथ मेडम ओडिन्त-सोव के पास आकर उससे कुछ चाटुकारिता-मिश्रित प्रशंसात्मक बातें करने लगा; इसपर आरकाडी वहाँ से कुछ दूर हट गया; किन्तु उसकी आँखें मैडम ओडिन्तसोव की ही ओर लगी रहीं। जब तक नृत्य समाप्त नहीं हुआ, आरकाडी की नज़र उसकी मनोहर मूर्ति पर से नहीं हटी। नृत्य के साथ-साथ वह अपने जोड़े* के साथ बातें करते हुए सिर हिलाती और आँखें नचाती रही, और दो बार तो वह धीमी आवाज़ में हँसी भी। यह सच है कि उसकी नाक (जैसी की रूसी स्त्रियों की हुआ करती है) कुछ मोटाई लिये हुए थी, और उसका रंग भी इतना अधिक स्वच्छ नहीं था कि जिसको सर्वोत्कृष्ट कहा जा सके; किन्तु आरकाडी उसे देखकर इसी परिणाम पर पहुँचा कि उसने अपने जीवन में कभी ऐसी अनिन्द्य सुन्दरी नहीं देखी थी। उसके कानों में मैडम ओडिन्तसोव के प्रत्येक शब्द का स्वर गूँज रहा था और उसका पहनावा अन्य स्त्रियों की पोशाकों से कहीं सुन्दर मालूम होता था—उसमें सुन्दरता और सुडौलपन भरा था और उसकी गति में स्वच्छता और स्वाभाविकता थी।

किन्तु जब मज़रका की लय बजने लगी और आरकाडी अपनी प्रस्तावित जोड़ी के पास बैठकर उससे बातें करने की तैयारी करने लगा, तो उसे बड़ी हिचकिचाहट मालूम हुई।

---

* जोड़ा का मतलब यहाँ साथ नाचनेवालों से है।

यद्यपि वह अपने बालों पर हाथ फेरते हुए कुछ कहने की बड़ी चेष्टा कर रहा था, पर उसे बोलने के लिये शब्द ही नहीं मिले। तो भी यह लज्जालुता और हार्दिक उद्वेलन की अवस्था देर तक नहीं टिकी, क्योंकि मैडम ओडिन्तसोव की चुप्पी उससे सह्य नहीं हुई और पन्द्रह मिनट भी नहीं बीत पाये कि वह उसे अपने पिता और चाचा का हाल बतलाने तथा सेण्टपीटर्सबर्ग एवं देहात के जीवन का वर्णन करने लगा। मैडम ओडिन्तसोव ने अपना पंखा धीरे-धीरे झलते हुए सब बातें सुनने में दयालुता-पूर्ण दिलचस्पी ली। इस प्रकार इस वार्तालाप में समय-समय पर केवल तभी बाधा पड़ती थी, जब कोई अन्य छबीला युवक मैडम ओडिन्तसोव के साथ नाचने की प्रार्थना करने को आता था (सितनीकोव ने दो बार ऐसी प्रार्थना की थी) और जब वह नाचकर वापस आने के बाद पुनः आरकाडी के पास बैठती थी तो (परिश्रम या थकावट के फल-स्वरूप) उसके साँस लेने तक में कोई अन्तर नहीं मालूम होता था, और आरकाडी उससे फिर बातें करने लगता था। वास्तव में आरकाडी इस समय यह सोचकर प्रसन्न हो रहा था कि भला आज उसे एक व्यक्ति तो ऐसा मिला, जो उसके साथ सहानुभूति करता है, जिससे वह बातें कर सकता है, जिसकी स्निग्ध आँखों, सोम्य मस्तक और कोमल, परिष्कृत एवं बुद्धिमत्तापूर्ण मुख-मण्डल को वह मज़े में ताक सकता है। मैडम ओडिन्तसोव स्वयं बहुत कम बोली; किन्तु उसके प्रत्येक शब्द से यह प्रतीत होता था कि इस

युवती महिला को जीवन का पर्याप्त ज्ञान है और इसने इसकी समस्याओं पर बहुत विचार किया है।

"आपके साथ वह आदमी कौन था, जिसके पास से सितनीकोव आपको मेरे पास लाये थे ?" उसने पूछा।

"अच्छा, आपने मेरे मित्र को देख लिया है ?" आरकाडी ने कहा—"वह सुन्दर युवक है न ? उनका नाम है बज़ारोव।"

एकबार इस विषयकी चर्चा छिड़ते ही आरकाडी ने बज़ारोव के सम्बन्ध में इस उत्साह से वार्तालाप किया कि मैडम ओडिन्तसोव उसके दोस्त (बज़ारोव) को बार-बार अधिकाधिक ध्यानपूर्वक देखने लगी। किन्तु मज़रका-नृत्य शीघ्र ही समाप्त हो गया और आरकाडी को उस सुन्दरी साथी के पार्थक्य का दुःख उठाना पड़ा, जिसके साथ उसने अपूर्व आनन्द के साथ वह समय काटा था। यह सच है कि उसने शुरू से ही इस बात का अनुभव किया कि उसके साथ दयालुतापूर्ण व्यवहार हो रहा है और उसे इसके लिये कृतज्ञ होना चाहिए; किन्तु नवयुवकों के हृदय पर ऐसी बातों का वज़न कम पड़ता है।

बाजा बजना बन्द हो गया।

"अच्छा !" कहकर मैडम ओडिन्तसोव उठी—"आपने मेरे यहाँ आने का वादा किया है। साथ ही अपने मित्र को भी लेते आइयेगा, क्योंकि मैं ऐसे आदमी को देखने के लिये बड़ी उत्सुक हूँ, जो किसी भी बात पर विश्वास न करने का साहस रखता है।"

इसके पश्चात् गवर्नर स्वयं उन्मत्त-सा होकर आया और उसने मैडम ओडिन्तसोव को सूचना दी कि खाना तैयार है; और वह गवर्नर की बाँह में बाँह डालते हुए मुस्कराकर आरकाडी की ओर सिर झुकाते हुए चली गयी। उत्तर में आरकाडी ने भी सिर झुकाया और अपनी जगह पर चुपचाप खड़ा होकर उसकी ओर देखता रहा। काले गाउन में उसका सीधा शरीर चमक-सा रहा था!

"वह मुझे भूल भी चुकी होगी," उसने मन-ही-मन सोचा। एक अद्भुत शर्म के मारे उसका मन बिंधा जा रहा था। इसके बाद वह कोने की ओर जाकर बज़ारोव से मिला।

"अच्छा?" उसके दोस्त ने कहा—"मज़ा लूट चुके? अभी-अभी एक आदमी मुझ से कह रहा था कि ये श्रीमती—पर आदमी बेवकूफ़-सा मालूम पड़ता था। तुम उसे कैसी समझते हो?"

"मैंने इस संकेत का मतलब नहीं समझा।" आरकाडी ने उत्तर दिया।

"ओ हो, कैसे भोले लड़के हो!"

"या फिर आपकी सूचना का मतलब मैं नहीं समझ पाया। स्त्री अच्छी है; पर इसमें अचंचलता और दिखाऊपन इतना है, जितना—"

"बँधे हुए जलाशय में होता है।" बज़ारोव ने बात का सिलसिला जोड़ते हुए कहा—"हाँ, हम लोग ऐसी बातें जानते हैं।

तुम कहते हो कि वह अचंचल है; पर यह तो पसन्द की बात है। शायद तुम्हें खुद बरफ़ पसन्द है ?"

"शायद है तो," आरकाडी ने कहा—"पर ऐसी बातों का निर्णय मैं नहीं करता; और कुछ भी हो, वह मेरे साथ ही तुम्हारा परिचय भी प्राप्त करना चाहती है, और मुझसे उसने कह दिया है कि तुम्हें साथ लेकर उसके घर जाऊँ।"

तुमने मेरी जो तारीफ़ हाँकी होगी, उसका अनुमान सहज में ही लगाया जा सकता है। दूसरी बात यह है कि तुमने दोनों का साथ परिचय देकर अच्छा ही किया, क्योंकि वह जैसी भी स्त्री हो—चाहे प्रान्तीय सिंहिनी हो या कुकशिन की तरह 'उद्धारक'—किन्तु उसके कन्धे ऐसे सुन्दर हैं, जैसे मैंने कम देखे हैं।"

आरकाडी यह बात सुनकर कुछ ठिठक गया; किन्तु ऐसे मामलों में प्रायः जैसा हुआ करता है, वह अपने दोस्त की ऐसी भर्त्सना करने पर तुल गया, जिसका सम्बन्ध उपरोक्त ईर्ष्या-जनक बात से नहीं था।

"तुम स्त्रियों के विचार-स्वातंत्र्य में बाधा डालना क्यों पसन्द करते हो ?" उसने एक साँस में पूछा।

"इसलिये कि मैंने जीवन का जैसा पर्यवेक्षण किया है, उसके अनुसार यही समझता हूँ कि कोई भी स्त्री, जो चपल स्वभाव की न होगी, स्वतंत्र बनने का विचार नहीं कर सकती, महाशय!"

इसी समय भोजन समाप्त होने के कारण सब लोग उठ-उठ-

कर जाने लगे और बात यहाँ-की-यहीं समाप्त हो गयी। जब ये लोग कमरे से बाहर निकले, तो मैडम कुकशिन इनके पीछे-पीछे घबराहट और क्रोध के भाव से आती दिखायी पड़ी, पर ध्यान से देखने पर उसके चेहरे पर मुस्कराहट की एक क्षीण रेखा भी दिखायी दे रही थी। इसका कारण यह था कि इन नवयुवकों में से किसी ने भी उसकी ओर देखने तक का कष्ट नहीं उठाया, जिससे उसे मर्मान्तक वेदना हुई थी। वह नृत्य में सबके चले जाने तक रुकी रही, और अन्ततः जब सुबह चार बजने का समय हुआ, तो वह सितनीकोव के साथ गवर्नर के इस उत्सव को सफल बनाने के लिये अन्तिम नाच नाची, और उसके बाद उत्सव समाप्त हो गया।

१५

"अब हमें यह देखना चाहिए कि यह युवती जीवधारियों की किस कोटि में रक्खी जाने योग्य है," दूसरे दिन बज़ारोव ने उस होटल की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए आरकाडी से कहा, जिसमें श्रीमती ओडिन्तसोव रहती थी—"मुझे यहाँ के वातावरण में कुछ अच्छाई नहीं दीखती।"

"तुम मुझे विस्मय में डाल रहे हो!" आरकाडी ने तुरन्त कहा—"बज़ारोव, क्या तुम भी उस संकीर्ण प्रवृत्तिवाली नीति के समर्थक हो, जो—"

"बेवक़ूफ़ हो तुम!" बज़ारोव ने घृणायुक्त भाव से कहा—"क्या तुम नहीं जानते कि हमारी ठेठ-भाषा बोलनेवाले मामूली आदमियों की समझ में भी 'बुरे' को अब 'अच्छा' समझा जाने

लगा है ? कुछ भी हो, यहाँ मुझे रुपयों की गन्ध आ रही है। तुमने खुद मुझसे कहा था कि मैडम की एक बड़ी ही विलक्षण शादी हुई है, यद्यपि मैं एक धनिक बुड्ढे की शादी को आश्चर्य का विषय न मानकर अक़्लमन्दी की निशानी समझता हूँ। मैं शहरवालों की गप्पबाज़ियों पर बहुत कम विश्वास करता हूँ, पर मैं यह मान लेना चाहूँगा कि हमारे सुसंस्कृत गवर्नर साहब के शब्दों में 'गप्पों का भी कोई आधार होता है।'"

आरकाडी ने इस बात का उत्तर न देकर मैडम के कमरे का दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खुलते ही वर्दी पहने हुए एक नौकर दोनों आगन्तुकों को एक ऐसे कमरे में ले गया, जो अन्य रूसी होटलों के कमरों की भाँति भयानक रूप से सजा हुआ था। उस कमरे में विशेषता केवल यही थी कि उसमें फूलों की भी सजावट थी। दोनों के पहुँचते ही मैडम प्रातःकाल का सफ़ेद गाउन पहने स्वयं कमरे में आ पहुँची। वसन्त की प्रभातकालीन आभा में वह कल के नृत्य के अवसर की अपेक्षा अधिक अल्पवयस्का मालूम होती थी। आरकाडी ने बज़ारोव का परिचय कराया, और ऐसा करते हुए उसने देखा कि उसका मित्र घबराया-सा दीखता है, जबकि मैडम पूर्णतः शान्त थी। बज़ारोव ने अपनी इस त्रुटि को समझा और मन-ही-मन इसके लिये खेद किया।

"ओह," उसने सोचा—"यह विचार क्या विस्मरणीय है कि मुझे स्त्री से डरना चाहिए।"

फिर भी वह सितनीकोव की तरह चुपचाप कुर्सी पर बैठ गया और ज़ोरदार शब्दों में उस स्त्री से बात करने लगा, जो उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देख रही थी।

एना सर्जीवना ओडिन्तसोव का पिता सर्जी निकोलीविच लोकटेव-नामक एक प्रसिद्ध जुवाड़ी और व्यसनी था। पन्द्रह वर्ष तक सेण्ट पीटर्सबर्ग और मास्को में अनोखी तड़क-भड़क दिखाने के बाद अपना सर्वस्व स्वाहा करके उसे बाध्य होकर देहात में जा बसना पड़ा था, जहाँ शीघ्र ही वह अपनी बीस वर्षीया लड़की एना और द्वादश-वर्षीया कन्या कतेरिना को छोड़कर मर गया, और दोनों लड़कियों के पास संयुक्त-रूप से बहुत थोड़ी सम्पत्ति आजीविका के रूप में रह गयी। इन लड़कियों की माँ (जो राजकुमारी दशम के वुभुक्षित घराने से सम्बन्ध रखती थी) का देहान्त उसी समय हो गया था, जब उसके पति के घर में सोना बरसता था। पिता की मृत्यु के बाद एना की स्थिति बड़ी दुरूह हो चली, क्योंकि राजधानी में रहकर उसने जो उच्च शिक्षा प्राप्त की थी, उसका उपयोग गृह-कार्य या ज़मींदारी के प्रबन्ध में करना उसके लिये सुविधा-जनक नहीं था; यहाँ तक कि उसके लिये देहात में जीवन बिताना भी असह्य हो गया। इसके अतिरिक्त पार्श्ववर्ती गावों में उसका कोई परिचित भी नहीं था, न कोई ऐसा ही था, जिससे वह कोई परामर्श लेती। इसका कारण यह था कि उसके पिता ने अपनी जीवितावस्था में गाँव के आस-पासवालों से परिचय और मित्रता नहीं की और

जिस प्रकार अनेक रूप में गाँववाले उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे, उसी तरह वह भी उनके प्रति घृणा के भाव रखता था। तो भी एना ने काफ़ी सन्तोष से काम लिया और सीधे अपनी मौसी प्रिंसेज़ अवदोतिया स्टेपैनोवना दशम को बुला भेजा, जो बड़ी ही बनी हुई और कपटी बुढ़िया थी। उसने आते ही मकान के बढ़िया कमरों पर अपना अधिकार जमा लिया। वह क्रोध के मारे सारे दिन जलती रहती और बग़ैर अपने एकमात्र गुलाम को साथ लिये बाग़ में टहलने तक न जाती, जो एक भद्दी-सी हरे रंग की वर्दी और नीला कालर तथा तिकोनी टोपी पहने उसके साथ देखा जाता था। इस पर भी एना ने बुढ़िया का यह व्यवहार सहन किया, और अपनी छोटी बहन की शिक्षा का प्रबन्ध करके जीवन का शेष भाग एकाकी ही व्यतीत करने का विचार किया। किन्तु भाग्य में कुछ और ही था—ओडिन्तसोव नामक एक धनी, मोटे और मुश्किल से चल-फिर सकनेवाले, गावदुम और छियालीस वर्ष के मिट्टी के लौंदे ने, जो न तो बिल्कुल मूर्ख ही था, न निठुर ही, उसे देख लिया और उस पर ऐसा आसक्त हो गया कि तुरन्त विवाह का प्रस्ताव कर दिया तथा उसने उसे स्वीकार भी कर लिया। छः वर्ष तक दोनों—पति-पत्नी—साथ रहे, इसके बाद वह धनी बुड्ढा अपनी सारी सम्पत्ति विधवा के लिये छोड़कर मर गया। पति की मृत्यु के दूसरे वर्ष तक तो एना देहात में ही रही; इसके बाद अपनी बहन को साथ लेकर विदेश चली गयी—किन्तु जर्मनी

से और आगे नहीं बढ़ी, क्योंकि विदेशों में उसका मन नहीं लगा, और वह अपने प्रिय स्थान निकोल्सको को—जो ······नगर से चालीस वर्स्ट की दूरी पर स्थित है—लौट आयी। निकोल्सको में उसके पास एक सुन्दर और सजा-सजाया बँगला, एक बड़ा बाग़ीचा और नारङ्गियों का सुन्दर कुञ्ज था; किन्तु चूँकि वह शहर में कभी-कभी कुछ देर के लिये ही जाती थी, अतः लोग उससे ईर्ष्या करने लगे और ओडिन्तसोव के साथ उसकी शादी के बारे में तरह-तरह के ऐसे असम्भव क़िस्से गढ़ने लगे कि उसने अपने पिता के कुकर्मों में भी उसे सहायता दी है, उसका विदेश जाने का भी कोई रहस्य था और उसका कोई दुष्परिणाम छिपा लिया गया है। "मैं सच कहता हूँ" इस प्रकार के क़िस्से सुनानेवाले कहा करते—"इसने ज़रूर कुछ गज़ब ढाया है!" अन्ततः ये क़िस्से उसके कान तक भी पहुँचे; किन्तु उसने उनकी उपेक्षा की, क्योंकि उसका स्वभाव साहस-पूर्ण और स्वतंत्र था।

एक आरामकुर्सी में पूरी लम्बाई के साथ लेटकर एक हाथ दूसरे पर रक्खे वह बज़ारोव की विस्तृत बातें सुनने लगी। अपनी सदा की आदत के विरुद्ध बज़ारोव बड़ी ही बेरोक गति से बोल रहा था, क्योंकि उसे अपने श्रोता को पूर्णतः अपनी बातों की ओर आकर्षित करना था। आरकाडी को इस बात पर भी आश्चर्य हुआ, यद्यपि वह इस बात को समझने में असफल रहा कि बज़ारोव अपने उद्देश्य में सफल हो रहा है या

नहीं, ख़ासकर यह देखते हुए कि एना सर्जीवना के चेहरे से किसी भी प्रकार का भाव नहीं प्रकट हो रहा था—उसकी मुखाकृति पूर्ववत् नम्रतापूर्ण थी और उसकी आँखों में उसी प्रकार की स्थिरता विद्यमान थी। यह सच है कि पहले-पहल बज़ारोव ने जब बहुत ज़ोर देकर बात करने की कोशिश की, तो उसके ऊपर ऐसा प्रभाव पड़ा, जैसे कर्कश बात सुनकर या दुर्गन्ध-जनक पदार्थ सूँघकर मालूम होता है; पर बाद में वह समझने लग गयी कि वह (बज़ारोव) बनकर बोल रहा है और इस प्रकार उसकी चपलूसी-सी कर रहा है। केवल तुच्छ बातों से वह दूर रहती थी, जिनका कि बज़ारोव की वाणी में अभाव था। बेचारे आरकाडी का आश्चर्य कभी कम नहीं हो पाता था, क्योंकि यद्यपि उसे यह आशा थी कि बज़ारोव मैडम ओडिन्तसोव से केवल उसी प्रकार बातें करेगा, जैसे एक बुद्धिमती स्त्री से किया करते हैं—केवल विचारों और सम्मतियों को लेकर ही बात चलेगी, (विशेषकर उस अवस्था में जबकि उसने स्वयं कहा था कि वह ऐसे व्यक्ति को देखना चाहती है जो 'किसी भी वस्तु में विश्वास न रखने का साहस रखता है,')—किन्तु यहाँ वार्तालाप केवल औषधि-विज्ञान, होम्योपैथी और वनस्पति-विज्ञान पर ही होकर रह गया। साथ ही मैडम ने अपना एकाकी जीवन व्यर्थ नहीं गँवाया था; उसने उच्च कोटि के साहित्य का अध्ययन किया था। वह बहुत सुन्दर रूसी भाषा बोलती थी और यद्यपि एक बार उसने संगीत की चर्चा भी करदी थी;

किन्तु ज्यों ही उसे मालूम हुआ कि वह (बज़ारोव) कला के अस्तित्व से सहमत नहीं है, वह तुरन्त वनस्पति-विज्ञान के विषय पर बात करने लगी, यद्यपि आरकाडी राष्ट्रीय गानों के महत्त्व के सम्बन्ध में काफ़ी बहस करने के लिये उद्यत था। साथ ही आरकाडी के प्रति मैडम का व्यवहार अब भी वैसा ही था, जैसा बड़ी बहन छोटे भाई के प्रति रखती है। आरकाडी में उसे प्रकटतया केवल यही गुण दिखायी दिया कि वह हँसमुख है और उसमें नवयुवकोचित सादगी है। इसके अतिरिक्त उसकी दृष्टि में आरकाडी में और कोई बात नहीं थी। तीन घंटे तक यह उत्साहपूर्ण और तर्कयुक्त वार्तालाप अनवरत रूप से जारी रहा।

अन्ततः दोनों मित्र विदाई के लिये तैयार हुए। कृपापूर्ण चितवन के साथ एना सर्जीवना ने अपना श्वेत वर्ण का सुन्दर हाथ उनकी ओर बढ़ा दिया, फिर क्षण-भर विचार करने के बाद अस्थिर भाव से, किन्तु प्यारी मुस्कराहट के साथ बोली—

"यदि आप में से किसी को असुविधा न हो, तो क्या आप लोग निकोल्सको में मेरे घर पर आ सकते हैं ?"

"मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा।" आरकाडी ने ऊँचे स्वर में कहा।

"और आप, महाशय बज़ारोव ?"

बज़ारोव केवल झुककर रह गया, जिससे आरकाडी को फिर आश्चर्य हुआ। उसने यह भी देखा कि उसके मित्र का मुख-मण्डल कुछ आरक्त हो उठा है।

"अच्छा ?" आरकाडी ने सड़क पर आकर बज़ारोव से पूछा—"क्या अब भी तुम्हारी यही राय है कि यह स्त्री—?"

"मैं नहीं कह सकता। पर उसने अपने शरीर को बरफ़ की चट्टान बना रक्खा है।" कुछ क्षण रुककर बज़ारोव फिर बोला—"पर कुछ भी हो, है यह प्रभावशालिनी स्त्री; ऐसी उच्च महिला है, जिसके शरीर पर राजसी लिबास और मस्तक पर राज-मुकुट शोभा देता।"

"पर कैसी सुन्दर रशियन* बोलती है!" आरकाडी ने कहा।

"हाँ; इसका कारण यह है कि इसने रूस में ही जन्म ग्रहण किया है; और यहीं का अन्न खाया है।"

"और कैसी आकर्षक है यह!"

"तुम्हारा मतलब शारीरिक सौन्दर्य से है—थियेटर के योग्य है!"

"चुप रहो, ख़ुदा के लिये! इसका शारीरिक सौन्दर्य अन्य स्त्रियों से भिन्न है।"

"आपे से बाहर न होजा भोले लड़के। मैंने कह नहीं दिया कि यह सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियों में गणनीय है? हाँ, और इसके पास फिर भी तो चलना होगा।"

"कब?"

"परसों। यहाँ ठहरने की अब कोई ज़रूरत भी नहीं है,

---

* रूसी भाषा।

क्योंकि हमें मैडम कुकशिन के साथ शैम्पेन नहीं पीनी है, न तुम्हारे रिश्तेदार—उदारदल के बड़े आदमी—का उपदेश सुनने की ही आवश्यकता है। इसलिये परसों यहाँ से अन्तिम तैयारी करके चलना है। मेरे पिता के रहने का स्थान निकोल्सको से क़रीब पड़ेगा, क्योंकि निकोल्सको तो······सड़क पर स्थित है न ?"

"हाँ, है तो उसी सड़क पर।"

"ठीक है, उधर से ही चले जाना है। अब देरी करने से कोई फ़ायदा न होगा। आज का काम कल पर टालना बेवक़ूफ़ों और ठगों का काम है। इस रमणी का शरीर-सौष्ठव वास्तव में प्रशंसनीय है।"

तीसरे दिन दोनों मित्र चमकीली और हल्की धूप में गाड़ी में बैठे निकोल्सको जानेवाली सड़क पर जा रहे थे। पले हुए मज़बूत घोड़े गाड़ी को तेज़ी से खींचे चले जा रहे थे। आरकाडी सड़क की ओर देखकर बिना किसी प्रकट कारण के मुस्कराया।

"मुझे बधाई दो!" बज़ारोव ने कहा—"आज २२ वीं जून—मेरे गृहदेव का भोज-दिवस है। वह मेरी रक्षा करता है। करता है न ?" इसके बाद वक्ता ने धीमे स्वर में कहा—"पर आज वे लोग घर पर मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।·········करने दो।"

१६

एना सर्जीवना का बँगला एक पहाड़ी पर बना था, जिसके पास ही एक पत्थर का गिरजाघर था। गिरजे की छत हरे रंग की थी और स्तम्भ सफ़ेद रंग के। दरवाज़े के ऊपर इटैलियन ढंग के अक्षरों में "हमारे प्रभु की स्मृति में" लिखा हुआ था। यहाँ की ख़ास और दर्शनीय चीज़ थी साँवले योद्धा की मूर्ति। उसके चारों ओर एक घेरा था, जिससे सामने का मैदान घिरा हुआ था। गिरजे के पीछे गाँव की आबादी थी, जो दो क़तारों में बसा हुआ था और जिसके मकान की छतों पर चिमनियों के समूह दीखते थे। बँगले की बनावट गिरजे की बनावट से मिलती-जुलती थी। इस बनावट को साधारणतः एलेग्ज़ैंड्रिन*

---

* एलेग्ज़ैंड्रिया के शासन-काल में प्रचलित।

बनावट कहते हैं—पीली दीवारें, हरी छत और सफ़ेद स्तम्भ थे। सामने सजाये हुए फाटक पर पुराने ढंग की ढालें आदि सैनिक सामान प्रदर्शन के लिये रक्खे थे। वास्तव में इन दोनों इमारतों का निर्माण स्वर्गीय ओडिन्तसोव ने इसी सूबे के राजगीर से करवाया था। ओडिन्तसोव (जैसा कि वह स्वयं कहा करता था) सदा अप्रचलित चीज़ों के प्रचलन के लिये सचेष्ट रहा करता था। बँगले के दाहिने और बायें तरफ़ पुराने ढंग के वृक्ष लगे थे और सदर दरवाज़े की ओर जानेवाले मार्ग पर सनोवर के।

दो वर्दीधारी नौकर दोनों मित्रों को बँगले के हाल में मिले, जिनमें से एक तुरन्त ख़ानसामाँ को बुलाने चला गया। ख़ानसामाँ (लम्बा काला कोट पहने हुए एक तगड़ा आदमी) मेहमानों को सुन्दर शतरंजी से ढकी हुई सीढ़ियों पर होते हुए ऊपर के एक बड़े और शानदार कमरे में लिवा ले गया, जहाँ दो पलँगों पर स्वच्छ विस्तरे बिछे हुए थे और नहाने-धोने एवं शृङ्गार के समस्त साधन प्रस्तुत थे। चारों ओर स्वच्छता का साम्राज्य छाया हुआ था; कोई भी चीज़ ऐसी नहीं थी, जो गन्दी कही जा सके। वातावरण में भीनी सुगन्ध भरी हुई थी। ऐसा मालूम होता था कि किसी राज-सचिव के स्वागत के लिये सब तैयारियाँ की गई हैं।

"एना सर्जीवना आध घण्टे में आपसे मिलकर प्रसन्न होंगी," ख़ानसामाँ ने कहा—"तब तक मेरे लिये सेवा बतलाइये?"

"नहीं भाई, कुछ नहीं," बज़ारोव ने कहा—"हाँ, तब तक मेरे लिये एक छोटे गिलास में वोदका* ला देने की कृपा करो।"

"अभी ला देता हूँ," खानसामा ने ज़रा हिचकिचाहट के साथ कहा। इसके बाद बूट मरमराते हुए वह वहाँ से चला गया।

"कैसी शान है!" बज़ारोव ने कहा—"तुम्हारी राय में हमें अपनी मेज़बान महोदया को किस प्रकार सम्बोधन करना चाहिए? जैसे किसी डचेज़ को किया करते हैं?"

"हाँ, बहुत बड़ी डचेज़ के समान," आरकाडी ने जवाब दिया—"खासकर यह देखते हुए कि हम-जैसे प्रभावशाली अमीरों को उसने आमंत्रित किया है।"

"मैं समझता हूँ कि 'हम-जैसे प्रभावशाली अमीरों' से तुम्हारा मतलब तुम्हारे इस सेवक, भावी डाक्टर, डाक्टर के लड़के, और मठाध्यक्ष के पोते से है? साथ ही यह भी कह दूँ कि क्या तुम्हें मालूम है कि मेरे दादा स्पेरैंस्की† की तरह धर्माध्यक्ष थे?" इसपर उसके ओठों पर मुस्कराहट आगयी और वह फिर बोला—"इस प्रकार तुम देखोगे कि इस महिला को खेदपूर्ण भ्रम होगया है। हमलोगों के पास लम्बे कोट तक तो हैं नहीं? क्यों?"

---

* अंगूरी शराब।

† एक राजनीतिज्ञ (१७७२-१८३९ई०), जिसने रूसी किसानों के लिये अनेक कार्यक्रम बनाये थे।

आरकाडी ने शौर्य के साथ कन्धे हिलाये, किन्तु वह भी किसी बात से भयभीत-सा दीखता था।

आधे घण्टे के बाद दोनों मित्र ड्राइंग रूम में पहुँचे, जो कोठी का एक विशाल भाग था, और बहुत सुन्दर होने पर भी कुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया हुआ था। दीवारों से सटाकर फर्नीचर के भारी और महँगे सामान लगे थे, दीवारों पर भूरे रंग के पर्दे लटक रहे थे, जिन पर सफ़ेद और चमकीले गिलट की गोट लगी थी (स्वर्गीय ओडिन्तसोव ने ये सारी चीज़ें अपने मास्को-निवासी शराबवाले मित्र को लिखकर मँगवायी थीं) और कमरे के बीचोबीच एक सुन्दर दीवान सजा हुआ था, जिस पर एक ऐसे व्यक्ति का चित्र टँगा था, जिसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी थीं और जिसके बाल रूखे से नज़र आते थे। प्रत्येक नवागन्तुक को यह दृश्य बड़ा ही कुरुचि-उत्पादक मालूम होता था।

"यह !" बज़ारोव ने धीरे से कहा।

इसके बाद मैडम ओडिन्तसोव ने स्वयं ड्राइंग रूम में पदार्पण किया। उसने हल्के वस्त्र पहन रक्खे थे और केश सँवार-कर कानों के पीछे बाँध दिये थे। यह एक ऐसे ढंग का शृङ्गार था, जिससे उसके चेहरे पर शुद्ध कौमार्य और अल्पवयस्कता टपकती थी।

"वादा पूरा करने के लिये आपको धन्यवाद," उसने कहा—"और अब चूँकि आप आ गये हैं, इसलिये मैं समझती

हूँ, आपका समय काफ़ी मनोरञ्जन के साथ कटेगा। पहले मैं आपका परिचय अपनी छोटी बहन से करा दूँ, जिसे प्यानो बजाने में कमाल हासिल है। (बज़ारोव महाशय, आपके लिये तो ऐसी चीज़ें—गायन-वाद्य—कोई आकर्षण नहीं रखती, पर मैं जानती हूँ, किरसानोव महोदय, कि आप संगीत-कला के प्रेमी हैं।) मेरी बुढ़िया मौसी भी मेरे साथ रहती हैं, और कभी-कभी एक पड़ोसी भी ताश खेलने के लिये आ जाता है। आपने हमारे घर का परिचय प्राप्त कर लिया। अब आइये, हम लोग बैठ जायँ।"

मैडम की यह संक्षिप्त वक्तृता रटी हुई थी। इसके बाद वह आरकाडी के साथ बात करने लगी। यह बात जानकर कि मैडम की माता आरकाडी की माँ से परिचित थी और उस (आरकाडी) की माँ ने निकोलाई पिट्रोविच के साथ अपने प्रेम की कथा मैडम की माँ का विश्वास करके उससे कह दी थी, आरकाडी को अपनी स्वर्गीया माता के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहने का साहस हो गया। बज़ारोव चुपचाप बैठा कुछ चित्रावलियों के पन्ने उलटकर देखता रहा।

"मैं कैसा घरेलू व्यक्ति हो गया हूँ!" उसने मन-ही-मन सोचा।

इसी समय कमरे में एक सफ़ेद रूसी आ पहुँचा, जिसके गले में नीले रंग की पट्टी बँधी थी। उसके पीछे-पीछे एक अष्टादश-वर्षीया लड़की भी अन्दर आयी, जिसका रंग गेहुँआँ, बाल

काले, चेहरा गोल और सुन्दर तथा आँखें छोटी-छोटी और काली थीं। उसके हाथ में फूलों की एक डलिया थी।

"यही मेरी बहन कतिया है।" मैडम ओडिन्तसोव ने लड़की की तरफ़ उँगली से इशारा करते हुए कहा।

कतिया मैडम के बग़ल में बैठ गयी और लगी अपने फूलों को सजाने। कुत्ते ने (जिसका नाम फ़िफ़ी था) दोनों मेहमानों के पास बारी-बारी से जाकर अपनी ठण्डी नाक उनके हाथों में रक्खी और लगा दुम हिलाने।

"क्या इतने फूल तुमने खुद चुने हैं?" मैडम ओडिन्तसोव ने पूछा।

"हाँ, और किसने?" लड़की ने जवाब दिया।

"और मौसी भी हम लोगों के साथ चाय पियेंगी?"

"हाँ।"

कतिया के ये उत्तर निर्भीकता, नम्रता और सलज्जता की पुट लिये हुए थे। उसने आँखें ऊपर उठायीं, तो मालूम हुआ कि उसमें कुछ तो अधीरता का भाव है और कुछ हँसी का। उसके शरीर में नव-यौवन और ताज़गी झलकती थी—उसका सुन्दर स्वर, कोमल कपोल, छोटी गुलाबी बाहें, छोटी और गहरी हथेलियाँ और कुछ तने हुए स्कन्ध, सब उसके तारुण्य की दुन्दुभी बजा रहे थे। क्षण-क्षण पर उसके मुख-मण्डल पर लालिमा छा जाती थी और वह उचक-उचक कर साँस लेती थी।

शीघ्र ही मैडम ओडिन्तसोव ने बज़ारोव की ओर रुख़ किया।

"निश्चय ही आप इन चित्रों को नम्रता-वश देख रहे हैं।" उसने कहा—"सम्भवतः इनमें आप दिलचस्पी नहीं ले सकेंगे। ज़रा हम लोगों के और नज़दीक आजाइये। आइये, हम लोग बहस करें।"

बज़ारोव उसके निकट खिसक आया।

"किस विषय पर बहस करना है?" उसने पूछा।

"जिस विषय पर आप चाहें। पर पहले मैं आपको सावधान कर दूँ कि मैं भयंकर विरोध करूँगी।"

"आप?"

"हाँ, अवश्य। आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है?"

"क्योंकि जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, आप शान्त और सुस्त प्रकृति की हैं, और बहस में जोशीलेपन की ज़रूरत होती है।"

"आपने मेरे सम्बन्ध में इतनी जल्दी अनुमान लगाने की चेष्टा कैसे की? मैं तो बड़ी ही अधीर और खरी हूँ। कतिया से पूछिये। मैं उत्तेजित भी शीघ्र हो जाती हूँ।"

बज़ारोव ने उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखा।

"सम्भव है," उसने कहा—"अवश्य ही आप अपने सम्बन्ध में सबसे अधिक जानती होंगी। किन्तु आप वाद-विवाद करना चाहती हैं, तो कीजिए। सैक्सन स्विट्ज़रलैण्ड का दृश्य देखते

समय मैंने आपको यह कहते सुना था कि मैं उनमें दिलचस्पी नहीं ले सकूँगा। ऐसा शायद आपने इसलिये कहा है कि आप मुझे कला को समझनेवाला नहीं समझतीं। ठीक ही है। परन्तु क्या वे चित्र मेरे लिये भौगोलिक दृष्टि-बिन्दु से मनो-रंजक नहीं हो सकते—एक ऐसे दर्शक के रूप में जो केवल पहाड़ों की बनावट देखता है, मैं उनमें दिलचस्पी नहीं ले सकता ?"

"क्षमा कीजिएगा; पर एक भूगोलवेत्ता की हैसियत से तो आप इस विज्ञान के किसी विशेष कार्य में लगना पसन्द करेंगे, न कि सिर्फ़ थोड़े से चित्र देखना।"

"नहीं, यह ज़रूरी नहीं है। एक चित्र से क्षण-भर में उतनी बातें मालूम हो सकती हैं, जो पुस्तक के सैकड़ों पृष्ठ पढ़-कर भी नहीं ज्ञात हो सकतीं।"

एना सर्जीवना ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"अच्छा," उसने मेज़ पर आगे की ओर झुककर कहा—(इस झुकने से उसका चेहरा बज़ारोव के अधिक निकट आ गया) "जब आप में कला की रुचि अणुमात्र भी नहीं है, तो भला आप इसके बिना समय कैसे काटते हैं ?"

"इस पर मैं यह पूछता हूँ कि कला की प्रवृत्ति मनुष्य पर क्या प्रभाव डालती है ?"

"इसमें कम-से-कम वह असर होता है कि इसके द्वारा अपने सहयोगियों की परख की जा सकती है और उन्हें सिखाया जा सकता है।"

बज़ारोव मुस्कराया।

"पहली बात तो यह है," उसने जवाब दिया—"कि इसके सम्बन्ध में सब से अधिक आवश्यकता होती है जीवन के अनुभव की; और दूसरी बात यह है कि अपने से पृथक् व्यक्तित्वों का अध्ययन मुश्किल से सापेक्ष है। शरीर और आत्मा की दृष्टि से व्यक्तिमात्र समान होते हैं। हम में से प्रत्येक के शरीर में एक से दिमाग़, एक-सी अँतड़ी, एक से हृदय, एक से फेफड़े, और एक से नैतिक गुण हैं। (बहुत थोड़ी भिन्नता होती है, जिसकी हमें गणना नहीं करनी चाहिए।) इसलिये एक आदमी का नमूना देखकर समस्त मनुष्य-जाति के सम्बन्ध में निश्चय किया जा सकता है। वास्तव में मनुष्य जंगल के वृक्षों के समान हैं। आप किसी वनस्पति-विशेषज्ञ को वृक्षों की प्रत्येक डाल का निरीक्षण करते नहीं देखेंगी।"

कतिया, अभी तक अपने फूल सजा रही थी, बज़ारोव की यह बात सुनकर उसने आश्चर्यपूर्ण मुद्रा के साथ उसकी ओर देखा और ऐसा करते समय बज़ारोव की तीक्ष्ण और उपेक्षा-युक्त दृष्टि भी उसकी नज़र से मिल गयी। कतिया के कपोल आरक्त हो गये। एना सर्जीवना ने अपना सिर हिला दिया।

"जंगल के वृक्ष!" उसने कहा—"तब हो आप यह समझते होंगे कि बुद्धिमान और मूर्ख में कोई अन्तर ही नहीं है; भले और बुरे में कोई फ़र्क़ नहीं है?"

"नहीं, मैं ऐसा तो नहीं समझता," बज़ारोव ने कहा—"बल्कि मेरा तो यह विश्वास है कि अन्तर है। अभिप्राय यह है कि यह अन्तर वैसा है, जैसा कि ध्वनि और पीड़ा में होता है। उदाहरणार्थ, किसी क्षय रोगी के फेफड़े वैसे नहीं होंगे, जैसे हमारे और आपके हैं; तो भी उनकी बनावट वैसी ही होगी, जैसी हमारे और आपके फेफड़ों की है। साथ ही, कुछ हद तक हम जानते हैं कि शारीरिक विकृति कहाँ से उत्पन्न होती है। कुशिक्षा के फल-स्वरूप हममें नैतिक बुराइयाँ आ जाती हैं, दिमाग़ में हज़ारों तरह की बेवक़ूफ़ियाँ भर जाती हैं और हमारे शरीर-रूपी समाज में नियम-विरुद्ध व्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। पहले शरीर को ठीक करो, फिर नैतिक बीमारी शीघ्र दूर हो जायगी।

बज़ारोव ये बातें इस ढंग से कह रहा था, मानो वह अपने-आप से कह रहा हो कि "विश्वास करो, चाहे न करो, मेरे लिये सब बराबर है।" वह अपनी लम्बी उँगलियों से मूछें सहलाने लगा। उसकी आँखें कोयले की तरह दहक रही थीं।

"तो आपका यह मतलब है," एना सर्जीवना ने फिर छेड़ा—"कि एक बार समाज-रूपी शरीर के परिष्कृत हो जाने पर मूर्ख और बदमाश दुनिया से मिट जायँगे?"

"जी हाँ, एक बार शरीर-रूपी समाज जहाँ सुसंगठित हुआ, फिर बुद्धिमान, मूर्ख तथा भले-बुरे के प्रश्न को कोई महत्व ही नहीं दिया जायगा।"

"ओह, मैं समझ गयी ! यह इसलिये कि हम सब की अँतड़ियाँ एक-सी हैं ?"

"निश्चय ही, महाशया।"

मैडम ने आरकाडी की ओर देखा।

"और आपकी क्या राय है, आरकाडी निकोलाईविच ?" उसने पूछा।

"मैं इवजिनी से सहमत हूँ।" उसने जवाब दिया। उसने देखा कि कतिया को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ।

"मुझे ताज्जुब होरहा है, महाशयो," मैडम ने कहा—"तो भी, चूँकि मेरी मौसी आरही हैं, इसलिये हमें उनके कान न खाकर बहस फिर के लिये टाल देना चाहिए।"

एना सर्जीवना की मौसी एक ठिगनी और दुबली-पतली स्त्री थी। उसके मुँह की आकृति लकड़ी के हथौड़े से मिलती थी। आँखें छोटी और कुटिलतापूर्ण थीं। वह मेहमानों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये मुश्किल से झुकी और झटपट एक मखमली आरामकुर्सी पर जा पड़ी, जिस पर उसके अतिरिक्त कोई नहीं बैठ सकता था, और जब कतिया उसके पैर रखने के लिये पावदान देने गयी, तो बुढ़िया ने उसे धन्यवाद तक नहीं दिया, न उसकी ओर आँख उठाकर देखने का ही कष्ट किया। पीली शाल के अन्दर अपना दुर्बल शरीर ढककर वह अपने दोनों हाथ रगड़-रगड़कर गर्मी पैदा कर रही थी। उसे पीला रंग सबसे अधिक पसन्द

था; उसने अपनी टोपी में भी पीले रंग का फ़ीता लगवा रक्खा था।

"नींद अच्छी तरह आयी थी न, मौसी?" मैडम ओडिन्त-सोव ने कुछ ऊँचे स्वर में पूछा।

"कुत्ता फिर यहाँ आगया!" बुड्ढी ने फ़िफ़ी को देखकर बड़बड़ाते हुए कहा—"निकालो इसे! भगादो यहाँ से!"

फ़िफ़ी को बुलाकर कतिया ने किवाड़ खोल दिया, जिससे कुत्ता यह समझकर कि उसे टहलने के लिये बाहर ले जाया जा रहा है, प्रसन्न होकर बाहर निकला; पर जब उसके बाहर निकलते ही किवाड़ बन्द कर लिया गया, तो वह लगा कूँ-कूँ करके किवाड़ पर पञ्जे मारने, इस पर प्रिंसेज़ (मैडम की मौसी) ने फिर नाक-भौं चढ़ाया और कतिया को उसके क्रोध निवारण के लिये समुचित प्रबन्ध करना पड़ा।

"मैं समझती हूँ, चाय तैयार होगयी है," मैडम ओडिन्त-सोव ने कहा—"आइये महाशयो। मौसी, तुम भी कुछ चाय पियोगी?"

प्रिंसेज़ चुपचाप अपनी कुर्सी से उठी और आगे-आगे भोजनागार की तरफ़ चली, जहाँ एक कासेक* नौकर ने मेज़ के नीचे से गद्देदार आराम कुर्सी (पहली कुर्सी की तरह यह भी केवल प्रिंसेज़ के लिये सुरक्षित थी) निकाली, और बुढ़िया उस पर बैठ गयी। कतिया ने चाय ढालकर पहली प्याली

*कज़्ज़ाक फ़िर्के का।

(जिस पर ढाल का चित्र था) अपनी मौसी को दी। इसके बाद बुढ़िया ने उसमें कुछ शहद मिलायी (वह चीनी मिलाकर चाय पीने को फ़जूलख़र्ची का पाप समझती थी, और इसलिये भी ऐसा काम करने से बचती थी, जिसमें पैसे ख़र्च हों।) और फिर मोटे स्वर में बोली—

"प्रिंस आइवन ने अपने पत्र में क्या लिखा है ?"

किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया, और समय पर बज़ारोव और आरकाडी ने समझ लिया कि यद्यपि बुढ़िया की इज़्ज़त ज़रूर की जाती है, पर कोई उसकी बात पर विशेष ध्यान नहीं देता।

"इन लोगों ने बुढ़िया को केवल दिखावे के लिये यहाँ रख छोड़ा है," बज़ारोव ने सोचा—"इसे केवल इसीलिये रक्खा गया है कि यह अमीर घराने की स्त्री है।"

चाय पीने के बाद एना सर्जीवना ने टहलने का प्रस्ताव किया; किन्तु चूँकि उसी मौक़े पर हलकी-सी बारिश शुरू होगयी, अतः यह दल (जिसमें बुढ़िया अब नहीं थी) आगे न बढ़कर ड्राइंग रूम को लौट आया। उसी समय ताश खेलने का शौक़ीन पड़ोसी जिसका नाम पारफ़ीरी प्लैटोविच था, आ पहुँचा। वह एक मज़बूत, सफ़ेद बालों वाला, मृदुभाषी और हँसमुख आदमी था। उसके पाँव ऐसे थे, जिन्हें देखकर मालूम होता था कि वे खरादकर बनाये गये हैं। इसके आनेके बाद एना सर्जीवना ने बज़ारोव से (जिसके साथ वह फिर बातें करने

लगी थी) पूछा कि क्या वह उनके साथ पुरानी चाल का ताश का खेल (प्रिफ़रेंस) खेल सकेगा। बज़ारोव ने यह कहकर स्वीकार किया कि वह अब डाक्टरी परीक्षा की तैयारी न करके खेलों में ही समय गँवायेगा।

"पर सावधान रहियेगा," मैडम ने कहा—"पारफ़ीरी और मैं—दोनों आपको हराने के लिये असमर्थ नहीं हैं। तब तक कतिया, तुम प्यानों पर चलकर आरकाडी निकोलाईविच को कोई चीज़ सुनाओ। मैं समझती हूँ, ये संगीत प्रेमी हैं, और हमलोग भी तुम्हारी चीज़ शौक़ से सुनेंगे।"

कतिया अनिच्छापूर्वक प्यानों के पास गयी; संगीत-प्रेमी होते हुए भी आरकाडी ने कतिया का गान विशेष उत्सुकता-पूर्वक नहीं सुना।

सच तो यह है कि उस (आरकाडी) को ऐसा मालूम हुआ कि मैडम ओडिन्तसोव उससे पिण्ड छुड़ाना चाहती है। इस भावना से उसके हृदय में वैसी-ही आग-सी लग रही थी, जैसी इस अवस्था के नवयुवकों के हृदय में प्रेम की अस्पष्ट और कठोरतापूर्ण भावनाएँ उत्पन्न होने पर लगा करती हैं।

प्यानो का ढक्कन हटाकर कतिया ने कुछ गुनगुनाने के बाद आरकाडी पर दृष्टि डाले बिना ही पूछा—

"क्या, बजाऊँ ?"

"जो आपकी इच्छा हो।" आरकाडी ने लापर्वाही से कहा।

"पर आपको किस प्रकार का संगीत पसन्द है ?" कतिया ने उसी भाव से दुबारा पूछा।

"उच्च कोटि का।" आरकाडी ने पूर्ववत् लापर्वाही के साथ कहा।

"मोज़ारत* ?"

"ज़रूर—मोज़ारात ही।"

कतिया ने वीनस मास्टर कृत सोनाटा-फ़ैनटिस्टा† नामक गान 'सी' स्वर में निकाला। उसने बजाया तो अच्छा, किन्तु उमंग के साथ नहीं; न उस (वाद्य) से उसका कोई विशेष नैपुण्य ही प्रकट हुआ। इसीके अनुसार उसकी चेष्टा भी बनी रही—ओठ भिंचे हुए, आँखें बाजे की चाबियों पर गड़ी-सी और शरीर सीधा एवं गति-विहीन। केवल गान की समाप्ति पर ही उसके चेहरे पर कुछ चमक आयी। उसके बँधे हुए केश में से कुछ बालों की एक लट अलग होकर उसके अदीप्त मस्तक पर खेल रही थी।

सोनाटा के अन्तिम भाग का प्रभाव आरकाडी पर भी पड़ा—यह वह पद था, जिसमें इस गायन का आकर्षक और प्रमत्त सौन्दर्य सहसा वेदनामय और दुःखान्तपूर्ण विलाप के रूप में परिणत हो गया था। फिर भी मोज़ारत-राग के फल-स्वरूप उसके हृदय में जो विचार उत्पन्न हुए थे, उसका सम्बन्ध उसने कतिया से नहीं जोड़ा। उसने उसकी ओर देखकर सोचा—

*राग-विशेष।

†इसे कल्पना-तरंग-लहरी कह सकते हैं।

"अच्छा बजाती है; कुरूपा भी नहीं है।"

सोनाटा समाप्त होजाने पर कतिया ने बाजे की चाबियों पर से हाथ उठाये बिना ही पूछा—"बस ?" और आरकाडी ने उत्तर दिया कि वह उसे अधिक कष्ट नहीं देना चाहता। इसके बाद आरकाडी मोज़ारत के सम्बन्ध में और बातें करता रहा और उस (कतिया) से यह भी पूछा कि क्या वह सोनाटा उसी का चुना हुआ है, जो उसने बजाया है या किसी और व्यक्ति ने उसके लिये चुन दिया है। कतिया ने एक ही वाक्य-खण्ड में इसका उत्तर दिया, और बार-बार अपने को अप्रकट रखने का उपक्रम करने लगी और ऐसे अवसर पर वह अनिच्छापूर्वक अपनी आकृति पर हठीलेपन और लगभग जड़ता के भाव प्रकट करने लगी। तो भी उसमें भीरुता का भाव उतना नहीं था, जितना संकोच का और अपनी बड़ी बहन की उपस्थिति से, जिसने उसे पाल-पोस कर बड़ी किया है (इसलिये नहीं कि मैडम ओडिन्त-सोव कभी ऐसा सोचती है) उसमें कुछ भयाकुलता आ गयी थी। अन्ततः वह फिर अपने फूलों के पास आ बैठी और आरकाडी ने बाध्य हो फ़िफ़ी को पुचकारकर अपने पास बुलाया तथा मुस्कराकर उसका सिर थपथपाने लगा।

इधर बेचारा बज़ारोव बाज़ी-पर-बाज़ी हार रहा था, क्योंकि एना सर्जीवना ताश खेलने में बड़ी चालाक थी और पारफ़ीरी भी अपने-आपको सँभालने में काफ़ी समक्ष था। फल यह हुआ कि युवक डाक्टर न केवल एक बड़ी रक़म हार गया,

वरन वह (रक़म) इतनी अधिक थी, जो मुश्किल से उसके लिये सह्य कही जा सकती थी। भोजन के बाद एना सर्जीवना ने वनस्पति-शास्त्र पर बहस आरम्भ कर दी।

"मैं चाहती हूँ कि कल सुबह आप मुझे अपने साथ टहलने ले चलें," उसने कहा—"मेरी इच्छा है कि आप मुझे हमारी फुलवाड़ी के फूलों के लैटिन नाम सिखादें, और साथ ही उनकी विशेषताएँ भी बतला दें!"

"पर लैटिन नाम जानने से आपको क्या लाभ होगा?" बज़ारोव ने पूछा।

"सभी बातों में पर्याय की आवश्यकता होती है?" उसने उत्तर दिया।

"वास्तव में अद्भुत स्त्री है!" आरकाडी ने उसी रात अपने कमरे में बज़ारोव से कहा।

"हाँ," बज़ारोव ने कहा—"अवश्य ही इसका मस्तिष्क कोई चीज़ है। इसने जीवन में बहुत से स्वप्न भी देख रक्खे हैं।"

"किस अर्थ में?"

"अच्छे-से-अच्छे अर्थ में, दोस्त आरकाडी निकोलाईविच। मुझे निश्चय होगया है कि यह अपनी जायदाद का सुन्दर प्रबन्ध करती है; किन्तु अद्भुत चमत्कार तो इसमें नहीं, इसकी बहन में है?"

"क्या? उस अक्खड़ लड़की में?"

"हाँ, उसी अक्खड़ लड़की में। उस अक्खड़ लड़की में

नवीनता और कौमार्य है, और है भीरुता तथा मौनता। जो कुछ तुम चाहते हो, मनोरंजन के सभी गुण उसमें मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त उसे जैसी चाहो, बना सकते हो; किन्तु उसकी बड़ी बहन तो अब ऐसी हो चुकी है, जैसे रोटी का बासी टुकड़ा।

आरकाडी ने कोई जवाब नहीं दिया और शीघ्र ही दोनों मित्र सोकर अपने-अपने स्वप्न देखने लगे।

उसी रात एना सर्जीवना ने अपने दोनों मेहमानों के सम्बन्ध में खूब विचार किया। बज़ारोव को वह इसलिये चाहती थी कि उसमें कृत्रिमता का बिल्कुल अभाव है और उसकी आलोचना-शैली अत्यन्त तीव्र है। वह उसमें किसी नूतनता का अनुभव करती थी; वह नूतनता जिसका उसने अभी तक अपने जीवन में अनुभव नहीं किया था। इसी कारण उसके प्रति उस (मैडम) की उत्सुकता बढ़ती जाती थी।

और वह स्वयं कैसी विलक्षण स्त्री थी—सब प्रकार की ईर्ष्या और दृढ़ विश्वास (कट्टरता) से दूर और किसी के भी प्रति अनुनय न करनेवाली, स्वाधीन तथा उद्देश्यहीन। फिर भी यद्यपि उसकी आँखों के आगे बहुत-कुछ था—मनोरंजन का काफ़ी सामान प्रस्तुत था, किन्तु वास्तव में उसे सन्तोष किसी बात से नहीं होता था, तारीफ़ तो यह कि सन्तुष्टि के लिये उसे किसी प्रकार की इच्छा भी नहीं थी। इसका कारण यह था कि उसकी बुद्धि जिज्ञासु होने पर भी असावधान और ऐसे सन्देहात्मक विचारों से पूर्ण थी, जिन्होंने कभी कठोर रूप नहीं

धारण किया; उसके अन्दर ऐसी लालसाएँ थीं, जिन्होंने कभी ऐसा रूप नहीं धारण किया कि वह बेचैन होजाय। यह सच है कि अगर उसके पास इतना धन और स्वतंत्रता न होती, तो वह झगड़े में पड़ गयी होती, और उस समय अभिलाषाओं का रूप अच्छी तरह उसकी समझ में आजाता; पर घटनाओं का प्रस्फुटन इस रूप में हुआ कि उसे जीवन में अद्भुत वेग से प्रविष्ट होना पड़ा था, और यद्यपि बहुधा उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, फिर भी वह अपने दिन बड़ी गम्भीरतापूर्वक काटती थी, जिससे न्यूनाधिक विकलता का समय शायद ही कभी आता था। यह भी सच है कि कभी-कभी उसकी आँखों के सामने इन्द्र-धनुष के से विविध रंग चमचमाते दिखायी देते थे; किन्तु ज्यों ही वे रंग विलुप्त होते, वह पुनः पूर्ववतः स्वतंत्र होकर साँस लेने लगती थी और वह उन (रंगों) की विलुप्तता पर कभी खेद नहीं प्रकट करती थी। फिर यद्यपि कभी-कभी उसकी कल्पना उस सीमा को पार कर जाती थी, जिसे दैनिक नैतिकता के अनुसार संगत और माननीय समझा जाता है, तो भी उसका रक्त उसी स्थिरता के साथ उसके आलस्यपूर्ण मनोमुग्धकारी शरीर में प्रवाहित होता था; और केवल उसी समय, जब वह अपने सुख-दायक स्नानागार से नहाकर बाहर निकलती, उसके मन में यह विचार उत्पन्न होते कि उसका जीवन, उसकी व्यथाएँ, श्रम और कठोरताएँ व्यर्थ हैं। उसी समय उसकी आत्मा में सहसा एक वेग भर जाता और वह उच्च अभिलाषाओं से उबल उठती। किन्तु

इस पर भी जहाँ खिड़की से वायु का एक प्रबल झोंका उसकी ओर आता कि वह अपने कन्धे हिलाकर भाव-मग्न हो जाती, और ऐसा मालूम होता कि अब उसे मूर्च्छा आजायगी; केवल यही एक चेतना उसके मन में रह जाती कि चाहे जिस तरह भी हो सके, इस घृणित प्रवाह से पीछा छुड़ाना पड़ेगा।

फिर, उन स्त्रियों की भाँति, जिन्होंने जीवन में कभी यह जाना ही नहीं कि प्रेम करना किसे कहते हैं, उसके मन में लगातार ऐसी स्पृहा उत्पन्न होने लगती थी, जिसकी व्याख्या बिल्कुल नहीं हो सकती। कोई भी ऐसी चीज़ नहीं थी, जिसका उसे अभाव हो, फिर भी उसको ऐसा मालूम होता कि उसके पास कुछ नहीं है। स्वर्गीय ओडिन्तसोव को तो उसने सहन कर लिया था, क्योंकि उसके साथ विवाह तो केवल रस्म-मात्र का था—यद्यपि ओडिन्तसोव सहृदय न होता, तो वह उस रूप में भी उसकी स्त्री बनने के लिये राज़ी न होती। साधारणतः पुरुष-जाति का उसे जो अनुभव हुआ था, वह उसके विपरीत था और उसने केवल यही समझा था कि वह (पुरुष) गन्दा, सुस्त, कष्टदायक, कमज़ोर और अपरिवर्तनीय आदतोंवाला होता है। वास्तव में केवल एक बार ही (कहीं विदेश में) उसे एक ऐसा पुरुष मिला था, जिसने उसे आकर्षित किया था। वह (पुरुष) एक युवक स्वेड था, जिसका चेहरा सिपाहियाना, आँखें नीली और विश्वस्त तथा भवें खुली हुई थीं; किन्तु

उस (पुरुष) ने उस पर जो प्रभाव डाला था, वह ऐसा नहीं था कि उसे रूस वापस आने से रोक सकता।

"यह बज़ारोव तो अद्भुत पुरुष है।" अपने शानदार पलँग पर बिछे हुए हल्के रेशमी बिछौनेपर लेटकर, क़सीदेदार तकिये पर सिर रखते हुए श्रीमती ओडिन्तसोव ने मन-ही-मन सोचा। यह कहा जा सकता है कि अपने स्वर्गीय पिता की-सी शौक़ीन और विलासितापूर्ण रुचि रखते हुए वह अपने मौजी और दयालु पिता के प्रति बड़ा प्रेम-भाव रखती थी, क्योंकि अपने जीवन-काल में उस (पिता) ने न केवल उसका आदर किया और उससे सम-वयस्कों की भाँति हँसी-दिल्लगी की, प्रत्युत वह उस पर पूर्ण विश्वास करता था, और उसने अपना यह स्थिर नियम बना लिया था कि प्रत्येक बात में लड़की से परामर्श लिया करता। अपनी माँ को वह बहुत कम याद करती थी।

"हाँ, यह बज़ारोव तो अद्भुत पुरुष है।" उसने फिर दुहराया; इसके बाद उसने शरीर पलँग पर पूर्णतः फैला लिया और मुस्कराकर दोनों हाथ सिर के नीचे लगा लिये। फिर वह फ्राँसीसी भाषा के दो वाहियात उपन्यास उलट-पुलटकर देखने लगी। दूसरा उपन्यास देखते-ही-देखते उसे नींद आ गयी और उपन्यास हाथ से गिर गया। उसका शान्त और स्वच्छ शरीर स्वच्छ और सुगन्धित आच्छादन में लिपटा हुआ निद्रा-देवी की मधुर गोद में विश्राम करने लगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब सब लोग नाश्ता कर चुके, तो वह बज़ारोव के साथ वनस्पतियों का अध्ययन करने के लिये रवाना हो गयी, और घर पर कह गयी कि खाना खाने के समय से कुछ पहले वापस आ जायगी। इस अर्से में आरकाडी घर से कहीं नहीं गया, कतिया के साथ उसने एक घण्टा ज़रूर बिताया, जो कुछ क्लेशकर नहीं मालूम हुआ, ख़ासकर इसलिये कि इस बार कतिया बिना किसी के कहे ही प्यानो पर बैठकर उसे सोनाटा सुनाने लगी। किन्तु जब उसने मैडम ओडिन्तसोव को वापस आते देखा, तो उसका हृदय जैसे उछल-सा पड़ा। वह बाग़ में होकर थके क़दमों से आ रही थी—उसके कपोल गुलाब के फूल से हो रहे थे, आँखें टोपी के नीचे से असाधारण रूप में चमक रही थीं, उसकी उँगलियाँ किसी फूल का डण्ठल नचा रही थीं, उसकी हल्की ओढ़नी कन्धों पर आ गयी थी और टोपी का चौड़ा फ़ीता उसके सीने पर लटक रहा था। उसके पीछे अपनी सदा की गर्वपूर्ण और स्वनिश्चित चाल से बज़ारोव आ रहा था। उस (बज़ारोव) के चेहरे से प्रसन्नता टपक रही थी और मालूम होता था कि वह अभी-अभी हँस चुका है। फिर भी आरकाडी को वह प्रसन्नता अच्छी नहीं लगी।

"गुड् मार्निंग"* कहकर बज़ारोव अपने कमरे की ओर बढ़ा और मैडम ओडिन्तसोव ने आरकाडी से उपेक्षा के साथ

* सुबह का सलाम।

हाथ मिलाया। इसके बाद वह भी अपने कमरे की ओर चली गयी।

"गुड् मार्निंग," आरकाडी ने मन-ही-मन सोचा—"देखनेवाला यही समझेगा कि मेरा और मैडम का आज ही परिचय हुआ है!"

१७

हम जानते हैं कि समय या तो पक्षी की तरह तेज़ी से उड़ता है, या फिर घोंघे की तरह मन्दतम गति से फिसलता है। इस प्रकार जब समय की चपल या मन्द गति की ओर ध्यान देने तक का अवसर नहीं मिलता, तो मनुष्य की सुअवस्था समझी जाती है। बज़ारोव और आरकाडी ने मैडम ओडिन्तसोव के यहाँ इसी प्रकार एक पक्ष व्यतीत कर दिया। इसका दूसरा सहायक कारण यह था कि अपनी घर-गृहस्ती और दैनिक जीवन में मैडम ने एक ऐसी व्यवस्था बना रक्खी थी, जिसका पालन वह स्वयं कठोरतापूर्वक करती थी और औरों से भी करवाने की चेष्टा करती थी। इसके अनुसार दैनिक कार्य बड़ी ही सुनिश्चित गति से और बँधे हुए कार्य-क्रम के अनुसार सम्पन्न होता था। आठ

बजे सब लोग नाश्ते के लिये एकत्रित होते, इसके बाद दोपहर का खाना तैयार होने तक प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकता था। (मैडम अपने कारिन्दे की ओर ध्यान देती थी—वह अपनी ज़मींदारी का प्रबन्ध दशमांश कर की प्रणाली पर करती थी—फिर घरेलू नौकरों और उनके मुखिया की देख-रेख करती थी)। इसके बाद शामका खाना खाने के पूर्व जब सब फिर एकत्रित होते, तो या तो बातचीत होती या कुछ पठन-पाठन। इसके पश्चात् शामका अवशिष्ट समय या तो टहलने में व्यतीत होता, अथवा ताश खेलने या गाने-बजाने में। अन्त में साढ़े दस बजे एना सर्जीवना अपने कमरे में जाकर दूसरे दिन का हुक्मनामा तैयार करती और तदुपरान्त शयन करती।

किन्तु बज़ारोव के लिये यह नपी-तुली और प्रदर्शनपूर्ण मियमितता सुविधाजनक नहीं थी। "इससे तो ऐसा मालूम होता है कि हम लोहे की पटरियों (रेल्वे) पर दौड़ रहे हैं" वह कहा करता। साथ ही वर्दी पहननेवाले नौकरों और श्रेणीबद्ध गुलामों को देखकर उसके प्रजावादी विचारों को ऐसा धक्का लगता था कि एक बार उसने यहाँ तक कह डाला कि प्रत्येक—नौकर-चाकर—व्यक्ति अंग्रेज़ी फ़ैशन के कपड़े पहनने, सफ़ेद टाई बांधने और काला लम्बा कोट पहनने का अधिकारी है। अपने ये विचार उसने एना सर्जीवना को (जिसके अन्दर कुछ ऐसी बात थी कि प्रत्येक आदमी उसके समक्ष किसी भी विषय पर अपने विचार प्रकट कर देता था) सुनाये, और यह बात सुन

लेने के बाद उसने कहा—"आपके दृष्टि-बिन्दु से तो यह बात ठीक है, और शायद मैं इसे बहुत पसन्द करती; पर देहात में उस प्रकार गुज़र नहीं हो सकती, उस प्रकार की स्वतंत्रता और वर्दी के परित्याग का फल यह होगा कि लोग गन्दे रहने लगेंगे।"

मैडम ने अपनी व्यवस्था पूर्ववत् जारी रक्खी। यद्यपि बज़ारोव इस विषय में अपनी असहमति प्रदर्शित करता रहा, तो भी उसे और आरकाडी को यह बात मालूम हो गयी कि उसी 'प्रदर्शन' का ही यह परिणाम था कि मैडम का सारा प्रबन्ध इस प्रकार सफ़ाई से चलता था, जैसे लोहे की पटरियों पर गाड़ी चलती है। साधारणतः यह कहा जा सकता है कि दोनों नव-युवकों में उस दिन से एक परिवर्तन आगया, जबसे वे निकोल्सको आये। यह (परिवर्तन) स्वयं प्रकट भी होगया, क्योंकि बज़ारोव (जिसके प्रति एना सर्जीवना की चाह स्पष्ट थी—यद्यपि उसकी बातों से वह कभी-कभी ही सहमत होती थी) अपनी मीन-मेष निकालनेवाली स्थायी आदत के कारण कभी-कभी अपने आपे से बाहर हो जाता, सदा अनिच्छा-पूर्वक बोलता, अपने चारों ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखता और ऐसी बेचैनी से बैठता कि मालूम होता उसकी कुर्सी के नीचे बारूद की सुरंग में आग लगायी जारही है। आरकाडी (जो अब अन्ततः इस परिणाम पर पहुँचा था कि वह मैडम ओडिन्तसोव को प्रेम करता है) में भी परिवर्तन स्पष्ट दीखने लगा था। वह

अब उदास-सा रहने लगा, फिर भी यह बात कतिया से मित्रता करने में बाधक नहीं सिद्ध हुई, बल्कि इससे उसके प्रति उसका अच्छा सौहार्द्र हो गया।

"चूँकि मैडम मेरी कोई पर्वाह नहीं करती," वह मन-ही-मन सोचता—"इसलिए यह भला आदमी भी मेरी कुछ मदद नहीं करता।"

इन विचारों में पड़कर उसके हृदय में फिर एक बार अपनी तेजस्विता की परीक्षा करने की इच्छा उत्पन्न होती। कतिया ने स्वयं इस बातको कुछ-कुछ ताड़ लिया था कि उसकी संगति से आरकाडी को एक प्रकार का आनन्द मिलता है; ऐसी अवस्था में वह नहीं समझती थी कि वह आरकाडी को, तथा स्वयं अपने आपको उस निष्कलंक, अर्द्ध संशयात्मक और अर्द्ध-विश्वासपूर्ण 'संगति' से क्यों वञ्चित रक्खे। यह सच है कि बड़ी बहन की उपस्थिति और उसकी सूक्ष्म दृष्टि (जिसके भय से कतिया तत्काल अपने-आपको समेट लेती थी) की पहुँच में ये दोनों मुंह से एक शब्द भी नहीं निकालते थे (वास्तव में एक प्रेमी की तरह आरकाडी को तो अपनी प्रणयिनी के पास बैठने पर उसके अतिरिक्त और किसी की ओर ध्यान भी नहीं देना चाहिए था); किन्तु जब आरकाडी कतिया को अकेली पाता, तो वास्तव में कुछ हद तक एक तरह के आनन्द का अनुभव करता। मतलब यह कि चूँकि वह अपने को मैडम की दिल-चस्पी का कारण बना सकने में असमर्थ था (क्योंकि जब कभी

वह अकेले उस—मैडम—के साथ होता, तो लज्जा से स्वयं उस—आरकाडी—का मुँह लाल हो जाता, और मैडम स्वयं यह बात न समझ पाती थी कि आरकाडी से क्या कहे, क्योंकि अपनी तुलना में वह उसका मस्तिष्क अपेक्षाकृत शुष्क समझती थी), अतः कतिया की उपस्थिति में उस—आरकाडी—का व्यवहार नम्रता-पूर्ण होता था और वह संगीत, कहानियों, कविताओं और अन्य छोटी-मोटी चीज़ों के सम्बन्ध में उसके अनुभवों का वर्णन सुनते नहीं थकता था। उसने कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि वही 'छोटी-मोटी' बातें उसके लिये भी वैसे-ही मनोरंजन का कारण थीं, जैसे कतिया के लिये। साथ ही यह बात भी थी कि कतिया ने उसकी अन्यमनस्कताओं पर बोझ नहीं डाला; जिस प्रकार मैडम बज़ारोव के प्रति झुकी थी, उसी प्रकार आरकाडी कतिया की ओर झुकने लगा, और कुछ समय के पश्चात् दोनों जोड़ों में अन्तर भी दृष्टिगोचर होने लगा। यह बात विशेषतः तब देखने में आती थी, जब वे टहलने के लिये बाहर जाते थे। कतिया प्रकृति को बहुत प्रेम करती थी, और आर-काडी भी प्रकृति का प्रशंसक था (यद्यपि वह स्वयं इस बातको कभी न मानता); किन्तु मैडम और बज़ारोव के लिये प्राकृतिक जगत् का सौन्दर्य न्यूनाधिक रूप में उपेक्षा का विषय था। यह कहने की आवश्यकता मुश्किल से है कि आरकाडी और बज़ारोव के इस निरन्तर पार्थक्य का एक अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि उस—बज़ारोव—में क्रमिक परिवर्तन आरम्भ होगया।

अब वह मैडम ओडिन्तसोव से बहस नहीं करता था; न उसकी रईसी चाल-ढाल की ही कभी आलोचना करता; किन्तु कतिया की वह सदा की भाँति प्रशंसा करता। (और उसकी भावुकता-पूर्ण मनोवृत्ति पर नियंत्रण रखने के लिये मैडम को आदेश देता।) यह प्रशंसा भी वह अधूरे मन और लापर्वाही के साथ करता था, और अब पहले की अपेक्षा उसमें बात-बातपर आरकाडी को व्याख्यान सुनाने की आदत कम हो गयी थी। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि अब वह उसकी नज़र बचाने लगा था; उसकी उपस्थिति में वह बेचैन-सा रहा करता।

आरकाडो ने इन बातों को भली भाँति देख लिया; किन्तु उसने अपने विचार किसी पर प्रकट नहीं किये।

इस परिवर्तन का कारण यह था कि मैडम ओडिन्तसोव ने बज़ारोव के हृदय में एक नयी भावना का सञ्चार कर दिया था। उस भावना ने बज़ारोव पर एक पीड़ा और उन्माद का भार डाल दिया। किन्तु इस पर भी यदि कोई उसे किसी रूप में समझ पाता, तो उसकी आत्मा की इस समय जो गति थी, वह न होती; वह इस—नयी भावना—को घृणापूर्ण हास्य और रूखी प्रतारणा के साथ तिरस्कृत कर देता, विशेषकर यह देखते हुए कि स्त्री-समाज और स्त्री-सौन्दर्य का एक प्रसिद्ध उपासक होते हुए भी वह प्रेम के आदर्श को 'विचित्रतापूर्ण' (उसके अपने ही शब्द में) रूप में देखना अक्षम्य मूर्खता समझता था और साहसपूर्ण भावों को एक प्रकार का भटकाव या नीचता

समझता था, जिसके कारण वह कभी-कभी यह विचार प्रकट किया करता था कि टागेनबर्ग और अन्य कवियों ने बग़ैर पागलख़ाने की हवा खाये अपने खण्ड-काव्य नहीं समाप्त किये होंगे।

"यदि कोई स्त्री तुम्हें प्रसन्न कर दे," वह कहा करता—"तो अपने उद्देश्य-प्राप्ति का यत्न करो; पर यदि तुम उस (ध्येय) की प्राप्ति न कर सको, तो अधिक कष्ट उठाने में समय न गँवाओ; फ़ौरन वापस लौट आओ। क्योंकि संसार किसी एक ही धुरी पर नहीं टिका है।"

इस प्रकार मैडम ओडिन्तसोव ने बज़ारोव को 'प्रसन्न' किया था। तो भी यद्यपि उस—मैडम—की शक्ति, स्वाधीनता, विचार-स्वातंत्र्य और बज़ारोव के प्रति उसकी असन्दिग्ध चाह उस—बज़ारोव—के पक्ष की बातें थीं, फिर भी उसे शीघ्र ही मालूम होगया कि मैडम के मामले में 'उद्देश्य-प्राप्ति' की सम्भावना नहीं है। साथ ही, उसे इस बात से भी आश्चर्य हुआ कि वह 'वापस' भी नहीं 'लौट' सकता—इस प्रकार क्रमशः घटना-विकास होते-होते ऐसी अवस्था आ गयी कि मैडम का ध्यान आते ही बज़ारोव का ख़ून खौल उठता। यदि यही एक रोग होता, तो इसकी कोई दवा भी हो सकती, पर उसके मन में कुछ और भी भाव उदय हो गये, जो ऐसे थे कि अब तक कभी उसके पास फटके भी नहीं थे और जिन्हें वह अब तक दिल्लगी समझता आया था। अब वही भावना उसके गर्व का कारण बन

रही है। इसलिये यद्यपि एना सर्जीवना से वार्तालाप करते समय वह प्रत्येक प्रेम की 'विचित्रता' को घृणा और धिक्कार के भाव से देखता था, फिर भी एकान्त में विचार करने के बाद उसने समझा कि उसके निजी व्यक्तित्व में भी उस 'विचित्रता' के सूक्ष्म तत्वों का नितान्त अभाव नहीं है। ऐसे समय पर मकान से निकल भागने और जंगलों में दौड़ जाकर ऐसी लम्बी डगें भरने कि मार्ग में आनेवाली हरियाली लता-पल्लव सब कुचल जायँ, और उन्हें तथा अपने-आपको कोसने के अतिरिक्त और क्या चारा रह जाता है; या फिर वह किसी घास के ढेर या अस्तबल में जाकर हठपूर्वक अपनी आँखें बन्द करके प्रणय-निद्रा का स्वाँग भरे। ऐसी अवस्था में उसे ऐसा माया-जाल दृष्टिगत होता कि उन गर्वपूर्ण अधरों का उसने एक बार चुम्बन किया है, वे स्वच्छ बाहें उसके गले में लिपट गयी हैं और उन उमंग-भरी आँखों की मधुर चितवन उसकी दोनों आँखों में बड़ी मादकता के साथ खुभ चुकी है—यह विचार आते ही उसका सिर चक्कर खाने लगता और क्षण-भर, जब तक उसकी असंतुष्टावस्था वापस न आती, वह तन्मय हो उठता था और मानों किसी शैतान की प्रेरणा से अस्वीकार्य विचारों में पड़जाता। फिर ऐसा समय भी आता, जब वह अपना ही सा परिवर्तन उस—मैडम—में भी देखता था, और उसकी मुखाकृति में विशेष परिवर्तन उससे अलक्षित नहीं रहती था। ऐसी अवस्था आजाने तक भी वह अपने पाँव पटक-

कर, दाँत पीसकर और मन-ही-मन अपने-आप पर घूँसा तानकर रह जाता था।

एक बार मैडम के साथ बाग़ में घूमते समय उसने रूखे और कठोर शब्दों में कहा कि वह शीघ्र ही अपने बाप के निवास-स्थान पर जाने की इच्छा कर रहा है, जिस पर एना सर्जीवना का चेहरा इस प्रकार पीला पड़ गया, जैसे उसके हृदय में चोट लगी हो। वह आश्चर्य में पड़कर टहलना भूल-सी गयी। फिर भी उसकी परीक्षा करने के लिये नहीं, न इसी विचार से कि उसका परिणाम क्या होगा, बज़ारोव ने अपने प्रस्थान का निश्चय उसे सुना दिया। (वह कभी कार्यक्रम नहीं बनाता था।) इस (चर्चा) का कारण यह था कि उसी दिन प्रातःकाल वह अपने पिता के कारिन्दे—टिमोथिच—से मिला था, जो एक बड़ा उजड्ड और उपस्थित बुद्धिवाला बुड्ढा था, और बज़ारोव के बचपन में उसका पालन-पोषण करने के कारण स्वयं उससे मिलने निकोल्सको आया था। उसके बाल सफ़ेद और स्वच्छ थे, चेहरा लाल और झुर्रीदार और आँखें जलपूर्ण तथा धँसी हुई। उसने मिश्रित—भूरे और लाल—रंग का जाकेट पहन रक्खा था, कमर में चमड़े की पट्टी बँधी थी, और पैर में भारी बूट थे।

"गुड् डे* दादा !" बज़ारोव ने उससे मिलकर कहा था।

"गुड् डे, बत्युश्का !" बुड्ढे ने प्रसन्नतापूर्ण मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया था।

---

*दिन का प्रणाम।

"ओ हो, यहाँ कैसे आगये ?" बज़ारोव ने फिर पूछा था—"क्या उन लोगों ने मुझे लिवा चलने के लिये भेजा है ?"

"नहीं, बत्युश्का, मुझे माफ़ करना !" टिमोथिच ने कोई ख़ास हुक्म याद करते हुए, जो उसे रवाना होते समय दिया गया था, कहा था—"नहीं, मैं ज़मींदारी के काम से शहर जा रहा हूँ, रास्ते में सोचा, तुमसे भी मिलता चलूँ। तुम्हें किसी तरह का कष्ट न दूँगा—किसी भी तरह का नहीं !"

"झूठ मत बोलो," बज़ारोव ने कहा था—"शहर जाने का क्या यही रास्ता है ?"

इसपर टिमोथिच ने अपने चेहरे से अत्यन्त नम्रता का भाव प्रकट किया था और कुछ जवाब नहीं दिया था।

"पिताजी की तबियत कैसी है ?" बज़ारोव ने पूछा था।

"ईश्वर की कृपा से बहुत अच्छी है !"

"और माँ की ?"

"वह भी अच्छी तरह हैं !"

"मैं समझता हूँ, वे लोग मेरी बाट देख रहे होंगे ?"

बुड्ढे ने मर्मान्तक ढंग से सिर हिलाया था।

"इवजिनी बैसिलिच, भला तुम्हारी बाट वे क्यों न देखेंगे ? ईश्वर साक्षी है, उनका हृदय तुम्हें देखने को तरस रहा है।"

"अच्छा, अच्छा ! अब अधिक प्रतीक्षा न करनी पड़ेगी; कहना कि मैं शीघ्र ही आजाऊँगा।"

"बहुत अच्छा, बत्युश्का।"

एक ठण्डी सांस लेकर टिमोथिच ने दोनों हाथों से टोपी सिर पर रखकर वापस जाने की तैयारी की थी और फाटक पर जा, (जहाँ अपना पुराना घोड़ा बाँधकर वह अन्दर आया था) सवार होकर घोड़े को दुलकी भगाले गया था; पर शहर की तरफ़ नहीं—बज़ारोव के पिता के निवासस्थान की ओर।

उसी दिन शाम को मैडम अपने अन्तःपुर में बज़ारोव के साथ बैठी थी, और आरकाडी स्वागत-भवन में टहलते हुए कतिया का वाद्य सुन रहा था। बुढ़िया प्रिंसेज़ शयन कर चुकी थी, क्योंकि उसे मेहमानों की सूरत एक आँख नहीं भाती थी और वह उन्हें 'निकम्मे युवक' कहा करती थी। वास्तव में यद्यपि वह ड्राइंग रूम या भोजनागार में मुँह फुलाये बैठी रहती थी; पर जब अपनी दासी के साथ कहीं एकान्त में होती, तो आरकाडी और बज़ारोव को सैकड़ों गालियाँ देती। इसमें सन्देह नहीं कि मैडम ओडिन्तसोव इन बातों से अवगत थी।

"आपको जाने की क्या ज़रूरत है?" उसने बज़ारोव से पूछा—"क्या आप अपना वादा भूल गये?"

बज़ारोव चौंक उठा।

"कैसा वादा?" उसने पूछा।

"तब तो आप भूल गये! मेरा मतलब उस वादे से है, जो आपने यह कहकर किया था कि आप मुझे रसायन-शास्त्र के कुछ पाठ पढ़ा देंगे?"

"मैं इसे कैसे पूरा कर सकता हूँ? पिताजी मेरा इन्तज़ार

कर रहे हैं, और अब मुझे एक दिन भी नहीं रुकना चाहिए। आप पेलस और फ्रेमी कृत 'रसायन का साधारण परिचय' पढ़ जाइये। यह बड़ी सुन्दर पुस्तक है और स्पष्ट ढंग से लिखी गयी है—आपको इसी की ज़रूरत है।"

"पर आपने कहा था कि कोई भी पुस्तक पढ़ाने का कार्य नहीं कर सकती—मैं आपके शब्द तो भूल गयी, पर आप मेरा मतलब समझ गये न?"

"मैं बिल्कुल मजबूर हूँ।" उसने कहा।

"तो भी क्यों जाइयेगा?" उसने स्वर धीमा करके कहा। बज़ारोव ने उसे कुर्सी पर पीछे की ओर झुकते और दोनों हाथ (जो कुहनियों तक खुले थे) मिलाते देखा और लैम्प (जिस पर हलका काग़ज़ लगाकर रोशनी हल्की कर दी गयी थी) के उजाले में देखा कि मैडम का चेहरा पीला पड़ गया है और उसका शरीर मुलायम और सफ़ेद गाउन में ऊपर से नीचे तक सो-सा गया है।

"मेरे रुकने का कोई कारण भी तो हो?" बज़ारोव ने जवाब दिया।

मैडम ने अपने सिर को थोड़ा-सा हिलाया।

"आपके रुकने का कारण?" उसने कहा—"क्या आप यहाँ सुखी नहीं हैं? क्या आप समझते हैं कि आपके चले जाने से किसी को दुःख नहीं होगा?"

"किसी को नहीं। मुझे इस बात का निश्चय है।"

"तो यह आपकी ग़लती है," क्षण-भर रुकने के बाद मैडम ओडिन्तसोव ने जवाब दिया—"पर मैं आपकी बात का विश्वास नहीं करती। मैं समझती हूँ, आप गम्भीरतापूर्वक बात नहीं कर रहे हैं।"

बज़ारोव कुछ नहीं बोला।

"आप मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देते ?" उसने फिर पूछा।

"मैं क्या कहूँ ? मैं साधारणतः समझता हूँ कि किसी की अनुपस्थिति कोई ध्यान देने की बात ही नहीं है; विशेषतः मेरे-जैसे आदमी की।"

"यह क्यों ?"

"क्योंकि मैं रूखा और मनोरंजनहीन व्यक्ति हूँ। मुझे बोलना भी नहीं आता।"

"और आप खेल खेलना तो जानते हैं ?"

"नहीं, वह भी नहीं। आप जानती हैं, जीवन का कोमल रूप, जिसे आप अत्यन्त प्रिय समझती हैं, मुझसे बहुत दूर रहता है।"

मैडम ओडिन्तसोव अपने रूमाल का कोना उँगलियों से नोचने लगी।

"आप चाहे जो समझें," उसने कहा—"पर आपके चले जाने पर कम-से-कम मुझे तो उदास लगेगा।"

"आरकाडी तो यहीं रहेगा।" बज़ारोव ने साहसपूर्वक कहा।

मैडम के कन्धे हिल उठे।

"तो भी मेरा समय मुश्किल से कटेगा।" उसने कहा।

"अधिक समय तक ऐसा नहीं होगा।"

"क्यों नहीं ?"

"क्योंकि आपने ठीक ही कहा है कि जब तक आपकी व्यवस्था का उल्लङ्घन नहीं होता, तब तक आप उदास नहीं होतीं। वास्तव में ऐसी त्रुटि-हीन नियमितता के साथ आपने अपने जीवन को ऐसा सुव्यवस्थित कर रक्खा है कि उसमें उदासी, अन्यमनस्कता या अन्य किसी भी अवाञ्छनीय भावना के लिये स्थान ही नहीं है।"

"और मैं भी त्रुटि-हीन हूँ, मैं समझती हूँ कि मैंने अपना जीवन इतना अधिक नियमित बना लिया है कि उसमें भूल नहीं हो सकती ?"

"हाँ, मैं ऐसा कह सकता हूँ। इसका एक उदाहरण लीजिए। अभी कुछ ही मिनटों में दस बजेंगे। मैं यह अनुभव-द्वारा जानता हूँ कि दस बजते ही आप मुझे यहाँ से चले जाने के लिये कहेंगी।"

"नहीं, मैं नहीं कहूँगी। आप रुक सकते हैं। अच्छा, ज़रा वह खिड़की तो खोल दीजिए। इस कमरे में तो दम घुटा जा रहा है।"

बज़ारोव ने उठकर खिड़की खोल दी। उसके हाथ काँप रहे थे। खिड़की खोलते ही कोमल रात्रि में नभ-मण्डल का दृश्य

दिखायी दिया। वृक्षों की टहनियों से हवा के झोंकों के कारण हल्की सनसनाहट की आवाज़ आ रही थी। शुद्ध, खुली और सुगन्धित वायु से कमरा भर गया।

"कृपया रोशनदान भी खोलकर तब बैठिये। मैं आपके जाने के पहले कुछ और बातें करना चाहती हूँ। आप अपने सम्बन्ध में कुछ कहिए—अभी तक आपने अपने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कभी कुछ नहीं कहा।"

"मैं तो किसी अधिक लाभदायक विषय पर बातचीत करना चाहूँगा।"

"इस क़दर संकोच! ख़ैर, तो भी मैं आपके परिवार के और आपके पिता के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहती हूँ, जिनके लिये आप मुझे शीघ्र ही छोड़ जाना चाहते हैं।"

"आप 'छोड़ जाना' शब्द क्यों कह रही हैं?" बज़ारोव ने कहा। फिर वह ज़रा उच्च स्वर से बोला—"इस प्रकार की बातों में किसी को दिलचस्पी नहीं हो सकती—विशेषतः आपको तो बिल्कुल नहीं। मैं और मेरे परिजन अप्रसिद्ध व्यक्ति हैं।"

"और मैं प्रख्यात रईसों में हूँ, क्यों?"

बज़ारोव उसकी ओर ताकता रहा।

"हाँ।" उसने ज़ोर देकर कहा।

मैडम मुस्करा उठी।

"तब तो मैं देखती हूँ कि मेरे सम्बन्ध में आपका ज्ञान बहुत कम है," उसने कहा—"पर यह तो निश्चय है कि आप

मनुष्यमात्र को सदृश मानते हैं, इसलिये उनके सम्बन्ध में अध्ययन करने की ज़रूरत नहीं। कभी मैं आपको अपना इतिहास सुनाऊँगी। किन्तु पहले आप अपना सुनाइये।"

"आप कहती हैं कि आपके सम्बन्ध में मेरा ज्ञान बहुत कम है?" बज़ारोव ने कहा—"सम्भव है, आप ठीक कह रही हों। प्रत्येक मनुष्य एक गोरखधन्धा है। इसका उदाहरण लीजिए। आप समाज से पृथक् हो गयी हैं और उसे दुःखदायी समझती हैं, यहाँ तक कि दो विद्यार्थियों के अतिरिक्त आप और किसी से मिलती भी नहीं। तो भी आप अपनी इस बुद्धि और सुन्दरता को लेकर देहात में कैसे रहती हैं?"

"क्यों?" मैडम ने तुरन्त उत्तर दिया—"लेकिन पहले कृपाकर यह समझाइये कि मेरी 'सुन्दरता' का आप क्या मतलब समझते हैं।"

बज़ारोव ने भवें चढ़ा लीं।

"यह तो प्रसंग-विरुद्ध बात है," उसने कहा—"प्रश्न तो यह है कि मैं इस बात को नहीं समझ पाता कि आप ऐसे ठेठ गाँव में क्यों रहती हैं?"

"आप इसे नहीं समझ सकते? बतला नहीं सकते?"

"नहीं। बतलाने को तो केवल एक ही बात है—वह यह कि आप यहाँ इसलिये रहती हैं कि आप आत्म-रत हैं और जीवन की कोमलताएँ आपको बहुत प्रिय हैं, साथ ही आप अन्य वस्तुओं से उदासीन हैं।"

मैडम ओडिन्तसोव फिर मुस्करायी।

"तो आपका अब भी विश्वास है कि मैं इस स्थिरता से डिग नहीं सकती ?" उसने पूछा।

बज़ारोव ने सूक्ष्म दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"हाँ, मेरी उत्कण्ठा तो यही कहती है," उसने कहा— "किन्तु और कोई ऐसी बात नहीं दीखती।"

"सचमुच ? तब तो मैं इस बात पर अब आश्चर्य करूँगी कि मेरा-आपका सहमतिपूर्वक निर्वाह क्यों नहीं होगा ? आप तो बिल्कुल मेरे-जैसे हैं।"

"मेरा आपका सहमतिपूर्वक निर्वाह ?" बज़ारोव ने अस्पष्ट भाव से कहा।

"हाँ। पर मैं भूल गयी थी—अब तो आप सोना चाहते होंगे ?"

बज़ारोव उठा। लैम्प की रोशनी धुँधली हो चली थी। इस अँधेरे, सुगन्धित और एकान्त कमरे में रह-रहकर वायु के झोंके आ रहे थे, जिनकी रहस्यपूर्ण सनसनाहट और स्निग्धता-पूर्ण अविशीर्णता वायु-मण्डल में भर गयी थी। मैडम ओडिन्तसोव अनुद्विग्न भाव से बैठी रही, किन्तु उसके मन में भी इसी प्रकार का विलक्षण आन्दोलन उठ रहा था, जैसा बज़ारोव के मन में। सहसा बज़ारोव को याद आया कि वह एक अकेली और युवती सुन्दरी के पास है।

"आप जाना चाहते हैं ?" मैडम ने धीरे से पूछा।

बज़ारोव ने कोई उत्तर नहीं दिया—चुपचाप अपनी जगह पर फिर बैठ गया।

"तो आप मुझे दूषित, आराम-तलब और आलस्य करने-वाली समझते हैं?" मैडम ने खिड़की पर नज़र गड़ाकर धीमे स्वर में कहा—"इतना तो मैं भी जानती हूँ कि मैं बड़ी दुःखिनी हूँ।"

"दुःखिनी? किसलिये। इसलिये कि आप तुच्छ निन्दकों की पर्वाह करती हैं?"

मैडम की भवें चढ़ गयीं। वह घबरा गयी कि बज़ारोव ने इस प्रकार उसका मनोभाव ताड़ लिया।

"नहीं; ऐसी बातों से मुझे चिन्ता नहीं होती," मैडम ने कहा—"इन बातों से मैं अपने को दुःखिनी नहीं समझती—मुझे अपने-आप पर बड़ा गर्व है। मेरे दुःखिनी होने का कारण यह है कि मेरे जीवन में अभिलाषा या उत्साह नहीं है। मैं कह सकती हूँ कि आप इस बात पर विश्वास नहीं करेंगे और यही सोचेंगे कि यह एक 'तुच्छ धनोपासिका' यद्यपि भोगमय जीवन व्यतीत करते हुए आरामकुर्सी पर लेटी-लेटी ऐसी बातें कर रही है (और मैं आपसे इस बात को नहीं छिपाऊँगी कि मैं उस चीज़ को चाहती हूँ, जिसे 'जीवन के सुख' कहते हैं।), तो भी मुझे सदा ऐसा प्रतीत होता है कि मैं अपने इस जीवन का अस्तित्व क़ायम रखने की इच्छा नहीं रखती। यदि आप इस विरोध का समाधान कर सकें, तो करें। पर शायद

आप उस पर विचार करते हैं, जिसे मैं 'विचित्रता' कहा करती हूँ ?"

बज़ारोव ने सिर हिलाया।

"आप अब भी तरुणी हैं," उसने कहा—"धन और स्वतन्त्रता भी आपके पास है। अब और क्या चाहिए ? आपकी इच्छा क्या है ?"

"'और क्या चाहिए ?'" मैडम ने दुहराया—"यही तो मैं नहीं जानती। मैं केवल यही जानती हूँ कि मैं थक गयी हूँ और मेरा शरीर जर्जरित हो गया है; ऐस प्रतीत होता है कि मेरा जीवन बहुत लम्बा हो गया है। मैं बुड्ढी होती जा रही हूँ।" फिर उसने अपनी खुली बाहों पर ओढ़नी खींचते हुए बज़ारोव की ओर देखकर बोलना जारी रक्खा। उसकी आँखें बज़ारोव की आँखों से मिलीं और कंचित लज्जा से उस (मैडम) के मुँह पर लालिमा दौड़ गयी—"मेरे पीछे अनेक स्मृतियाँ हैं—मेरे सेण्ट पीटर्सबर्ग के जीवन की स्मृतियाँ; दरिद्रता से स्मृद्धिशीलता का उदय, पिता की मृत्यु, मेरा विवाह, विदेश-यात्रा—इसो प्रकार की और भी कितनी ही स्मृतियाँ हैं। किन्तु इनमें से कोई भी सुखदायक नहीं है। और मेरे आगे ऐसा कष्टजनक पथ है, जिस पर चलकर मैं किसी ध्येय तक नहीं पहुँच सकती; उस पथ पर चलने की मेरी इच्छा नहीं है ?"

"आप विरक्त हो रहो हैं।" बज़ारोव ने कहा।

"नहीं," मैडम ने काँपकर उत्तर दिया—"मैं असन्तुष्ट हो रही हूँ। और, यदि मैं किसी प्रकार के प्रबल भावों से अनुरञ्जित हो पाती!"

"आप प्रेम में पड़कर बच सकती हैं," बज़ारोव ने कहा—"पर आप उसके लिये अयोग्य हैं। यही आपका दुर्भाग्य है।"

मैडम अपनी ओढ़नी के छोर की ओर देखने लगी।

"मैं प्रेम के लिये अयोग्य हूँ?" मैडम ने कहा।

"नहीं; बिल्कुल ही अयोग्य तो नहीं। इसके अतिरिक्त इसे 'दुर्भाग्य' कहकर मैंने ग़लती की है—क्योंकि जो व्यक्ति ऐसे अनुभवों का शिकार होता है, उस पर करुणा करनी चाहिए।"

"आपका मतलब कैसे अनुभव से है?"

"प्रेम करने के अनुभव से।"

"आपको यह कैसे मालूम हुआ?"

"लोगों से सुनकर," उसने कुछ कर्कश स्वर में जवाब देकर मन-ही-मन विचार किया—"तू निरी नख़रेबाज़ है, और तेरी उदासीनता के कारण मैं पागल-सा बन रहा हूँ।" उसका हृदय अन्दर-ही-अन्दर मसोस रहा था।

"दूसरी बात यह है," उसने फिर कहा—"कि आप अत्यधिक अकलङ्क हैं?"

बातें करते-करते वह अपनी कुर्सी की बैठक पर लगी हुई झालर हिला रहा था।

"सम्भवतः यही कारण है," मैडम ने स्वीकार किया—"पर मेरे विचार से या तो इसमें पूर्णता ही होनी चाहिए या फिर इसका नितान्त अभाव होना वाञ्छनीय है। 'जीवन-जीवन के लिये है।' 'मेरा सर्वस्व लीजिए और अपना सब-कुछ दीजिए, इस प्रकार सब शोक दूर करके सन्धि कीजिए।' यह नियम सर्वोत्तम है।"

"सचमुच ?" बज़ारोव ने पूछा—"नियम तो बुरा नहीं है, और मुझे आश्चर्य है कि इस पर भी आप अपनी अभिलषित वस्तु प्राप्त करने में असमर्थ रहीं।"

"क्या आप आत्म-समर्पण को सरल चीज़ समझते हैं ?"

"अगर पहली बातपर विचारकर उसमें अपने आपको लगाया जाय और इस प्रकार उसका निश्चित मूल्य क़ायम किया जाय, तो सरल नहीं है। बिना विचार किये, जो आत्म-समर्पण किया जाता है, वह ज़रूर सरल है।"

"पर यह कैसे सम्भव है कि कोई अपना मूल्य न समझे ? जबतक किसी में मान विद्यमान है, कोई उससे आत्म-समर्पण करवाना क्यों चाहेगा ?"

"इससे न तो आपका ही सम्बन्ध है, न मेरा—हमारा मान तो एक तीसरा ही व्यक्ति निश्चित कर सकता है। हमें तो शीघ्र यह जानने की ज़रूरत होगी कि आत्म-समर्पण कैसे किया जाता है।"

मैडम ओडिन्तसोव शीघ्रतापूर्वक तनकर बैठ गयी।

"मेरा विश्वास है कि आप अब भी अनुभव की हुई बातें कर रहे हैं।" उसने कहा।

"नहीं; यह तो शब्दाडम्बर मात्र है—इसे व्यक्तिगत रूप में लागू नहीं कर सकते।"

"तो आप स्वयं आत्म-समर्पण के योग्य हैं?"

"सम्भव है होऊँ। पर मैं किसी भी अवस्था में इसके लिये गर्व नहीं कर सकता।"

क्षण-भर दोनों चुप रहे। ड्राइंग रूम से प्यानो बजने की आवाज़ आयी।

"कतिया इस वक्त बाजा बजा रही है!" एना सर्जोविना ने कहा।

बज़ारोव ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा।

"हाँ," उसने कहा—"आपके आराम करने का समय हो गया।"

"खैर, थोड़ी देर और ठहरिये। आप जल्दी क्यों मचा रहे हैं? मुझे कुछ और कहना है।"

"वह क्या?"

"ठहरिये।" कहकर मैडम ने बज़ारोव की ओर स्थिर दृष्टि से इस प्रकार देखा, मानो वह उसके व्यक्तित्व का अध्ययन कर रही है। कुछ क्षण तक बज़ारोव कमरे में टहलता रहा—फिर सहसा उसके पास आकर "गुड् नाइट"* कहने के बाद

* रात्रि का प्रणाम।

ज़ोर से हाथ मिला वहाँ से चल पड़ा। अपनी उँगलियाँ ओठों पर रखकर मैडम ने उनका चुम्बन लिया। फिर वह यकायक उत्तेजित भाव से उठकर दरवाज़े की ओर इस प्रकार दौड़ी, जैसे उसे वापस बुलाने जा रही हो। किन्तु उसी समय उसकी दासी चाँदी की तश्तरी में शराब का गिलास रखकर लायी और मैडम आगे बढ़ने से रुक गयी। दासी को वहाँ से चली जाने का हुक्म देकर वह बैठ गयी। बैठे-बैठे वह विचार-सागर में डुबकी लगाने लगी, उसके केश बल खाये हुए काले साँप की तरह छूट-कर बिखर रहे थे। लैम्प की धुँधली रोशनी में वह मूर्तिवत् गतिहीन होकर बैठी थी और बीच-बीच में हाथ मलकर गर्मी पैदा कर लेती थी, क्योंकि रात बढ़ने के साथ-साथ सर्दी भी बढ़ती जा रही थी।

दो घण्टे बाद बज़ारोव अपने शयनागार में आया। उसके बाल नुच-से रहे थे और निराशा से उसका बुरा हाल था। उसके बूट ओस में भीगे हुए थे। आरकाडी कपड़े से लैस हाथ में एक पुस्तक लिये बैठा था।

"ओह, तुम अभी तक नहीं सोये ?" बज़ारोव ने कर्कश स्वर में कहा।

आरकाडी ने प्रश्न के रूप में ही उत्तर दिया—

"तुम तो एना सर्जीवना के पास अब तक बैठे थे न ?"

"हाँ," बज़ारोव ने कहा—"जब तुम और कतिया प्यानो बजा रहे थे, तो मैं वहीं था।"

"मैं नहीं बजा रहा था।" आरकाडी ने जवाब दिया। फिर वह चुप हो गया, क्योंकि उसने देखा कि उसकी आँखों से आँसू गिरने जा रहे हैं। वह अपने कटुभाषी सहचर के सम्मुख आँसू गिराना नहीं चाहता था ।

१८

दूसरे दिन प्रातःकाल जब मैडम ओडिन्तसोव नाश्ते के कमरे में घुसी, तो देखा कि बज़ारोव बहुत पहले से वहाँ बैठा है। दरवाज़ा खुलते ही बज़ारोव की नज़र उस पर पड़ी और वह निश्चित भाव से उसकी ओर इस प्रकार झुकी, जैसे बज़ारोव ने उसे अपनी ओर बुलाया हो। मैडम का चेहरा पीला हो रहा था, और वह शीघ्र ही वहाँ से अपने अन्तःपुर को चली गयी। इसके बाद दोपहर का खाना खाने के समय वह फिर भोजनागार में आयी। सुबह से ही लगातार बारिश हो रही थी, इसलिये बाहर टहलने जाने के लिये उपयुक्त अवसर नहीं मिला, और सब लोग ड्राइंग रूम में ही बैठ गये, जहाँ आरकाडी किसी पत्र का नया अङ्क ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुनाने लगा।

प्रिंसेज़ को आरकाडी का यह आचरण नहीं भाया (जैसे वह कोई बड़ा अपराध कर रहा था) और वह उसकी ओर इस प्रकार घूरती रही, जैसे उसके साथ कोई पुरानी शत्रुता हो। किन्तु आरकाडी ने उसकी इस कुदृष्टि पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया।

"कृपया आप मेरे अन्तःपुर में आइये, इवजिनी वैसिलिच," एना सर्जीवना ने कहा—"मुझे आपसे कुछ बातें पूछनी हैं। मैं समझती हूँ, कल रात को आपने मुझे पढ़ने के लिये किसी पुस्तक का नाम बताया था ?"

वह उठकर दरवाज़े की ओर बढ़ी। प्रिंसेज़ ने कमरे में चारों ओर नज़र दौड़ाकर कहा—"ओह, मुझे ताज्जुब हो रहा है।" फिर उसने आरकाडी पर दृष्टि डाली, जो ऊँचे स्वर में कतिया की ओर झुककर (जिसके बग़ल में ही वह बैठा हुआ था) पूर्ववत् पढ़ रहा था।

इधर मैडम ओडिन्तसोव शीघ्रतापूर्वक अपने अन्तःपुर में पहुँची और बज़ारोव फ़र्श पर नज़र डालते हुए उसके पीछे-पीछे गया। उसके कान रेशमी वस्त्र की सरसराहट सुनने की ओर लगे थे। अभीष्ट स्थान पर पहुँचकर मैडम उसी कुर्सी पर बैठ गयी, जिस पर बैठे-बैठे उसने रात गुज़ारी थी। बज़ारोव भी अपनी रातवाली कुर्सी पर बैठ गया।

"पुस्तक का नाम क्या है ?" क्षण-भर चुप रहने के बाद उसने पूछा।

"पेलस और फ्रेमी कृत 'रसायन का मतलब'"—गैनोट की

"रासायनिक परीक्षण-प्रवेशिका" भी पठनीय पुस्तक है, जिसमें अन्य पुस्तकों की अपेक्षा व्याख्या के लिये अधिक चित्र दिये हुए हैं, और साधारणतः—"

किन्तु मैडम ओडिन्तसोव ने हाथ ऊपर उठाया।

"माफ़ कीजिए," उसने बात काटकर कहा—"मैं आपको यहाँ पुस्तकों की नामावली लिखवाने के लिये नहीं लिवा लायी हूँ; मैं तो आपको कल की छूटी हुई बातचीत फिर से जारी करने के लिये लिवा लायी हूँ। जिस प्रसंग को छोड़कर आप यकायक यहाँ से चले गये थे, उसी पर वार्तालाप करना है। मैं आशा करती हूँ कि इससे आप तंग न होंगे ?"

"मैं आपकी सेवा के लिये पूर्णतः तैयार हूँ। हम लोग क्या बहस कर रहे थे कल ?"

मैडम ने उसकी ओर देखा।

"मैं समझती हूँ, सुख और आनन्द के सम्बन्ध में वार्तालाप चल रहा था," उसने कहा—"वास्तव में मैं आपसे अपने ही विषय में कह रही थी। मैं 'सुख' की चर्चा कहने का कारण बता रही हूँ। इसका क्या कारण है कि जब एक व्यक्ति आनन्द-मग्न है—उदाहरणार्थ, संगीत का आनन्द लूट रहा है, या ग्रीष्म-कालीन संध्या का सुख प्राप्त कर रहा है, अथवा किसी सहानुभूतिपूर्ण सहयोगी से वार्तालाप का सुख ले रहा है—तो यह अवसर एक अन्य अनन्त सुख का स्मरण दिलाता है ? शायद आपने ऐसे चमत्कार का अनुभव कभी नहीं किया है ?"

"'हम जहाँ नहीं होते, वहाँ पहुँचने की इच्छा रखते हैं,' आप यह लोकोक्ति जानती ही होंगी। कल रात आपने कहा था कि आप सन्तुष्ट नहीं हैं। मेरे मनमें ऐसे विचार कभी पैदा ही नहीं होते।"

"तो क्या ऐसे विचार आपको आश्चर्यजनक मालूम होते हैं?"

"नहीं, बस वे मेरे मस्तिष्क में उत्पन्न नहीं होते।"

"सचमुच? आपके विचार क्या हैं, इसे जानने की मेरी बड़ी इच्छा है।"

"मैं आपकी बात नहीं समझ सका।"

"तो सुनिये। मैं बहुत दिनों से आपके मनकी बात जानना चाहती रही हूँ। मुझे न बतलाइये—आप स्वयं जानते हैं कि ऐसा करना व्यर्थ होगा, और आप एक भिन्न तरह के आदमी हैं। वास्तव में आप अभी नवयुवक हैं, आपके सामने आपका सारा जीवन पड़ा है। मैं जानना चाहती हूँ कि आप किस बात की तैयारी कर रहे हैं और आपके भविष्य में क्या होनेवाला है? साथ ही मैं यह भी जानना चाहती हूँ कि आपका अन्तिम ध्येय क्या है, जहाँतक आप पहुँचना चाहते हैं, और यह भी कि आप उस पथ पर अग्रसर होरहे हैं या नहीं और आपके मन में क्या बात है—सारांश यह कि आप कौन हैं और क्या कर रहे हैं?"

"मुझे आश्चर्य हो रहा है! आप तो पहले से ही जानती हैं

कि मैं प्रकृति-विज्ञान के रंग में रँग चुका हूँ। रही मेरे भविष्य की बात—"

"हाँ ? आपके भविष्य की बात ?"

"वह भी मैंने आपसे कह दिया है कि मैं ज़िले का प्रधान चिकित्सक बनना चाहता हूँ।"

एना सर्जीवना ने अधीरतापूर्वक अपना हाथ हिलाया।

"यह क्यों; आप तो स्वयं इस बात पर विश्वास नहीं करते ? ऐसा उत्तर आरकाडी के मुँह से सुनने की आशा की जा सकती थी; पर आपके मुँह से नहीं।"

"तो क्या आरकाडी किसी भी रूप में—?"

"ठहरिये। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि ऐसे कार्य से आप वास्तव में सन्तुष्ट हो जायँगे, जब आप स्वयं कह चुके हैं कि साधारण चिकित्सा-शास्त्र का तो अभी एक प्रकार से अस्तित्व ही नहीं है ? नहीं, नहीं ! आपने मुझे ऐसा जवाब इसलिये दिया है कि आप मुझे अपने से कुछ दूर रखना चाहते हैं, और मुझ पर विश्वास नहीं करते। अच्छा, तो अब मुझे यह कहने दीजिए कि मैं आपको समझने की क्षमता रखती हूँ, और मैं भी दरिद्रता और अभिलाषा को जानती हूँ, और स्वयं अनुभव कर चुकी हूँ।"

"मैं कह सकता हूँ—फिर भी क्षमा कीजिए, यदि मैं आपसे यह कह दूँ कि मैं अपनी आत्मा को उघाड़ता नहीं फिरती। इसके अतिरिक्त आपके और मेरे बीच में एक ऐसी खाड़ी खुदी हुई है कि—"

"खाड़ी ? तो आप फिर कह रहे हैं कि मैं धनिक हूँ ? इवजिनी वैसलिच, क्या मैंने आपसे कह नहीं दिया है कि—?"

"भविष्य पर बहस करने से क्या फ़ायदा, जबकि उसका अधिकांश हमारे क़ाबू से बाहर की बात है ? यदि अवसर आगया, तो ठीक; पर यदि कोई अवसर ही नहीं आया तो ? हमें कम से कम इस बात की गुंजाइश तो रख ही छोड़नी चाहिए, जिससे यह कहने को न हो कि हमने व्यर्थ की गपशप में समय गँवा दिया।"

"क्या ? आप मित्रतापूर्ण वार्तालाप को 'व्यर्थ की गपशप' कहते हैं ? तो क्या मुझे, एक स्त्री के रूप में, आप विश्वस्त नहीं समझते, या स्त्री-मात्र से घृणा करते हैं ?"

"आपसे मैं घृणा नहीं करता, यह आप अच्छी तरह जानती हैं।"

"मैं ऐसी बातें नहीं जानती। हाँ, अपने भविष्य के सम्बन्ध में, और इस समय आपके हृदय में क्या विचार उठ रहे हैं, इसकी बाबत कुछ बतलाने की आपकी इच्छा नहीं है, यह जानती हूँ —"

"'इस समय उठ रहे हैं ?'" बज़ारोव ने कहा—"क्या मैं कोई राष्ट्र या समुदाय हूँ ! यह मेरे मनोरंजन का विषय ही नहीं है, इसके अतिरिक्त हृदय में उठनेवाली बात मनुष्य सदा शब्दों द्वारा व्यक्त भी तो नहीं कर सकता।"

"मैं तो ऐसा नहीं देखती। आपकी आत्मा में जो बात खुब रही है, उसे व्यक्त करने में आप संकोच क्यों करते हैं ?"

"क्या आप व्यक्त कर सकती थीं ?" बज़ारोव ने पूछा।

"हाँ, मैं तो कर देती ?" क्षण-भर की हिचकिचाहट के बाद मैडम ने उत्तर दिया।

बज़ारोव व्यङ्गपूर्ण ढङ्ग से झुका!

"आप मुझसे श्रेष्ठ हैं।" उसने कहा।

मैडम ने प्रश्न-सूचक दृष्टि से बज़ारोव की ओर देखा।

"बहुत अच्छा," उसने कहा—"तो भी मैं यह कह सकती हूँ कि हमारी मुलाक़ात व्यर्थ नहीं गयी, और हम लोग सदा एक-दूसरे के मित्र बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त मुझे निश्चय है कि समय आने पर आपकी गोपनीयता और चुप्पी दूर हो जायगी।"

"तो क्या आप मेरे अन्दर ऐसी अधिक गोपनीयता और चुप्पी देख रही हैं ?"

"जी हाँ।"

बज़ारोव उठकर खिड़की की ओर बढ़ा।

"क्या आप सचमुच उस गोपनीयता और चुप्पी का कारण जानना चाहती हैं ?" उसने पूछा—"क्या आप सचमुच जाना चाहती हैं कि मेरे हृदय में क्या विचार उठ रहे हैं ?"

"जी हाँ।" एना सर्जीवना ने कहा। तो भी जिस समय उसने ये दो शब्द कहे, उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसके हृदय में एक हल्की-सी परिशङ्का उत्पन्न हुई, जिसका मतलब वह स्वयं कुछ नहीं समझ सकी।

"और अगर मैं कह दूँ, तो आप क्रोध भी नहीं करेंगी ?"

"नहीं।"

"नहीं?"

बज़ारोव उसके पास जाकर पीछे खड़ा हो गया।

"तो सुनिये," उसने कहा—"मैं अन्धी और अनुभूति-हीन लालसा के साथ आपको प्रेम करता हूँ। आपने अन्ततः मुझसे कहलवा लिया!"

मैडम ने अपनी बाँह आगे बढ़ा दी और बज़ारोव ने पीछे मुड़कर अपना मस्तक खिड़की के शीशे पर रख दिया। उसकी साँस रुक गयी थी और सारा शरीर काँप रहा था। उसके हृदय का यह आन्दोलन युवकोचित लज्जालुता के कारण नहीं था, न वह प्रेम की प्रथम स्वीकृति से उत्पन्न आकुलता के कारण था। वह एक प्रकार का उत्कट भावावेश था, जिसे दूसरे शब्दों में उन्मत्तावस्था या उससे मिलती-जुलती हालत कह सकते हैं। रही मैडम ओडिन्तसोव की बात, सो उसका तो दिल दहल गया था। बज़ारोव के प्रति सहानुभूति की गुंजाइश का भाव भी उस अवस्था में संयुक्त था।

"इवजिनी वैसिलिच!" उसने कहा। उसके शब्दों में अनिच्छित कोमलता का सन्निवेश था।

बज़ारोव उसकी ओर इस प्रकार देख रहा था, मानो उसकी आँखें मैडम को पी रही हैं। फिर उसने एना सर्जीवना के हाथ अपने हाथों में ले लिये और उसे पकड़कर सीने से लगा लिया।

एना सर्जीवना ने अपने-आप को जल्दी नहीं छुड़ाया। थोड़ी देर बाद वह ज़रा कोने की ओर खिसक गयी और उसकी ओर देखने लगी। बज़ारोव फिर उसकी ओर झपटा; पर मैडम ने शीघ्रतापूर्वक दबी आवाज़ में कहा—

"आपने मुझे ग़लत समझा है!"

यदि वह एक क़दम भी आगे बढ़ाता, तो मैडम अवश्य ही चीख़ उठती।

बज़ारोव ओठ चबाते हुए कमरे के बाहर निकल गया।

आधे घण्टे बाद मैडम ओडिन्तसोव को उसकी दासी ने एक पुर्ज़ा दिया। उसमें केवल एक पंक्ति लिखी थी—"मैं आज ही चला जाऊँ, या कल तक ठहर सकता हूँ?"

एना सर्जीवना ने इसका जवाब यह लिखा—"चले क्यों जायंगे? मैं आपको नहीं समझ सकी, और आप मुझे नहीं समझ सके,—बस।"

पर मन-ही-मन उसने इतना और कहा—"बल्कि मैं ख़ुद अपने-आप को नहीं समझ सकी।"

भोजन के समय तक वह एकान्त में ही बैठी रही, और दोनों हाथ पीछे की ओर मिलाये हुए कमरे में टहलती रही। रह-रहकर वह खिड़की के शीशे या आइने के सामने रुक जाती थी और रूमाल निकालकर अपनी गर्दन पोंछ लेती थी, जो आग की तरह जलती मालूम हो रही थी। उसी समय उसके मन में यह विचार भी उत्पन्न होता था कि बज़ारोव का

विश्वास करने का फल क्या हुआ और पहले भी उसे इस बात की आशङ्का थी या नहीं कि उस (विश्वास) का परिणाम यह होगा।

"हाँ, अपराध मेरा ही है," उसने अन्त में निश्चय किया— "किन्तु मैं इस परिणाम का ज्ञान पहले से कैसे कर सकती थी।"

इसके बाद उसने पशुवृत्ति-पूर्ण मुखाकृतिवाले बज़ारोव की याद की, जो उसे पकड़ने के लिये आगे बढ़ा था। उसका विचार आते ही उसका मुख-मण्डल आरक्त हो गया।

"या इसका कारण—?" यहाँ वह रुक गयी और उसने अपने केश की लटें पीछे हटा लीं। इसका कारण यह था कि उसने अपना चेहरा आईने में देखा और उसे देखते ही सिर पीछे हटाकर अर्द्ध-मुकुलित ओष्ठद्वय की रहस्यपूर्ण मुस्कराहट के साथ, आधी आँखें मूँदकर एक ऐसे विचार में पड़ गयी, जिसने उसे व्याकुल कर दिया।

"नहीं, नहीं! बिल्कुल नहीं!" उसने ज़ोर से कहा—"सिर्फ़ ईश्वर ही जान सकता है कि इसका परिणाम क्या होगा। यह कोई हँसी-खेल की बात नहीं है। झंझटों और चिन्ताओं से मुक्त रहना संसार में मुख्य वस्तु है।"

वास्तव में वह अशान्त नहीं हो रही थी। उसके हृदय में कुछ हल-चल अवश्य थी, सो भी इतनी अल्प मात्रा में कि जब किसी अज्ञात कारण से उसकी आँखों से एक-दो बूँद आँसू

गिरे, तो उनका मूल कारण यह नहीं था कि वह किसी गहरे आवेश से प्रेरित हो रही थी और उसके हृदय पर आघात हुआ था, वरन् उसका कारण उसके हृदय में अनिच्छापूर्वक घुसी हुई उस अस्पष्ट लालसा का भाव था, जिसे जीवन की क्षणिक चेतना, और नूतनता की अभिलाषा कहते हैं, और जिसने उसे सीमा तक पहुँचने के लिये बाध्य किया। वह उस सीमा की रेखा की ओर बराबर झाँक रही थी और सामने उसे अथाह गर्त न दिखायी देकर व्यर्थता और निपट कुरूपता दिखायी पड़ी।

१६

अपने समस्त आत्म-शासन और नियमबद्धता के गौरव के होते हुए भी मैडम ओडिन्तसोव जब शाम को भोजन के कमरे में आयी, तो उसे कुछ बेचैनी ज़रूर मालूम हुई। तो भी भोजन बिना विशेष घटना के ही समाप्त हुआ, और उसके बाद प्राफ़िरी प्लैटोनिच ने अन्दर आकर किसी निकटवर्ती शहर के अनेक क़िस्से सुना डाले, जिनमें से एक कहानी इस आशय की थी कि गवर्नर "बारडेलो" ने अपने स्टाफ़ के सारे अफ़सरों को काँटेदार जूता पहनने का हुक्म इसलिये दे दिया है कि अगर ज़रूरत पड़े, तो फ़ौरन घोड़े पर उनके द्वारा सन्देश भेज दें! इधर आरकाडी धीमी आवाज़ में कतिया से बातें करते हुए सूक्ष्म दृष्टि से प्रिंसेज़ की ओर भी देखता रहा।

बज़ारोव की मुखाकृति ऐसी कठोर, उदास और शान्त-सी हो रही थी कि मैडम ने उसकी ओर देखकर (उसने दो बार प्रकट रूप से उसकी ओर देखा) तीक्ष्ण दृष्टि, विकृत रूप, झुकी हुई आँखों और कठोर घृणायुक्त भाव से मन-ही-मन सोचा—"नहीं, नहीं। बिल्कुल नहीं!"

खाना समाप्त हो जाने पर उसने अपने मेहमानों को बाग़ की ओर चलने के लिये प्रेरित किया, और यह देखकर कि बज़ारोव उससे कुछ कहना चाहता है, ज़रा किनारे की ओर बढ़ गयी और वहीं खड़ी होकर उसकी प्रतीक्षा करने लगी। बज़ारोव ने ज़मीन की ओर देखते हुए अन्यमनस्कतापूर्वक कहा—

"मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ, एना सर्जीवना। आप अवश्य ही मुझसे अत्यन्त रुष्ट हो गयी होंगी?"

"नहीं, उतनी रुष्ट तो नहीं, पर दुखी ज़रूर हुई हूँ।" उसने कहा।

"यह तो और बुरा हुआ। पर मुझे काफ़ी सज़ा मिल गई न? अब मेरी अवस्था (मुझे आशा है, आप सहमत होंगी) बड़ी ही बेढब हो गई है। यह सच है कि आपने पुर्ज़े में लिखा था कि चला क्यों जाऊँ? पर मैं रुक नहीं सकता; न रुकूँगा। इसलिये अब कल मुझे प्रस्थान करना है।"

"पर आप क्यों—क्यों—?"

"प्रस्थान क्यों करूँगा?"

"नहीं, नहीं मैं बिल्कुल पृथक् बात कहने जा रही थी।"

"हम भूत-काल को नहीं प्राप्त कर सकते।" बज़ारोव ने कहा—"प्रश्न केवल समय का था कि यह घटना 'कब' घटित होगी। मैं केवल एक शर्त पर यहाँ रह सकता हूँ। और वह शर्त शायद कभी पूरी नहीं होगी। क्योंकि (मेरी धारणा के लिये क्षमा करें) मैं समझता हूँ कि आप मुझे न तो अब प्रेम करती हैं, और न कभी कर ही सकती हैं ?"

इन शब्दों के साथ भवों के नीचे उसकी आँखें चमक उठीं।

मैडम ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसके मस्तिष्क में केवल एक ही विचार चक्कर लगा रहा था—"मैं इस आदमी से डरती हूँ।"

"विदा!" बज़ारोव ने कहा। ऐसा मालूम होता था कि उसने मैडम का विचार भाँप लिया। इसके बाद वह अपने कमरे की ओर चला गया।

थोड़ी देर बाद एना सर्जीवना भी घर को वापस आगयी। घर में घुसते ही उसने कतिया को पास बुलाया और उसका हाथ पकड़कर अपने पास ले गयी। सारी सन्ध्या उसने कतिया को अपने पास से नहीं जाने दिया। ताश खेलने की बजाय वह इस तरह के हँसी-ठट्ठे में लगी रही, जो उसके चिन्तित और उतरे हुए मुख-मण्डल के योग्य नहीं था। आरकाडी युवकोचित भाव से उसे देखकर विस्मय में पड़गया और मन-ही-मन यह प्रश्न करने लगा कि—"इसका मतलब क्या है ?" बज़ारोव तो अपने कमरे से बाहर ही नहीं निकला, और जब चाय पीने का समय होगया,

तब सब के पास आया। उसके आते ही एना सर्जीवना उसे कुछ मीठे शब्द कहकर प्रसन्न करना चाहती थी, किन्तु उसे एक भी शब्द ढूँढ़े नहीं मिला। उसी समय खानसामाँ ने आकर सितनीकोव के आगमन की सूचना दी, जिससे मैडम की द्विविधा समाप्त हो गयी।

प्रगतिशील दल का यह युवक—सितनीकोव—जिस भयातुरतापूर्ण भाव से कमरे के अन्दर आया, वह अवर्णनीय है। यद्यपि वह एक विलक्षण हठ के साथ ऐसी महिला के घर में घुँसने के लिये आया था, जिसके साथ मुश्किल से उसकी जान-पहचान थी और जिसने उसे कभी आमंत्रित नहीं किया था (इसके लिये उसने यह बहाना बना रक्खा था कि उसे ऐसा समाचार मिला है कि वह दो ऐसे मेहमानों को टिकाकर उनका सत्कार कर रही है, जो उसके 'घनिष्टतम' मित्र हैं), फिर भी वह उत्साह के मारे फटा पड़ता था, और अब बजाय इसके कि वह आने का कोई बहाना सुनाये, और चापलूसी की वे बातें करे, जो उसने पहले से ही मन में स्थिर करली थीं, उसने एक अद्भुत कहानी इस आशय की गढ़ सुनायी कि इवडोकसिया कुकशिन ने उसे एना सर्जीवना का स्वास्थ्य-समाचार मालूम करने के लिये भेजा है और यह कि आरकाडी निकोलाईविच ने हमेशा उस—सितनीकोव—की प्रशंसा की है। किन्तु इतना कहने के बाद उसकी ज़बान लड़खड़ाने लगी, और वह घबराकर अपनी ही टोपी पर बैठने लगा! किसी ने उससे वहाँ से चले

जाने के लिये नहीं कहा था, वरन् एना सर्जीवना ने तो यहाँ तक किया कि अपनी मौसी और बहन से उसका परिचय भी करा दिया, फिर भी उसे चित्त स्थिर करने में काफ़ी समय लग गया और तब जाकर कहीं वह अपनी अभ्यस्त बुद्धि दिखाने योग्य हुआ। प्रायः ओछे व्यक्तियों के आगमन से जीवन में एक उपयुक्त चमत्कार देखने में आजाता है, क्योंकि मेज़बानों के गम्भीर स्वभाव और उससे सम्बद्ध छल की रस्सी नवागन्तुक के साथ उनके सम्बन्ध की याद आते ही ढीली पड़ जाती है। इस प्रकार सितनीकोव के आगमन से उदासी और बढ़ गयी, पर इसका फल यह हुआ कि सबने खाना शीघ्र खा लिया और नित्य की अपेक्षा आध घण्टा पहले ही सब आराम करने चले गये।

"मैं तुम्हारी ही कुछ बातों की याद दिला दूँ," आरकाडी ने बज़ारोव से, जो अभी कपड़े उतार रहा था, पलँग पर लेटने के बाद कहा—"तुमने ये शब्द कहे थे—'तुम्हारा दिल क्यों घबराया हुआ है—क्या तुमने अपने पवित्र कर्त्तव्य का पालन कर लिया है ?'

दोनों मित्रों में एक ऐसा अर्द्ध-परिहासपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गया था, जिसकी तह में मौन अविश्वास और सुषुप्त ईर्ष्या होती है।

"कल मैं पिता के निवास-स्थान के लिये रवाना हो जाना चाहता हूँ।" बज़ारोव ने आरकाडी की कही हुई बातों की पर्वाह न करते हुए कहा।

आरकाडी कुहनी के बल उठँग गया। यद्यपि उसे इस बात से आश्चर्य हुआ, पर किसी कारण से प्रसन्नता भी कम नहीं हुई।

"अच्छा!" उसने कहा—"तभी तुम्हारा दिल घबराया हुआ मालूम पड़ता है?"

बज़ारोव ने अँगड़ाई ली।

"जब तुम्हारी उम्र ज़रा और हो जायगी," उसने जवाब दिया—"तो बहुत-कुछ जान जाओगे।"

"और एना सर्जीवना का क्या होगा?" आरकाडी ने कहा।

"उसका क्या होगा?"

"क्या वह तुम्हें जाने देगी?"

"मैं उसका किराये का टट्टू थोड़े ही हूँ।

आरकाडी कुछ सोचने लगा और बज़ारोव ने बिछौने पर लेटकर दीवार की ओर मुँह कर लिया।

कुछ देर तक दोनों स्तब्ध रहे।

"इवजिनी!" सहसा आरकाडी ने कहा।

"हाँ?"

"मैं भी यहाँ से कल ही चल देना चाहता हूँ।"

बज़ारोव ने कोई जवाब नहीं दिया।

"सचमुच, मैं मैरिनो वापस चला जाऊँगा," आरकाडी ने फिर कहा—"पर हम दोनों खोखलोव्स्की वीसेल्स्की तक साथ

चल सकते हैं, वहाँ से तुम थिडोट के घोड़े किराये पर कर सकते हो। इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारे परिजनों का परिचय पाकर मैं प्रसन्न होता, पर मेरे साथ चलने पर शायद मैं तुम्हारे और तुम्हारे घरवालों के बीच में एक बाधा सिद्ध हो सकता हूँ। बाद में तो तुम मैरिनो फिर आओगे ही ?"

"हाँ, आऊँगा। दर-असल मैं अपनी कई चीज़ वहाँ छोड़ आया हूँ।" बज़ारोव का मुँह अब भी दीवार की ओर था।

"यह मेरे सहसा यहाँ से चल देने का निश्चय कर लेने के सम्बन्ध में कुछ क्यों नहीं पूछता—मेरा प्रस्थान भी तो वैसा ही आकस्मिक है जैसा इसका ?" आरकाडी ने मन-ही-मन सोचा—"हम दोनों किसलिये यहाँ से चले जा रहे हैं ?"

विचार करते-करते उसकी समझ में यह बात आयी कि इस प्रश्न का कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिल सकता, फिर भी न जाने क्यों उसके हृदय में एक प्रकार का दर्द-सा हुआ और वह इस बात को सोचकर घबराने लगा कि निकोल्सको के इस अभ्यस्त जीवन से वह पृथक् किस प्रकार हो सकेगा। फिर भी वह यहाँ अकेले नहीं रह सकता। यह तो और भी बुरी बात होगी।

"इन दोनों—बज़ारोव और मैडम—के बीच में कोई-न-कोई बात अवश्य है," उसने सोचा—"ऐसी अवस्था में इसके चले जाने के बाद यहाँ रहने से मुझे क्या लाभ होगा ? यहाँ ठहरकर एना सर्जीवना को दिक़ कर मारूँगा और इस

प्रकार उसे प्रसन्न करने का अन्तिम अवसर भी हाथ से खो दूँगा !"

इसके बाद वह उस महिला का मानसिक चित्र खींचने लगा, जिसकी कल्पना उसने अभी क्षण-भर पहले की थी—अभी उस विधवा युवती का सुन्दर चित्र उसके मन पर छाया ही था कि इतने में अन्य मूर्तियाँ भी उसके मानस-पटल पर अङ्कित होने लगीं।

"कतिया को भी छोड़ना पड़ेगा," उसने अपने तकिये पर मुँह रक्खे-रक्खे कहा (जिस पर उसके आँसुओं की दो-एक बूँदें अब तक टपक चुपी थीं)। अन्त में उसने अपने घुँघराले बालों पर हाथ फेरकर कहा—

"भला यह बेवक़ूफ़ सितनीकोव यहाँ क्यों आ धमका ?"

उसने बज़ारोव को ओढ़ने के नीचे उकस-पुकस करने के बाद यह कहते सुना—

"तुम ख़ुद बेवक़ूफ़ हो। हमें दुनियाँ में ऐसे सितनीकोवों की ज़रूरत है। ऐसे गधों की हमें—ख़ासकर मुझे—बड़ी ज़रूरत है। गधे का काम गधों ही से लिया जा सकता है; ईश्वर से नहीं।"

"ओह !" आरकाडी ने सोचा। उसकी आँखों के सामने बज़ारोव की गर्व-प्रसूत निराधार गम्भीरता का चित्र खिंच गया।

"तो हम (तुम और मैं) ईश्वर हैं ?" उसने प्रकटतः कहा—"या तुम ईश्वर हो, और मैं गधा ?"

"अभी तक तो बराबर तुम यही—गधे—साबित हुए हो।" बज़ारोव ने रुखाई से जवाब दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब आरकाडी ने मैडम ओडिन्तसोव से कहा कि वह बज़ारोव के साथ जाना चाहता है, तो उसने कोई विशेष आश्चर्य नहीं प्रकट किया। उसके हृदय में एक दारुण हलचल मची हुई थी और उसके चेहरे पर थकान के चिह्न दृष्टिगोचर हो रहे थे। कतिया ने आरकाडी को गम्भीर दृष्टि से चुपचाप देखा और प्रिंसेज़ ने तो शाल में अपना मुँह छिपा लिया, जिससे आरकाडी उसका भाव न ताड़ ले। सितनीकोव भी—जो अभी-अभी एक सुन्दर सूट पहनकर (जिसकी काट और सिलाई स्लैवोफिल फ़ैशन की नहीं थी—उसकी क़मीज़ों की तो चर्चा ही व्यर्थ है, क्योंकि तरह-तरह की क़मीज़ पहनकर वह अपने अस्थायी नौकर को आश्चर्यान्वित करने का अभ्यस्त था) नाश्ते के कमरे में आया था, अवाक् होकर बैठा रहा, और अपने साथियों के उसे छोड़ जाने के पश्चात्-परिणाम पर विचार करने लगा! वह उस ख़रगोश की तरह ऐंठने और छटपटाने लगा, जिसे शिकारी झाड़ी के किनारे तक खदेड़ ले जाता है, और अन्त में कह बैठा कि उसकी भी जाने की बड़ी इच्छा हो रही है। मैडम ओडिन्तसोव ने उसे रोकने की कोई बड़ी चेष्टा भी नहीं की।

"मेरी कोलिअस्का* बड़ी ही आरामदेह है," इस अभागे

* छोटी गाड़ी।

नवयुवक ने आरकाडी से कहा—"और आप उसमें बड़े आराम से चल सकते हैं। इवजिनी वैसिलिच को अपना तरन्तास* दे दीजिए। वह उसके लिये अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।"

"पर मैं आपको आपके रास्ते से इतनी दूर लिवा जाकर क्यों कष्ट दूँगा; मेरा घर यहाँ से काफ़ी दूर है।"

"कोई हर्ज नहीं। मेरे पास काफ़ी समय है और उधर ही मेरा एक काम भी है।"

"क्या ? फिर उसी ज़मीन के पट्टे का काम ?" आरकाडी ने निन्दात्मक स्वर में कहा। परन्तु सितनीकोव को अपनी ही सनक लगी हुई थी और उसने अपनी सदा की आदत के अनुसार खीस निकाल दी।

"कोलिअश्का पर आपको आराम से ले चलने का मैं निश्चय दिला सकता हूँ," उसने कहा—"वास्तव में उसमें तो हम तीनों ही बैठ सकते हैं।"

"इनकी गाड़ी पर जाने से इन्कार करके महाशय सितनी-कोव को निराश न कीजिए।" मैडम ओडिन्तसोव ने कहा।

मैडम की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि डालकर आरकाडी ने सितनी-कोव की गाड़ी में चलना स्वीकार कर लिया।

नाश्ता समाप्त होने पर मेहमान लोग चलने के लिये तैयार हुए। एना सर्जीवना ने बज़ारोव से हाथ मिलाया।

"मैं आशा करती हूँ कि हमलोग फिर मिलेंगे ?" उसने कहा।

---

*बड़ी गाड़ी।

"यदि आप चाहेंगी तो।" बज़ारोव ने उत्तर दिया।

"तो फिर हम अवश्य मिलेंगे।"

कमरे से बरामदे में, और बरामदे से सितनीकोव की गाड़ी में जा बैठनेवाला पहला व्यक्ति आरकाडी था। खानसामे ने पूरी आज्ञाकारिता के साथ उसकी मदद की, यद्यपि आरकाडी की मनोदशा ऐसी होरही थी कि मालूम होता था, वह या तो खानसामे को मार बैठेगा, या स्वयं रो पड़ेगा। बज़ारोव बड़ी गाड़ी में जा बैठा।

खोखलोव्स्की विसेल्सकी का अड्डा आपहुँचा। आरकाडी वहाँ तब तक ठहरा, जब तक थिडोट (अड्डे के मैनेजर) ने बज़ारोव के लिये गाड़ी में दूसरे घोड़े नहीं जुतवा दिये। इसके बाद वह तरन्तास के पास जाकर पुरानी मुस्कराहट के साथ बोला—

"इवजिनी, मुझे अपने साथ ले चलो। मैं तुम्हारे घर चलना चाहता हूँ।"

"आजाओ फिर।" बज़ारोव ने कहा।

सितनीकोव अबतक अपनी गाड़ी के पास चेहलक़दमी करते हुए सीटी बजा रहा था। निठुर आरकाडी ने उसकी गाड़ी में से अपना सामान उतार लिया और उसे तरन्तास में रखकर बज़ारोव के पास जा बैठा। अपने भूतपूर्व सहयात्री से झुककर नमस्कार करने के बाद उसने 'सीधे हाँको!' की आवाज़ लगायी। तरन्तास रवाना हुआ और शीघ्र ही नज़रों से ओझल

होगया। आश्चर्य में डूबा हुआ सितनीकोव अपने कोचवान को ताकता रह गया; किन्तु कोचवान अपनी चाबुक से घोड़े की कोख सहला रहा था, इसलिये उसे अकेले गाड़ी में जा बैठने के अतिरिक्त और कोई बात नहीं सूझी। गाड़ी में बैठकर वह पास खड़े हुए दो किसानों से कड़ककर बोला—"बदमाशो, टोपी उतार लो!" और सीधे शहर की ओर घोड़ा बढ़ा दिया। दूसरे दिन उसने मैडम कुकशिन से यह समाचार जा सुनाया कि उसने उन दोनों (बज़ारोव और आरकाडी) घृणित असभ्यों और अनघड़ लौंडों का खूब अनुभव कर लिया।

आरकाडी जब गाड़ी में बज़ारोव के पास बैठ गया, तो उसने उस (बज़ारोव) का हाथ पकड़ लिया। बज़ारोव ने उसके इस मौन हस्त-सम्मिलन का अर्थ समझ लिया और उसकी क़द्र की। गत रात्रि बज़ारोव को नींद नहीं आयी थी। इसके अतिरिक्त गत कई दिनों से उसने न तो एक भी सिगार पी थी, न भर-पेट खाना खाया था। वास्तव में जब वह गाड़ी में बैठा, तो छायादार टोपी के नीचे उसका सुन्दर मुख-मण्डल अधिक दुबला और कुरूप दीख रहा था।

"मुझे एक सिगार दोगे?" उसने कहा—"ज़रा मेरी ज़बान देखो, इसपर पित्त का प्रभाव दीख रहा है न?"

"हाँ, है तो।" आरकाडी ने कहा।

"मैंने पहले ही समझ लिया था। सिगार में मुझे कोई स्वाद नहीं आरहा है। इसके अतिरिक्त और भी नाशकारी बातें हुई हैं।"

"हाल में तुम बहुत परिवर्तित हो गये हो ?" आरकाडी ने साहसपूर्वक कहा।

"हाँ, पर मैं शीघ्र ही पूर्ववत् होजाऊँगा। अब मुझे केवल इसी बात की चिन्ता है कि मेरी माँ बड़े सीधे स्वभाव की और गुल-गपाड़ा मचानेवाली स्त्री है। अगर किसी की तोंद न बढ़ी हो और वह दिन-भर में दस बार से कम खाता हो, तो उसे बड़ी निराशा हो जाती है। मेरे पिता अवश्य इससे भिन्न प्रकृति के हैं, क्योंकि वे संसार-भर में भ्रमण कर चुके हैं और सब बातों का तत्त्व समझते हैं। यह सिगार तो किसी काम का नहीं है।" कहकर बज़ारोव ने सिगार सड़क पर फेंक दिया।

"तुम्हारा मकान मेरी समझ में यहाँ से पचीस वर्स्ट की दूरी पर है ?" आरकाडी ने पूछा।

"हाँ, इतना ही है; पर उस बुड्ढे से तो पूछो।" कहकर बज़ारोव ने एक देहाती (थिडोट के नौकर) की ओर इशारा किया, जो बेंचपर बैठा हुआ था।

उपरोक्त बुड्ढे ने जवाब दिया कि उसे ठीक-ठीक नहीं मालूम है, क्योंकि उस तरफ़ का फ़ासला ठीक-ठीक नपा नहीं है; इसके बाद वह अपने मालिक के घोड़े को धमकाने के लिये दौड़ गया, जो सिर ऊपर-नीचे झटककर जबड़े खोल रहा था।

"सुनो !" बज़ारोव ने कहा—"मेरे नवयुवक दोस्त, मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ। तुम्हारे सम्मुख एक उपदेशपूर्ण उदाहरण मौजूद है—यह उदाहरण है संसार की नश्वरता का। केवल एक

सूत्र के सहारे संसार के प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य लटकता रहता है, और उससे नीचे एक ऐसा अथाह गर्त है, जिसमें किसी भी समय वह अपने भाग्य-सहित गिरकर विनष्ट हो सकता है। वह (मनुष्य) सदा अपने लिये दुर्भाग्य का ढेर संचित करता रहता है।"

"तुम्हारा अभिप्राय किस बात से है?" आरकाडी ने पूछा।

"किसी से भी नहीं। मैं अभी केवल यही कहता हूँ कि तुमने और मैंने बड़ा बुरा काम किया है, तो भी अब उसकी क्या बात करें? मैंने आपरेशन (चीर-फाड़) में देखा है कि जो रोगी नश्तर की पीड़ा सह लेता है, वह शीघ्र नीरोग हो जाता है।"

"मैं तुम्हारी बातें नहीं समझ पाता," आरकाडी ने कहा—"जहाँ तक मैं देखता हूँ, तुम्हारे पास किसी की शिकायत करने का तो कोई कारण है नहीं।"

"तुम मेरी बात नहीं समझ पाते? अच्छा, समझो—तुम्हारे लिये तो किसी स्त्री का आधिपत्य तनिक भी बर्दाश्त करने की अपेक्षा सड़क पर रोड़े कूटना अधिक श्रेयस्कर है। ऐसी बात निरी (वह 'विचित्रतापूर्ण' कहने जा रहा था, पर बीच में ही विचार बदल दिया) वाहियात है।"

"शायद तुम मेरा विश्वास नहीं करते।" उसने फिर कहा—"फिर भी मैं तुम्हें बतलाता हूँ कि यद्यपि हम—तुम और मैं—स्त्री-समाज का संसर्ग बढ़ा रहे हैं, और उसका आनन्द भी ले

रहे हैं; किन्तु ऐसे समाज से पृथक् होने पर हमें इतना सुख मालूम होता है, मानों ग्रीष्म-ऋृति में शीतल-जल से नहा रहे हों। मनुष्य को ऐसी मूर्खता का स्पर्श नहीं करना चाहिए। उसे हमेशा स्पेनी लोकोक्ति के अनुसार 'खेत के पशुओं की तरह' रहना चाहिए। देखो!" उसने कोच-बक्स पर बैठे हुए आदमी से कहा—"कहो भाई, तुम्हारे पास स्त्री है?"

देहाती ने अपने चौड़े और अल्प दृष्टिवाले चेहरे को दोनों मित्रों की ओर मोड़ा।

"स्त्री?" उसने दुहराया—"हाँ, है तो। स्त्री क्यों न हो भला?"

"कोई हर्ज नहीं। अच्छा, तुम कभी उसे मारते भी हो?"

"अपनी स्त्री को? कभी-कभी? पर बिना किसी ख़ास कारण के नहीं।"

"बहुत ठीक! और क्या वह कभी तुम्हें भी मारती है?"

किसान ने अपने हाथ की चाबुक हिलायी।

"कैसी बात करते हैं आप, साहब!" उसने कहा—"आप दिल्लगी कर रहे हैं?" इस प्रश्न से उसे कुछ क्रोध-सा आ गया।

"सुन रहे हो आरकाडी निकोलाईविच?" बज़ारोव ने कहा—"हम दोनों—तुम और मैं—इसी तरह पिटे हैं। यही अमीरी का फल है।"

आरकाडी इच्छा न रहते हुए भी हँस पड़ा; परन्तु बज़ारोव

ने मुँह फेर लिया, और यात्रा समाप्त हो जाने तक कुछ नहीं बोला।

आरकाडी के लिये पचीस वर्स्ट की यात्रा पचास वर्स्ट के बराबर अखरी; पर अन्त में एक छोटी पहाड़ी की ढाल पर वे मकान नज़र आये, जिनमें बज़ारोव के माता-पिता रहते थे। उनमें एक तरफ़ छोटे सनोवर वृक्षों के कुञ्ज में नौकरों के मकान नज़र आ रहे थे, जिन पर फूसके छप्पर पड़े थे। पास की एक झोंपड़ी के दरवाज़े पर ऊँची टोपीवाले दो किसान आपस में गाली-गलौज कर थे।

"सुअर कहीं का !" उनमें से एक ने दूसरे को कहा—"तू तो बुड्ढा सुअर है, बुड्ढा ! जवान सुअर तो भला कुछ अच्छे भी होते हैं!"

"तेरी औरत चुड़ैल है !" दूसरे ने पहले को फटकारा।

"इन में सहन-शक्ति का अभाव होने के कारण," बज़ारोव ने कहा—"और साथ ही इनकी बातचीत का ढंग देखकर, तुम यह समझ सकते हो कि मेरे पिता के किसान पद-दलित नहीं हैं। पर यह देखो, मेरे पिता भी यहीं हैं। वह बरामदे में आ रहे हैं। उन्होंने घोड़ों के गले की घण्टी की आवाज़ सुनली होगी। हाँ, वही हैं! मैं उन्हें दूर से ही पहचानता हूँ। उनके बाल अधिक पक गये हैं, बेचारे बुड्ढे आदमी !"

२०

बज़ारोव ने गाड़ी पर से झुककर देखा, और आरकाडी ने अपने मित्र के कन्धे के ऊपर से दृष्टि डाली। कोठी के दरवाज़े पर एक लम्बा, पतला और पतली नाकवाला आदमी बाल बखेरे खड़ा था। उसने एक पुराने ढंग का फ़ौजी कोट पहन रक्खा था, जिसका अगला हिस्सा खुला हुआ था। वह इस प्रकार खड़ा था कि उसके दोनों पैरों के बीचमें काफ़ी अन्तर था। उसने मुँह में एक लम्बा पाइप दबा रक्खा था और उसकी आँखें सूर्य की रोशनी में चमक रही थीं।

थोड़ा और आगे बढ़कर गाड़ी पास पहुँच गयी।

"अच्छा, तुम आख़िर आ ही गये!" बज़ारोव के पिता ने तम्बाकू पीते हुए (यद्यपि ऐसा करते हुए उसकी उँगलियों के

बीच में पाइप की डंडी हिल रही थी) कहा—"अच्छा, उतरो, उतरो !"

उसने बार-बार अपने पुत्र का चुम्बन लिया।

"इन्युशा, इन्युशा !"* दरवाज़ा खुलते ही एक बुढ़िया का प्रकम्पित स्वर सुनाई पड़ा और दहलीज पर एक ठिंगनी और मोटे बदन की महिला सफ़ेद टोपी और पतली गोट की ब्लाउज़ पहने दिखलाई पड़ी। वह हाँपती और लड़खड़ाती हुई ऐसे वेगसे आगे बढ़ रही थी कि यदि बज़ारोव दौड़कर उसे पकड़ न लेता, तो वह गिर पड़ती। उसके पकड़ते ही बुढ़िया ने अपनी मोटी बाहें बज़ारोव के गले में डाल दीं और उसका सिर पुत्र के सीने से चिपट गया। क्षण-भर के लिये निस्तब्धता छा गयी। केवल बुढ़िया बीच-बीच में सिसक उठती थी। इधर बज़ारोव का पिता भी बड़ी कठिनाई से साँस ले रहा था और उसकी आँखें जल्दी-जल्दी खुल और बन्द होरही थीं।

"बस, बस, आरिशा !" उसने आरकाडी की ओर, जो गाड़ी के पास खड़ा था, ध्यान देते ही कहा (कोच-बक्स पर बैठे हुए आदमी ने भी मुँह फेर लिया)—"अब चुप रहो। मैं कहता हूँ, इसकी ज़रूरत नहीं। चुप रहो।"

"ओह, वैसिली आइवनिच।" बुढ़िया ने रुलाई-भरे स्वर में कहा—"कितने दिनों बाद अपने लाल इन्युशा को देख पायी हूँ।" उसने अब भी अपनी बाँह इन्युशा के गले से नहीं

---

*'इवजिनी' का प्यार का और छोटा नाम 'इन्युशा' था।

हटायी, केवल अपना अस्थिर, कम्पित और अश्रु-सिक्त मुख बज़ारोव की छाती पर से हटा लिया और बज़ारोव की ओर आनन्द और हास्य युक्त नेत्रों से देखकर फिर उसकी छाती से चिपट गयी।

"हाँ, हाँ!" वैसिली आइवनिच ने कहा—"यह तो स्वाभाविक ही है। पर हम लोग अन्दर चले चलें तो कैसा हो? देखो, इवजिनी अपने साथ एक मेहमान भी तो लाया है!"

आरकाडी की ओर देखकर झुकते हुए उसने कहा—

"क्षमा कीजिएगा महाशय, पर आप सब बात समझते होंगे। स्त्री की कमज़ोरी और माता का हृदय!"

उसके ओठ, ठुड्डी और भवें बोलते समय काफ़ी गतिवान हो रही थीं। प्रकटतया वह अपने-आप पर क़ाबू रखने और इन बातों से पूर्णतः बेपर्वाह रहने की चेष्टा कर रहा था। आरकाडी ने उसके शिष्टाचार का समुचित उत्तर झुककर दिया।

"हाँ, हाँ, माँ! चलो, अन्दर चलें।" बज़ारोव ने कहा और काँपती हुए बुढ़िया को पकड़े हुए अन्दर की ओर बढ़ा। माँ को एक आराम-कुर्सी पर बिठाकर, उसने पिता को पुनः एक चुम्बन दिया। उसके बाद उसने उससे आरकाडी का परिचय कराया।

"मैं आपका परिचय पाकर बहुत प्रसन्न हुआ!" वैसिली आइवनिच ने कहा—"बहुत प्रसन्न हुआ; पर आप हम लोगों से बहुत अधिक आशा न रक्खें। हमारी जायदाद का संगठन

बिल्कुल सादे ढंग का है। इसका प्रबन्ध 'युद्ध-आधार' की शैली पर किया गया है। एरिना ! अब शान्त हो जाओ, और मेज़-बान की तरह मेहमानदारी का कार्य सँभालो। छिः, इस तरह विकल हो रही हो ! हमारे मेहमान तुम्हारे सम्बन्ध में क्या सोचेंगे ?"

"मैं इन मेहमान महाशय का नाम नहीं जानती।" बुढ़िया ने आँसू बहाकर सिसकी लेते हुए कहा।

"आरकाडी निकोलाईविच।" वैसिली आइवनिच ने शीघ्रता-पूर्वक किन्तु शिष्टाचारोचित ढंग से कहा।

"तो इस मूर्खा बुढ़िया को माफ़ कीजिएगा, महाशय।" एरिना व्लासीवना ने नाक साफ़ करके अपना सिर बायें-दाहिने हिलाते हुए दोनों आँखें पोंछकर कहा—"हाँ, क्षमा कीजिएगा, पर मुझे तो आशा नहीं थी कि मरने के पहले मैं अपने प्यारे बच्चे को देख सकूँगी।"

"पर देखो तो, हमने इसे फिर देख लिया न।" वैसिली आइवनिच ने कहा—"तन्युश्का !" नंगे पैरों आनेवाली लाल रंग की सूती फ्राक पहनी हुई एक त्रयादेश-वर्षीया दास-कन्या को सम्बोधन करके (जो दरवाज़े से दिलचस्पी और भयातुरता के मिश्रित भावों से चुपचाप उधर देख रही थी) उसने कहा—"अपनी मालकिन के लिये तश्तरी में रखकर एक गिलास पानी ला, सुनती है ? और महाशयजी आप," उसने पुराने ढंग की प्रसन्नता प्रकट करते हुए आरकाडी से

कहा—"क्या आप कृपा करके इस वृद्ध सैनिक के अध्ययन-कक्ष में पधारेंगे ?"

"मुझे एक चुम्बन और दे, इन्युशा," एरिना व्लासीवना ने कहा। फिर जब बज़ारोव उसकी ओर झुका, तो वह प्रसन्न होकर बोली—"तू बढ़कर कैसा भला मालूम होता है !"

"भला मालूम हो या नहीं, है तो मनुष्य," वैसिली आइ-वनिच ने कहा—"अब तुमने अपनी माँ का हृदय सन्तुष्ट कर दिया है, इसलिये मैं अब तुम्हें हमारे माननीय मेहमान महाशय को सन्तुष्ट करने के लिये कहूँगा। क्योंकि तुमसे अधिक और कोई इस बात को नहीं जानता कि बुलबुल हवा खिलाने से नहीं जीवित रह सकती !"

इस पर बुढ़िया कुर्सी से उठकर बोली—

"हाँ, हाँ—अभी पल-भर में सब काम हो जायगा। मैं खुद रसोईघर में जाकर आग जलाती हूँ। सब तैयार कर लूँगी। तीन वर्ष बाद मैं इन्युशा के लिये खाना बनाने जा रही हूँ।"

"हाँ, तीन वर्ष बाद ! जल्दी करो, पर बहुत हलचल मत मचाओ। महाशयजी, कृपा करके मेरे साथ पधारिये। लेकिन टिमोथिच मिलने के लिये आ रहा है। कैसा प्रसन्न दीखता है, बुड्ढा चंट ! अब आप मेरे साथ इधर पधारें।"

वह अपने जूतों की चर्र-मर्र की आवाज़ के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ा।

बज़ारोव की कोठी में छः छोटे-छोटे कमरे थे, जिनमें एक कमरा—जिसकी तरफ़ वैसिली आइवनिच मित्र-द्वय को लिवाये ले जा रहा था—अध्ययन-कक्ष कहाता था। इसकी दो खिड़कियों के बीच मोटे पायों की एक मेज़ थी, जिस पर मैले और गर्द से ढके हुऐ काग़ज़ों का ढेर जमा हुआ था; दीवार पर बहुत से तुर्की हथियार लटक रहे थे। क़ज़्ज़ाक़ों की चाबुकें, तलवार, दो नक़शे, कुछ शरीर-रचना सम्बन्धी तस्वीरें, हुफ़लैण्ड* का चित्र, एक काले फ्रेम (चौखट) का मोनोग्राम, शीशे में जड़ी हुई एक सनद आदि, सब सामान दीवार से लटक रहे थे। दीवार में लगी हुई सनोवर की दो आलमारियों के बीचोबीच एक फटा-पुराना चमड़े की गद्दी का सोफ़ा पड़ा हुआ था। आलमारी के ताक़ों में तरह-तरह की पुस्तकें, बक्स, मसाला लगाये हुए मृत पक्षी, मर्तबान और थैलियाँ गिचपिच ढंग से जहाँ-तहाँ पड़ी हुई थीं; कोने में एक टूटी बिजली की बैटरी पड़ी हुई थी।

"मैंने आपसे पहले ही कह दिया है," वैसिली आइवनिच ने आरकाडी से कहा—"कि हमारे यहाँ आपको वैसी सुखकर व्यवस्था की आशा नहीं करनी चाहिए।"

---

*क्रिस्टोफ़ विलहेम हुफ़लैन्ड (१७६२-१८३६ई०) एक प्रसिद्ध जर्मन विज्ञान-वेत्ता था, जिसकी प्रख्यात रचना 'दीर्घ जीवन के उपाय' यूरोप की लगभग समस्त भाषाओं में अनूदित हो चुकी है।

"यह सब कहने की ज़रूरत नहीं," बज़ारोव ने कहा—"किरसानोव मानता है कि मैं और आप कुबेर नहीं हैं, और यह भी कि हमारे यहाँ कोई ख़ानसामाँ तक नहीं रक्खा जाता। पर प्रश्न यह है कि आरकाडी के सोने का इन्तज़ाम कहाँ होगा ?"

"दूसरे हिस्से में एक बड़ा अच्छा कमरा है, वहाँ ये बड़े आराम से रह सकते हैं।"

"तो तुमने और हिस्सा भी तैयार करालिया है ?"

"हाँ, इवजिनी वैसिलिच।" टिमोथिच बीच में ही बोल उठा—"कम-से-कम स्नानघर तो बन ही गया है।"

"पर मैं तो स्नानघर के बादवाले कमरे की बात कर रहा हूँ," वैसिली आइवनिच ने शीघ्रतापूर्वक समझाया—"तो भी कोई हर्ज नहीं है, क्योंकि अब गर्मी का मौसम है। मैं अभी वहाँ जाऊँगा और सब ठीक-ठाक करवा आऊँगा। तब तक टिमोथिच, सामान अन्दर उठा लाओ। तुम्हारे लिये इवजिनी, मैं यह अध्ययन-कक्ष अलग निश्चित कर दूँगा। सब के लिये अलग-अलग रहने का प्रबन्ध हो जायगा।"

"आरकाडी," बज़ारोव ने पिता के चले जाने पर अपने मित्र से कहा—"ये भी तुम्हारे पिता की तरह मौजी, शुद्ध-हृदय और अद्भुत बुड्ढे हैं न ? यद्यपि इनका रंग-ढंग उनसे भिन्न है। ये सदा गपशप किया करते हैं।"

"हाँ, और तुम्हारी माँ तो बड़ी ही उच्च कोटि की स्त्री हैं।"

"हाँ। इसके अतिरिक्त तुम देख सकते हो कि वह अपने हृदय के भाव छिपाने की चेष्टा नहीं करती। देखो, अभी वह कैसा सुन्दर खाना बनाकर हम लोगों को खिलाती है!"

"लेकिन चूँकि आपके आज आने की आशा नहीं थी," टिमोथिच ने, जो अभी-अभी बज़ारोव का चमड़े का बक्स लेकर अन्दर आया था, कहा—"इसलिये घर में गोश्त नहीं लाया गया था।"

"कोई हर्ज नहीं। हम लोग बिना गोश्त के ही खालेंगे—कोई भी चीज़ न होने पर भी हम काम चला सकते हैं—'दरिद्रता कोई अपराध नहीं है।'"

"तुम्हारे पिता की जायदाद में कुल कितने गुलाम रहते हैं?"* आरकाडी ने पूछा।

"यह जायदाद पिताजी की नहीं; मेरी माता की है। गुलामों की संख्या मेरी समझ में पन्द्रह है।"

"नहीं, बाईस," टिमोथिच ने शुद्ध करते हुए गर्वपूर्ण ढंग से कहा। दूसरे ही क्षण जूतों की आवाज़ सुनायी पड़ी और वैसिली आइवनिच अन्दर आ दाख़िल हुआ।

"आपका कमरा कुछ ही मिनटों में तैयार हुआ जाता है," उसने उच्च स्वर में आरकाडी से कहा—"तब तक आप अपने नौकर को देखलें।" उसने एक सिरमुँडे लौंडे की ओर इशारा

---

*उन दिनों रूस में जायदाद छोटी या बड़ी होने का अनुमान गुलामों की संख्या पर निर्भर होता था।

करते हुए कहा। वह लड़का कुहनी तक की आस्तीन का कुरता और बेढँगा-सा जूता पहने हुए था। "इसका नाम थेंडिका है, और अपने लड़के (बज़ारोव) की बात का ख़याल रखते हुए भी मैं फिर कहूँगा कि आप इससे अधिक आशा न रक्खें—यद्यपि इसमें शक नहीं कि यह आपके पाइप में तम्बाकू भरने का काम बराबर करेगा। मैं समझता हूँ, आप तम्बाकू तो पीते होंगे?"

"पीता तो हूँ; पर केवल सिगार।"

"प्रशंसनीय बात है! मुझे भी सिगार पसन्द हैं; पर इस नितान्त एकान्त जगह में रहने के कारण प्राप्त नहीं कर सकता।"

"अच्छा, अब अपनी ग़रीबी का रोना ख़तम करो," बज़ारोव ने मीठे स्वर में बीच ही में टोका—"इस सोफ़े पर बैठकर ज़रा दम लेलो।"

वैसिली आइवनिच ने मुस्कराकर अपने पुत्र की बात मानली। उसकी आकृति अपने पुत्र से बिल्कुल मिलती-जुलती थी (केवल उसका मस्तक कुछ कम चौड़ा था, और मुँह अधिक)। वह हमेशा हिलता-डुलता रहता था—कभी कन्धे को इस तरह हिलाता कि मालूम होता कोट उसकी कँखरी में काट रहा है, कभी आँखें जल्दी-जल्दो मींचता-खोलता और अपनी उँगलियाँ पकड़-पकड़कर खींचता था। इन क्रियाओं में वह अपने पुत्र से बिल्कुल ही भिन्न था, क्योंकि बज़ारोव की एक ख़ास विशेषता यह थी कि वह सदा स्थिर और शान्त रहता था।

"हाँ, दरिद्रता का रोना रो चुका," बुड्ढे ने दुहराया—

"तुम यह बात नहीं सोच सकते कि मैं अपनी एकान्तता की शिकायत करके अपने मेहमान को क्यों दिक़ कर मारूँगा? वास्तव में जिसके पास दिमाग़ है, उसके लिये एकान्त कहीं भी नहीं होता, और मैं ख़ुद भीड़-भड़के से दूर रहते हुए भी समय से पीछे न रहने की चेष्टा करता हूँ।"

जेब से एक नया पीला रूमाल—जिसे उसने आरकाडी के कमरे की ओर जाते समय प्राप्त किया था—निकालकर हवा में हिलाते हुए उसने फिर कहा—

"इस तथ्य के सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं कहूँगा कि अपनी हानि सहकर भी मैंने 'आबरोक'-प्रणाली पर ज़मींदारी का प्रबन्ध कर रक्खा है, और अपनी आधे से अधिक ज़मीन किसानों में बाँट दी है, क्योंकि मैं समझता हूँ कि ऐसा करके मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है और यह एक प्रकार की दूरदर्शिता का काम हुआ है (यद्यपि पड़ोस का कोई भी ज़मींदार ऐसा नहीं कर सकता था)। मेरा अभिप्राय ख़ासकर विज्ञान और पाण्डित्य से है।"

"मैं देखता हूँ कि तुम्हारे पास १८५५ ई० में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-बन्धु' की प्रति मौजूद है।"

"हाँ, एक दोस्त ने मेरे पास भेज दी है," वैसिली आइवनिच ने शीघ्रतापूर्वक बतलाया—"कपाल-विद्या भी ख़ास चीज़ है (यह बात वह बज़ारोव की अपेक्षा आरकाडी को ख़ास तौर से सुना रहा था, क्योंकि इसके साथ-साथ वह प्लास्टर लगे

हुए बस्ट* की ओर इशारा कर रहा था, जिसकी खोपड़ी पर बहुत से चतुर्भुज क्षेत्र चित्रित करके उन पर अङ्क लगाये गये थे।), साथ ही हम शोनलीन† और राडमेशर से भी अपरिचित नहीं हैं।

"……प्रान्त में तुम अब भी राडमेशर पर विश्वास करते हो ?" बज़ारोव ने पूछा।

वैसिली आइवनिच हँस पड़ा।

"……प्रान्त में हम अब भी राडमेशर पर विश्वास करते हैं? महाशयो ! आप लोग जिस गति से आगे बढ़ रहे हैं, हमसे भी उसी प्रकार की गति की आशा मुश्किल से कर सकते हैं। आप लोग हमें एक परिवर्तन की अवस्था में पायेंगे। मेरे ज़माने में निदान के आचार्य हाफ़मैन और जीवनी-शक्ति के तत्व-वेत्ता ब्रान को आज दिल्लगी उड़ायी जाती है (और उनकी रचनाएँ निस्सन्देह आज वाहियात प्रतीत होती हैं); पर अब आपने राडमेशर की जगह अन्य आचार्य को प्रामाणिक मान लिया है, और उसकी बातों को ऐसे विश्वास के साथ मान रहे हैं, मानों बीस वर्ष बाद इस नये प्रामाणिक आचार्य से भी वैसी ही घृणा नहीं होने लगेगी, जैसी अब पुरानों से हो रही है।"

---

*छाती से ऊपर की आकृति की मानवीय प्रतिमा।

†जाप लुका शोनलीन (१७९३-१८६४ ई०) एक प्रसिद्ध जर्मन चिकित्सक था।

"तुम्हें यह शुभ-सम्वाद सुना दूँ," बज़ारोव ने कहा—"कि हम तो सभी औषधियों का मजाक़ उड़ाते हैं और किसी पर भी विश्वास नहीं करते।"

"क्या ? तो क्या तुम डाक्टर नहीं बनना चाहते।"

"हाँ; पर एक बात से दूसरी का निषेध तो नहीं होता।"

वैसिली आइवनिच ने अपना पाइप खूब ज़ोर-ज़ोर से सुड़ककर दम लगाया, यहाँ तक कि तम्बाकू की चमकती राख शेष रह गई।

"शायद ऐसा ही हो," उसने कहा "इस बात पर मैं बहस नहीं करूँगा, क्योंकि ऐसे विषय पर मैं वाद-विवाद कर ही क्या सकता हूँ—मैं तो सिर्फ़ एक पेंशन-याफ़्ता फ़ौजी डाक्टर हूँ—सो भी ऐसा डाक्टर जो अब खेती का काम कर रहा हूँ ?"

यह कहकर वह आरकाडी की ओर मुड़ा।

"आपको मालूम है कि मैं आपके दादा के नीचे नौकरी कर चुका हूँ," उसने कहा—"उस समय वह एक ब्रिग्रेड (टुकड़ी) के नायक थे। बड़ी-बड़ी बातें देखी हैं मैंने। ऐसे उच्च समाज में मेरा उठना-बैठना था! ऐसे-ऐसे बड़े आदमियों से मेरी मित्रता थी! और यह नाचीज़ प्रिंस विट्ज़ेनशीन और ज़ुकोव्सकी तक की नब्ज़ देख चुका है और दक्षिण की चौदहवीं पल्टन के सभी अफ़सरों से परिचित था।" उसने अपने ओठ ज़ोर से दबाये। "साथ ही मेरा महक्मा सब से अलग

भी था। वह विभाग चीर-फाड़ का था। आपके दादा की सब लोग बड़ी ही इज़्ज़त करते थे और वह सच्चे सैनिक थे।"

"हम लोग मान लेंगे कि वह एक अच्छे और बुड्ढे कंजूस थे।" बज़ारोव बोल उठा।

"कैसी बात करते हो, इवजिनी," बुड्ढे ने कहा—"जनरल किरसानोव ऐसे आदमी नहीं थे, जो—"

"जाने भी दो। जब हम लोग इधर आ रहे थे, तो तुम्हारे सनोवर के वृक्ष बहुत अच्छे लगे थे। ख़ूब बढ़ रहे हैं।"

वैसिली आइवनिच का चेहरा तत्क्षण चमक उठा।

"हाँ, देखो तो सही, बाग़ मैंने लगाया है!" उसने कहा—"इसमें के प्रत्येक वृक्ष मैंने अपने हाथों लगाया है—मेवों के वृक्ष, झाड़ीदार फलों के वृक्ष, हर तरह की जड़ी-बूटियाँ। ओह, आधुनिक युवको, तुम अपनी पीढ़ी में बुद्धिमान हो सकते हो, पर बुड्ढे पारासेलसस* ने जड़ी-बूटियों की खोज का कार्य बड़ी ही तत्परता से किया था। अपने सम्बन्ध में मैं क्या कहूँ। मैं डाक्टरी छोड़ चुका हूँ, तो भी सप्ताह में दो बार अपने पुराने ज्ञान को दुहराया करता हूँ, क्योंकि मेरे पास लोग मशविरा लेने आते हैं, तो मैं उन्हें विमुख नहीं लौटा सकता। ग़रीब लोग तो ख़ासकर मुझसे मदद लेने आते हैं, क्योंकि यहाँ आस-पास कोई डाक्टर नहीं है। हाँ, ठहरो! एक अवसरप्राप्त मेजर भी इस

---

*इसका असली नाम मोम्बास्टस-वोन-होनहीम (१४९३-१५४१ ई०) था।

काम में दिलचस्पी लेते हैं। एक बार मैंने पूछा कि आपने चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन किया है ? तो उन्होंने जवाब दिया कि 'पढ़ा तो नहीं, पर जो-कुछ करता हूँ, परोपकार के लिये करता हूँ।' परोपकार ! हा ! हा ! हा ! आपका क्या विचार है ? हा ! हा ! हा !"

"मेरे लिये पाइप भरो थेडिका।" बज़ारोव ने अक्खड़पने से कहा।

"और एक दूसरे डाक्टर थे, जो यहाँ पड़ोस में एक मरीज़ को देखने आये थे," वैसिली आइवनिच ने कृत्रिम निराशायुक्त-स्वर में कहा—"पर उनके आने तक रोगी अपने पुरखों से जा मिला था। उस घर के नौकर ने डाक्टर को यह कहकर मकान के अन्दर नहीं घुसने दिया कि अब डाक्टर को मकान में घुसने देने की क्या ज़रूरत है, जब मरीज़ ही खतम हो चुका है। डाक्टर को ऐसी आशा मुश्किल से थी, और वह बड़े आश्चर्य में पड़ गया। 'क्या मरने के पहले रोगी ने ऊर्ध्व श्वास खींची थी ?' उसने पूछा। 'हाँ, खीची थी।' जवाब मिला। 'बहुत खूब ?' 'हाँ, बहुत खूब !' 'अच्छा हुआ !' कहकर डाक्टर अपने घर लौट गया। हा ! हा ! हा !"

इतने पर भी बुड्ढे के अतिरिक्त और कोई नहीं हँसा। यह सच है कि आरकाडी ने चेहरे पर मुस्कराहट लाने का प्रयत्न किया, पर बज़ारोव लेटकर अँगड़ाई लेने लगा। एक घंटे तक बुड्ढा बोलता रहा। इसके बाद आरकाडी अपने कमरे में गया,

जो स्नानघर से मिला हुआ और सफ़ाई की दृष्टि से काफ़ी अच्छा था। थोड़ी ही देर बाद तन्युश्का ने जाकर आरकाडी को खाना तैयार होने की ख़बर दी।

खाना यद्यपि शीघ्रता में तैयार किया गया था, पर बना बहुत ही स्वादिष्ट था। उसमें व्यय भी काफ़ी किया गया था। केवल शराब ज़रूर गहरे रंग की और घटिया-सी थी, जिसे टिमोथिच शहर के किसी शराब-फ़रोश के यहाँ से लाया था, और जिसमें शहद और राल के सम्मिश्रण का बराबर स्वाद आता था। इसके अतिरिक्त मक्खियों के मारे नाक में दम था, जिसका कारण यह था कि जिस लड़के के ज़िम्मे पंखा हिला-हिलाकर मक्खियाँ भगाने का काम सिपुर्द था, वह वहाँ से यह कहकर भगा दिया गया कि कहीं वह नये फ़ैशन के आगन्तुकों की प्रखर आलोचना का पात्र न बने। एरिना व्लासीवना ने आज प्रसन्नतासूचक वस्त्र पहन रक्खे थे—पीले फ़ीते की ऊँची टोपी और नीले रंग की गोटेदार शाल ओढ़ रक्खी थी। इन्युशा को देख-देखकर वह अपनी रुलाई नहीं रोक सकती थी, पर इस बार उसने अपने पति को उसे चिढ़ाने का मौक़ा नहीं दिया। शाल में धब्बे पड़ने के डर से उसने फ़ौरन आँसू पोंछ डाले। दोनों नवागन्तुकों के अतिरिक्त और किसी ने भोजन नहीं किया, क्योंकि दोनों पति-पत्नी बहुत पहले ही खाना खा चुके थे—नौकरों में थेडिका स्थानापन्न हो रहा था (जो जूता पहनने की नई आफ़त के मारे परेशान था), और पुरुष की आकृति

की एक स्त्री, जिसकी पीठ पर कूबड़ था और जो घर-गृहस्ती का काम सँभालती, पालतू चिड़ियों की देख-भाल करती और दर्ज़िन का काम भी कर लेती थी, सेवा में उपस्थित थी। जिस समय दोनों मित्र भोजन कर रहे थे, वैसिली आइवनिच चेहल-क़दमी करते हुए प्रसन्नतापूर्वक बड़े मज़े में नैपोलियन* की नीति और इटली के प्रश्न की उलझनों पर गम्भीर भय प्रकट कर रहा था। एरिना व्लासीवना ने आरकाडी की पूर्ण उपेक्षा की, उसे अपने हाथ से कोई भी चीज़ खाने को नहीं परोसी, और माथे पर हाथ रखकर बैठी रही (उसके मोटे ओठ और मुख-पर काले तिल दयालुता की सूचना दे रहे थे)। उसकी आँखें अपने पुत्र को देखने में मग्न थीं, और साँस ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी। उसकी बड़ी इच्छा यह थी कि वह अपने पुत्र से पूछे कि वह कितने दिन घर पर ठहरेगा; पर इस डर से नहीं पूछ रही थी कि कहीं वह यह न कह दे कि 'सिर्फ़ दो दिन रहूँगा।' या इसी प्रकार की कोई और ऐसी बात न कह दे, जिससे उसका दिल ऐंठ कर रह जाय। कवाब परोसने के बाद वैसिली आइवनिच वहाँ से कहीं चला गया और क्षण-भर बाद ही शैम्पेन की एक मुहरबन्द बोतल लेकर वापस आया।

"देखिये" उसने कहा—"हम लोग देहाती हैं तो क्या, फिर भी एकाध चीज़ें ऐसी रखते ही हैं, जो ख़ास-ख़ास मौक़े पर काम दें।"

---

* नैपोलियन तृतीय।

इसके बाद उसने बोतल की काग खोली और तीन गिलासों में भरकर आदरणीय मेहमानों के नाम पर फ़ौजी ढंगपर स्वास्थ्य-पान का प्रस्ताव किया, तथा तलछट अपनी स्त्री को पीने के लिये बाध्य किया। इसके बाद पकवान का नम्बर आया। यद्यपि आरकाडी मीठे खाद्य का शौक़ीन नहीं था, फिर भी उसने अनेक प्रकार की मिठाइयों में से चार तरह की चीज़ें अपने लिये छाँट लीं—ख़ासकर इसलिये ऐसा और किया कि बजारोव ने बड़े रूखेपन के साथ मीठी चीज़ों के खाने से इन्कार कर दिया और फ़ौरन सिगार जलाकर पीने लगा था। अन्त में चाय, क्रीम, बिस्कुट और मक्खन लाया गया और भोजन समाप्त होने पर वैसिली आइवनिच सबको बाग़ में लिवा ले गया, जिससे दोनों मेहमान सन्ध्या के सुहावने दृश्य की प्रशंसा करें। जब वह एक बेंच के पास से होकर गुज़रने लगा, तो उसने धीरे से आरकाडी के कान में कहा—

"मैं इसी जगह बैठकर सूर्यास्त देखते हुए ध्यान-मग्न होता हूँ। मेरे-जैसे एकान्तवासी के लिए यह स्थान बड़ा ही उपयुक्त है। थोड़ी दूर आगे मैंने बबूल के प्रिय वृक्ष लगाये हैं।"

"कौन-से वृक्ष ?" बजारोव ने, जो वार्तालाप का कुछ अंश सुन रहा था, पूछा।

"बबूल* के वृक्ष।"

---

* रूस के बबूल भारत के बबूलों से भिन्न होते हैं, और वे बाग़ की शोभा बढ़ाने के लिये लगाये जाते हैं।

बज़ारोव ने जँभाई ली, और यह देखकर वैसिली आइव-निच ने शीघ्रतापूर्वक कहा—

"मैं आशा करता हूँ कि आप—मेहमान—लोग अब निद्रा-देवी की गोद में विश्राम करना चाहेंगे।"

"हाँ, चाहिये तो यही," बज़ारोव ने कहा—"ठीक बात है।"

इसके बाद पुत्र ने माता को प्रणाम करके उसके मस्तक का चुम्बन लिया, और माता ने पुत्र को तीन बार चूमकर उसे अप्रकट रूप में अनेक आशीर्वाद दिये। वैसिली आइव-निच आरकाडी को उसके कमरे में लेगया और यह शुभ-कामना प्रकट की कि ईश्वर उस आरकाडी को भी वैसा ही विश्राम दे, जैसा सुख के दिनों में उसे मिला करता था।

आरकाडी वास्तव में पुदीने की सुगन्धि से भरे हुए स्नानघर के बगलवाले उस कमरे में बड़ी शान्ति के साथ सोया, जहाँ झींगुर की झन्कार के अतिरिक्त और कोई शब्द नहीं सुनायी पड़ता था।

इधर आरकाडी से पृथक् होकर वैसिली आइवनिच अपने अध्ययन-कक्ष में जा पहुँचा, जहाँ सोफ़े के किनारे बैठकर वह अपने पुत्र से वितर्कपूर्ण वार्तालाप करना चाहता था, पर बज़ारोव ने यह कहकर उसे विदा कर दिया कि उसे नींद आरही है, यद्यपि उस रात बज़ारोव की पलकें नहीं बन्द हुईं और वह अँधेरे में आँखें इधर-उधर दौड़ता रहा। उसकी बचपन की स्मृतियाँ उसके हृदय को आन्दोलित करने के लिए

उतनी ज़ोरदार नहीं थीं, जितनी कि हाल में प्राप्त हुये कटु अनुभव।

एरिना व्लासीवना ने आज अत्यन्त द्रवित-हृदय होकर प्रार्थना की और उसके बाद एनफ़ीसुश्का के साथ बहुत देर तक बातें करती रही, जो अपनी मालकिन के सामने जमकर बैठी हुई उसकी ओर देख रही थी और बीच-बीच में रहस्यपूर्ण फुस्फुसाहट के साथ इवजिनी वैसिलिच के सम्बन्ध में अपनी भविष्यवाणी और राय सुनाती जा रही थी। अन्त में एरिना व्लासीवना के आह्लादपूर्ण भाव शराब और तम्बाकू की गन्ध से उत्तेजित होकर मस्तिष्क में ऐसा चक्कर लगाने लगे कि जब उसका पति सोने के लिये अपने बिछौने पर जाने लगा, तो उसके पास जाकर उसे शान्त करने की आवश्यकता पड़ी।

एरिना व्लासीवना एक पुराने ढंगकी रूसी गृह-स्वामिनी थी। उसका चाल-स्वभाव ऐसा था, जो दो सौ वर्ष पहले की स्त्रियों के लिये उपयुक्त समझा जाता—जिस समय मास्कोवाइट साम्राज्य का बोलबाला था, उन दिनों तो ऐसी स्त्रियाँ आदर्श समझी जाती थीं। वह अत्यन्त धार्मिक और अधीर प्रकृति की थी और हर प्रकार के अपशकुनों, भविष्यवाणियों, लोकोक्तियों और स्वप्नों पर विश्वास करती थी। इसके अतिरिक्त उसका उरोदीवी,* गृह-दैत्य, वन्य भूत, दुर्भाग्यपूर्ण भेंट, मंत्र,

---

*उरोदीवी प्राचीन रूस के व्यक्ति-विशेष को कहते हैं, जो बुद्धिहीन होते हुए भी किसी दैवी और अदृश्य शक्ति से सीधा सम्बन्ध रखनेवाले समझे जाते थे।

कठवैद्यों की औषधि, वृहस्पति के नमक और शीघ्र ही सृष्टि के लय होने की बातों पर पूर्ण विश्वास था । साथ ही ऐसी बातों पर भी वह कम विश्वास नहीं करती थी कि यदि ईस्टर की पहली रात को मोमबत्ती बिना बुझे जलती रहे, तो गेहूँ की फ़सल अच्छी होगी, और यदि कोई मनुष्य कुकुरमुत्ते को बढ़ता देख ले, तो वह बाढ़ रुक जायगी और यह कि शैतान हमेशा पानी के निकट रहना पसन्द करता है, और सभी यहूदियों की छाती पर खून का कुदरती निशान बना होता है। इन सब बातों के अलावा वह चुहियों, साँपों, मेंढ़कों, गौरैयों, जोंकों बिजली की कड़क, पानी, हवा के झोंकों, घोड़ों, बकरियों, ख़ूबसूरत पुरुषों, काली बिल्लियों से बहुत डरती और झींगुरों और कुत्तों को अशुद्ध जन्तु समझती थी। इन बातों के अलावा उसने जीवन-भर में कभी बछड़े, कबूतर, केकड़े के मांस और पनीर, भूरा शाक, सूर्यमुखी, ख़रगोश का मांस और तरबूज़ (यह इसलिये कि जब तरबूज़ काटा जाता है, तो उसकी शक्ल बैपटिस्ट जान के कटे-सिर से मिलती है!) आदि चीज़ें नहीं खायी थीं। इसी प्रकार घोंघे की चर्चा आने पर भी वह काँप उठती थी। यद्यपि उसे खाने-पीने का बड़ा शौक था; फिर भी वह प्रत्येक धार्मिक त्यौहार को व्रत रखती थी। सोने में वह ऐसी थी कि चौबीस घण्टे में दस घण्टे सोना उसके लिये अनिवार्य होता था; परन्तु कभी वैसिली आइवनिच के सिर में दर्द भी हो जाता, तो उसकी नींद हराम हो जाती थी। वह

'जंगल के सिसकिन' के अतिरिक्त अन्य कोई पुस्तक नहीं पढ़ती थी, और साल में अधिक-से-अधिक दो पत्र लिखती थी। घरेलू-विज्ञान के प्रत्येक विभाग की बातों में वह सिद्धहस्त थी—खाना उबालने, पकाने और रोटी बनाने (यद्यपि उसे खाना नहीं पकाना पड़ता था और अब वह अपनी जगह से उठती भी नहीं थी) की क्रिया में वह दक्ष थी। उसे इस बात का पता था कि दुनिया में कुछ ऐसे आदमी हैं, जो आज्ञा देने के लिये पैदा हुए हैं और कुछ ऐसे हैं, जो उनकी सेवा के लिये। इसीलिये वह दासत्व और अधीनता का भाव सदैव जारी रखने के पक्ष में थी, यद्यपि वह अपने सभी दास-दासियों के प्रति दयालुतापूर्ण व्यवहार करती थी और उनके सुख-दुख का ख़याल रखती थी। वह कभी किसी भिक्षुक को विमुख नहीं जाने देती थी, न किसी से कोई भूल होजाने पर उसको फटकारती ही थी, यद्यपि कभी-कभी वह किसी-किसी को दो-चार टेढ़ी-सीधी सुना देने की थोड़ी-बहुत प्रवृत्ति रखती थी। अपने यौवन-काल में वह काफ़ी सुन्दरी थी, और प्यानो बजाना तथा थोड़ी फ्रेंच बोल लेना भी जानती थी; किन्तु पति के साथ बहुत समय तक रहने के कारण, जिसके साथ उसने केवल शुद्ध प्रेम के कारण शादी की थी, वह उक्त गुणों का अच्छा अभ्यास नहीं कर सकी थी और दोनों ही कलाओं को भूल चुकी थी। वह अपने पुत्र को अत्यधिक प्रेम करती और उससे अत्यधिक डरती थी। उसने अपनी जायदाद के प्रबन्ध का सारा भार वैसिली आइवनिच पर डाल रक्खा था

और उसके प्रबन्ध में कभी कोई हस्तक्षेप नहीं करती थी। जब-कभी ज़मींदारी के नये प्रबन्ध या सुधार के सम्बन्ध में उसका पति बातचीत करता, तो वह लम्बी साँस ले-लेकर अपना रूमाल हिलाती और कातर-भाव से अपनी भवें ऊपर उठाती थी। उसका स्वभाव ऐसा भय और सन्देह से भरा रहता था कि वह सदा किसी-न-किसी अज्ञात दुर्भाग्य से डरती रहती और यदि कोई किसी प्रकार की दुखपूर्ण चर्चा करता, तो फ़ौरन् उसके आँसू गिरने लगते थे।

इस प्रकार की स्त्रियाँ अब देखने में नहीं आतीं; भगवान् जाने हमें इसके लिये प्रसन्न होना चाहिए या दुखी।

२१

प्रातःकाल जब आरकाडी ने उठकर खिड़की खोली, तो पहले-पहल उसे वैसिली आइवनिच दिखायी पड़ा। वह बुड्ढा एक फ्राक पहने और एक रूमाल से कमर बाँधे, बड़ी लगन के साथ सब्ज़ी का खेत खोद रहा था। ज्योंही उसने अपने युवक मेहमान को देखा, फावड़े के बेंट पर झुककर उसने ज़ोर की आवाज़ दी—

"गुड् मार्निंग! कहिए नींद कैसी आयी?"

"बहुत अच्छी।" आरकाडी ने जवाब दिया।

"और, आप देख ही रहे हैं, मैं सिनसिनाटस की नक़ल कर रहा हूँ और शलजम के लिये ज़मीन तैयार कर रहा हूँ। ईश्वर की कृपा से समय सबको अपने हाथ से रोटी कमाने

के लिए बाध्य करता है। हमेशा दूसरों पर निर्भर करना व्यर्थ है—अपने हाथों काम करना सबसे अच्छा है। इस प्रकार जीन जैक्स रोज़िओ ने ठीक ही कहा था। अभी आध घण्टा पहले आप मुझे और ही रूप में देखे होते—पहले-पहल तो मुझे एक स्त्री को अफ़ीम का इंजेक्शन देना पड़ा, जिसे पेचिश की बीमारी थी। फिर एक दूसरी स्त्री का दाँत उखाड़ना था। आप विश्वास न करेंगे—जब मैं दूसरी स्त्री को दवा लगाने लगा, तो वह दवा लगवाने पर राज़ी ही नहीं हुई! यह सब मैं मुफ़्त में ही करता हूँ, केवल शौक़िया तौर पर। फिर भी इससे आपको आश्चर्य नहीं होगा, क्योंकि आख़िर को तो मैं एक देहाती हूँ न। नीचे आकर छाया में बैठिये और नाश्ता तैयार होने तक सुबह की ताज़ी हवा का आनन्द लीजिए।"

आरकाडी बुड्ढे के कथनानुसार उसके पास जा बैठा।

"आप मुझ पर कृपा कर रहे हैं," वैसिली आइवनिच ने अपनी टेढ़ी-मेढ़ी और सिकुड़ी टोपी तक फ़ौजी ढंग से हाथ उठाते हुये कहा—"मैं जानता हूँ कि आप सुख और विलास के अभ्यस्त हैं, फिर भी महत्-संसार के लोग कुटिया के नीचे क्षणिक विश्राम करने से घृणा नहीं करते।"

"मैं न तो महत् संसार का ही आदमी हूँ, न विलास-प्रिय ही।" आरकाडी ने कहा।

"अच्छा"। वैसिली आइवनिच ने प्रेम-भाव प्रदर्शित करते हुए कहा—"मैं ख़ुद यद्यपि अब थक चला हूँ, पर अपने समय में

मैंने बड़े-बड़े अनुभव किए हैं, और उड़ती चिड़िया को पहचानने का दम भरता हूँ। इसके अतिरिक्त थोड़ा-बहुत दख़ल मुखाकृति-विज्ञान और मनोविज्ञान में भी रखता हूँ। ऐसी अवस्था में मैं यह कहने में सङ्कोच नहीं करूँगा कि यदि मैं वे सुख न कर चुका होता, तो अबतक न मालूम कब का नष्ट हो चुका होता, क्योंकि तुच्छ जीव होने के कारण संसार की भीड़ में से बाहर फेंक दिया जाता। साथ ही बिना किसी प्रकार की चापलूसी किये, मैं यह कह सकता हूँ कि मेरे लड़के और आपके बीच में जो मित्र-भाव देखता हूँ, उससे मुझे अत्यधिक आनन्द मिल रहा है। अभी-अभी मैं उससे बात कर रहा था; क्योंकि (जैसा कि सम्भवतः आप जानते हैं) वह बहुत तड़के सोकर उठ बैठता है और देहात में दूरतक दौड़-घूमकर आता है। क्या मैं आपसे यह पूछ सकता हूँ कि आपसे इसका परिचय कबसे हुआ है ?"

"सिर्फ़ पारसाल जाड़े के दिनों से।"

"सचमुच ? पर क्या मैं यह भी पूछ सकता हूँ कि—पर पहले आप बैठ जाइये न ?—उसके पिता के रूप में क्या मैं आपसे यह भी पूछने का साहस कर सकता हूँ कि उसके सम्बन्ध में आपकी खरी-खरी राय क्या है ?"

"मैं जीवन-भर में जितने आदमियों से मिला हूँ, आपका लड़का उन सबमें एक निराला ही युवक है।" आरकाडी ने उत्साहपूर्वक कहा।

सहसा वैसिली आइवनिच की आँखें बन्द हो गयीं, कपोल काँप उठे और फावड़ा हाथ से फिसल पड़ा।

"तो आप समझते हैं—?" उसने कहना शुरू किया।

"मैं समझता नहीं—मुझे निश्चय है कि आपके लड़के के सम्मुख एक ऐसा भविष्य है, जो आपका नाम प्रख्यात बनाकर छोड़ेगा। पहले-पहल मुलाक़ात होते ही मुझे इस बात का निश्चय हो गया था।"

"सचमुच ? सचमुच ?" वैसिली आइवनिच के मुँह से ये शब्द बड़ी कठिनता से निकले, पर उसके विस्तृत और स्थिर ओठों पर विजय-सूचक मुस्कराहट खेल रही थी।

"क्या आप यह सुनना चाहते हैं कि हमारी पहली मुलाक़ात कैसे हुई ?"

"सचमुच, ज़रूर चाहूँगा! और अन्य बातें भी, जो आप चाहें, सुनाइये।"

आरकाडी उसी लगन और उसी उत्साह के साथ बज़ारोव के सम्बन्ध में वार्तालाप करने लगा, जिस प्रकार नृत्य के दिन मैडम ओडिन्तसोव के साथ बातें की थी। वैसिली आइवनिच सुन-सुनकर अपनी नाक पोंछता, रूमाल लपेटकर उछालता, खाँसता और बाल सहलाता रहा। अन्त में अपने-आपको न रोक सकने के कारण वह आरकाडी की ओर बढ़ा और बड़े आह्लाद के साथ उसने उसका कन्धा चूम लिया।

"आपने मुझे गद्‌गद् कर दिया!" उसने मुस्कराकर

कहा—"मैं अपने पुत्र को अत्यन्त प्रेम करता हूँ। पर मेरी स्त्री इवजिनी को और ही ढंग से चाहती है। आप जानते हैं, वह उसकी माँ ठहरी। उसके सामने मैं स्वयं अपने विचार अच्छी तरह नहीं व्यक्त कर सकता, क्योंकि वह इन बातों से नफ़रत करता है और इस प्रकार के भावावेगपूर्ण प्रदर्शनों के ख़िलाफ़ है। इसी कारण कुछ लोग उसे कठोर-हृदय, घमण्डी और ना-समझ भी कह डालते हैं, पर इवजिनी जैसे आदमी को मामूली समझ के लोग नहीं समझ सकते न? उदाहरण के लिये यही बात लीजिये—इसकी तरह का कोई भी अन्य लड़का अपने माता-पिता का बोझ बना रहता, पर आपको विश्वास न होगा, अपने जन्म से ही इसने कभी हम लोगों से सख़्त ज़रूरत पड़ने के अतिरिक्त और कभी एक पाई भी नहीं माँगी। ईश्वर की शपथ यह एक तथ्य है!"

"हाँ, आपका लड़का सच्चा और स्थिर विचार का मनुष्य है।" आरकाडी ने कहा।

"हाँ, स्थिर विचार का," वैसिली आइवनिच ने समर्थन किया—"और मैं न-केवल उसे बेहद चाहता हूँ, वरन् मुझे उस पर गर्व है और अपनी ललक के अनुसार मुझे आशा है कि कोई दिन आयेगा, जब उसकी जीवनी में यह बात लिखी जायगी कि "वह एक सीधे-सादे फ़ौजी डाक्टर का लड़का था, जिसने इस पुस्तक के नायक (बज़ारोव) के गुणों का विस्तार किया, और उसकी शिक्षा के लिये कोई कसर नहीं उठा रक्खी थी।"

क्षण-भर के लिये बुड्ढे का स्वर रुक गया। फिर उसने कहा—"आप क्या समझते हैं? क्या चिकित्सा का क्षेत्र उसे ऐसा प्रख्यात बनाने में समर्थ होगा, जिसकी भविष्य-वाणी आप कर रहे हैं?"

"केवल चिकित्सा का ही क्षेत्र नहीं—यद्यपि इसमें भी अन्य क्षेत्रों की भाँति वह एक सर्वाग्रगण्य व्यक्ति होगा।"

"तो और कौन-सा क्षेत्र ऐसा है, आरकाडी निकोलाईविच?"

"मैं नहीं कह सकता। पर कुछ भी हो, इसकी ख्याति होकर रहेगी।"

"'ख्याति होकर रहेगी।'" बुड्ढा आनन्द-विह्वल होकर अनुमान करने लगा।

उसी समय एनफ़ीशुस्का एक बड़े प्लेट में रसभरी लेकर आ उपस्थित हुई।

"एरिना व्लासीवना ने मुझे यह कहने के लिये भेजा है कि नाश्ता तैयार है।"

वैसिली आइवनिच अपनी तन्मयता से जाग्रत-सा हुआ।

"हम लोगों के लिये कुछ नमकीन भी लाओ।" उसने कहा।

"अभी लाती हूँ!"

"बढ़िया लाना, भला। आरकाडी निकोलाइविच, संकोच न कीजिए, शुरू कर दीजिए। इवजिनी अभी वापस नहीं आया, एस्फ़ीशुस्का?"

"आगया हूँ।" बज़ारोव ने आरकाडी के कमरे में से कहा।

वैसिली आइवनिच ने घूमकर देखा।

"ओहो!" उसने चिल्लाकर कहा—"तुम अपने दोस्त से मिलने गये थे? पर तुम्हें बहुत देर हो गई। हम दोनों बहुत देर से बातें कर रहे हैं और अब नाश्ते का समय हो गया। तुम्हारी माँ ने हम लोगों को बुला भेजा है। अच्छा इवजिनी, ज़रा एक बात तो सुनो।"

"किस विषय में?"

"एक किसान के बारे में, जिसे पाण्डु रोग होगया है।"

"पाण्डु रोग?"

"हाँ, बहुत दिनों का मर्ज़ है; छूटने को ही नहीं आता। मैंने एक-दो जड़ियाँ दी थीं और गाजर खाने तथा सोडे का व्यवहार करने की तजवीज़ करदी थी; पर यह चीज़ें तो रोग को केवल हलका करनेवाली हैं; मैं कोई चीज़ ऐसी देनी चाहता हूँ, जो अधिक उग्र हो। मैं जानता हूँ कि तुम औषधियों की हँसी उड़ाते हो; पर मुझे निश्चय है कि तुम मुझे अच्छी और क्रियात्मक राय दे सकते हो। पर यह सब तो बाद में कर सकते हो। अभी तो हमें नाश्ते के लिये चलना चाहिए।"

इसके बाद बुड्ढा फ़ौरन बेंच पर से उठ खड़ा हुआ और आनन्द-मग्न होकर पद्य गुनगुनाने लगा।

जीवन-पथ के लिये नियम अति उच्च यह—

लूटें सुख सर्वदा; उसे छोड़ें नहीं।

"कैसे उच्च विचार हैं!" बज़ारोव ने खिड़की से हटते हुए कहा। मध्याह्न में घने और पीले कुहरे के शामियाने से छनकर सूर्य की चमकीली किरणें अपनी चमक दिखा रही थीं और कुछ पक्षियों के चहचहाने के अतिरिक्त पूर्ण शान्ति विराजमान थी। पक्षियों का स्वर सुननेवालों में उनकी विलक्षण आवाज़ से और भी आलस्य बढ़रहा है। वृक्ष की ऊँची टहनी पर बाज़ बैठा हुआ अपनी ऊँचो आवाज़ से वायु-मण्डल में गुञ्जार भर रहा है। ऐसे समय में आरकाडी और बज़ारोव सोंधी सुगन्धवाली सूखी घास का तकिया बनाये एक छप्पर की छाया में लेटे हुए थे।

"वह पेड़ देख रहे हो, जिसकी पत्तियाँ ज़ोर से हिल रही हैं?" बज़ारोव ने कहा—"मेरा मतलब उस पेड़ से है, जो ईंट के भट्टे के पास किनारे पर जमने के कारण दबाव में पड़ा है? लड़कपन में मुझे विश्वास था, कि इस भट्टे की जगह उगे हुए वृक्ष में एक ख़ास जादू है, जिसके कारण जब मैं यहाँ आता, तो कभी यह मालूम ही नहीं होता था कि समय कितनी जल्दी व्यतीत हो जाता है। अब मालूम होता है कि उन दिनों मेरे वैसा समझने का कारण मेरा बचपन था, और अब जब मैं काफ़ी अवस्था का हो गया, तो उस जादू की शक्ति जाती रही।"

"उन दिनों तुम यहाँ कितने समय तक थे?"

"सिर्फ़ दो वर्ष। उसके बाद हम दूसरी जगहें चले गये।

वास्तव में हम लोग इधर-उधर घूमते हुए जीवन व्यतीत करते थे, और प्रायः शहरों में रहा करते थे।"

"तो क्या यह मकान पुराना है ?"

"हाँ, पुराना है। मेरे नाना का बनवाया हुआ है।"

"वे कौन थे ?"

"क्या पता कौन थे ! मैं समझता हूँ, कोई मेजर थे, जो सवोरोव* की अध्यक्षता में काम कर चुके थे और आल्प्स पर्वत पार करने की कहानियाँ सुनाया करते थे, यद्यपि मैं कह सकता हूँ कि वह ऐसा कहने में झूठ भी काफ़ी बोलते थे।"

"हाँ, मैंने ड्राइंग-रूम में सवोरोव का चित्र देखा है। इस तरह के पुराने मकान मुझे बड़े खुशनुमा मालूम होते हैं। इनके अन्दर एक ख़ास तरह की महँक होती है।"

"हाँ—मिट्टी के तेल और घास की संयुक्त गन्ध," बज़ारोव ने अँगड़ाई लेते हुये कहा—"पर इनमें मक्खियाँ भी कितनी होती हैं !"

कुछ देरतक दोनों चुप रहे। फिर आरकाडी बोला—

"क्या बचपन में तुम्हारे ऊपर कड़ा नियंत्रण रहता था ?"

---

* अलेग्ज़ैण्डर वैसिलीविच सवोरोव (१७२९-१८०० ई०) एक महान् रूसी योद्धा था, जिसने इटली में नैपोलियन बोनापार्ट को हराने के बाद कोरसाकोव की मदद के लिये आल्प्स पहाड़ पार किया था, पर उस (कोरसाकोव) के पैर मैसीना ने उखाड़ दिये थे।

"तुमने खुद देख लिया है कि मेरे माता-पिता कैसे हैं। वे ऐसे कठोर व्यक्ति तो नहीं मालूम होते।"

"तो तुम उन्हें बहुत प्रेम करते हो?"

"हाँ।"

"वे भी तुम्हें बहुत प्रेम करते मालूम होते हैं।"

बज़ारोव चुप रहा। फिर सिरके पीछे दोनों हाथ मिलाकर उसने पूछा—

"तुम्हें मालूम है कि इस समय मेरे मनमें क्या है?"

"नहीं। क्या है?"

"मैं मन-ही-मन उस सुखद जीवन का चित्र खींच रहा हूँ, जो मेरे माता-पिता को व्यतीत करना चाहिये। यह सोचरहा हूँ कि साठ वर्ष की अवस्था में मेरे पिता अब भी हाथ-पैर चलाते औषधियों और डाक्टरों की बातें करते और किसानों को दवा-दारू देकर फ़ायदा पहुँचाते हैं—मतलब यह कि अपने-आपको प्रसन्न रखते हैं और मेरी माँ का काम के मारे (जिसमें लम्बी साँसें लेना और रोना-विलपना भी शामिल है) नाकों दम है, और यह नहीं निश्चय कर पाती कि पहले क्या काम करे! इधर मैं—"

"हाँ, तुम?"

"छप्पर के नीचे पड़ा हूँ। यह सच है कि मैं ने यहाँ थोड़ी-सी जगह घेर रक्खी है, जो चतुर्दिक विस्तार को देखते हुए कुछ भी नहीं है, और मेरे लिए विभाजित समय की तुलना

अनन्तता के साथ करने पर, जिसे मैं कभी नहीं जान सकता, और जिसमें मैं कभी प्रविष्ट नहीं हो सकूंगा, वह कुछ भी नहीं जँचता। फिर भी इसी परमाणु और इसी गणित के अङ्क में, जिसे में अपना शरीर कहता हूँ, रक्त-संचार होता और मस्तिष्क इच्छानुसार कार्य करता है। तुम्हारे लिये तो यह एक विरुद्धता और व्यर्थता सिद्ध होगी !"

"मैं तो यह कहूँगा कि तुमने जो-कुछ बातें अभी-अभी कही हैं, वह सृष्टिमात्र के मनुष्यों पर लागू होती हैं।"

"सच है। मेरा मतलब यह है कि मेरे माता-पिता किसी भी कठिन समय का ज्ञान नहीं रखते, न वे अपनी महत्व-हीनता का ख़याल करके ही परेशान होते हैं—यह एक ऐसा विचार है, जो उनके मस्तिष्क में कभी नहीं घुसता; जबकि मैं—मैं सदा अपने हृदय में एक बेचैनी और झुँझलाहट का अनुभव करता रहता हूँ।"

"झुँझलाहट ? झुँझलाहट क्यों ?"

"तुम कैसे पूछते हो ? क्या तुम अभी हाल की घटना भूल गये ?"

"नहीं—भूला तो नहीं हूँ; पर मैं नहीं समझता कि उस (घटना) पर तुम्हें झुँझलाने और क्रोध करने का क्या अधि-कार है—शायद दुखी हो, पर—"

"मैं चाहता हूँ कि तुम प्रेम को वैसा ही समझो, जैसा हमारे आधुनिक युवक समझते हैं। अर्थात्—तुम ज्यों ही

प्रेम को अपने निकट आते देखो, चिड़ियों के बच्चों की तरह चूँ चूँ करके मुँह खोल दो। किन्तु मैं भिन्न प्रकृति का हूँ।—ख़ैर, बहुत हो चुकी। जो बात गुज़र गई, उसकी चर्चा न करना ही अच्छा है।" बज़ारोव कुहनी के बल बैठ गया—"ओह! देखो, एक चूँटा अधमरी मक्खी को उठाने की कोशिश कर रहा है। खींचो इसे। मक्खी मर जाय, तो कोई पर्वाह नहीं, पर अपनी जीवोचित समस्त सहानुभुति दिखादो, ख़ासकर इस अवस्था में जब इस बेचारी का तकलीफ़ में कोई मददगार नहीं है।"

"ऐसा मत कहो," आरकाडी ने कहा—"तुम्हारा भी तो तकलीफ़ में कोई मददगार नहीं है न?"

बज़ारोव ने सिर ऊपर उठाया।

"नहीं," उसने कहा—"मैं तो दिल्लगी कर रहा था। मैं कभी तकलीफ़ में नहीं पड़ा, और न कभी कोई स्त्री मेरी तकलीफ़ का कारण बनेगी। एवमस्तु! मैं कह चुका। इस विषय में अब कभी तुमसे एक शब्द भी नहीं कहूँगा।"

थोड़ी देर तक दनों मित्र चुप रहे।

"हाँ," बज़ारोव ने फिर कहा—"मनुष्य एक अद्भुत प्राणी है। जैसा नीरस जीवन मेरे माता-पिता ने व्यतीत किया है, उस पर दूरसे विचार करने के बाद कोई भी व्यक्ति अपने मनमें यही कहेगा कि उससे अच्छ, और क्या हो सकता है, ख़ासकर यह देखते हुए कि ऐसी स्थिति में मनुष्य

केवल खाता-पीता और अपने को ठीक-ठीक काम-काज करता हुआ समझता है? फिर भी मनुष्य घबरा जायगा और संगति की इच्छा करेगा, चाहे उस (संगति) के प्राप्त हो जाने पर वह पछताये ही।"

"मनुष्य को अपना जीवन ऐसा संयमपूर्ण बना लेना चाहिए कि प्रतिक्षण उसका महत्व क़ायम रहे।" आरकाडी ने संक्षिप्त रूप में कहा।

"अवश्य; किन्तु महत्व या कल्पित-महत्व—और यहाँ तक कि पूर्ण महत्व—सह्य होते हुए भी तुच्छ, नितान्त तुच्छ होता है।"

"जब तक कि मनुष्य उनका अस्तित्व नहीं मानता, उनका अस्तित्व हो ही नहीं सकता।"

"हूँ! यह तो विरोधात्मक-साधारण बात है।"

"यह कैसे?"

"इस तरह कि यदि तुम कहो कि 'शिक्षा उपयोगी चीज़ है,' तो यह एक साधारण बात हुई; पर यदि तुम कहो कि 'शिक्षा हानिकारक है' तो यह एक विरोधात्मक-साधारण बात हुई। दोनों बातें एक ही सी हैं; अन्तर केवल यही है कि एक का व्यक्तीकरण दूसरे से सुन्दर है।"

"पर इनमें से सत्य का पक्ष किसकी ओर है?"

"'सत्य का पक्ष किसकी ओर है?' मैं भी केवल दुहरा सकता हूँ—'किसकी ओर है?'"

"रहने दो! आज तुम्हारी तबियत ठिकाने नहीं है।"

"तबियत ठिकाने नहीं है? तो मुझे कुछ धूप लग गयी होगी, या फिर ज़्यादा रसभरियाँ खा गया होऊँगा।"

"तब तो तुम्हारे लिये सो जाना अच्छा रहेगा।"

"मैं समझता हूँ, तुम ठीक कह रहे हो। पर जब मैं सोने लगूँ, तो मेरी ओर देखना मत, क्योंकि सोते समय मनुष्य अपना शरीर खो देता है।"

"तुम लोगों की ऐसी बातों की कब पर्वाह करते हो?"

"नहीं; पर्वाह करता हूँ; यद्यपि ऐसी बातों के लिये सिर खपाना मनुष्य के लिये उपयुक्त नहीं है, ख़ासकर यह देखते हुए कि ऐसा मनुष्य आलोचना से ऊपर होता है, या आलोचक भय या घृणा के मारे उसका नाम नहीं लेते।"

"अनूठी बात है! क्योंकि मैं तो कभी किसी से घृणा नहीं करता।"

"और मैं बहुतों से घृणा करता हूँ। तुम अभी कोमल हो, मृदु हो, इसलिये घृणा तुम्हारी सीमा में नहीं आ सकती। जो लोग जीवन-क्षेत्र से विश्राम लेते, और तुम्हारी तरह आत्म-विश्वास से शून्य होते हैं—"

"पर तुम्हारे आत्म-विश्वास का क्या रहा?" आरकाडी ने बात काटकर कहा—"अपने-आप पर तुम्हारी क्या राय है?"

वज़ारोव कुछ देर ठहरकर फिर बोला—

"हम लोग आज जब तुम्हारे कमरे की झोंपड़ी के पास से

होकर गुज़रे (कैसी साफ़-सुथरी और सुन्दर जगह है !), तो तुमने कहा था कि जब तक प्रत्येक किसान के पास रहने को ऐसी जगह न हो जायगी, और हम सब इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पूर्णतया सन्नद्ध न हो जायँगे, तब तक क्या रूस पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। पर मैं तो इन पाजी गँवारों से, जिनके लिये मैं औरों से लड़ने के लिये तैयार होजाता हूँ और जो एक बार उसके लिये 'धन्यवाद' भी नहीं कहते, घृणा करता हूँ। ये मुझे क्यों धन्यवाद देने लगे, इनकी आजीविका सफ़ेद झोपड़ी में रहती है और मेरी—"

"ठहरो, ठहरो, इवजिनी ! उनके साथ सहमत होने के लिये बाध्य होना पड़ता है, जो हम पर सिद्धान्तहीन होने का अभियोग लगाते हैं।"

"तुम तो अपने चाचा की तरह बातें करते हो। सिद्धान्त-जैसी किसी चीज़ का संसार में अस्तित्व नहीं है। तुमने इसपर कभी गूढ़ विचार नहीं किया है। केवल बुद्धि-शक्ति का अस्तित्व हम मानते हैं, इसी पर सब-कुछ निर्भर है।"

"यह कैसे ?"

"इस प्रकार कि हम अपने को ही उदाहरण के रूप में लेलें। मैं अपनी बुद्धि-शक्ति के स्वभाव के कारण सब बातें अस्वीकार करता हूँ, क्योंकि मेरे मस्तिष्क का निर्माण ही इस प्रकार का हुआ है। इसी प्रकार अगर तुम पूछो कि मैं रसायन में क्यों दिलचस्पी रखता हूँ और तुम सेब क्यों पसन्द करते हो, तो

इसका उत्तर मैं यह दूँगा कि प्रत्येक बात का कारण एक ही है, और वह यह कि हमारी अपनी-अपनी बुद्धि-शक्तियाँ ही इसी प्रकार की हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि तुम्हारी और मेरी बुद्धि-शक्ति—सहज ज्ञान—के बीच एक खास प्रकार का सम्बन्ध है, जिसकी गहराई को माप हम नहीं करते।"

"तो क्या प्रतिष्ठा भी एक सहज ज्ञान है?"

"हाँ, है।"

"ओह, इवजिनी!" आरकाडी ने खेदपूर्ण स्वर में कहा।

"क्या तुम्हें यह वार्तालाप पसन्द नहीं है? तो फिर अब हम दर्शन की बातें न छाटें, और पुश्किन के शब्दों में 'निद्रा देवी को अपने ऊपर शान्ति का साम्राज्य स्थापित करने का' अवसर दें।"

"पुश्किन ने कभी ऐसी कोई बात नहीं कही।" आरकाडी ने विरोध किया।

"अगर नहीं कही, तो एक कवि की हैसियत से उसे कहना चाहिए था। शायद उसने फ़ौज में भी नौकरी की थी?"

"नहीं; फ़ौज में उसने कभी नौकरी नहीं की।"

"सचमुच? तो फिर उसने प्रत्येक पंक्ति में 'रूस की प्रतिष्ठा के लिये लड़ो-मरो' क्यों आया है?"

"यह सब तुम्हारी ईजाद है। यह सारा उद्धरण दोषारोपण-मात्र है।"

"दोषारोपण ? यहाँ दोषारोपण का क्या काम है ? इसमें तुम्हें ऐसी कौन-सी बात दीख रही है। किसी की निन्दा चाहे की जाय या नहीं, पर वह तो अपनी निन्दनीय चीज़ की बीस-गुनी निन्दा अपने आप सुनेगा।"

"अब हम सोयेंगे।" आरकाडी ने कर्कश स्वर में कहा।

"खुशी से।" बज़ारोव ने कहा।

किन्तु दोनों मित्रों में से नींद एक को भी नहीं आयी, क्योंकि सारे-के-सारे निद्रा-नाशक भावों की प्रबल बाढ़-सी आगयी, इसलिये पाँच मिनट के व्यर्थ प्रयत्न के बाद दोनों ने आँखें खोल लीं और चुपचाप चारों ओर ताकने लगे।

"देखो," आरकाडी ने कुछ देर तक चुप रहने के बाद कहा— "इस वृक्ष में वह सूखी पत्ती कैसी हिल रही है, मालूम होता है कोई तितली पंख हिला रही है ? आश्चर्य है कि तितली-जैसी आनन्द-दायक और सजीव चीज़ एक सूखी, मृतक और शोक-पूर्ण वस्तु का प्रतिरूप होती है !"

"दोस्त," बज़ारोव ने विरोधपूर्वक कहा—"मेरी कम-से-कम यह प्रार्थना सुनो कि 'अलंकारिक भाषा' में बातें न करो।"

"मैं जैसी भाषा में बोल सकता हूँ, बोलता हूँ। मैं इस प्रकार का शासन नहीं मान सकता। यदि कोई विचार मेरे मस्तिष्क में आजाय, तो मैं उसे व्यक्त क्यों न करूँ ?"

"इसी प्रकार क्या मैं यह विचार नहीं प्रकट कर सकता कि अलंकारिक भाषा में बातचीत करना बहुत ही अनुचित है।"

"अनुचित ? तो क्या शपथ खाना अनुचित नहीं है ?"

"अहा ! मैं देखता हूँ, तुम भी अपने चाचा के चरण-चिह्नों पर चलना चाहते हो। वह मूर्ख यदि यहाँ होता, तो यह बातें सुनकर कैसा खुश हुआ होता !"

"तुम पाल पिट्रोविच को क्या कह रहे हो ?"

"मैंने सिर्फ़ वही कहा, जो वह वास्तव में है—सिर्फ़ मूर्ख !"

"बस चुप रहो !" आरकाडी ने चिल्लाकर कहा।

"मैं देखता हूँ, रक्त का सम्बन्ध ज़ोर मार रहा है," बज़ारोव ने शान्त स्वर में कहा—"यह बड़ी बुरी और हठपूर्ण बात है, मैंने बहुतों में यह आदत देखी है। एक व्यक्ति सभी बातें छोड़ सकता है, और सभी प्रकार के ईर्ष्या-द्वेष से पृथक् हो सकता है, फिर भी यदि उसका भाई उसकी क़मीज़ चुराने का अभ्यस्त हो, तो वह उसे 'चोर' मानने के लिये कभी तैयार नहीं होगा। कठिनाई वहीं आ धमकती है, जहाँ 'अपने' का प्रश्न आता है। क्यों यही बात है न ?"

"नहीं। मैंने किसी सम्बन्ध के कारण नहीं, प्रत्युत् न्याय-बुद्धि से ऐसा कहा था, लेकिन चूँकि न्याय-बुद्धि का तुममें अभाव है, इसलिये तुम ऐसी भावनाओं पर कोई फ़ैसला नहीं दे सकते।"

"दूसरे शब्दों में यह कहो कि 'मैं, आरकाडी किरसानोव,

तुम्हारी समझ से ऊपर की चीज़ हूँ।' मैं तुम्हारी बात चुपचाप मान लेता हूँ।"

"अच्छा, इवजिनी ! हमलोग झगड़ा करके यह बहस समाप्त करेंगे।"

"ओह, तुम मेरे साथ झगड़ा करने की कृपा करोगे। तब तो कोट उतारकर बाक़ायदा लड़ना ज़्यादा अच्छा होता।"

"यहाँ तक कि—?"

"यहाँ तक कि हम एक-दूसरे को टुकड़े-टुकड़े कर देते ? क्यों नही ? यहाँ, सूखी घास में, सुन्दर एकान्त स्थान में, भीड़ और मानवीय दृष्टि से दूर, यह कोई बुरी बात तो नहीं होगी । नहीं, तुम मुझसे लड़ नहीं सकोगे ! मैं तुम्हारा गला पकड़कर दबा दूँगा।"

उसने अपनी लम्बी और तीक्ष्ण उँगलियाँ बढ़ायीं, और आरकाडी से शरीर बचाकर दिल्लगी-दिल्लगी में उसके ऊपर पिल पड़ा, पर दूसरे ही क्षण आरकाडो ने बज़ारोव का द्वेष और द्रोह से पूर्ण मुख-मण्डल हास्य की मुद्रा में परिणत होते देखा और वह मर्माहत होकर चकित-सा होगया।

"अच्छा, यहाँ हो तुम !" कहकर सूती जाकेट और सरकण्डे की टोपी पहने हुए फ़ौजी डाक्टर ने युगल जोड़ी के सामने आते हुए कहा—"मैं तुम्हें चारों ओर खोजता फिरता था, पर दर-असल तुमने जगह अच्छी चुनी और काम भी अच्छा कर रहे हो—ज़मीन पर लेटकर आकाश को देखना,

मामूली काम नहीं है। मेरा तो विश्वास है कि ऐसे कामों का उपयोग अच्छा होता है।"

"मैं तो आकाश की ओर तभी देखता हूँ, जब मुझे छींक आती है।" बज़ारोव ने कहा। फिर आरकाडी की ओर देखकर उसने धीरे से कहा—"अगर कहीं चोट लग गयी हो, तो माफ़ करना।"

"इसकी चर्चा मत करो।" आरकाडी ने वैसे ही स्वर में अपने मित्र से हाथ मिलाते हुए कहा।

इस प्रकार की मुठ-भेड़ों की प्रतिक्रिया समय आने पर दोनों मित्रों की मित्रता पर होनी ही थी।

"मैं आपके सामने," वैसिली आइवनिच ने सिर हिलाकर तुर्की मूर्ति की मूँठवाली स्वनिर्मित कुबड़ी पर हाथ टिकाते हुए कहा—"आपकी काफ़ी प्रशंसा नहीं कर सकता। आपके अन्दर बड़ी ताक़त है! आप युवावस्था, ताक़त और बुद्धि की बातें बड़ी सुन्दरता से करते हैं? आपकी शक्ल तो कैस्टर और पोलक्स से मिलती है!"

"तुम्हारे प्राचीन गाथाओं-सम्बन्धी ज्ञान का गौरव प्रशंसनीय है," बज़ारोव ने कहा—"साथ ही तुम लैटिन के भी अपने ज़माने में अच्छे पण्डित गिने जाते रहे होगे। वास्तव में तुम्हें अपने एक लेख के कारण रौप्य पदक भी तो किसी ने दिया था न?"

"डिआस्करी, खुद डिआस्करी ने!—" बुड्ढा आनन्द-मग्न होकर कहने लगा।

"बस करो, पिताजी—ज़्यादा बेवकूफ़ी मत दिखाओ।"

"नहीं, मैं तुम्हारी चापलूसी नहीं कर रहा हूँ—मैं तो दोनों मित्रों को सूचित करने आया हूँ कि भोजन लगभग तैयार हो गया है, और साथ ही इवजिनी, तुम्हें सावधान करने आया हूँ। मैं जानता हूँ कि एक समझदार और सांसारिक-बुद्धि-सम्पन्न व्यक्ति होने के कारण तुम उदार होगे। मामला यह है कि आज प्रातः तुम्हारी माँ ने यह बात सोची है कि तुम्हारे आने के उपलक्ष्य में एक बधाई-सूचक रस्म की आयोजना की जाय। यह मत समझना कि मैं तुम्हें उस रस्म के लिये आमंत्रित कर रहा हूँ; बल्कि वह रस्म तो समाप्त भी होगयी। अब तो मैं यह कहने जा रहा हूँ कि फ़ादर अलेक्सिस—"

"पुरोहित ?"

"हाँ, और हमारे निजी धर्माचार्य। ये महोदय हमारे साथ भोजन करेंगे। यद्यपि मैंने यह बात स्वीकार नहीं की थी, और यह मेरी राय भी नहीं थी, पर किसी-न-किसी तरह यह इन्तज़ाम हो ही गया—शायद इस प्रकार कि वे महाशय मेरा मतलब ठीक-ठीक नहीं समझ सके। यह इसलिये नहीं हो रहा कि हम लोग उन्हें एक सच्चा और समझदार व्यक्ति समझते हैं।"

"तुम्हारा यह मतलब तो नहीं है कि वह मेरे खाने का हिस्सा छीनकर खालेंगे ?"

वैसिली आइवनिच ठठाकर हँस पड़ा।

"हा ! हा ! हा !"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है," बज़ारोव ने कहा—"वास्तव में मैं तो कभी यह बात सोचता भी नहीं कि मैं किसके साथ बैठकर खाना खा रहा हूँ।"

वैसिली आइवनिच का चेहरा तत्काल खिल उठा।

"मुझे तो पहले से ही निश्चय था," उसने कहा—"हाँ, मैं जानता था कि तुम आजकल के युवक होकर भी उसी प्रकार ईर्ष्याहीन हो, जैसा कि मैं बासठ वर्ष की अवस्था में हूँ।" (तो भी वैसिली ने यह बात स्वीकार नहीं की कि अपनी स्त्री की ही तरह उसकी भी इच्छा बधाई की रस्म अदा करने की थी, क्योंकि उसके अन्दर भी करुणा-भाव उतना ही है, जितना उसकी स्त्री के) "ख़ैर, फ़ादर अलेक्सिस तुमसे परिचय प्राप्त करना चाहेंगे; और तुम भी उनसे मिलना चाहोगे, विशेषकर इसलिये कि वे न-केवल ताश ही खेलते हैं (यद्यपि यह बात हमीं लोगों तक रहनी चाहिए), प्रत्युत तम्बाकू पीने से भी परहेज़ नहीं करते।"

"सचमुच ? तब तो भोजन के बाद हम लोग खेलेंगे और मैं उन्हें अच्छी तरह हराऊँगा।"

"हा ! हा ! हा ! देखा जायगा, देखेंगे !"

"तो कभी-कभी तुम्हें पुराने दिन याद आजाते हैं ?" बज़ारोव ने किञ्चित आश्चर्य के भाव से पूछा।

वैसिली आइवनिच के शुष्क मुख-मण्डल पर कुछ लालिमा दौड़ गयी।

"शर्म की बात है, इवजिनी !" उसने कहा—"याद रक्खो कि पुराने दिन पुराने ही दिन हैं। तो भी इन मेहमान महाशय की उपस्थिति में मैं यह बात स्वीकार करने के लिये तैयार हूँ कि अपनी युवावस्था में मुझमें व्यसन थे और मैंने उनका परिणाम भी अच्छी तरह भोगा है। पर देखो, गर्मी कैसी बढ़ती जा रही है। ज़रा तुम्हारे पास बैठ जाऊँ; मुझे आशा है कि मैं तुम्हारे वार्तालाप में बाधा नहीं डालूँगा ?"

"नहीं, बाधा क्या है।" आरकाडी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

वैसिली आइवनिच काँखकर बैठ गया, और बोला—

"इस जगह को देखकर तो मुझे फ़ौजी पड़ाव के दिन याद आगये—यह छप्पर मरहम-पट्टी का स्थान-सा मालूम होता है।" इसके बाद एक ठण्डी साँस लेकर बुड्ढा बोला—"अपने ज़माने में मैं ने कितने ही अनुभव प्राप्त किये थे। उदाहरण के तौर पर, मैं तुम्हें एक विलक्षण कहानी सुनाता हूँ। यह बसाराबिया में घटित एक भीषण मृत्यु-घटना के सम्बन्ध में है।"

"जब तुमने सेण्ट ब्लाडीमीर का पन्थ ग्रहण किया था ?" बज़ारोव ने कहा—"हाँ, मैं वह कहानी जानता हूँ। पर तुम उस पन्थ का चिह्न क्यों नहीं धारण करते ?"

"मैंने तुमसे कह दिया है कि मुझे दिखावे की बिल्कुल पर्वाह नहीं है," वैसिली आइवनिच ने विरोध करते हुए कहा (यद्यपि वार्तालाप के एक ही दिन पहले उसने उक्त पन्थ का

लाल फ़ीता अपने कोट में से पृथक् किया था)। इसके बाद वह कहानी सुनाने पर तुल गया।

"इवजिनी को नींद आगयी है," उसने पुत्र की ओर उँगली उठाकर आरकाडी से आँख मटकाते हुए प्रसन्नतापूर्वक धीरे से कहा—"इवजिनी!" उसने ज़रा ऊँचे स्वर में कहा—"उठो, खाने का समय हो गया!"

फ़ादर अलेक्सिस एक मोटा-तगड़ा और सुन्दर व्यक्ति था, जो अपने बालों पर बाक़ायदा कंघी किये हुए था और जिसके लम्बे चोग़े की कमर पर बेल-बूटे का काम किया हुआ था। यह बातचीत से बड़ा ही चालाक और चलता-पुर्ज़ा सिद्ध हुआ। शुरू-शुरू में आरकाडी और बज़ारोव से हाथ मिलाकर (वह किसी प्रकार जान गया था कि ये युवक-द्वय उसके आशीर्वाद से भूखे नहीं हैं) उसने बड़ी अधीरता के साथ यह व्यवहार सहन किया और फिर अपने व्यवहार से अधिक शिष्टाचार-विहित बन्धन हटाकर अपने लैटिन-ज्ञान पर गर्वयुक्त प्रसन्नता प्रकट की, प्रधान धर्माधिकारी के पक्ष-समर्थन में बहुत-सी बातें कहीं, दो गिलास शराब चढ़ा गया (तीसरे के लिये उसने इन्कार कर दिया) और आरकाडी का दिया हुआ सिगार स्वीकार किया, यद्यपि उसे वहाँ न पीकर उसने घर ले जाने के लिये जेब में डाल लिया। केवल एक ही दृश्य ऐसा था, जिसे देखकर प्रसन्नता नहीं होती थी—और वह यह था कि रह-रहकर धर्माचार्य अपने मुँह पर चुपके से

हाथ फेरकर मक्खियाँ उड़ादिया करता था, और ऐसा करते हुए वह बेचारी मक्खियों को कुचल भी दिया करता था।

भोजन समाप्त होने के बाद वह विनयपूर्ण प्रसन्नता के साथ ताश खेलने के लिये बैठा और पहली चाल में बज़ारोव से ढाई रूबल का नोट जीत गया (यह ग्रामीण खेल शहर के नक़द रुपये के खेल से भिन्न था)। खेल के समय बज़ारोव की माँ हथेली पर मुँह रक्खे अपने पुत्र के पास बैठी रही, और वहाँ से तब उठी, जब और खाद्य-सामग्री जुटाने की आवश्यकता पड़ी। किन्तु वह बज़ारोव को लाड़-प्यार नहीं कर सकी, न बज़ारोव ने माँ को ऐसा करने का प्रोत्साहन ही दिया। इसके अतिरिक्त बीच-बीच में वैसिली आइवनिच 'इवजिनी को मत छेड़ो; नाराज़ हो जायगा' फुस्फुसाकर उत्साह और भी भंग कर देता था। साथ ही यह बात कहने की आवश्यकता भी मुश्किल से है कि जिस भोज में उसने अभी-अभी भाग लिया था, वह साधारणतः अच्छी लागत का था, विशेष कर इसलिये कि तड़के ही टिमोथिच गोश्त लेने के लिये दौड़ गया था और स्टारोस्टा को मछली और केकड़ों के लिये दौड़ दिया था तथा एक किसान स्त्री को बयालीस कापेक्स* कुकुरमत्ता लाने के लिये दिये गये थे। एरिना व्लासीवना की आँखें एकटक बज़ारोव पर लगी हुई थीं, जिनमें कोमलता और वात्सल्य प्रेम के अतिरिक्त कुछ और ऐसे भाव भी मिश्रित थे, जिनमें शोक,

*कापेक लगभग एक पैसे के बराबर होता है।

उत्सुकता, आशङ्का और एक प्रकार का वेदनापूर्ण अनुरोध था। किन्तु बज़ारोव ने उसकी भावना का अध्ययन नहीं किया, क्योंकि उसने सिवा रूखे प्रश्न करने के अपनी माँ की ओर ध्यान ही नहीं दिया; केवल एक बार खेल में 'तक़दीर चेताने के लिये' माँ का हाथ अपने हाथ में रखने के लिये कहा। इस मौक़े पर बुढ़िया ने अपनी मोटी उँगलियाँ बज़ारोव की सख़्त और चौड़ी हथेली पर रख दीं और फिर थोड़ी देर ठहरकर उससे पूछा—

"इससे तुम्हारे खेल में कुछ लाभ हुआ ?"

"नहीं," बज़ारोव ने घृणापूर्ण मुँह बनाकर जवाब दिया—"उलटे नुक़सान हुआ है।"

"हाँ, ताश आपके विरुद्ध जाते दिखते हैं।" फ़ादर अलेक्सिस ने अपनी सुन्दर दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा।

"पर 'कोड नैपोलियन' से होशियार रहिएगा, फ़ादर," वैसिली आइवनिच ने इक्का रखते हुए कहा—"कोड नैपोलियन से सावधान रहियेगा।"

"नैपोलियन को अन्त में सेण्ट हेलेना लाया गया था।" फ़ादर ने जीत के ताश समेटते हुए कहा।

"एक गिलास चालू शराब की ला इन्युश्का ?" एरिना व्लासीवना ने कहा।

बज़ारोव ने सिर हिला दिया।

दूसरे दिन उसने आरकाडी से कहा—

"कल मुझे चल देना चाहिए। यहाँ मेरा दिल नहीं लगता, क्योंकि मैं काम करना चाहता हूँ, और यहाँ रहकर काम करना असम्भव है। मैं तुम्हारे घर चलूँगा, क्योंकि मेरे सारे रासायनिक साधन वहीं हैं। इसके अतिरिक्त तुम्हारे यहाँ यह भी सुविधा है कि दरवाज़ा बन्द करके काम तो किया जा सकता है, और यहाँ क्या है। पिताजी कहते तो यह रहते हैं कि 'मेरा अध्ययन-कक्ष पूर्णतः तुम्हारे सुपुर्द है, और कोई तुम्हारे काम में बाधा नहीं डालेगा', पर वे कभी वहाँ से हटते नहीं। ऐसी अवस्था में मैं उन्हें, या अपनी माँ को बाहर रखकर कमरे में ताला लगा रखना नहीं पसन्द करता। कभी-कभी मैं दूसरे कमरे में उसे काँखते सुनता हूँ। पर जब मैं उसके पास जाता हूँ, तो मेरे मुँह से एक शब्द भी नहीं निकलता।"

"तुम्हारे चले जाने पर उन्हें बड़ा कष्ट होगा," आरकाडी ने कहा—"तुम्हारे पिताजी भी बड़े परेशान होंगे।"

"पर मैं फिर वापस आऊँगा।"

"कब ?"

"जब सेण्ट पीटर्सबर्ग जाने लगूँगा।"

"मुझे तुम्हारी माँ के लिये बड़ा अफ़सोस है।"

"क्यों ? वह तुम्हें खूब फल खिलाती है, इसलिये ?"

आरकाडी ने आँखें नीची करलीं।

"तुम अपनी माँ को नहीं जानते," उसने कहा—"वह न-केवल एक भले स्वभाव की स्त्री हैं, वरन् बुद्धिमती भी हैं। आज सुबह मैंने आध घण्टे तक उनसे ठोस और दिलचस्प बातें की हैं।"

"जिसमें उसने मेरे सम्बन्ध में तुमसे बहुत-सी बातें की होंगी ?"

"तुम्हारे अतिरिक्त और कई विषयों पर भी बातें हुईं।"

"सम्भव है। सम्भवतः तुम भी एक बाहरी आदमी के रूप में मेरी अपेक्षा यहाँ की प्रत्येक वस्तु को अधिक स्पष्टतापूर्वक देखते हो। तो भी जब एक ऐसी स्त्री आध घण्टे तक बातें कर सकती है, तो यह एक अच्छा लक्षण समझना चाहिए; किन्तु मैं अपने कथनानुसार रवाना हो जाऊँगा।"

"पर तुम उन्हें यह ख़बर यों ही आसानी से नहीं सुना सकोगे, क्योंकि उन्होंने हम लोगों के लिये दो सप्ताह का कार्य-क्रम बना रक्खा है।"

"नहीं, सम्भव है तुम्हारे कथनानुसार आसानी न हो; और ऐसा इसलिये भी हो सकता है कि आज सुबह मैंने शैतान के बहकावे में आकर पिताजी को बहुत परेशान किया है। यह इस प्रकार हुआ कि अभी कुछ दिन पहले उन्होंने अपने एक गुलाम को बेत लगवाये थे और इस प्रकार अच्छा ही किया था। नहीं, तुम मेरी ओर क्रोधपूर्वक मत देखो। मैं अपने पिता के इस काम की निन्दा इसलिये नहीं करता कि वह किसान एक

पक्का चोर और पियक्कड़ सिद्ध हो चुका था। दुर्भाग्यवश मेरे पिता यह नहीं समझते थे कि मैं इस घटना का पता पा लूँगा, इसीलिये जब मुझे ख़बर लग गयी, तो वे बड़े हैरान हुए। अब उनकी घबराहट दुगनी बढ़ जायगी! तो भी कोई हर्ज नहीं। थोड़े ही दिनों में उनकी बेचैनी दूर हो जायगी।"

किन्तु यद्यपि बज़ारोव ने 'कोई हर्ज नहीं' कह दिया, फिर भी वैसिली आइवनिच को अपने प्रस्थान का समाचार सुनाने के लिये उसने सारा दिन व्यतीत कर दिया। अन्ततः जब रात को अध्ययन-कक्ष में वह अपने पिता से शयनार्थ विलग होने के लिये तैयार हुआ, तो एक लम्बी अँगड़ाई लेने के बाद बोला—

"हाँ, मैं तो इस बात को कहना ही भूल गया कि घोड़े थिडोट के यहाँ भेजने को तैयार करवा दिए जायँ।"

वैसिली आइवनिच पर वज्रपात-सा होगया।

"तो क्या किरसानोव महाशय घर जारहे हैं?" उसने पूछा।

"हाँ, और मैं भी उनके साथ जा रहा हूँ।"

वैसिली आइवनिच थोड़ी देर तक व्याकुल-सा होकर चुप बैठा रहा।

"तुमने क्या कहा, तुम भी उनके साथ जा रहे हो?" उसने पूछा।

"हाँ। मुझे भी जाना ही होगा। कृपया घोड़े तैयार करके थिडोट के यहाँ भिजवा दो।"

"मैं—मैं भिजवा दूँगा," बुड्ढे ने ज़बान लड़खड़ाते हुए कहा—"थिडोट के यहाँ भिजवाने हैं ? हाँ, अच्छा, बहुत अच्छा सिर्फ़, सिर्फ़ यह बतादो कि इस क्रम-परिवर्तन का क्या कोई ख़ास कारण है ?"

"हाँ, है। मैं आरकाडी के घर थोड़े दिनों के लिये जाने का वादा कर आया हूँ। वहाँ से होकर मैं फिर तुम्हारे पास आऊँगा।"

"'थोड़े दिनों के लिये' ही न ? अच्छी बात है !" वैसिली आइवनिच ने जेब में से रूमाल निकालकर नाक पोंछते हुए कहा। ऐसा करते हुए उसने अपना सिर बहुत नीचे झुका लिया, यहाँ तक कि वह ज़मीन के बिल्कुल निकट पहुँच गया। "अच्छा, अच्छा ! जैसा कहते हो, वैसा ही होगा। तो भी हमें तो यही आशा थी कि तुम अभी हम लोगों के साथ कुछ दिन और ठहरोगे। सिर्फ़ तीन दिन से क्या होता है ! तीन वर्ष की ग़ैरहाज़िरी के बाद केवल तीन दिन ! यह तो बहुत अधिक नहीं है इवजिनी,—बहुत नहीं है !"

"पर मैं कहता तो हूँ कि मैं शीघ्र ही वापस आजाऊँगा। पर इस समय तो मुझे जाना ही है।"

"तुम्हारी इच्छा से अब कुछ नहीं हो सकता, क्यों ? बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, वादा तो पूरा करना ही चाहिए। हाँ, ज़रूर पूरा करना चाहिए। और मुझे घोड़े भेजने ही पड़ेंगे ? बहुत अच्छा। यह तो स्वाभाविक ही हुआ, एरिना और

में—दोनों पहले ही इस बात को सोच रहे थे। अभी आज ही वह एक पड़ोसी के यहाँ जाकर तुम्हारे कमरे में सजाने के लिये फूल माँगकर लायी थी।"

बुड्ढे ने इन सब बातों की कोई चर्चा नहीं की कि प्रतिदिन प्रातःकाल वह स्लीपर पहनकर नीचे टिमोथिच से परामर्श करता था, उसे काँपती उँगलियों से बैंक-नोट देता था और अपने कुबड़े नौकर को भेजकर तरह-तरह की खाद्य-सामग्री (विशेषतः एक प्रकार की लाल मदिरा जो युवक-द्वय पसन्द करते थे) मँगवाने का प्रबन्ध करता था।

"संसार में सब से बड़ी चीज़ आज़ादी है," उसने फिर कहा—"मैं भी इसे अपना सिद्धान्त बनाता हूँ। कभी किसी को रुकावट या—"

उसकी आवाज़ भर्रा उठी और वह दरवाज़े की तरफ़ लपका।

"मैं वादा करता हूँ कि मैं शीघ्र ही वापस आजाऊँगा, पिताजी। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ।"

पर वैसिली आइवनिच ने पीछे फिरकर नहीं देखा और रूमाल हिलाते हुए वह वहाँ से चला गया। शयन-कक्ष में जाकर उसने देखा तो एरिना सो रही थी। उसने यह सोचकर धीमे स्वर में अपनी नैश-प्रार्थना शुरू की कि कहीं बुढ़िया जग न जाय। पर बुढ़िया की आँख तुरन्त खुल गयी।

"तुम हो, वैसिली आइवनिच ?" उसने पूछा।

"हाँ, माँ।"*

"क्या एन्युशा के पास से आ रहे हो ? मैं उसके बिस्तरे के सम्बन्ध में बहुत चिन्तित हूँ। क्या वह सोफ़े पर आराम के साथ सोता है ? आज मैंने एनफ़ीसुश्का से कहा था कि वह तुम्हारा सफ़री गद्दा और तकिया उसके लिए बिछा दे। अगर वह मुलायम बिछौना नापसन्द न करता, तो मैं उसे ऊनी बिस्तरा दे देती।"

"बहुत क्लेश मत उठाओ माँ, वह बड़े आराम से है। 'ईश्वर, हम अपराधियों को क्षमा कर !'" कहकर वैसिली आइवनिच ने प्रार्थना शुरू की ! फिर भी उसका हृदय अपनी चिर सहचरी के प्रति सहानुभूति के कारण व्यथित हो रहा था। उसने प्रभात के साथ आनेवाली दुःखद विछोह-घटना की सूचना भी बुढ़िया को नहीं दी।

दूसरे दिन आरकाडी और बज़ारोव प्रस्थान के लिये तैयार होगये। तड़के से ही घर में शोक छा गया। एन्फीसुश्का के हाथ से कोई चीनी का बर्तन गिर गया और थेडिका का जूता पहनने की आफ़त से पिण्ड छूटा। बुड्ढा वैसिली आइवनिच इधर-उधर फिरने और अपनी वीरता का प्रदर्शन करने लगा। आज वह ऊँचे स्वर में बोल रहा था। और फ़र्श पर ज़ोर-ज़ोर से पाँव

---

*यहाँ स्त्री को 'माँ' का सम्बोधन कदाचित प्रार्थना के समय के वार्तालाप के कारण, या रूस की विशेष प्रथा के अनुसार किया गया है।

पटकने लगा था; किन्तु यह सब होते हुए भी उसका चेहरा जैसे सूख गया था और उसकी आँखें अपने बेटे की मूर्ति के लिये घूम रही थी। इधर एरिना व्लासीवना तो दिल खोलकर रो रही थी, और यदि उसका पति दो घण्टे तक उसे दिलासा न देता, तो वह पूर्णतः बेहोश हुए बिना न रहती।

किन्तु अन्ततः जब बज़ारोव ने अधिक-से-अधिक एक महीने में लौट आने की बार-बार प्रतिज्ञा की और अपने गले में पड़ी हुई बाँहों से अपने-आपको छुड़ाकर गाड़ी में जा बैठा, घोड़े रवाना हुए, उनके गले में बँधी हुई घण्टियाँ बज उठीं, पहिये घूमने लगे; टिमोथिच लौटकर अपने भण्डार में चला गया और वृद्ध दम्पति उस घर में, जो उन्हीं की भाँति कुरूप और जीर्ण हो रहा था, अकेले रह गये, तब वैसिली आइवनिच बरामदे में टहलकर रूमाल हिलाने के प्रदर्शन को बन्द करके आरामकुर्सी पर बैठ गया, और सिर ढीला करके सीने पर लटका लिया।

"वह हमेशा के लिये गया, अब न लौटेगा।" उसने कहा— "वह इसलिये चला गया कि यहाँ का जीवन उसके लिये भार-स्वरूप हो गया था; मैं फिर मरुस्थल की रेत की तरह अकेला रह गया!"

वह इन्हीं शब्दों को बार-बार दुहराता रहा और हर बार हाथ उठाकर किसी सुदूर स्थल की ओर इशारा करता रहा।

पर शीघ्र ही एरिना व्लासीवना वहाँ आ गयी और अपने पके बालोंवाला सिर पति के सिर से मिलाकर बोली—

"पर्वाह मत करो, वासिया! यह सच है कि वह हमसे पृथक् हो गया—और एक बाज़ पक्षी की तरह इधर-उधर जहाँ चाहता है, उड़ता फिरता है; पर तुम और मैं खोखले वृक्ष पर जमी हुई काई की भाँति एक साथ सटे हुए हैं, और कभी जुदा नहीं हुए।.........और मैं तुम्हारे लिये सदा वही रहूँगी, और तुम मेरे लिये।"

मुँह पर से हाथ हटाते हुए वैसिली आइवनिच ने अपनी चिर-सहचरी को इस प्रकार आलिङ्गन किया, जैसा उसने कभी भी—विवाह के अवसर पर भी—नहीं किया था। इसी प्रकार स्त्री ने भी पति को पूरा ढाढ़स दिया।

———

२२

दोनों यात्री चुपचाप—और एकाध बार साधारण विषयों पर वार्तालाप करते हुए—गाड़ी के अड्डे की ओर बढ़े। आरकाडी मन-ही-मन बज़ारोव के ऊपर कुढ़ रहा था और और बज़ारोव भी अपने-आप पर बहुत प्रसन्न नहीं था। इसके अतिरिक्त आरकाडी का हृदय एक ऐसे अकारण बोझ से दबा जा रहा था, जिसका अनुभव केवल युवकों को ही होता है।

कोचवान घोड़ों को रोककर नीचे उतरा और पास आकर उसने पूछा कि वह दाहिनी ओर मुड़े, या बायीं।

आरकाडी ने चौंककर देखा। दाहिनी ओर मुड़नेवाली सड़क शहर को जाती थी और वहाँ से फिर उसके घर की

ओर, तथा बायीं ओर की सड़क मैडम ओडिन्तसोव की कोठी को।

उसने बज़ारोव की ओर देखा।

"बायीं ओर मुड़ना है, इवजिनी ?" उसने पूछा।

बज़ारोव ने सिर घुमा लिया।

"वही बेवक़ूफ़ी फिर क्यों की जाय ?" उसने कहा।

"बेवक़ूफ़ी है, मैं जानता हूँ," आरकाडी ने कहा—"पर हर्ज क्या है ? हम लोग चलते-चलते रास्ते में केवल मिलते चलेंगे।"

बज़ारोव ने अपनी टोपी आगे की ओर और झुका ली।

"जैसी तुम्हारी इच्छा हो, करो।" उसने कहा।

"तो फिर बायीं ओर मुड़ो।" आरकाडी ने ऊँचे स्वर में कोचवान से कहा। गाड़ी निकोल्सको की ओर रवाना हुई। मित्र-द्वय ने इस मार्ग पर चलने की 'मूर्खता' स्वीकार कर ली थी, अतः वे रास्ते-भर ऐसे चुप और लज्जित रहे कि जिसका हिसाब नहीं।

उधर कोठी पर पहुँच जाने पर जब मैडम ओडिन्तसोव के ख़ानसामा तक ने बरामदे में आकर उनका स्वागत नहीं किया, तब उन्हें मालूम हुआ कि आवेग में आकर निकोल्सको चले आना, उनके लिये कोई अच्छी बात नहीं हुई। इस घर में कोई इन मित्र-द्वय के पुनरागमन की आशा नहीं रखता था, इसकी पुष्टि इस बात से हुई कि दोनों के घण्टों चुपचाप ड्राइंग रूम में

इन्तज़ार करने के बाद मैडम अन्दर आयी। तो भी उसने इनका स्वागत शिष्टाचारपूर्वक किया, यद्यपि इस बात पर वह आश्चर्यान्वित ज़रूर नज़र आती थी कि वे दोनों इतनी जल्दी कैसे वापस आगये और हृदय में इनकी वापसी पर विशेष प्रसन्न भी नहीं मालूम होती थी। इसी कारण दोनों ने शीघ्र ही उसे यह समझाने की कोशिश की कि वे रास्ते में उससे मिलने के लिए उतर पड़े हैं और लगभग चार घण्टे बाद वे शहर के लिए रवाना होजायँगे। उत्तर में मैडम ने विशेष कुछ न कहकर आरकाडी से केवल इतना ही कहा कि वह अपने पिता से उसका कुशल-क्षेम कह दे, और इसके बाद अपनी मौसी को बुलवाया। प्रिंसेज़ ऐसी अवस्था में कमरे में आयी, मानो उसे किसी ने सोते से जगा दिया था। उस वृद्धा के चेहरे की झुर्रियों से सदा की अपेक्षा अधिक द्वेष-भाव टपक रहा था। कतिया की तबीयत अच्छी नहीं थी और वह अपने कमरे से आयी भी नहीं। इससे आरकाडी ने यह सोचा कि वह उसे देखकर भी उतना ही प्रसन्न होता, जितना एना सर्जीवना को देखकर हुआ है। चार घण्टे असम्बद्ध वार्तालाप में समाप्त होगये, और बातचीत के सिलसिले में एना सर्जीवना के मुख-मण्डल पर एकबार भी हँसी की रेखा नहीं दिखायी दी। विदायी के समय तक उसके हृदय में वह सौहार्द्र-भाव जाग्रत नहीं हुआ, जो साधारणतः उसकी प्रकृति में घुला-मिला था।

"मेरी तबियत आज अच्छी नहीं है," उसने कहा—"पर

आप इसका ख़याल न कीजिएगा। शीघ्र ही फिर कभी पधारियेगा। आप दोनों से ही मैं यह बात कह रही हूँ ।"

बज़ारोव और आरकाडी ने चुपचाप झुककर विदा ली और पुनः अपने तरन्तास में बैठकर मैरिनो की ओर चल पड़े। बिना किसी विशेष घटना के दूसरे दिन शाम को वह वहाँ पहुँच गये। रास्ते में दो में से किसी ने मैडम ओडिन्तसोव की चर्चा नहीं की, और बज़ारोव ने तो अपना मुँह एक तरह से सी सा लिया और रास्ते-भर चुपचाप क्षितिज की ओर ताकता रहा ।

किन्तु मैरिनो में मित्र-द्वय के आते ही प्रसन्नता फैल गयी, क्योंकि निकोलाई पिट्रोविच अपने पुत्र की लम्बी अनुपस्थिति से घबराने लगा था, और आज जब थेनिश्का ने जाकर उसे सूचना दी कि दोनों युवक दोस्त वापस आगये हैं, तो वह ख़ुशी के मारे सोफ़े से उछलकर चिल्ला उठा। पाल पिट्रोविच के हृदय में भी एक प्रकार की आह्लाद-मिश्रित चेतनता उत्पन्न होआयी और दोनों यात्रियों से हाथ मिलाते समय वह नम्रतापूर्वक मुस्कराया। इसके बाद वार्तालाप और प्रश्नों की झड़ी लग गयी, जिसमें आरकाडी ने पूरी सरगर्मी से भाग लिया—विशेषतः भोजन के समय। रात में भोजन बहुत देर तक इस कारण जारी रहा कि निकोलाई पिट्रोविच ने कई बढ़िया बोतलें शराब की मँगवायीं, जो आज ही मास्को से आयी थीं। निकोलाई पिट्रोविच ने आज खाने-पीने, बातचीत और हँसी-मज़ाक करने में इतनी

अधिक व्यस्तता दिखलायी कि उसके कपोल लाल हो गये और उसके हास्य में आधे बचपन और आधे उन्माद की पुट मालूम होती थी। यह प्रमोद बढ़ते-बढ़ते रसोईघर तक जा पहुँचा, जहाँ दुनियाशा बराबर दरवाज़े खटखटाती रही। जिस समय खाना-पीना समाप्त करके पीटर अपने सितार पर क़ज़ाकों का नृत्य-वाद्य सुनाने बैठा, तो प्रातःकाल के तीन बज चुके थे। रात्रि की निस्तब्धता में वह गान मधुर अवश्य लगता; किन्तु प्रकृति ने सबको ऐसा तन्द्रा-विभोर बना दिया कि वैसी अवस्था में संगीत आदि कोई भी सुसंस्कृत आकर्षण निद्रा से अधिक आकर्षक नहीं सिद्ध हो सकता।

वास्तव में इधर कुछ दिनों से मैरिनो में जीवन सुखपूर्वक नहीं व्यतीत किया जा सकता था। इसका विशेष कारण यह था कि बेचारा निकोलाई पिट्रोविच ज़मींदारी के प्रबन्ध के झंझटों में ऐसी बुरी तरह से फँस गया था कि दिन-पर-दिन उसकी परेशानी बढ़ती ही जा रही थी। सबसे अधिक बुराई मज़दूरों से किराये पर काम लेने से उत्पन्न हुई, जिसके फल-स्वरूप कुछ मज़दूर बराबर यही माँग पेश करते रहे कि या तो उनकी मज़दूरी बढ़ा दी जाय, या फिर उन्हें पूर्णतः स्वतंत्र कर दिया जाय।* कुछ मज़दूर यह चाहते थे कि ज्यों ही उन्हें उनके छुडाने-भर को रुपये मिलें, वह उन्हें जमा करके फ़ौरन

---

*रूस में उस समय यह प्रथा प्रचलित थी कि मज़दूरों को गुलामों के रूप में रक्खा जाता था और उनसे थोड़ी मज़दूरी

गुलामी से मुक्त हो जायँ। इधर कुछ घोड़े भी बीमार पड़ गये, कुछ औज़ार जला दिये गये और सभी मज़दूर भद्दे ढंग से काम करने लगे। एक चक्की की मशीन, जो हाल ही में मास्को से मँगायी गयी थी, अधिक वज़न के कारण रद्दी सिद्ध होगयी, एक दूसरी मशीन काम शुरू करते ही टूट गयी, पशुओं का आधा बाड़ा जलकर इसलिये ख़ाक हो गया कि एक अन्धी गुलाम स्त्री ने जलती लकड़ी से अपनी गाय को मारा, जिससे चिनगारियाँ छप्पर पर पड़ी और हवा तेज़ चलने के कारण अग्नि प्रज्वलित हो उठी (यद्यपि अन्धी का यह बयान था कि आग मालिक के दुग्ध-भण्डारवाली अँगीठी से किसी की असावधानी से उड़कर छप्पर पर जा पड़ने के कारण लगी होगी)। इसके अतिरिक्त कारिन्दा मोटा और सुस्त हो गया था (जैसा कि आराम से ज़िन्दगी बसर करनेवाले सभी रूसी हो जाते हैं) और वह निकोलाई पिट्रोविच से बहुत घृणा करने लगा था। उसने अपनी क्रियाशीलताओं को इतनी सीमित कर लिया था कि सिवा आसपास से जानेवाले सुअरों पर एकाध भाला चला देने और अर्द्ध-नग्न गुलाम लड़कों को डाँट-फटकार सुनाने के और कोई काम न करता और शेष समय बिस्तरे पर लेटे-लेटे गुज़ारता था। फिर ऐसे किसान, जिन्होंने 'आबरोक'-प्रणाली के अनुसार ज़मीन में हिस्से

देकर मनमाना काम लिया जाता था। एक ख़ास रक़म अदा करने पर ही वे गुलामी से मुक्त किये जाते थे।

प्राप्त किये थे, ज़मीन का लगान नहीं अदा कर सके और उन्होंने शहतीर चुराने का ऐसा पक्का अभ्यास कर लिया कि हर रात चौकीदार दो-एक चोर ज़रूर पकड़ता था। साथ ही कोठी के पासवाले मैदान में चरने के लिए छोड़े हुए घोड़ों को काञ्जी-हाउस पहुँचाना पड़ता था। इस प्रकार के अनधिकृत स्थान को चरागाह बनाने के फल-स्वरूप निकोलाई पिट्रोविच ने घोड़ों को ज़ब्त कर लेने की डिग्री प्राप्त करली थी; पर साधारणतः होता यही था कि घोड़ों को दो-एक दिन अपने ख़र्च पर रखने के बाद उसके मालिक किसान को लौटा दिया जाता था। इन सब आफ़तों के अलावा एक बात और थी—वह यह कि किसान आपस में भी लड़ने लग गये। भाई-भाइयों में उनकी मज़दूरी के बँटवारे के लिये, स्त्रियों में एक ही झोंपड़ी में गुज़ारा न कर सकने के कारण, शत्रुता बढ़ने लगी, जिसके कारण एक-एक शब्द पर सारे घर में कुहराम मच जाता था और ख़ूब लड़ने-भिड़ने के बाद सब-के-सब न्याय प्राप्त करने के लिये मालिक के दरबार में आकर दुहाई देते थे और कभी-कभी घर के अन्दर तक घुस जाते थे (उनके चेहरों पर प्रायः चोट और शराब के नशे की मस्ती दिखायी देती थी) और तुरन्त फ़ैसला चाहते थे। इधर स्त्रियाँ (जो पुरुषों के साथ-साथ वादी-प्रतिवादी के रूप में आती थीं) सिसकियाँ लेकर, रोकर और श्राप देकर अपना बयान सुनाने को प्रस्तुत होती थीं। जब-कभी इस प्रकार की घटना होती, निकोलाई पिट्रोविच विद्रोही दलों

को एक दूसरे से अलग करते थे और ज़ोर से गर्जना पड़ता था, यद्यपि वह पहले से ही जानता था कि निष्पक्ष फ़ैसले की वहाँ बिल्कुल सम्भावना नहीं है। इन सब झंझटों के अलावा एक क्रियात्मक झगड़ा यह भी था कि फ़सल काटने के लिये यथेष्ट आदमियों का अभाव हो गया था, जिसका कारण यह था कि एक पड़ोसी भलेमानस दलाल ने दो रुपये प्रति देसियातिनी की कटाई पर बहुत से मज़दूर इकट्ठे कर लिये और अन्त में उन्हें धोखा दिया। वर्द्धित मज़दूरी पर उसने स्त्री-मज़दूरिनों को भी इकट्ठा किया था। इधर अनाज के पके-पकाये खेत खड़े-खड़े सड़ रहे थे और बाद में स्त्रियों ने कटाई में तब तक भाग नहीं लिया, जब तक कि निरीक्षकों के संघ ने पहले की मज़दूरी-सहित सारी मज़दूरी प्रतिशतक के हिसाब से चुकाने का प्रबन्ध नहीं कर दिया।

"इससे कोई फ़ायदा न होगा," निकोलाई पिट्रोविच निराशापूर्वक कहा करता—"मेरा सिद्धान्त इन लोगों से लड़ने या मैजिस्ट्रेट को बुलाने के विपरीत है; लेकिन ऐसे आदमियों को बिना घुड़की-धमकी दिये काम बिल्कुल नहीं चल सकता।"

"शान्त हो, शान्त हो!" पाल पिट्रोविच परामर्श देता। इसके बाद वह क्रुद्ध होकर मुँह बनाता, भँवें चढ़ाता और मूँछें मरोड़ने लगता।

बज़ारोव इन झगड़ों से बिल्कुल अलग रहता था—एक मेहमान की हैसियत से उसे इन मामलों में दख़ल देने की

ज़रूरत ही क्या थी। जिस दिन से वह यहाँ आया, उसी दिन से स्वतंत्रतापूर्वक मेढकों के चीर-फाड़ तथा अन्य रासायनिक प्रक्रियाओं में लग गया। इधर आरकाडी अपने को पिता की सहायता के लिये बाध्य समझता था, इसलिये वह सब शिकायतों को धैर्यपूर्वक सुनता था और एक मौक़े पर तो उसने उसे सलाह भी दे डाली (यद्यपि वहाँ उसकी सलाह सापेक्ष नहीं थी, पर उससे यह पता लग गया कि उसे उस मामले में अपने भले-बुरे का ख़याल है)। वास्तव में ज़मींदारी का प्रबन्ध उसके लिये पूर्णतः अप्रिय नहीं था, और वह कृषि-सम्बन्धी समस्याओं पर बड़ी ख़ुशी के साथ विचार करता था; किन्तु उसका मस्तिष्क अन्य विचारों से ख़ाली नहीं रहता था। उसने आश्चर्य के साथ इस बात पर ग़ौर किया कि उसका विचार बराबर निकोल्सको की ओर लगा रहता है; और यद्यपि एक समय ऐसा था, जब यदि उससे यह कहा जाता कि तुम और बज़ारोव एक ही मकान में, एक ही छत के नीचे रहोगे—और वह भी अपने पिता के ही मकान में—तो वह आश्चर्य में पड़ जाता, पर अब ऐसा समय आ ही गया और यद्यपि वह वहाँ रहता था, पर उसका मस्तिष्क इधर-उधर चक्कर लगाता रहता था। इसीलिये उसने ख़ूब टहलने की आदत डाल ली और नित्य-प्रति तब तक टहलता रहता, जब तक कि थककर चूर न होजाता; किन्तु इससे भी उसे सन्तोष नहीं हुआ, और अन्ततः अपने पिता के साथ वार्तालाप करने पर उसे मालूम हुआ कि हाल में

कागज़ों के ढेर में कुछ बड़े ही दिलचस्प पत्र मिले थे, जो आरकाडी की माँ ने मैडम ओडिन्तसोव की माँ को लिखे थे। उसी क्षण से आरकाडी अपने पिता को उन पत्रों को पुनः खोज निकालने के लिये बाध्य करने लगा और इस ढूँढ़-खोज में बीसों बक्स और दराज़ उलट डाले, और जब वे पत्र प्राप्त होगये, तब कहीं उसे चैन पड़ा और उसे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उसने अपने अस्तित्व का ध्येय सामने देख लिया है।

"आप दोनों से ही मैं यह बात कह रही हूँ," वह मन-ही-मन गुनगुनाया—"हाँ, यही तो कहा था उसने। कुछ भी हो, मैं जाऊँगा।"

पर फिर जब उसे हाल की यात्रा और उस शिथिल स्वागत की याद आती, तो भीरुता एवं भद्देपन के ख़याल से वह जकड़ उठता। अन्ततः युवक की साहसिकता और भाग्य-परीक्षा की गुप्त अभिलाषा ने बिना किसी की सहायता और रक्षा के उसकी शक्ति-परीक्षा को उद्यत कर दिया और उसने विजय-प्राप्ति की चेष्टा करने के लिये निश्चय कर लिया।

दस दिन बाद उसने एक बहाने का अविष्कार कर डाला, जिसका रूप यह था कि वह रविवार के स्कूलों की कार्य-प्रणाली का अध्ययन करने के लिये शहर जायगा और वहीं से निकोल्सको। गाड़ी पर रवाना हो जाने के बाद वह जिस संशय, अधीरता और प्रसन्नता के भावसे अपने कोचवान को उत्साहित करता आगे बढ़ता जा रहा था, उस समय उसकी उपमा उस

युवक अफ़सर से दी जा सकती थी, जो द्वन्द्व-युद्ध के लिये जा रहा हो और जिसका गला भावावेग के कारण रुकने लगता हो।

"अन्य बातों के अतिरिक्त," उसने मन-ही-मन सोचा—"मुझे अपने सम्बन्ध में बहुत नहीं सोचना चाहिए।" और यद्यपि जो कोचवान उसके साथ जा रहा था, वह बड़ा ही बदमाश था और हर शराबख़ाने पर रुकता था, पर शीघ्र ही कोठी की वह सुपरिचित छत नज़र आने लगी।

"पर मैं क्या कर रहा हूँ?" उसने अब विचार किया—"क्या वापस चले चलना ठीक न होगा?"

दुर्भाग्यवश कोचवान की ज़बान की टिटकारी और सीटी की आवाज़ से गाड़ी तेज़ी से आगे बढ़ चली और घोड़ों की टापों तथा गाड़ी के पहियों की संयुक्त आवाज़ से पुल घरघरा उठा। गाड़ी अब सनोवर के कुञ्ज में से होकर चलने लगी। हरी पत्तियों के बीच में से किसी के लाल वस्त्र की चमक दीख रही थी! रेशमी छतरी के नीचे से किसी के तरुण मुख-मण्डल की झलक कैसी दीख रही थी! हाँ, हाँ—वह कतिया ही है! क्षण-भर में उसने उसे पहचान लिया, और कतिया भी उसे देखते ही पहचान गयी। कोचवान से गाड़ी रोकने के लिये कहकर आरकाडी गाड़ी से नीचे उतर पड़ा और एक साँस में उस किशोरी के पास जा पहुँचा।

"अच्छा, आप हैं?" कतिया ने कहा। साथ ही उसके

चेहरे पर लालिमा भी दौड़ गयी—"अच्छा, मैं जाकर बहन को देखूँ। वह बाग में है, और आपको देखकर ख़ुश होगी।"

कतिया आरकाडी को साथ लेकर बाग़ की तरफ़ चली। वह कैसा भाग्यवान् है कि आते ही वह उससे मिल गयी! यदि वह उसकी सगी बहन होती, तो शायद उसे उससे मिलकर उतनी ख़ुशी न होती। हाँ, वास्तव में वह भाग्यवान् है। अब ख़ानसामे को देखने की ज़रूरत न होगी, और न उसके आगमन की शिष्टाचार-पूर्ण सूचना देने की आवश्कता ही होगी।

रास्ते से मुड़ते ही उसे एना सर्जीवना दिखायी पड़ी। वह दूसरी तरफ़ मुँह करके खड़ी थी, पर किसी के पैरों की आहट सुनते ही उसने मुँह फेरा।

आरकाडी फिर घबराहट के चंगुल में फँस गया; पर ज्यों ही मैडम बोली, वह पुनः उत्साहित हो उठा।

"कहिए, अच्छी तरह रहे?" उसने मुस्कराकर आगे बढ़ते हुए मीठे और स्थिर स्वर में कहा—"यह तुम्हें कहाँ मिल गये, कतिया?"

"मैं अपने साथ कोई ऐसी चीज़ लाया हूँ, जिसकी आप कभी आशा नहीं कर सकती थीं," आरकाडीने कहा—"क्योंकि मैं—"

"पर आप अपने आप को लाये हैं," मैडमने कहा—"यही सब से बढ़िया चीज़ है।"

———

२३

आरकाडी को निन्दात्मक खेद प्रकट करके विदा करने के बाद (और साथ ही उस पर यह भी प्रकट करके कि उसकी यात्रा के उद्देश्य से वह अनभिज्ञ नहीं है), बज़ारोव पूर्णतः एकान्तवास करने लगा, क्योंकि उसे अपना काम करने की धुन लगी हुई थी। अब वह पाल पिट्रोविच से वितण्डावाद भी नहीं करता था। इसका एक कारण यह भी था कि पाल पिट्रोविच अब केवल अमीरी के ही रंग में रँग गया था और अपने विचार नपे-तुले वाक्य-खण्डों में प्रकट करता था। केवल एक ही बार ऐसा अवसर आया, जब उसने किसानों के अधिकार का प्रश्न लेकर बज़ारोव का विरोध किया। किन्तु सहसा उसने अपने आपको

रोक लिया और ठण्डी नम्रता प्रदर्शित करते हुए कहा—

"यह स्पष्ट है कि हम दोनों एक दूसरे को कभी नहीं समझ सकेंगे, किसी भी मौक़े पर मैं आपको समझ सकने की प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त कर सका।"

"सच है," बज़ारोवने स्वीकार किया "क्योंकि एक व्यक्ति प्रकाश-किरण की गति को समझ सकता है और इस बात से अनभिज्ञ हो सकता है कि धूप में क्या हो रहा है, किन्तु यदि वह यह देखता है कि दूसरा व्यक्ति अपनी नाक उससे भिन्न ढंग से साफ़ करता है, तो वह फ़ौरन् विस्मित हो जाता है।"

इसके अतिरिक्त ऐसे भी अवसर आये, जब पाल पिट्रोविच ने बज़ारोव के परीक्षण देखने के लिये आज्ञा माँगी, और एक बार तो उसने यहाँ तक किया कि अपना सफ़ाचट और सुगन्ध-चर्चित मुख-मण्डल अणुवीक्षण यंत्र में लगाकर यह देखने का कष्ट उठाया कि सड़ते हुए जन्तु के शरीर में पड़ा हुआ पारदर्शी कीड़ा एक हरे से पदार्थ को कैसे निगलता और फिर अपने गले में जमे हुए दाँत-के-से उभाड़ से उसे कैसे चबाता है। निकोलाई पिट्रोविच तो अब बज़ारोव के कमरे में और अधिक आने लगा। वास्तव में, यदि ज़मींदारी के प्रबन्ध की दिक़्क़त न होती, तो अब वह अपना सारा समय इस क्रिया में व्यतीत करता, जिसे वह 'आत्म-विकास' कहने लगा था। उसने कभी इस प्रकृतिवादी युवक (बज़ारोव) के कार्य में बाधा नहीं डाली—बल्कि इसके विपरीत वह कमरे के एक कोने में अलग

बैठता और एक-दो गम्भीर प्रश्नों के अतिरिक्त और कोई बात न करके चुपचाप ध्यानपूर्वक परीक्षण की क्रियाएँ देखता रहता। भोजन के समय भी वह पदार्थ-विद्या, जन्तु-विज्ञान या रसायन पर ही वार्तालाप करने की चेष्टा करता, क्योंकि बहुत विचार के बाद वह इस परिणाम पर पहुँचा था, कि अन्य किसी क्षेत्र (उद्योग-धन्धे या राजनीति) में भाग लेने पर बहुत अधिक मुठभेड़ का ख़तरा रहता है, और पारस्परिक कटुता तो हरदम बनी रहती है। उसने यह ठीक ही सोचा कि बज़ारोव के प्रति उसके भाई की शत्रुता वास्तव में कुछ भी नहीं घटी है। इस विचार की पुष्टि इस घटना-द्वारा और होगयी कि हाल में जब पड़ोस में हैज़े का प्रकोप हुआ और ख़ास मैरिनो में भी दो व्यक्ति उक्त रोग से चल बसे, तब एक रात को पाल पिट्रोविच को एक हल्की-सी मूर्छा आगयी; फिर भी उसने बज़ारोव को शुश्रूषा के लिए नहीं बुलवाया, और जब दूसरे दिन मिलने पर बज़ारोव ने पूछा कि उसने उसे क्यों नहीं बुलवा लिया, तो पाल पिट्रोविच—जिसके चेहरे से अभी तक ज़र्दी दूर नहीं हुई थी और जो बालों पर पूरी सावधानी के साथ कंघी और ब्रुश फेरे हुए था—बोला—"क्या आपने मुझ से स्वयं नहीं कहा था कि औषधि पर आपका विश्वास नहीं है?"

धीरे-धीरे दिन बीत चले। यद्यपि बज़ारोव अपना सारा समय अपने परीक्षण के कार्य में लगाता था, फिर भी इस घर में एक व्यक्ति ऐसा था, जिससे वह कोई दुराव नहीं रखता था

और जिससे बात करने की उसकी सदा इच्छा बनी रहती थी। वह व्यक्ति और कोई नहीं, थेनिश्का थी। प्रायः नित्य प्रातःकाल उसका सामना थेनिश्का से उस समय हुआ करता था, जब वह बाग़ या आँगन में टहलती रहती थी, पर वह कभी उसके कमरे में नहीं गया; न थेनिश्का ही एकबार के अतिरिक्त—जब मितिआ को नहलाने के लिए उसे बज़ारोव की मदद की ज़रूरत थी—कभी इसके दरवाज़े पर गयी। वह न-केवल बज़ारोव पर विश्वास करती थी, वरन् उससे किसी प्रकार का भय भी नहीं करती थी और उसकी उपस्थिति में इतनी स्वतन्त्रता प्रदर्शित करती थी, जितनी वह स्वयं निकोलाई पिट्रोविच की मौजूदगी में भी न करती। कदाचित् इसका कारण यह था कि उसने अज्ञात भाव से यह समझ लिया था कि बज़ारोव में उसके प्रति कोई भी ऐसी बात नहीं है, जो अवाञ्छनीय कही जा सके, न उसमें वह विशिष्ट तत्व ही है, जो तत्काल आकर्षित और विकर्षित करने की क्षमता रखती है। यह युवक निहिलिस्ट उसकी दृष्टि में एक अच्छे डाक्टर के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उसके सामने वह सदा ऐसे निर्लज्ज भाव से रहती कि वह अपने बच्चे को उछाल-उछालकर निर्लज्जतापूर्वक खिलाया करती थी, और एक बार तो मामला यहाँ तक बढ़ गया कि सिर-दर्द की दवा का चम्मच उसने बज़ारोव के ही हाथों अपने मुँह में डलवाया। यह सच है कि निकोलाई पिट्रोविच की उपस्थिति में वह बज़ारोव से कतराती थी, किन्तु ऐसा करने में

वह औचित्य की अपेक्षा शिष्टाचार का विशेष ख़याल रखती थी। रहा पाल पिट्रोविच, सो उससे तो वह अत्यधिक डरती थी, क्योंकि वह उसे सूक्ष्म और स्थिर दृष्टि से देखने और चुप-चाप अंग्रेज़ी सूट पहने और जेब में हाथ डाले सहसा उसके पीछे आ उपस्थित होने का ऐसा अभ्यस्त था कि मालूम होता था, कोई व्यक्ति अकस्मात् ज़मीन फोड़कर निकल आया है। "जब कभी मैं उन्हें देखती हूँ, मेरा सारा बदन ठण्डा होजाता है।" एक बार उसने दुनियाशा से शिकायत के तौर पर कहा था, जिसके बाद दुनियाशा के विचार उस 'अनुभूतिशून्य' युवक (बज़ारोव) की ओर मुड़े, जो उसके हृदय को क्रूरता के साथ व्यथित कर रहा था।

ऐसी अवस्था में थेनिश्का बज़ारोव को पसन्द करती थी और बज़ारोव थेनिश्का को। वास्तव में जब-जब बज़ारोव उससे बातें करने लगता, तो उसकी मुखाकृति बदलने लगती और जब वह प्रसन्न-बदन होकर सुन्दर-भाव प्रकट करने लगता, तो उसकी अस्पष्ट गर्वोन्मत्तता चपल विह्वलता के रूप में परिणत हो जाती थी। इधर थेनिश्का का सौन्दर्य दिन-पर-दिन निखरता जा रहा था। नवयुवतियों के जीवन में एक ख़ास मौसिम ग्रीष्मकालीन गुलाब की सी होता है, जब वे कलियों की तरह अपनी पंखड़ियाँ खोल-खोलकर विकसित होने लगती हैं—थेनिश्का ने उस मौसिम में अभी-अभी प्रवेश किया था। सभी परि-स्थितियाँ—यहाँ तक कि जुलाई मास की गर्मी भी—उस समय

उस यौवन-विकास में सहायक सिद्ध हुईं। एक हल्के श्वेत गाउन में वह उस वस्त्र की अपेक्षा अधिक हल्की और प्रदीप्त मालूम होती थी, और यद्यपि वह कड़ी धूप से बचती थी, फिर भी उष्ण वायु के प्रवाह से उसके कपोलों और कानों पर हल्की श्यामलता फैल गयी थी और उसका शरीर विश्राम-प्रिय होगया था। उसकी आँखें निद्रा-शैथिल्य से भरी रहती थीं। अब वह कोई काम नहीं कर सकती थी; केवल पेट पर हाथ रक्खे बैठी रहती थी। वह अब घूमने-फिरने भी कम जाती थी और कुछ असन्तुष्ट और लालसा-विद्ध-सी बनी रहती थी; किन्तु उसमें घृणा और जड़ता का नितान्त अभाव था।

"तुम्हें बार-बार स्नान करना चाहिए।" निकोलाई पिट्रोविच ने एक दिन उससे कहा (उसने एक पक्के जलाशय में चँदवा लगाकर उसे स्नान के लिये सुरक्षित कर दिया था)।

"ओह," उसने साँस खींचकर कहा—"जलाशय तक जाने में ही मेरी आधी जान निकल जाती है—और वापस आने में भी यही हाल होता है। बाग़ में कोई छाया भी तो नहीं है।"

"सच है।" माथे का पसीना पोंछते हुए निकोलाई ने स्वीकार किया।

एक दिन प्रातःकाल सात बजे जब बज़ारोव सुबह की सैर-करके वापस आ रहा था, तो बकायन के कुञ्ज में थेनिश्का का सामना हो गया। यद्यपि गर्मी की ऋतु थी, फिर भी बकायन

की पत्तियाँ हरी और घनी थीं। सदा की भाँति उसने एक सफ़ेद ओढ़नी सिर पर डाल रक्खी थी और जिस बेंच पर वह बैठी थी, उसीके पास लाल और सफ़ेद गुलाब के फूल रक्खे हुए थे, जिनकी पङ्खड़ियों में ओस-कण अब भी झलक रहे थे। बज़ारोव ने पास जाकर उससे नमस्कार किया।

"अच्छा, आप हैं, इवजिनी वैसिलिच !" उसने ओढ़नी की कोर हटाते हुए बज़ारोव की ओर देखकर कहा। ओढ़नी खसक जाने के कारण उसकी बाहें कुहनियों तक खुल गयीं।

"आप क्या कर रही हैं ?" बज़ारोव ने उसके पास बैठते हुए पूछा—"क्या गुलदस्ता बना रही हैं ?"

"हाँ, नाश्ते की मेज़ पर रखने के लिये। निकोलाई पिट्रोविच ऐसी चीज़ों के बड़े शौक़ीन हैं।"

"पर नाश्ते का समय अभी नहीं हुआ है। ये फूल तो तब तक ख़राब हो जायँगे।"

"मैं जानती हूँ; पर मैं अभी से इसलिये चुन रही हूँ कि धूप बढ़ जाने पर तो चलना मुश्किल हो जाता है। यही समय ऐसा है जब ठीक-ठीक साँस ली जा सकती है। गर्मी के मारे मुझे तो मूर्च्छा आ जाती है। मुझे डर है कि बीमार न हो जाऊँ।"

"यह तो सिर्फ़ आपकी ख़ामख़्याली है। लाइये, नब्ज़ तो देखूँ।"

बज़ारोव ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। नाड़ी की

गति ऐसी सामान्य थी कि उसने उसकी परिगणना की आवश्यकता नहीं समझी।

"आप सौ वर्ष जीवेंगी।" वज़ारोव ने उसकी कलाई छोड़ते हुए कहा।

"ईश्वर ऐसा न करे!" वह बोली।

"क्यों? आप दीर्घ जीवन तो पसन्द करेंगी न?"

"हाँ; पर सौ वर्ष नहीं। मेरी दादी पचासी वर्ष तक जीवित रही थी, पर उसने बड़ा दुख भोगा। बहुत दिनों से उसे खाँसी की बीमारी थी; वह अन्धी, बहरी तो थी ही, उसकी कमर भी टेढ़ी हो गयी थी—मतलब यह कि उसका जीवन भार-स्वरूप हो गया था। ऐसे जीवन से भला क्या लाभ?"

"तो आप समझती हैं कि जवानी का स्थिर रहना अच्छा है?"

"हाँ, क्यों नहीं?"

"जवानी अच्छी क्यों है? मुझे यह बताइए।"

"'अच्छी क्यों है?' जब तक जवानी है, जो मन में आये, वही किया जा सकता है—घूमना-फिरना, चीज़ें उठाना और दूसरों का आश्रित न रहना। क्या यह अच्छी बात नहीं है?"

"मैं नहीं जानता। मैंने कभी इस बात की पर्वाह नहीं की कि जवानी या बुढ़ापा क्या होता है।"

"आप ऐसा क्यों कहते हैं? वास्तव में आपका मतलब तो यह नहीं है?"

"नहीं ? अच्छा, सोचिए मेरी जवानी मेरे किस काम आ रही है। मैं अकेला हूँ; न घर है, न······"

"पर यह सब तो आप पर ही निर्भर है।"

"नहीं, मुझ पर नहीं। मैं तो यही चाहता हूँ कि कोई मेरी एकान्तता पर तरस खाय !"

थेनिश्का ने उसकी ओर देखा; पर बोली नहीं। क्षण-भर बाद उसने कहा—

"आपके हाथ में यह कौन-सी किताब है ?"

"यह ? यह एक विद्वान् की कृति है।"

"आप पढ़ते किस प्रकार हैं ? कभी थकावट भी नहीं मालूम होती ? मैं समझती हूँ, यह सारी किताब आप पढ़ गये होंगे।"

"वास्तव में सब तो नहीं पढ़ गया।······पर इसकी कुछ पंक्तियाँ पढ़ने की चेष्टा करता हूँ।"

"मैं तो कभी न समझ सकूँ। क्या यह रूसी भाषा में है ?" (उसने वह मोटी पुस्तक अपने हाथ में ले ली।)

"कैसी मोटी पुस्तक है !" उसने कहा।

"हाँ, और यह रूसी भाषा में ही है।"

"तो भी मैं इसे नहीं समझ सकूँगी।"

"मैं आपको समझाना नहीं चाहता, मैं तो सिर्फ़ यही चाहता हूँ कि आप पढ़ें, और मैं देखूँ। क्योंकि जब आप पढ़ने लगती हैं, तो अपनी छोटी नाक बड़ी ख़ूबसूरती के साथ सिकुड़ती है !"

थेनिश्का ने पुस्तक का एक पृष्ठ खोल लिया और ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगी; पर शीघ्र-ही वह खिलखिलाकर हँस पड़ी और उसने पुस्तक बेंच पर डाल दी, जहाँ से सरककर वह ज़मीनपर जा गिरी।

"मैं आपको हँसते देखकर बहुत प्रसन्न होता हूँ।" बज़ारोव ने कहा।

"चुप रहिए।" थेनिश्का ने बात काटकर कहा।

"आपकी बातें सुनकर भी गद्गद् होजाता हूँ। आपके स्वर में बहते नाले की सी 'कलकल' है।"

उसने अपना मुँह फेर लिया और फूल छाँटने लगी। क्षण-भर बाद वह फिर बोली—

"आप मेरी बातें सुनकर क्यों प्रसन्न होते हैं? आपने कितनी ही सुन्दरी और चतुर महिलाओं की बातें सुनी होंगी!"

"तो भी मैं आपको निश्चय दिलाता हूँ कि संसार की सभी 'सुन्दरी और चतुर महिलाएँ' आपकी कानी उँगली की भी बराबरी नहीं कर सकतीं।"

"ओहो!" उसने अपना हाथ समेटकर कहा।

बज़ारोव ने पुस्तक ज़मीन पर से उठा ली।

"यह चिकित्सा की पुस्तक है," उसने कहा—"आपने इसे फेंक क्यों दी?"

"'यह चिकित्सा की पुस्तक है,'" उसने दुहराया और उसकी ओर मुँह करके बोली—"आपको मालूम है, जबसे

आपने वह दवा दी थी—याद है या नहीं ?—तब से मितिया को ख़ूब मज़े में नींद आती है ! मैं आपको कभी काफ़ी तौरपर धन्यवाद नहीं दे सकती। आप सचमुच बड़े अच्छे आदमी हैं!"

"पर इस चिकित्सकको फ़ीस भी तो अदा करनी चाहिए," बज़ारोव ने मुस्कराकर कहा—"डाक्टर कभी मुफ़्त में काम नहीं किया करते।"

इसपर थेनिश्का ने अपनी आँखें ऊपर उठायीं। मुख-मण्डल के ऊर्द्ध भाग की प्रदीप्ति से उसकी आँखें और भी अधिक काली प्रतीत होती थीं। वास्तव में वह इस बात पर ग़ौर कर रही थी कि बज़ारोव उक्त बातें हृदय से कह रहा है, या केवल दिल्लगी में उसने ऐसा कह दिया है।

"अवश्य, मैं आपकी फ़ीस चुकाकर प्रसन्न होऊँगी," उसने कहा—"पर पहले मैं इसकी चर्चा निकोलाई पिट्रोविच से करदूँ।"

"क्या ?" उसने कहा—"तो आप समझती हैं कि मैं रुपये माँग रहा हूँ ? नहीं, मैं आपसे रक़म नहीं चाहता।"

"तो फिर ?" उसने पूछा।

"क्या ? अनुमान लगाइये।"

"मैं कैसे अनुमान लगा सकती हूँ ?"

"तो फिर मैं ज़रूर कहूँगा। मैं, मैं, मैं इन फूलों में से एक चाहता हूँ।"

वह ठठाकर हँस पड़ी, और इस माँग से ख़ुशी के मारे

उसने दोनों हाथ मिला लिये । फिर कुछ मानसिक शान्ति के साथ उसने हँसी जारी रक्खी। बज़ारोव ने उसकी ओर देखा।

"ओह, मेरी हँसी के लिये माफ़ कीजिएगा, इवजिनी वैसिलिच," उसने कहा (बेंच पर झुककर उसने फूलों को टटोला) —"कैसा फूल आप पसन्द करेंगे, लाल या सफ़ेद ?"

"लाल; पर बहुत बड़ा न हो।"

"तो यह लीजिए।" उसने बैठते हुए कहा। किन्तु यह कहकर उसने अपने फैले हुए हाथ पीछे खींच लिये और ओठ चबाकर लता-कुञ्ज के फाटक की ओर देखते हुए ध्यान से सुना।

"यह क्या ?" बज़ारोव ने पूछा—"क्या निकोलाई पिट्रोविच आरहे हैं ?"

"नहीं। घरके सब लोग तो खेतों पर गये हैं। दूसरे मैं पाल पिट्रोविच के अतिरिक्त और किसी से डरती भी नहीं। मैंने यही सोचा कि, कि—"

"आपने क्या सोचा ?"

"यही कि कोई इधर से आरहा होगा। ऐसा मालूम पड़ता है कि मेरी ग़लती थी। यह फूल लीजिए।"

उसने बज़ारोव को वह फूल दे दिया।

"आप पाल पिट्रोविच से क्यों डरती हैं ?" बज़ारोव ने पूछा।

"इसलिये कि वह मुझे डराते हैं—जब मैं उनसे बातें करती हूँ, तो वे कोई जवाब नहीं देते; पर मेरी ओर एक अर्थपूर्ण

दृष्टि से देखते हैं। मैं समझती हूं, आप भी उन्हें नहीं पसन्द करते? आपका उनके साथ झगड़ा हुआ था न? मैं नहीं जानती कि झगड़ा किस सम्बन्ध में था; पर कम-से-कम इतना जानती हूँ कि आपने उन्हें ऐसा परास्त किया था, जैसे, जैसे—"

उसने एक ऐसा इशारा किया, जिससे उसकी समझ में बज़ारोव की चाल पिट्रोविच पर विजय सूचित होती थी।

"और वे मुझे भी परास्त कर देते," बज़ारोव ने कहा "अगर आप मेरी जगह होतीं?"

"मैं कैसे होती? आपका और उनका जैसा समझौता होगया, उससे अच्छा हमारे साथ नहीं हो सकता था।"

"आप ऐसा समझती हैं? तो मैं आपको बतला दूं कि एक छोटा हाथ ऐसा भी है जो अपनी कानी उंगली से मुझे बाँध सकता है।"

"वह किसका हाथ है?"

"मैं समझता हूँ, आप समझ गयी होंगी, पर यह फूल तो सूँघिए, जो आपने मुझे दिया है।"

वह फूल की तरफ़ झुकी, और ऐसा करते समय उसकी ओढ़नी सिरपर से सरककर कन्धों पर आगयी और काला, कोमल, पतला तथा चमकदार केशपाश खुल गया।

"ठहरिए," बज़ारोव ने कहा—"मैं भी फूल सूँघूँगा।"

आगे झुककर बज़ारोव ने उसके ओठों को पूर्णतः चूम लिया।

वह चौंककर पीछे हट गयी और अपना हाथ बज़ारोव के सीने पर इस प्रकार मारा, जैसे उसे पीछे हटा रही हो; पर उसके हाथ का धक्का ऐसा कमज़ोर था कि बज़ारोव को एक बार पुनः उसका मुख चूमने का अवसर मिल गया।

सहसा बकायन की झाड़ियों में से सूखी खाँसी की आवाज़ सुनायी पड़ी, और ज्यों ही थेनिश्का बेंच के दूसरी छोर की ओर खिसकी कि पाल पिट्रोविच सामने दिखायी पड़ा, और वह दोनों के सामने झुककर खेदपूर्ण कड़ुवाहट के साथ बोला—"अच्छा, आप हैं?" तथा मुँह मोड़कर वहाँ से चलता बना। उसी क्षण थेनिश्का ने अपने फूल उठा लिये और लता-कुञ्ज से तेज़ी के साथ चल पड़ी। जाते-जाते उसने बज़ारोव के कान में कहा—"आपने अच्छा काम नहीं किया, इवजिनी वैसिलिच!" ये शब्द जो स्पष्टतः सत्य और वास्तविक थे, उसे धिक्कार के रूप में लगे।

अन्ततः बज़ारोव के विचार एक दूसरे दृश्य की ओर गये, जिधर वह अभी हाल में ही झुका था और उसकी चेतना-शक्ति को एक बड़ा भारी धक्का लगा; उसका मन अपने प्रति घृणा से भर गया और वह घबरा गया। उसने सिर हिलाकर व्यंग-भाव से अपनी बेवक़ूफ़ी पर अपने-आपको बधाई दी, और वहाँ से अपने कमरे की ओर चल पड़ा।

पाल पिट्रोविच बाग़ से निकलकर धीरे-धीरे जंगल में चला गया और वहाँ बहुत देर तक ठहरने के बाद जब नाश्ते के

लिये वापस आया, तो उसका चेहरा ऐसा उतरा हुआ था कि निकोलाई पिट्रोविच को पूछना पड़ा कि उसकी तबीयत खराब तो नहीं है।

"तुम जानते हो," पाल ने उत्तर में कहा—"मुझे प्रायः पित्त का प्रकोप हो जाया करता है।"

२४

दो घण्टे बाद पाल पिट्रोविच ने बज़ारोव का दरवाज़ा खट-खटाया ।

"मैं समझता हूँ कि आपके कार्य में बाधा डालने के लिये मुझे माफ़ी माँगनी चाहिए," खिड़की के पास बैठकर दोनों हाथ अपनी हाथी-दाँत की मूँठवाली छड़ी (जिसे वह अपने पास सदा नहीं रखता था) पर रखते हुए पाल ने कहा—"पर सच बात यह है कि परिस्थिति ऐसी आगयी है कि मुझे बाध्य होकर आपसे पाँच मिनट का समय लेने की प्रार्थना करनी पड़ रही है ।"

"मेरा सारा समय आपकी सेवा में उपस्थित है ।" बज़ारोव ने उत्तर दिया । उसके चेहरे पर पाल पिट्रोविच के चौखट के अन्दर घुसते ही एक विलक्षण-भाव दिखायी दे रहा था ।

"नहीं; पाँच मिनट ही काफ़ी होंगे। मैं आपसे एक सीधा-सा प्रश्न करने आया हूँ।"

"कैसा प्रश्न?"

"सुनिये। जब पहली बार आप मेरे भाई के घर में आये थे, और मुझे आपके साथ वार्तालाप करने का आनन्द प्राप्त हुआ था, उसके बाद आपने विभिन्न विषयों पर वार्तालाप किया था। पर यदि मेरी स्मरण-शक्ति मुझे धोखा नहीं देती, तो मैं कह सकता हूँ कि कभी आपके और मेरे दरम्यान, या मेरी उपस्थिति में किसी और के तथा आपके बीच, द्वन्द्व-युद्ध के सम्बन्ध में कोई बात नहीं हुई। इसलिये क्या आप मुझे इस विषय पर अपने विचारों से लाभान्वित करने का कष्ट स्वीकार करेंगे?"

बज़ारोव, जो आगन्तुक के स्वागत् के लिये उठ खड़ा हुआ था, मेज़ के किनारे पर बैठ गया और दोनों हाथ मोड़कर उसने अपने सीने पर रख लिये।

"मेरे विचार यह हैं," उसने जवाब दिया—"सैद्धान्तिक दृष्टि-बिन्दु से द्वन्द्व-युद्ध निरी मूर्खता है; किन्तु क्रियात्मक दृष्टि-बिन्दु से यह बिल्कुल भिन्न चीज़ है।"

"आपका मतलब (अगर मैंने आपको ठीक समझा है?) यह है कि सैद्धान्तिक विचारों के होते हुए भी आप क्रियात्मक रूप में अन्ततः सन्तुष्ट हुए बिना अपनी अप्रतिष्ठा नहीं होने देंगे?"

"आप मेरा मतलब ठीक समझ गये।"

"अच्छा ! आपके विचार जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, इससे मैं एक बड़ी द्विविधा से मुक्त हो गया।"

"आपका मतलब यह है कि आप इस सम्बन्ध में अनिश्चितावस्था में पड़े थे।"

"हाँ, यही बात है। मैं अपने विचार इस रूपमें इसलिये व्यक्त कर रहा हूँ कि आप मेरा अभिप्राय समझ जायँ। मैं आपके कालेज के लौंडों में से तो हूँ नहीं। फलतः मैं इस बातको दुहराता हूँ कि आपकी बात सुनकर मुझे अब वैसे दुःखद सत्कार्य में तत्काल पड़ने की आवश्यकता नहीं रही है। साफ़ शब्दों में इसका मतलब यह है कि मैंने आपके साथ लड़ने का निश्चय कर लिया है।"

बज़ारोव ने अपनी भँवें ज़रा ऊपर उठायीं।

"मुझसे लड़ने का ?" उसने कहा।

"हाँ, आपसे लड़ने का।"

"और इसका कारण—अगर आप मुझे बतला सकें ?"

"कारण ऐसा है, जिसे मैं बतला तो सकता हूँ; पर उसके सम्बन्ध में चुप ही रहना चाहता हूँ। केवल इतना कह देना ही पर्याप्त है कि आपकी उपस्थिति-मात्र से मुझे क्रोध आता है और मैं आपको घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देखता हूँ, और (यदि इतनी बातें अपर्याप्त हों, तो) मैं—"

"बस !" बज़ारोव ने कहा। उसकी आँखें पॉल की ही

आँखों की तरह दहक उठीं—"और कुछ कहना व्यर्थ होगा। आप मेरे ऊपर अपनी बहादुरी की धाक जमाना चाहते हैं, इसलिये वैसे चाहे मैं अस्वीकार भी कर देता, पर अब आपको भली भाँति सन्तुष्ट कर दूँगा।"

"मैं आपका कृतज्ञ हूँ। मैं पहले ही उत्साहित होगया था कि आप मेरी ललकार, बिना मेरे ज़बर्दस्ती का उपाय काम में लाये ही, स्वीकार कर लेंगे।"

"दूसरे शब्दों में, और बिना अलङ्कार के यह कह सकते हैं कि बिना इस छड़ी का उपाय काम में लाये ही।" बज़ारोव ने अत्यन्त बेपर्वाही का भाव प्रकट करते हुए कहा—"यही बहुत है। और बेइज़्ज़ती की ज़रूरत नहीं है—न वैसा करके आप अपने को ख़तरे से सुरक्षित ही समझ सकते हैं। ऐसी अवस्था में आप भलमनसी को हाथ से न जाने दें। मैं आपकी ललकार स्वीकार करता हूँ।"

"बहुत अच्छा।" पाल पिट्रोविच ने जवाब दिया और अपनी छड़ी अलग रख दी-—"दूसरी बात यह है कि हम लोगों की द्वन्द्व-सम्बन्धी शर्तों पर, कुछ विचार कर लिया जाय। पहली बात तो यह है कि आप कृपया यह बतलाने की कृपा करें कि आप इस बातकी आवश्यकता समझते हैं या नहीं कि मेरी ललकार का कोई ऐसा बहाना बना लिया जाय, जिससे यह प्रकट हो कि किसी मतभेद के कारण हम लोगों का युद्ध हो रहा है?"

"मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझता। इस प्रकार की बातें बिना किसी दिखावटी बहाने के ही अच्छी होती हैं।"

"मैं सहमत हूँ—पर मैं यह चाहता हूँ कि आप इस बात पर विचार करें कि हम लोगों के विरोध के वास्तविक कारण को प्रकट करना अनुचित होगा। इसलिये हमें संसार पर यह प्रकट कर देना चाहिए कि हम दोनों एक दूसरे को सहन नहीं कर सके। और अधिक कहने की आवश्यकता ही क्या होगी?"

"हाँ, आवश्यकता ही क्या होगी?" बज़ारोव ने व्यंग-भाव से दुहराया।

"और द्वन्द्व की वास्तविक शर्तों पर भी कुछ विचार हो जाना चाहिए। हम लोगों के पास कोई मध्यस्थ तो होंगे नहीं, क्योंकि हमें मध्यस्थ कहाँ मिल सकते हैं?—"

"बिल्कुल ठीक, कहाँ मिल सकते हैं?"

"मैं आपसे यह प्रस्ताव करता हूँ कि हम लोग कल प्रातःकाल लड़ें—छः बजे का समय ठीक होगा—युद्ध-स्थल जंगल का पश्चात्वर्ती भाग हो, हथियार पिस्तौल हों, और फ़ासला दस क़दम का।"

"अगर आपकी ऐसी इच्छा है, तो आठ-ही क़दम रखिए!"

"आठ क़दम सही; एक ही बात है।"

"प्रत्येक व्यक्ति दो-दो फ़ायर करे। और हममें से कोई मर जाय, ऐसी अवस्था के लिये हममें से प्रत्येक को अपनी-अपनी

अपनी जेब में इस आशय का पत्र लिखकर पहले ही डाल रखना चाहिए कि वह अपनी मृत्यु का पूरा ज़िम्मेदार ख़ुद है।"

"इस शर्त पर मुझे पूरी आपत्ति है," बज़ारोव ने कहा— "मैं समझता हूँ आप फ्राँसीसी उपन्यासों के पृष्ठों में भटक रहे हैं, और वास्तविकता से दूर पहुँच गये हैं।"

"सम्भव है। पर इससे तो आप सहमत होंगे कि मृत्यु का व्यर्थ सन्देह छोड़ जाना कोई अच्छी बात नहीं होगी ?"

"मैं मानता हूँ। किन्तु ऐसी भद्दी निन्दा से बचने का और भी उपाय हो सकता है—वह यह है कि अगर हमारे मध्यस्थ न होंगे, तो हम एक साक्षी तो रख ही सकते हैं।"

"अगर मैं पूछ सकूँ, तो बतलाइये, किसे रख सकते हैं ?"

"पीटर को।"

"पीटर ? कौन पीटर ?"

"वही पीटर नौकर, जो सामयिक संस्कृति की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ है, और यह कार्य भली भाँति सम्पन्न कर सकता है। वह ऐसे कीर्तिमय सुअवसर पर समुचित रूप से सहायक भी सिद्ध हो सकता है।"

"मैं समझता हूँ, आप दिल्लगी कर रहे हैं, महाशय ?

"नहीं, दिल्लगी नहीं कर रहा हूँ। अगर आप मेरे प्रस्ताव पर ज़रा ठण्डे होकर विचार करेंगे, तो आप इसी परिणाम पर पहुँचेंगे। यह न-केवल सीधा और सरल है, वरन् इसमें शुद्ध भावना भी है। शिलर को थैले में बन्द करना असम्भव हो जायगा;

पर मैं पीटर को इसके लिये तैयार कर लूँगा और युद्ध-स्थल पर उसे अपने साथ लाऊँगा।"

"अब भी आप दिल्लगी कर रहे हैं," पाल पिट्रोविच ने उठते हुए कहा—"किन्तु चूँकि आपने कृपा करके अपना समय दिया है, अतः मैं अब और आपका समय न लूँगा। तो फिर सब-कुछ निश्चय हो गया। और हाँ, आपके पास पिस्तौल है ?"

"मेरे पास कहाँ से आया ? मैं कोई लड़ाकू थोड़े ही हूँ।"

"तो शायद आप मेरे पिस्तौलों में से कोई एक लेना स्वीकार करेंगे ? मैं आपको निश्चय दिलाता हूँ कि पाँच वर्ष से मैंने उन्हें हाथ भी नहीं लगाया है।"

"आपका यह निश्चय दिलाना मेरे लिये बड़ा ही सुख-कर है !"

"अन्ततः," पाल पिट्रोविच ने छड़ी लेने के लिये हाथ बढ़ाते हुए कहा—"मैं आपको धन्यवाद देकर जा रहा हूँ। आप अपना कार्य कीजिए। आह्निक प्रणाम के बाद आपसे विदा लेता हूँ।"

"और मैं भी सुख-सम्मिलन तक के लिये आपसे विदा लेता हूँ।"

इसके बाद बज़ारोव ने पाल को दरवाज़े तक पहुँचाया।

पाल पिट्रोविच के चले जाने पर बज़ारोव क्षण-भर चुपचाप खड़ा सोचता रहा। फिर यकायक बोल उठा—

"सचमुच कैसी शानदार बात है! फिर भी कैसी मूर्खतापूर्ण! कैसा सुखान्त नाटक है !......इन सिखाये हुए कुत्तों की क्या

बात की जाय, जो अपने पिछले पैरों पर नाचते हैं !……तो भी मैं उसे अस्वीकार नहीं कर सकता था, क्योंकि वैसा करने पर वह मुझे वहीं मारता, तो,"—बज़ारोव का चेहरा पीला हो गया और उसका हृदय गर्व से फूल उठा—"तो मैं उसे बिल्ली के बच्चे की तरह गला घोंटकर मार डालता !"

वह अपने अणुवीक्षण यंत्र के पास आया; पर उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, और वैज्ञानिक निरीक्षण के लिये जिस ठण्ड-दिली की ज़रूरत होती है, उसका उसमें सर्वथा अभाव था।

"मैं समझता हूँ, उसने हम दोनों को सुबह देख लिया था," उसने मन-ही-मन सोचा—"पर यह तो निश्चय है कि वह यह काम अपने भाई का पक्ष लेकर नहीं कर रहा है ? क्योंकि एक चुम्बन में रक्खा ही क्या है ? नहीं, कोई-न-कोई बात इसकी तह में ज़रूर है। हाँ ! और यह भी तो सम्भव है कि वह स्वयं उसे प्रेम करता हो ? हाँ, यही बात है। बिल्कुल स्पष्ट है। कैसी उलझन है; चाहे जिस दृष्टि से देखा जाय, सचमुच यह एक भयानक उलझन है, क्योंकि सबसे पहले तो मेरा सिर ही उड़ा दिया जायगा, और फिर बचा भी तो मुझे यह स्थान छोड़ना पड़ेगा। आरकाडी क्या सोचेगा और वह बछिया का ताऊ निकोलाई पिट्रोविच ! कैसी भद्दी बात है ! सचमुच कैसा अनर्थ है !"

दिन समाप्त होने को आया। थेनिश्का दिन-भर अप्रकट-सी

रही (वह अपने कमरे में दिन-भर इस प्रकार घुसी रही, जैसे चूहा बिल में रहता है), निकोलाई पिट्रोविच चिन्तित-भाव से इधर-उधर टहलता रहा (उसे ख़बर मिली थी कि गेहूँ के खेतों में गेरुई लग रही है), और पाल पिट्रोविच के चेहरे पर शिथिलता के भाव देखकर प्रोकोफ़िच का दिल बैठ गया ।

बज़ारोव तुरन्त मेज़पर जाकर अपने पिता को पत्र लिखने लगा; पर कुछ सोचकर उसने पत्र फाड़ डाला और उसके टुकड़े-टुकड़े करके मेज़ के नीचे डाल दिये ।

"अगर मैं मारा गया," उसने सोचा—"तो मेरे माता-पिता को शीघ्र ही इसकी ख़बर मिल जायगी । पर मैं नहीं मारा जाऊँगा,—अभी मुझे दुनिया बहुत देखनी है ।"

इसके बाद उसने पीटर को आदेश दिया कि वह तड़के ही आकर उसे जगा ले । इस आदेश के साथ इस बातका भी ज़िक्र था कि एक ज़रूरी काम है, इसलिये उसे ऐसा करने को कहा गया है । पीटर ने फ़ौरन यह अनुमान लगाया कि बज़ारोव उसे सेण्ट पीटर्सबर्ग लिवा ले जाना चाहता है । इसके बाद बज़ारोव बिछौने पर लेट गया । यद्यपि रात काफ़ी जा चुकी थी, फिर भी वह नाना प्रकार के ऊट-पटांग स्वप्न देखता रहा—मैडम ओडिन्त-सोव की प्रतिमा उसकी आँखों के सामने नाचती रही, जो उसकी-माँ के रूप में भी दीखी । उसके पीछे एक काली बिल्ली भी दिखायी दी, जो थेनिश्का का प्रतिरूप थी । इसके अतिरिक्त पाल पिट्रोविच का रूप भी दिखायी दिया, जो पीछे जंगल के

रूप में परिवर्तित होगया और जिसके साथ बज़ारोव स्वप्न में लड़ता रहा।

अन्ततः जब चार बज गये, तो पीटर उसे जगाने आया। झटपट कपड़े पहनकर बज़ारोव पीटर को साथ लेकर रवाना होगया। प्रभात में ताज़गी और सौन्दर्य भरा था और यद्यपि स्वर्णाभ नील-गगन में कहीं-कहीं कुछ बादलों के टुकड़े दिखायी दे रहे थे, फिर भी हल्के ओस-कण घास और पेड़ों की पत्तियों पर बिखर रहे थे और मकड़ी के जालों पर पड़ी हुई ओस चाँदी की सी रेखा बना रही थी। वाष्पमयी पृथ्वी के छोर पर आरक्त चिह्न प्रभात की सूचना देरहा था; क्षण भर बाद ही समस्त नभ-मण्डल प्रदीप्त हो उठा और उसमें लवा का सुन्दर गान गूँजने लगा।

बज़ारोव सीधे जंगल की ओर बढ़ता चला गया और वहाँ पहुँचकर एक छायादार वृक्ष के नीचे बैठकर उसने पीटर को बतलाया कि बाद में उसे क्या काम करना होगा, जिसे सुनकर सुसंस्कृत नौकर के होश उड़ गये, और उसकी जान में जान तब आयी, जब बतलाया गया कि उसे काफ़ी फ़ासले पर खड़ा होना होगा और वह केवल दर्शक के रूप में वहाँ उपस्थित रहेगा, साथ ही उसके ऊपर कोई ज़िम्मेवारी भी नहीं आयेगी।

"सोचो तो सही," बज़ारोव ने कहा—"कैसे महत्त्वपूर्ण कार्य पर तुम लगाये जा रहे हो!"

परन्तु पीटर ने ओछेपन के साथ अपने हाथ आगे बढ़ाकर

आँखें फेर लीं। उसका चेहरा पीला हो गया और वह एक सनोवर के पेड़ से उठंगकर खड़ा हो गया।

यह जंगल मैरिनो जानेवाली सड़क के किनारे पर ही था। सड़क की धूल से ज्ञात होता था कि गत सन्ध्या के बाद इस (सड़क) पर से कोई गाड़ी या पैदल यात्री नहीं गुज़रा है। बज़ारोव अनिच्छापूर्वक सड़क की ओर देखता और घास की कोमल पत्तियाँ दाँतों के नीचे कुचलता हुआ मन-ही-मन यह भी सोचता जाता था कि "कैसी ज़बर्दस्त बेवक़ूफ़ी हो गयी!" प्रातःकाल की शीतल वायु में उसका शरीर कई बार काँप उठा। पीटर शोकातुर दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था; किन्तु बज़ारोव हँस पड़ा, क्योंकि कम-से-कम उसे तो कायरता नहीं दिखानी थी।

आख़िर सड़क पर घोड़ों की टाप सुनायी दी, और पेड़ की आड़ से एक किसान निकला, जो ज़ीन कसे हुए दो घोड़ों को हाँकता हुआ आ रहा था। वह जब बज़ारोव के पास से गुज़रा, तो उसने उसे जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से देखा; किन्तु प्रणाम करने के लिये टोपी नहीं उतारी। पीटर पर इस परिस्थिति का बुरा असर पड़ा, क्योंकि उसने इसे बुरा शकुन समझा।

"हमारी तरह यह किसान भी तड़के ही उठा है," बज़ारोव ने सोचा—"पर वह तो काम करने के लिये उठा है, और हम—!"

"मैं समझता हूँ कोई आदमी और आ रहा है।" पीटर ने कहा।

बज़ारोव ने सिर ऊपर उठाया। हल्के चारख़ाने की जाकेट, और सफ़ेद पाजामा पहने पाल पिट्रोविच फुर्ती के साथ सड़क पर आ रहा था। इसकी काँख में एक हरे ख़ोल से ढका हुआ चमड़े का बक्स था।

"आपको इन्तज़ार करना पड़ा, इसके लिये क्षमा कीजिएगा।" उसने बज़ारोव की ओर देखकर झुकते हुए कहा—इसके बाद वह पीटर की ओर देखकर भी झुका (क्योंकि इस समय उसने उसे उस प्रतिष्ठा का कुछ अंश देना उचित समझा, जो एक मध्यस्थ को दी जाती है)—"वास्तव में मुझे अपने नौकर को जगाने की इच्छा नहीं थी।"

"आप यह न कहें," बज़ारोव ने कहा—"हम लोग तो खुद अभी-अभी आये हैं।"

"अच्छी बात है!" कहकर पाल पिट्रोविच ने चारों ओर नज़र डाली—"यहाँ हम लोगों को देखने या हमारे काम में बाधा डालनेवाला कोई नहीं होगा। आप कार्य आरम्भ करने के लिये सहमत हैं?"

"पूर्णतः।"

"और, मैं समझता हूँ, अब और बातचीत की आवश्यकता नहीं है?"

"बिलकुल नहीं।"

"तो कृपया इन्हें भर लीजिए।" पाल पिट्रोविच ने बक्स में से तस्मे में बँधे हुए पिस्तौल निकाले।"

"नहीं। आप भरिए, तब तक मैं फ़ासला नापता हूँ—मेरे पाँव आपके पाँवों से अधिक लम्बे हैं।" अन्तिम वाक्य बज़ा-रोव ने सूखी हँसी हँसकर कहा—"अब, एक, दो, तीन—"

"माफ़ कीजिए, महाशय!" पीटर ने लम्बी साँस लेकर कहा—(वह ऐसा काँप रहा था, जैसे मनुष्य जूड़ी आने से काँपता है) "माफ़ कीजिए; पर क्या मैं ज़रा और दूर जाकर खड़ा हो सकता हूँ?"

"चार, पाँच—ज़रूर, भाई! ऐसा ही करो। तुम वहाँ, उस पेड़ की आड़ में जाकर खड़े हो सकते हो—कान पर हाथ भी रख लेना,—पर शर्त यह है कि आँखें मत बन्द करना। और अगर महाशय किरसानोव या मैं गिरूँ, तो तुम दौड़कर गिरे हुए को उठाना। छः, सात, आठ—" बज़ारोव रुका। "मैं समझता हूँ, इतना काफ़ी होगा?" उसने पाल पिट्रोविच से कहा—"या आप दो क़दम और चाहेंगे?"

"जैसा आप चाहें, करें।" पाल ने दूसरी गोली भरते हुए कहा।

"तो मैं यह दो क़दम और रखता हूँ," बज़ारोव ने अपने अँगूठे से ज़मीन पर चिह्न खींचते हुए कहा—"यह निशान है। हाँ, हममें से प्रत्येक अपने-अपने चिह्न से कितना पीछे रहेगा?"

"मैं समझता हूँ, दस-दस क़दम," पाल पिट्रोविच ने पिस्तौलों को आगे बढ़ाते हुए कहा—"कृपया इनमें से जो चाहें, ले लें ?"

"अच्छा। तो भी आप इससे तो सहमत ही होंगे कि हमारा युद्ध बेवक़ूफ़ी की हदतक पहुँचकर भी एकाकी है ? क्योंकि ज़रा हमारे मध्यस्थ का चेहरा तो देखिए !"

"आप अब भी दिल्लगी कर रहे हैं," पाल पिट्रोविच ने शिथिल होकर कहा—"युद्ध की एकान्तता को मैं अस्वीकार नहीं करता। सिर्फ़ इतना कह देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि मैं आपके साथ गम्भीरतापूर्वक और दिल से लड़ रहा हूँ। इसलिये, अक़्लमन्द को इशारा काफ़ी है।"

"यद्यपि हम एक दूसरे को मिटा देना चाहते हैं, तो भी दिल्लगी के सुख से क्यों वञ्चित रहें और इस प्रकार दुख को सुख में क्यों न परिणत कर दें ?

"मैं फिर कहता हूँ कि मैं आपसे गम्भीरतापूर्वक लड़ना चाहता हूँ।" कहकर पाल पिट्रोविच अपनी जगह की तरफ़ लपका और बज़ारोव निशान से दस क़दम की दूरी नापकर पाल की ओर मुँह करके खड़ा होगया।

"आप तैयार हैं ?" पाल पिट्रोविच ने पूछा।

"जी हाँ।"

"तो फिर शुरू कीजिए।"

बज़ारोव आगे बढ़ने लगा, साथ ही पाल पिट्रोविच भी

बायाँ हाथ कोट की जेब में डालकर बढ़ा। उसका दाहिना हाथ पिस्तौल तानने में लगा था।

"यह मेरी नाक पर ही निशाना लगा रहा है," बज़ारोव ने मन-ही-मन सोचा—"दुष्ट, आगे बढ़ते हुए आँखें कैसी भींच रहा है! यह कोई पूर्णतः सुखद जोश तो है नहीं। मुझे तो उसकी घड़ी की चेन पर ही नज़र रखनी चाहिए।"

सहसा बज़ारोव के कान में सीटी की आवाज़ आयी और उसी के साथ गोली दगने की भी।

"मैंने कोई आवाज़ सुनी है, पर कोई हर्ज नहीं।" बज़ारोव के मस्तिष्क में विचार उठा। इसके बाद वह एक क़दम और आगे बढ़ा और बिना निशाना लगाये ही पिस्तौल का घोड़ा खींच लिया।

घोड़ा खिंचते ही पाल पिट्रोविच छटपटाकर उछल पड़ा, और उसने अपना हाथ जाँघ पर रख लिया। खून की पतली धार पाजामे के ऊपर तक बह रही थी।

बज़ारोव ने पिस्तौल फेंक दी और अपने विरोधी के पास पहुँचा।

"क्या आप ज़ख़्मी हो गये?" उसने पूछा।

"कृपया मुझे निशान तक पहुँचा दीजिए," पाल पिट्रोविच ने कहा—"आपको ऐसा करने का अधिकार है, और हम लोग समय व्यर्थ गँवा रहे हैं। युद्ध की शर्तों के अनुसार दूसरी बार एक-एक फ़ायर हम लोग और कर सकते हैं।"

"क्षमा कीजिए, मैं इसे नहीं मान सकता।" बज़ारोव ने पाल पिट्रोविच (जिसका मुँह पीला पड़ता जा रहा था) को सँभालते हुए कहा—"मैं अब प्रतिद्वन्दी नहीं; एक डाक्टर हूँ, और आपका ज़ख्म देखूँगा, पीटर! इधर आ! मालूम नहीं कहाँ चला गया!

"यह निरी मूर्खता है," पाल पिट्रोविच ने लम्बी साँस खींचकर कहा—"मुझे मदद की ज़रूरत नहीं। हम फिर—" फिर भी जब वह अपनी मूँछें घुमाने की चेष्टा करने लगा, तो उसकी बाँहें ढीली हो गयीं, आखें मुँद गयीं और वह अचेत हो गया।

"नयी आफ़त!" बज़ारोव ने अपने विरोधी को घास पर लिटाते हुए कहा—"बेहोशी! देखें क्या बीतती है।"

उसने जेब से रूमाल निकालकर ज़ख्म का खून साफ़ किया और उसका अच्छी तरह निरीक्षण किया।

"हड्डी को कोई हानि नही पहुँची है," उसने कहा—"गोली चमड़े से थोड़ा नीचे मांस में ही रह गयो है—मांस-पेशियों के अतिरिक्त और कहीं चोट नहीं आयी है। तीन सप्ताह में यह फिर चलने-फिरने लगेंगे। मूर्च्छा आगयी है। कैसा हिम्मती आदमी है, फिर भी कैसा निर्बल!

"क्यों, क्या ये मर गये?" पीछे से पीटर की काँपती हुई आवाज़ आयी।

बज़ारोव ने उसकी ओर देखा।

"नहीं," उसने कहा—"दौड़कर थोड़ा पानी लाओ। मरना कैसा, ये तो हम-तुम से भी अधिक दिनों तक जीवित रहेंगे।"

दुर्भाग्यवश 'शानदार नौकर' ने यह नहीं समझा कि उससे क्या कहा गया है, और चुपचाप खड़ा रहा। जब दूसरे ही क्षण पाल पिट्रोविच ने आँखें खोलीं, तो पीटर ने कहा—"इनकी तो जान निकल रही है!"

"महाशय बज़ारोव," घायल ने टेढ़ी मुस्कराहट के साथ कहा—"आपने ठीक ही कहा था कि इस आदमी का मुँह बेवक़ूफ़ों का सा है।"

"ठीक है!" बज़ारोव ने स्वीकार किया, फिर नौकर की तरफ़ मुँह करके कहा—"कैसा आदमी है तू, मैंने पानी लाने के लिये कहा था न?"

"कोई ज़रूरत नहीं," पाल पिट्रोविच ने कहा—"यह तो केवल साधारण चक्कर आ गया था। कृपया मुझे बैठा दीजिए। ठीक है। मामूली खरोंच लगी है—इसे बाँध देने पर मैं घर अपने-आप चला जाऊँगा। गाड़ी-वाड़ी मँगाने की ज़रूरत नहीं होगी। जब तक आप न चाहेंगे, द्वन्द्व-युद्ध फिर नहीं होगा। कम-से-कम आज तो आपने भद्रजनोचित कार्य किया है। कृपया मैंने जो बात कही है, उसका ख़याल रखिएगा।"

"बीती हुई बात की हमें चर्चा करने की ज़रूरत नहीं है," बज़ारोव ने कहा—"और भविष्य के लिये भी कोई बड़ी बात करने की ज़रूरत नहीं होगी, ख़ासकर इसलिये कि मैं यह

स्थान तुरन्त छोड़ दूंगा—ज़ख़्म को बाँध लेने दीजिए। घाव ख़तरनाक नहीं है, पर इससे रक्त-प्रवाह में कुछ रुकावट होगी। लेकिन पहले मुझे इस सुअर को होश में लाना है।"

पीटर का कालर पकड़कर ज़ोर से झकझोरते हुए उसने उससे गाड़ी लिवा लाने के लिये कहा।

"पर ऐसा करना कि कहीं मेरा भाई घबरा न जाय," पाल पिट्रोविच ने नौकर से कहा—"तुम इस घटना की चर्चा बिल्कुल मत करना।"

पीटर दौड़ता हुआ घर की तरफ़ गया। जितनी देर में वह गाड़ी का इन्तज़ाम करता रहा, तब तक दोनों विरोधी घास पर आस-पास चुपचाप बैठे रहे। पाल पिट्रोविच इसी चेष्टा में रहा कि वह बज़ारोव की ओर न देखे, क्योंकि उसकी इच्छा उससे सन्धि करने की नहीं थी, साथ ही उसे अपने जोश, असफलता और कार्यक्रम के इस दुःखद अन्त पर शर्म आ रही थी, यद्यपि वह यह भी समझता था कि इस घटना का और भी दुःखद परिणाम हो सकता था।

"कम-से-कम यह यहाँ रहकर डींगें तो नहीं हाँकेगा," उसने अपने मन को ढाढ़स दिया—"इसके लिये ही धन्यवाद है!"

निस्तब्धता बड़ी गम्भीर और अप्रिय मालूम हो रही थी, क्योंकि दो-के-दोनों ही मन-ही-मन बेचैन हो रहे थे—दोनों ही सोच रहे थे कि दूसरा मेरे मन की बात भाँप रहा है।

मित्रों के लिये तो ऐसे भाव परम वाञ्छनीय हो सकते हैं; किन्तु शत्रुओं के लिये यह बड़ी ही अप्रिय बात हो जाती है—क्योंकि ऐसी अवस्था में न तो किसी प्रकार की सफ़ाई देने की ही सम्भावना होती है, न आंशिक आदान-प्रदान की ही।

"मैंने आपका पैर बहुत कसकर तो नहीं बाँधा है?" अन्ततः बज़ारोव ने पूछा।

"नहीं," बज़ारोव ने जवाब दिया—"वास्तव में मुझे अभी से फ़ायदा मालूम हो रहा है," क्षण-भर रुकने के बाद उसने कहा—"पर हम भाई को धोखा नहीं दे सकते। अगर उससे ऐसा कह दिया जाय कि राजनीतिक मतभेद के कारण हमने ऐसा किया है, तो कैसा हो?"

"बहुत अच्छी बात है!" बज़ारोव ने स्वीकार किया—"उदाहरण के लिये आप यह कह सकते हैं कि मैंने एङ्ग्लो-मनियाक्स को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया था।"

"अच्छी सूझी! पर यह आदमी हम लोगों के सम्बन्ध में क्या सोच रहा होगा, मैं नहीं समझ सकता।" पाल पिट्रोविच ने उस आदमी की ओर इशारा करके कहा, जो युद्ध के थोड़ी देर पहले दो खुले घोड़े लेकर बज़ारोव के पास से गुज़रा था, और अब घर की ओर वापस जाते हुए दो सज्जनों को बैठे देख टोपी उठाकर सलाम करके आगे जा रहा था।

"यह कौन कह सकता है," बज़ारोव ने जवाब दिया—"सम्भवतः वह कुछ भी नहीं सोच रहा होगा।

मैडम रैड क्लिफ़* ने ठीक ही कहा है कि रूसी किसान एक अज्ञात वस्तु है। क्या कोई उसे समझ सकता है? वह स्वयं अपने-आपको नहीं समझता।"

"फिर आप वैसी ही बातें करने लगे!" पाल पिट्रोविच ने कहना शुरू किया, पर सहसा उसका स्वर फट गया और उसने धीरे से कहा—"देखिए, उस बेवक़ूफ़ पीटर ने क्या ग़ज़ब ढा दिया—मेरा भाई ख़ुद आ रहा है!"

सचमुच बज़ारोव ने सिर घुमाया, तो गाड़ी में से निकोलाई का पीला चेहरा बाहर को दिखायी दे रहा था। गाड़ी खड़ी भी नहीं हो पायी थी कि निकोलाई उसमें से कूद पड़ा, और अपने भाई की ओर दौड़ा।

"यह क्या हुआ?" उसने उत्तेजित भाव से कहा—"इव-जिनी वैसिलिच, कृपया बतलाइये, क्या हुआ?"

"कुछ नहीं हुआ," पाल पिट्रोविच ने बज़ारोव की बजाय खुद कहा—"तुम फ़ज़ूल परेशान हो रहे हो। मुझसे महाशय बज़ारोव के साथ मामूली झगड़ा होगया था, और वैसा ही छोटा दण्ड भी मिल गया।"

"पर कैसे झगड़ा हुआ? खुदा के लिये मुझे भी तो बताओ!"

---

*ऐन रैड क्लिफ़ (१७६४-१८२३) एक अंग्रेज़ महिला थी, जिसने 'उडोल्फो रहस्य' तथा अन्य कहानियाँ लिखी थीं। वह एक उपन्यास-लेखिका थी और बहुधा विदेशों में पर्यटन किया करती थी।

"क्या बताऊँ ? शुरू इस तरह हुआ कि बज़ारोव महाशय ने सर रावर्ट पील के लिये कुछ अप्रतिष्ठाजनक शब्दों का प्रयोग किया था। मैं यह पहले बतला दूँ कि ग़लती शुरू से आख़िर तक मेरी ही है और बज़ारोव महाशय ने बहुत अधिक बर्दाश्त किया है—ललकारा भी पहले मैंने ही था।"

"पर ख़ून की ओर तो देखो!"

"उँह! तो क्या तुमने समझा था कि मेरी नसों में पानी भरा है? वास्तव में रक्त निकल जाने से मुझे तो लाभ ही होगा। क्यों, यही बात है न, डाक्टर साहब ? मुझे गाड़ी पर चढ़ा दो और रंज मत करो! मैं कल तक अच्छा हो जाऊँगा। बहुत अच्छा हुआ! यह काम इसी तरह होना चाहिए। कोचवान, सीधे चल!"

जब गाड़ी घर की ओर रवाना होने को हुई, तो निकोलाई पिट्रोविच ने देखा कि बज़ारोव पीछे रहना चाहता है।

"इवजिनी वैसिलिच," उसने कहा—"मेरी आपसे प्रार्थना है कि जब तक शहर से डाक्टर न आ जाय, आप मेरे भाई की शुश्रूषा करें।"

बज़ारोव ने चुपचाप स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया।

एक घण्टे बाद पाल पिट्रोविच बिछौने पर आराम से लेटा हुआ था। उसके ज़ख्म पर सुन्दर और स्वच्छ पट्टी बँधी हुई थी। सारे मकान में खलबली मची हुई थी। थेनिश्का बिल्कुल घबरा गयी थी, निकोलाई से हाथ मलने के अतिरिक्त और कुछ नहीं बन पड़ता था। इसके विपरीत पाल पिट्रोविच

बज़ारोव के साथ हँसी-दिल्लगी कर रहा था—इस मौक़े पर पाल ने लीनेन की मुलायम क़मीज़, सुन्दर प्रातःकालीन जाकेट और तुर्की फ़ेज़ टोपी डाट रक्खी थी। इसके अतिरिक्त खिड़कियाँ आदि बन्द करने को उसने मना कर दिया और खाना खाने के सम्बन्ध में लोगों के मना करने पर भी उसका रहस्यजनक विरोध करके ज़बर्दस्ती खाना खाया।

किन्तु जब रात बढ़ने लगी तो बुख़ार बढ़ गया और उसके सिर में दर्द होने लगा; जिसके फल-स्वरूप जब शहर से डाक्टर आया (निकोलाई ने इस सम्बन्ध में अपने भाई की बात नहीं मानी थी और बज़ारोव ने भी यही राय दी थी, इसका कारण यह था कि पाल को एक बार थोड़ी देर के लिये देखकर और दो बार थेनिश्का से मिलने पर उससे नज़र बचा-कर उसने ऐसा अनुभव किया था कि वह दिन का अवशिष्ट भाग एकान्त, कटुता और विद्वेषपूर्ण विचारों में पड़ा रहकर गुज़ारना अधिक पसन्द करेगा), तो उसने शीतल पेय पिलाने को कहा और साथ ही बज़ारोव की इस राय का भी समर्थन किया कि अवस्था कोई विशेष ख़तरनाक नहीं है। साथ ही यह बतला देना भी अनुचित न होगा कि जब निकोलाई ने डाक्टर से बतलाया कि पाल का ज़ख़्म संयोग-वश अपनी ही ग़ल्ती से लगा है, तो डाक्टर ने "हूँ !" कहा और जब पचीस रूबल की फ़ीस मिली, तो बोला कि ऐसी दुर्घटनाएँ कभी-कभी हो ही जाया करती हैं।

उस रात घर का कोई भी व्यक्ति बिछौने पर नहीं लेटा, न किसी ने कपड़े ही उतारे। निकोलाई थोड़ी-थोड़ी देर बाद भाई को देखने कमरे में आता और चुपचाप फिर वापस चला जाता। पाल पिट्रोविच की नींद भी रह-रहकर खुल जाती और उसके मुँह से हल्की आह निकल जाती थी। कई-बार उसने निकोलाई से पेय माँगा। किन्तु एक बार ऐसा हुआ कि निकोलाई ने एक गिलास लेमोनेड थेनिश्का के हाथ भेज दिया। पाल ने गिलास हाथ में ले लिया और धीरे-धीरे पेय पीते हुए बहुत देर तक—यहाँ तक कि गिलास की अन्तिम बूँद चूस जाने तक—ध्यानपूर्वक देखता रहा। प्रातःकाल ज्वर कुछ बढ़ा, और कुछ क्षण के लिये मस्तिष्क की अवस्था ऐसी हो गयी कि ज़ख्मी ने बिल्कुल असम्बद्ध शब्दों का उच्चारण शुरू किया और अपने भाई को चिन्ताशील अवस्था में अपने ऊपर झुका देखकर बोला—

"निकोलाई, क्या तुम्हारे ख़याल में थेनिश्का की शक्ल नेली से कुछ-कुछ मिलती नहीं है?"

"कौन नेली, पाल? नेली कौन है?"

"तुम पूछते क्या हो? वही प्रिंसेज़ रा······। ख़ास तौर पर थेनिश्का के चेहरे का ऊपरी भाग उसकी सूरत से मिलता है। यह बिल्कुल वैसी ही मालूम होती है।

निकोलाई पिट्रोविच ने कोई जवाब नहीं दिया। वह केवल यही सोचकर आश्चर्य-चकित हो रहा कि मानवीय चेतना में भूतकालीन स्मृतियाँ इस रूप में अवशिष्ट रहती हैं।

"यह विचार फिर अङ्कुरित होकर ही रहा !" उसने सोचा।

दूसरी बार पाल पिट्रोविच ने दोनों हाथ सिर के नीचे रक्खे हुए फिर कहा—"मैं इस आलस्यपूर्ण अस्तित्व को बहुत पसन्द करता हूँ !" और फिर थोड़ी देर बाद बड़बड़ाया—"मैं किसी भी दुष्ट को अपना शरीर न छूने दूँगा !"

निकोलाई पिट्रोविच ने आह-भरी साँस ली। उसकी समझ में नहीं आया कि ये शब्द किसके प्रति कहे गये थे।

दूसरे दिन प्रातः आठ बजे बज़ारोव निकोलाई के कमरे में आया। उसका कीड़े-मकोड़ों और मेढ़कों का ढेर या तो बाँध-बूँधकर तैयार कर लिया गया था, या सबको छोड़कर स्वतंत्रता का सुख प्रदान कर दिया गया था।

अभ्यर्थना के लिये उठते हुए निकोलाई ने कहा—

"तो आप अब विदा लेने के लिये आये हैं ?"

"जी हाँ।"

"मैं आपकी भावनाओं को समझ रहा हूँ और मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ। मैं जानता हूँ कि सारा दोष मेरे भाई का ही है, और वह उसका फल भोग रहा है। उसकी बातों से मैं यह भी समझ गया हूँ कि आपने जो-कुछ किया, उसके अतिरिक्त और कुछ करने का चारा ही नहीं था—आपके लिये द्वन्द्व-युद्ध का टालना असम्भव था। ऐसी अवस्था में इस दुर्घटना के प्रबल विरोध का कारण हम आपके विचारों को समझते हैं," (यहाँ

निकोलाई ज़रा रुक गया।) "मेरा भाई पुराने ख़याल का आदमी है, उसका मिज़ाज गरम है और स्वभाव हठपूर्ण। ऐसी दशा में ईश्वर को धन्यवाद है कि परिणाम अधिक भयङ्कर नहीं हुआ। अन्त में मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस मामले को प्रकाशित न करने का पूरा प्रयत्न कर लिया गया है।"

"ठीक है," बज़ारोव ने बेपर्वाही से कहा—"पर मैं आपको अपना पता दे जाता हूँ, शायद कोई वैसी घटना होने पर ज़रूरत हो।"

"मेरा विश्वास है कि वैसी कोई घटना न होगी। सचमुच मुझे इस बात का अफ़सोस है कि मेरे घरपर आपका रहना इस रूप में समाप्त हुआ। और मुझे अधिक खेद इसलिये है कि आरकाडी—"

"मैं उससे बहुत जल्दी मिलने की आशा रखता हूँ," बज़ारोव ने, जिसे उपरोक्त बातें पसन्द नहीं आयी थीं, बात काटकर कहा—"किन्तु यदि मैं ऐसा न कर सका, तो कृपया उससे मेरा अभिवादन कहें और यह भी कहदें कि मुझे इसका बड़ा खेद है।"

"मैं कह दूँगा।" निकोलाई पिट्रोविच ने झुककर कहा। वह और कुछ कहना ही चाहता था कि बज़ारोव कमरे से बाहर निकल गया।

पाल पिट्रोविच ने जब सुना कि बज़ारोव प्रस्थान कर रहा है, तो उससे मिलकर हाथ मिलाने की इच्छा प्रकट की। फिर

भी बज़ारोव बरफ़ की भाँति ठण्डा बना रहा, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि ऐसा करने में पाल पिट्रोविच का उद्देश्य केवल अपनी उदारता का प्रदर्शन करना था। थेनिश्का से तो उसने विदाई का प्रणाम भी नहीं किया,—हाँ, जब उसने उसे जाते देखकर खिड़की से झाँका, तो बज़ारोव ने उसकी ओर देख ज़रूर लिया। उसने देखा कि थेनिश्का के चेहरे पर चिन्ता के भाव विद्यमान हैं।

"शीघ्र ही वह या तो कहीं भागेगी, या ग़ायब हो जायगी।" उसने मन-ही-मन सोचा।

इधर पीटर अपने गुरु की जुदाई से ऐसा दुखी हुआ कि उसने बज़ारोव के कन्धे से लगकर रोते-रोते उसके कपड़े आँसू से भिगो दिये। बेचारी दुनियाशा तो ऐसे भावावेग में आगयी कि उसे अपना शोकोद्गार छिपाने के लिए झाड़ी में छिपना पड़ा। बज़ारोव ने सफ़री गाड़ी पर बैठकर सिगार जलायी और चार वर्स्ट की यात्रा कर चुकने पर भी, जहाँ किरसानोव के खेत एक नयी कोठी से मिलते थे, उसने तम्बाकू की दो ही चार फूँक पी और अपने कोट में सिकुड़कर बड़बड़ा उठा—

"......नाश हो!"

पाल पिट्रोविच अब स्वस्थ हो चला; किन्तु डाक्टर ने उसे एक सप्ताह और पड़े रहकर विश्राम करने का आदेश दिया, जिसे वह (पाल) 'क़ैद' कहने लगा। उसने बड़े धैर्य का परिचय दिया, यद्यपि शृङ्गार के सम्बन्ध में उसने काफ़ी अधीरता

दिखलायी और वह सदा यू-डी-कोलन* छिड़कता रहा। निकोलाई पिट्रोविच ने उसे अखबार पढ़-सुनाने का कार्य ले रक्खा था और थेनिश्का उसे रस, लेमोनेड, अण्डे और चाय परोसती थी। किन्तु एक दिन भी ऐसा नहीं गया, जब वह (थेनिश्का) कमरे में आने पर रहस्यपूर्ण भीरुता का अनुभव न करती रही हो। पाल पिट्रोविच के अप्रत्याशित आचरण से घर के सभी स्त्री-पुरुष उससे डर गये थे; किन्तु थेनिश्का सब से अधिक डरी हुई थी। केवल बुड्ढा प्रोकोफ़िच ही ऐसा था, जिसे इस घटना से कोई भय नहीं हुआ था और वह कहता फिरता था कि उसकी जवानी के दिनों में "बड़े आदमी एक दूसरे से खूब लड़ा करते थे, पर केवल बड़े आदमी ही; बज़ारोव-जैसे बन्दरों को तो तब मोरी में डुबो दिया जाता था !"

थेनिश्का के मन में एक हल्की-सी व्यथा होती रहती थी, किन्तु जब कभी वह इस दुर्घटना (द्वन्द्व-युद्ध) के कारण पर विचार करती, तो बेचैन हो जाती। इसका विशेष कारण यह भी था कि इधर पाल पिट्रोविच ने उसकी ओर एक ऐसी विलक्षण दृष्टि से देखना शुरू कर दिया कि जब वह उस (पाल) की ओर पीठ किये होती, तब भी उसे ऐसा मालूम होता कि उसकी आँखें उस पर जमी हुई हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि वह दिन-पर-दिन दुबली होने लगी, और

---

* एक प्रकार की सुगन्धित तरल औषधि, जिसे प्रायः सिर-दर्द आदि में व्यवहार करते हैं।

(जैसा कि ऐसी परिस्थितियों में प्रायः हुआ करता है) उसका सौन्दर्य और निखरने लगा।

आख़िर एक दिन सुबह पाल पिट्रोविच को अपनी तबीयत इतनी ठीक मालूम हुई कि वह बिस्तर से उठकर सोफ़े पर जा बैठा, और निकोलाई यह देखकर कि उसके भाई के लिए सब व्यवस्था ठीक है, खेत पर चला गया। थेनिश्का पर यह भार और रह गया था कि वह उस (पाल) को एक प्याली चाय दे आये। जब वह चाय लेकर कमरे में आई और प्याली को मेज़ पर रखकर जाने का उपक्रम करने लगी, तो पाल पिट्रोविच ने उसे ठहरने के लिये कहा।

"तुम भागती क्यों हो ?" उसने कहा—"क्या कोई और काम है ?"

"नहीं—हाँ। नौकरों के लिए भी चाय ढालनी है।"

"वह तो दुनियाशा भी कर सकती है। तुम ऐसे बीमार के पास कुछ देर ज़रूर ठहरोगी, जो तुमसे एक बड़ी महत्वपूर्ण बात कहना चाहता है ?"

वह चुपचाप कुर्सी के किनारे पर बैठ गयी।

"सुनो," उसने अपनी मूँछें मरोड़कर कहा—"कुछ दिन पहले से मैं तुमसे यह पूछना चाहता था कि तुम मुझसे इतना डरती क्यों हो ?"

"डरती क्यों हूँ ?"

"हाँ, क्योंकि तुम कभी मेरी ओर आँख उठाकर देखती

तक नहीं। दर-असल देखनेवाला तो यही समझेगा कि मेरी उपस्थिति में तुम्हारा मन दुःखी-सा रहता है।"

थेनिश्का का चेहरा लाल हो गया, पर उसने सीधी निगाह से पाल पिट्रोविच की आँखों की ओर देखा। उसकी आकृति उसे विलक्षण-सी लगी और उसका हृदय ज़ोर से धड़कने लगा।

"तुम्हारा दिल साफ़ है ?" पाल ने पूछा।

"हाँ, साफ़ क्यों न होगा ?" उसने धीरे से जवाब दिया।

"मैं नहीं जानता ! निश्चय ही मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नहीं दीखता, जिसके विरुद्ध तुमने कोई काम किया हो। मेरे विरुद्ध ? मुश्किल से सम्भव है। इस घर के अन्य लोगों के विरुद्ध ? असम्भव है ? मेरे भाई के विरुद्ध ? पर उसे तो तुम प्रेम करती हो न ?"

"हाँ !"

"पूरे हृदय और आत्मा के साथ ?"

"अपने पूरे हृदय और आत्मा के साथ !"

"वास्तव में ?—सचमुच, थेनिश्का ?" (उसने इस प्रकार उसे पहले कभी सम्बोधन नहीं किया था) "मेरी आँखों की तरफ़ देखो ! झूठ बोलना भयानक पाप है, तुम यह तो जानती ही हो ?"

"पर मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ, पाल पिट्रोविच ! अगर मैं निकोलाई पिट्रोविच को प्रेम न करती, तो मैं जीना न चाहती।"

"तो उसके बदले संसार में तुम और किसी को प्रेम नहीं कर सकती ?"

"उनके बदले किसे प्रेम करूँ ?"

"मैं नहीं जानता ! पर यह तो निश्चय है कि उस भले-मानस को नहीं, जो अभी-अभी इस घर से विदा होकर गया है ?"

थेनिश्का उठकर खड़ी होगयी।

"आप मुझे इस तरह कष्ट क्यों पहुँचा रहे हैं ?" उसने पूछा—"मैंने क्या किया है, जो आप मुझसे इस तरह बातें कर रहे हैं ?"

"थेनिश्का," पाल ने वेदनापूर्ण स्वर में जवाब दिया—"मैं तुमसे इस तरह बातें इसलिए कर रहा हूँ कि मैंने देखा था कि......"

"आपने क्या देखा था ?"

"मैंने तुम्हें बकायन के कुञ्ज में देखा था !"

थेनिश्का का मुँह कानों तक लाल हो गया और उसका रोम-रोम सिहर उठा।

"पर आप मुझे क्यों कलङ्क लगा रहे हैं ?" अन्ततः उसने कहने की चेष्टा की।

पाल पिट्रोविच सोफ़े पर तनकर बैठ गया।

"तुम शपथ करती हो कि तुम्हारा दोष नहीं था ?" उसने कहा—"तुम्हारा ज़रा भी क़सूर नहीं था ? बिल्कुल नहीं ?"

"मैं निकोलाई पिट्रोविच को प्रेम करती हूँ" थेनिश्का ने सहसा क्रोधपूर्वक और सिसकियाँ लेते हुए जवाब दिया—"और किसी पुरुष को कभी प्रेम नहीं करूँगी। जो कुछ आपने देखा है, उसके सम्बन्ध में मैं न्याय-सिंहासन से समक्ष शपथ करती हूँ कि मैं निरपराध हूँ और सदा से निरपराध थी। मैं मर जाना अधिक पसन्द करूँगी; पर अपने सर्वस्व निकोलाई पिट्रोविच को धोखा देने का सन्देह सहन करना नहीं।"

उसका गला रुक गया। फिर उसने देखा कि पाल उसका हाथ पकड़कर दबा रहा है। उसने अपना सिर घुमाकर पाल की ओर देखा—और मूर्तिवत् खड़ी रह गयी, क्योंकि उस (पाल) का चेहरा बहुत ही पीला पड़ गया था और आँखें चमक रही थीं। सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि पुरुष होकर भी वह ऐसे अवसर पर आँसू बहा रहा था!

"थेनिश्का," उसने एक ऐसे शिथिल स्वर में कहा, जो उसका अपना नहीं मालूम होता था—"मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम हमेशा मेरे भाई को ही प्रेम करो, और कभी उससे प्रेम करना बन्द मत करो। वह ऐसा अच्छा और दयालु आदमी है कि उसकी बराबरी का दुनिया में दूसरा नहीं मिल सकता। उसे छोड़कर दूसरे को मत चाहो; उसके बारे में कोई कुछ कहे, तो उसका ख़याल मत करो; सोचो तो सही, उसे अगर यह मालूम हो जाय कि वह तुम्हें प्रेम करता है और तुम उसे नहीं

करती, तो फिर कैसी भीषणता हो! थेनिश्का, उसे छोड़ने के पहले भली भाँति विचार कर लेना।"

आश्चर्य के मारे थेनिश्का की आँखें कोयों के बाहर निकली पड़ रही थीं और उसकी घबराहट रफ़ूचक्कर-सी हो गयी। उसके आश्चर्य का तब तो और भी कोई ठिकाना नहीं रहा, जब पाल ने न तो उसे अपनी ओर खींचा, न उसका चुम्बन लिया; बल्कि उसका हाथ अपने ओठों से लगा कर बड़े ज़ोर से चौंककर सिसकियाँ लेने लगा!

"हे भगवान्," थेनिश्का ने मन-ही-मन सोचा—"अगर इन्हें इससे मूर्छा आगयी, तो क्या होगा?"

उसी क्षण पाल पिट्रोविच अपने भूतकालीन विनष्ट जीवन का चित्र देखने लगा।

सहसा ज़ीने पर किसी के शीघ्रतापूर्वक चलने की ध्वनि सुनायी दी, और ज्यों ही पाल ने थेनिश्का को अलग ढकेलकर तकिये का सहारा लिया और दरवाज़ा खुला, निकोलाई पिट्रोविच चेहरे पर ताज़गी, लालिमा और मुस्कराहट तथा गोद में मितिआ को लिये हुए अन्दर आया। बच्चे के शरीर पर भी स्वास्थ्य के सभी चिह्न थे। वह निकोलाई की गोद में उछल रहा था और उसके छोटे पाँव अपने पिता के ग्रामीण ढंग की फ्राक के बटनों पर हिल रहे थे।

पिता और पुत्र की ओर दौड़कर थेनिश्का ने अपनी बाहें दोनों के गले में डाल दीं और अपना सिर निकोलाई के

कन्धे पर रख दिया। इससे निकोलाई पिट्रोविच कुछ आश्चर्य-विमुग्ध-सा होकर खड़ा होगया, क्योंकि लज्जाशील एवं गम्भीर थेनिश्का ने इसके पूर्व कभी किसी तीसरे व्यक्ति के सम्मुख निकोलाई को लाड़ नहीं किया था।

"क्यों, बात क्या है?" निकोलाई ने पूछा। फिर उसने पाल की ओर देखा और मितिया को थेनिश्का की गोद में देकर भाई के पास जाकर पूछा कि उसकी तबीयत अधिक ख़राब तो नहीं हो गयी है।

पाल ने मुँह रूमाल से ढक रक्खा था, किन्तु प्रश्न सुनकर जवाब दिया—

"नहीं भाई, नहीं! बिल्कुल नहीं! मैं अच्छी तरह हूँ—बहुत अच्छी तरह हूँ।"

"तो भी तुमने सोफ़े पर बैठकर जल्दबाज़ी की है," निकोलाई पिट्रोविच ने कहा। इसके बाद वह थेनिश्का से यह पूछने के लिये मुड़ा कि वह कमरे से चली क्यों जारही है, पर वह शीघ्रतापूर्वक बाहर निकलकर दरवाज़ा बन्द कर गयी।

"मैं तुम्हें उस छोटे बदमाश (लड़के) को दिखलाने के लिये लाया था;" निकोलाई ने फिर कहा—"वह अपने ताऊ को देखने के लिये चंचल हो रहा था। पर वह उसे किसी कारण बाहर लिवा ले गयी है। बात क्या है? क्या कोई बात हुई है?"

"भाई," पाल पिट्रोविच ने कहा—(उसके इस सम्बोधन से

न-जाने क्यों निकोलाई पिट्रोविच चौंककर बेचैन-सा होगया) "भाई, पहले वचन दो कि मैं जो प्रार्थना करूँगा, वह पूरी करोगे।"

"कैसी प्रार्थना, पाल ? कृपया जल्दी कहो ।"

"बड़ी ही महत्त्वपूर्ण प्रार्थना है। मैं समझता हूँ, इसी पर तुम्हारा सारा सुख निर्भर है। इसके अतिरिक्त मैं जो-कुछ कहने जा रहा हूँ, वह बहुत विचारणीय है। भाई, प्रार्थना यह है कि तुम अपना कर्त्तव्य पालन करो, जो वास्तव में एक अच्छे और प्रतिष्ठित व्यक्ति का कर्त्तव्य है। दूसरे शब्दों में मेरी यह अर्ज़ है कि इस कलङ्क और बुरे उदाहरण को समाप्त कर दो, जो तुम-जैसे सर्वोत्तम आत्मा के लिये योग्य नहीं है।"

"तुम किस बात के लिये कह रहे हो, पाल ?"

"इसके लिये कि तुम्हें थेनिश्का के साथ बाक़ायदा शादी कर लेनी चाहिए। वह तुम्हें प्रेम करती है, और तुम्हारे ही बच्चे की माँ है।"

निकोलाई ने पीछे हटकर दोनों हाथ मिला लिये।

"क्या यह बात 'तुम' कह रहे हो," उसने कहा---"तुम्हीं कह रहे हो?---तुम, जिसे मैं सदा से ऐसे सम्बन्ध का विरोधी मानता आया हूँ ? स्वयं तुम ऐसी बात कह रहे हो ? निश्चय ही तुम यह जानते हो कि केवल तुम्हारा सम्मान रखने के लिये मैं अभी तक उस काम से बचता रहा हूँ, जिसे तुम मेरा कर्त्तव्य कह रहे हो ?"

"तो फिर तुमने ग़लत तरीक़े पर मेरा सम्मान किया है," पाल पिट्रोविच ने खेदपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा—"वास्तव में मैं तो क़रीब-क़रीब इस बात का विचार करने लगा हूँ कि बज़ारोव ने मेरे ऊपर यह अभियोग ठीक ही लगाया था कि मैं अमीराना ख़यालात का बनावटी समर्थक हूँ। क्योंकि हमारे-तुम्हारे लिये इतना ही पर्याप्त नहीं है कि हम केवल सांसारिक झगड़ों में ही पिले रहें। हम लोग बुड्ढे हो गये; युवावस्था व्यतीत हो गयी; हमें हर प्रकार की तुच्छताओं को दूर फेंककर अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। यह भूलना नहीं चाहिए कि यदि हम इस प्रकार कार्य करेंगे, तो हमें प्रचुर आनन्द का पुरस्कार मिलेगा।"

निकोलाई अपने भाई की गोद में गिर पड़ा और बार-बार उसका आलिङ्गन करने लगा।

"तुमने मेरी आँखें खोल दीं," उसने ज़ोर से कहा—"मैंने तुम्हें संसार का सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति कहकर ग़लती नहीं की—और अब मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारी बुद्धिमत्ता भी तुम्हारी उदारता के अनुकूल ही है।"

"धीरे से, धीरे से!" पाल ने कहा—"इस बुड्ढे बेवकूफ़ का पैर और मत दुखाओ, जिसने पचास वर्ष की उम्र में वीर युवक की भाँति द्वन्द्व-युद्ध किया। अच्छा तो मामला तय रहा—थेनिश्का गृह-स्वामिनी बनेगी?"

"हाँ, प्यारे पाल? लेकिन आरकाडी क्या कहेगा?"

"आरकाडी ? वह तो खुश होगा। यह सच है कि विवाह उसके विषय या सिद्धान्त की सीमा के अन्दर नहीं आता; किन्तु सामाजिक समानता के भाव रखने के कारण वह इससे प्रसन्न ही होगा। इसके अतिरिक्त उन्नीसवीं सदी में जाति-भेद की पर्वाह कौन करता है ?"

"पाल, पाल, एक बार तुम्हारा आलिङ्गन करलूँ। डरो नहीं, मैं बड़ी सावधानी से करूँगा।"

दोनों भाइयों ने बाहें फैला दीं और खूब दिल खोलकर गले मिले।

"अच्छा," पाल पिट्रोविच ने कहा—"तुम्हारा क्या विचार है ? क्या हमें थेनिश्का को इसकी सूचना तुरन्त दे देनी चाहिए ?"

"नहीं, ऐसी जल्दी क्या है," निकोलाई पिट्रोविच ने कहा—"दर-असल, तुम तो उससे बातें कर ही रहे थे न ?"

"मैं बातें कर रहा था। सलाह कैसी अच्छी है !"

"तो भी, पहले तुम स्वस्थ तो हो लो। थेनिश्का कहीं भगी थोड़े ही जा रही है, तब तक मामले पर और भी विचार कर लिया जायगा।"

"तो तुमने निश्चय तो कर लिया न ?"

"अवश्य ! और मैं तुम्हें इसके लिए हृदय से धन्यवाद दे रहा हूँ। पर अब मैं कुछ देर के लिए जाता हूँ, क्योंकि तुम्हें आराम करने की ज़रूरत है और किसी तरह की उत्तेजना तुम्हारे लिए हानिकारक है। और बातों पर फिर विचार कर

लिया जायगा। चलकर सोजाओ, प्यारे भाई ! ईश्वर तुम्हें शीघ्र स्वास्थ्य प्रदान करे !"

"उसने 'मुझे' क्यों धन्यवाद दिया ?" निकोलाई के चले जाने पर पाल पिट्रोविच ने सोचा—"क्या यह मामला अकेले उसी पर नहीं निर्भर करता, ख़ासकर यह विचार करते हुए कि उसकी शादी के बाद मुझे अपने रहने का प्रवन्ध कहीं अन्यत्र ड्रेडसन या फ़्लोरेन्स में करना पड़ेगा, जहाँ मुझे मृत्यु-पर्यन्त रहना पड़ेगा ?"

उसने माथे पर ख़ूब यू-डी-कोलन चुपड़ लिया और फिर आँखें बन्द करलीं। अपने सुन्दर और सजीले शरीर को तकिये पर टिकाये हुए वह ऐसा मालूम पड़ रहा था, जैसे कोई लाश पड़ी हो।

———

२५

निकोल्सको के बाग में एक सघन वृक्ष के नीचे कतिया और आरकाडी एक बेंच पर बैठे थे। उनके पास ज़मीन पर फ़िफ़ी (कुत्ता) लेटा हुआ था। उसका लम्बा शरीर इस प्रकार मुड़कर गोलार्द्ध-सा बना रहा था, जिसे खिलाड़ी लोग 'डुबकी लेना' कहते हैं। न तो आरकाडी ही बातचीत का कोई प्रसंग छेड़ रहा था, न कतिया ही कुछ कहने को उत्सुक दीखती थी। आरकाडी अपने हाथों में एक आधी खुली हुई पुस्तक लिये हुए था और कतिया अपनी डलिया में से रोटी के टुकड़े चुन-चुनकर गौरैयों को डाल रही थी, जो भय और साहस के मिश्रित भाव से फुदक-फुदककर चहचहातीं और उसके पैरों के पास आ-आकर टुकड़े चुनती थीं। हल्की वायु का झकोरा वृक्ष

की पत्तियों को हिला रहा था। धूप वृक्ष की छाया से छन-छनकर पार्श्ववर्ती सड़क और फ़िफ़ी की पीठ को चित-कबरी बना रही थी; किन्तु आरकाडी और कतिया पूर्णतः छाया में थे; कतिया के हिलने पर एकाध बार धूप की सुनहरी रेखा उसके बालों को चमका जाती थी। चूँकि यह युगल जोड़ी पास-पास बैठने पर भी मौन थी, इसलिये दोनों में पारस्परिक विश्वास की एक चेतना काम कर रही थी, जो एक को दूसरे की मनोगत बात का निश्चित ज्ञान न रखने की अवस्था में भी दोनों को पारस्परिक निकटता का भान करा रही थी। हम जिस अवस्था में इन दोनों को पहले देख आये हैं, तब से अब तक काफ़ी परिवर्तन होगया है—आरकाडी के चेहरे पर अधिक गम्भीरता आगयी है और कतिया पहले की अपेक्षा अधिक चपल और वाचाल हो गयी है।

आख़िर आरकाडी पहले बोला—

"क्या आप नहीं समझतीं", उसने कहा—"कि रूसी-भाषा का 'यासेन'*-शब्द इस 'एश' वृक्ष पर पूर्णतः लागू होता है? क्योंकि दूसरे किसी भी पेड़ से हवा में इतनी चमक नहीं पैदा होती, जितनी इसकी छाया के हिलने से होती है।"

कतिया ने आँख उठाकर उसकी ओर देखा।

"ठीक है।" उसने जवाब दिया और आरकाडी ने गर्व-

---

* यासेन शब्द 'यासुनी' से निकला है, जिसका अर्थ है साफ़ या चमकीला।

पूर्वक मन-ही-मन सोचा—"यह 'अलंकारिक भाषा' में बोलने पर अब मुझे नहीं झिड़कती।"

"हाँ," कतिया ने आरकाडी के हाथ की पुस्तक पर नज़र डालते हुए कहा—"मैं नहीं कह सकती कि मुझे 'हीन' की कृति हमेशा अच्छी लगती है। मुझे न तो उसका हँसना अच्छा लगता है, न रोना—मुझे उस स्थल पर वह विशेष प्रिय मालूम होता है, जब विचार-मग्न और क्लान्त होता है।"

"मुझे तो उसका हास्य अच्छा लगता है।" आरकाडी ने कहा।

"तब तो आप में पुरानी उपहासात्मक प्रवृति अब भी अव-शिष्ट मालूम होती है। अभी हमें उसमें और भी सुधार करने की आवश्यकता मालूम होती है।"

"सचमुच ?" आरकाडी ने सोचा—"मेरी उपहासात्मक प्रवृति ? ओह, अगर बज़ारोव इस बातको सुन पाता !"

प्रकटतया उसने कहा—"यह 'हमें' कौन है ? आप ?"

"नहीं जी ! मेरी बहन और पारफ़िरी प्लाटोनिच, जिनके साथ अब आप कभी नहीं झगड़ते, और मेरी मौसी भी, जिन्हें अभी तीन दिन पहले आप गिरजाघर लिवा ले गये थे।"

"वह तो मैंने इसलिये किया था कि मैं इन्कार नहीं कर सका। रही एना सर्जीवना की बात, सो कृपया याद रखिये कि वह बहुत बातों में बज़ारोव से सहमत हैं।"

"हाँ, वह पहले उनके प्रभाव में बहुत आगयी थी, और आप भी।"

"और मैं भी ? तो क्या अब मैं उस प्रभाव से मुक्त हो गया हूँ ?"

कतिया ने कोई जवाब नहीं दिया।

"मैं जानता हूँ कि आप उस (बज़ारोव) को घृणा करती थीं।" आरकाडी ने कहना शुरू किया।

"मैं घृणा करती थी ? उनकी समीक्षा करना मेरा काम नहीं था।"

"यह जवाब मैं बिना अविश्वास के नहीं सुनता। संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिसकी 'हम सब' समीक्षा नहीं कर सकते। इस प्रकार की अस्वीकृति तो बहाने की सूचक है।"

"सच पूछिए तो मैं उनसे घृणा तो उतनी नहीं करती थी, जितना उन्हें अपरिचित समझती थी—उसी प्रकार जैसे मैं उनके लिये, या उस रूप में आपके लिये भी, अपरिचित थी।"

"आपका मतलब क्या है ?"

"मैं अपना मतलब सिवाय इसके और कैसे व्यक्त करूँ कि वह एक जंगली पक्षी थे, और मैं और आप पालतू हैं।"

"मैं पालतू हूँ ?"

कतिया ने स्वीकारात्मक सिर हिला दिया। आरकाडी कान खुजाने लगा।

"देखिए," उसने कहा—"मैं आपसे कह सकता हूँ कि यह एक प्रकार की अप्रतिष्ठा है।"

"क्यों ? क्या आप भी जंगली पक्षी बनना चाहते हैं ?"

"नहीं, यह ज़रूरी नहीं है कि जंगली ही बनूँ; पर मज़बूत और शक्तिशाली बनने की इच्छा ज़रूर रखता हूँ ।"

"आपको ऐसी इच्छा रखने की ज़रूरत नहीं। आपके मित्र महोदय में ये दोनों ही बातें थीं; पर अगर एक ही होती, तो और अच्छा होता ।"

"हूँ ! आपका विश्वास है कि वह एना सर्जीवना पर काफ़ी प्रभाव रखता था ?"

"हाँ ! पर उस (एना) के ऊपर किसी का शासन अधिक समय तक नहीं चल सकता ।" यह अन्तिम बात कतिया ने धीमे स्वर में कही ।

"आप ऐसा क्यों सोचती हैं ?"

"इसलिये कि वह बड़ी गर्वीली है—बल्कि वह अपनी स्वतन्त्रा की क़द्र करती है ।"

"कौन क़द्र नहीं करता ?" आरकाडी ने पूछा—उसी समय उसने मन में सोचा—"यह उसकी चर्चा क्यों कर रही है ?" आश्चर्य है कि उसी समय कतिया के मन में भी यही प्रश्न उठा। किन्तु यह प्रश्न वैसा विलक्षण नहीं था जैसा कि समझा जा सकता था, विशेषतः इसलिये कि जब नवयुवक और नवयुवतियाँ ऐसे अनवरत और सौख्यपूर्ण वार्तालाप में पड़ते हैं, तो कभी-कभी दोनों के मस्तिष्कों में एक समय में एक ही से विचार उत्पन्न हो जाते हैं ।

आरकाडी मुस्कराकर कतिया के और निकट खिसककर धीरे से बोला—"यह स्वीकार कीजिए कि आप उनसे कुछ डरती हैं।"

"किनसे ?"

"'उन'से।" आरकाडी ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

"क्या आप उस (एना) से डरते हैं ?" कतिया ने पूछा।

"हाँ। कृपया इस बात का ध्यान रखिए कि मैं आपसे भी इसी प्रकार के प्रश्न का उत्तर सुनना चाहता हूँ।"

कतिया ने इस प्रकार उँगली उठायी, जैसे धमकी दे रही हो।

"मुझे आप पर आश्चर्य हो रहा है!" उसने कहा—"मेरी बहन आजकल आपसे जैसी प्रसन्न है, वैसी कभी नहीं थी। आप जब उससे पहले मिले थे, तब की अपेक्षा वह अब आपसे अधिक प्रसन्न है।"

"सचमुच ?"

"हाँ। क्या आपने इस बात पर ध्यान नहीं दिया आपको तो इससे प्रसन्न होना चाहिए था।"

आरकाडी सोचने लगा।

"मैंने एना सर्जीवना की कृपा प्राप्त करने की कब चेष्टा की है, यह नहीं जानता।" अन्ततः वह प्रकट रूप में बोला—"निश्चय ही ऐसा नहीं हो सकता, पर मैंने उन्हें वे पत्र लाकर दिये हैं, जो आपकी माँ ने मेरी माँ को लिखे थे।"

"ठीक है, यद्यपि इसके और भी कारण हैं, जिन्हें मैं नहीं बताऊँगी।"

"क्यों ?"

"इसलिये कि मैं नहीं बताना चाहती।"

"ओह, मैं आपकी हठ करने की योग्यता को जानता हूं।"

"हाँ, यह तो मेरे अन्दर है ही।"

"और आपकी पर्यवेक्षण शक्ति को भी।"

कतिया ने उसकी ओर देखा। फिर बोली—

"आप आपे से बाहर क्यों हो रहे हैं ? आप सोच क्या रहे हैं ?"

"सोच यह रहा हूँ कि मैं यह नहीं समझ सकता कि आपके अन्दर वे पर्यवेक्षण शक्तियाँ कहाँ से आगयीं, जो निस्सन्देह आपकी ही मालूम पड़ती हैं। मैं इसे अच्छी तरह इसलिये नहीं समझता कि आप प्रत्येक व्यक्ति के प्रति ऐसे चिड़चिड़ेपन, अविश्वास और लज्जालुना के भाव क्यों रखती हैं तथा—"

"इसका कारण यह है कि मैंने एकान्त जीवन व्यतीत किया है। इस प्रकार का जीवन अपने ही विरुद्ध सोचने का अवसर देता है। पर क्या मैं प्रत्येक व्यक्ति से लज्जा करती हूँ ?"

आरकाडी ने उसे आदरपूर्ण दृष्टि से देखा।

"कोई हर्ज नहीं" उसने कहा—"पर आप जैसी स्थिति के—सम्पत्तिशाली—व्यक्तियों में इस प्रकार के गुण बहुत

अधिक नहीं पाये जाते । ऐसे व्यक्तियों पर ज़ारों की तरह शक्ति का असर मुश्किल से होता है।"

"पर मैं सम्पत्तिशाली तो नहीं हूँ।"

आरकाडी ने पहले उसका मतलब नहीं समझा और विचार में पड़ गया—"निश्चय ही यह जायदाद इसकी नहीं, इसकी बहन की है।" यह विचार उसे पूर्णतः सुखदायक नहीं प्रतीत हुआ—यहाँ तक कि वह तत्काल बोल उठा—

"आपने यह बात बड़ी ख़ूबसूरती से कही।"

"कौन-सी बात ?"

"यही कि आप सम्पत्तिशाली नहीं हैं। आपने यह बात बड़ी सरलतापूर्वक, बिना किसी कृत्रिम लज्जा और फुर्ती के साथ कही है। इसके अतिरिक्त साधारण व्यक्तियों की अभिज्ञता—जो जानता या मानता, अथवा जानती या मानती है कि वह दरिद्र है—मेरी समझ में केवल उसके कहे गये शब्दों के अतिरिक्त कुछ और अर्थ रखती है। इसमें एक प्रकार का गर्व छिपा होता है।"

"मेरी बहन को धन्यवाद है कि मुझे दरिद्रता का अनुभव नहीं करना पड़ा। रही मेरे गुणों की बात, सो उसकी चर्चा तो मैंने केवल इसलिये की कि बात अपने-आप मुँह से निकल गयी।"

"बिल्कुल ठीक। तो भी यह स्वीकार कीजिए कि आपके अन्दर गर्व का बीज भी विद्यमान है, जिसका संकेत मैं कर चुका हूँ।"

"मेरे गर्व करने का कोई उदाहरण दीजिए।"

"उदाहरण ? अच्छा, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपने किसी धनी पुरुष से शादी क्यों नहीं कर ली ?"

"क्या मैं ऐसे पुरुष से प्रेम कर सकती थी ? मैं—पर ऐसा कोई व्यक्ति मेरी नज़र में आया ही नहीं, इसलिये नहीं की।"

"अच्छा !" आरकाडी ने कहा—"पर भविष्य में आप ऐसा क्यों नहीं करेंगी ?"

"क्योंकि कवि लोग भी विषम विवाह-सम्बन्ध की निन्दा करते हैं।"

"आपका मतलब यह है कि आप या तो शासन करेंगी, या—"

"नहीं, नहीं ! उससे क्या लाभ होगा ? बल्कि इसके विपरीत मैं तो शासित बनने को तैयार हूँ, यद्यपि मेरा विश्वास है कि किसी भी रूप में असमानता का परिणाम बुरा होता है। आत्म-प्रतिष्ठा और आज्ञा-पालन का संयोग,—मैं तो इसीको सर्वोत्कृष्ट समझती हूँ; इसीसे वास्तविक सुख की प्राप्ति हो सकती है। केवल अधीनतापूर्ण अस्तित्व तो एक ऐसी चीज़ है, जिस पर मैं विचार भी नहीं कर सकती।"

"'विचार भी नहीं कर सकती'" आरकाडी ने कहा—"आप भी तो उसी खून से हैं, जिससे एना सर्जीवना—आप भी उन्हीं की तरह स्वतंत्र हैं, और आप उनसे भी अधिक गुप्त रहती हैं। वास्तव में आप चाहे कैसे ही दृढ़ और पवित्र

भाव रखती हों, आप अपनी इच्छा से उन्हें प्रकाश में नहीं लायेंगी।"

"अवश्य ! आप दूसरी बात सोचते ही क्यों हैं ?"

"और आप चतुर भी हैं, साथ ही आपका चरित्र भी यदि उन (एना) से ऊँचा नहीं, तो उनकी बराबरी का है।"

"मैं अपनी बहन के साथ अपनी तुलना पसन्द नहीं करती। आप भूल गये मालूम पड़ते हैं कि वह 'सुन्दरी' और 'बुद्धिमती'—दोनों ही हैं। इसके अतिरिक्त स्वयं आपको कोई भी बात उनकी निन्दा के रूप में नहीं कहनी चाहिए, ख़ासकर जब गम्भीरतापूर्वक बात हो रही हो।"

"'स्वयं आपको' क्यों ? क्या आप समझती हैं कि मैं दिल्लगी कर रहा हूँ !"

"मुझे इसका निश्चय है।"

"सचमुच ? पर अगर मैं कह दूँ कि अभी बहुत-सी बातें और हैं, जिन्हें मैंने प्रकट नहीं की हैं ?"

"मैंने आपकी बात नहीं समझी।"

"'नहीं समझी' ? तो आपकी समझ का अनुमान अधिक लगा लिया गया है।"

"क्यों ?"

आरकाडी ने अपना मुँह फेर लिया और कोई जवाब नहीं दिया। कतिया अपनी डलिया में पड़े हुए रोटी के अवशिष्ट चूरे बीन-बीनकर गौरैयों को फेंकने लगी। दुर्भाग्यवश चूरे

फेंकते समय उसकी बाँहों का फैलाव बहुत बढ़ गया, जिसके कारण चिड़ियाँ डरकर चूरों के पास न आकर दूर भागने लगीं।

"कतिया," आरकाडी ने कहा—"सम्भव है कि आप इन बातों को कोई विशेष महत्व न देती हों। इसलिए कृपया इस बात को समझ लें कि आपकी बहन को, या किसी अन्य व्यक्ति को, मैं कुमारी कतेरिना सर्जीवना के बदले में नहीं चाहता।"

वह वहाँ से उठकर सहसा इस प्रकार चल पड़ा, जैसे वह अपने मुँह से निकलते हुए शब्दों को रोक रहा हो। कतिया डलिया पर हाथ रक्खे, उसकी ओर देखती रह गयी। धीरे-धीरे उसके कपोलों पर लालिमा छा गयी, और यद्यपि उसके ओठों पर मुस्कराहट नहीं थी और उसकी काली आँखों से घबराहट के चिह्न प्रकट हो रहे थे; फिर भी उसके मुख-मण्डल पर एक भिन्न प्रकार का भाव अव्यक्त रूप में व्याप्त था।

"तू अकेली है ?" एना सर्जीवना ने पीछे से आकर कहा—"मैं समझती थी कि आरकाडी तेरे साथ ही बाग़ में आये हैं?"

कतिया ने धीरे-धीरे अपनी नज़र बहन पर डाली (जो उस समय सुन्दर और भड़कीली पोशाक पहने सड़क के किनारे वृक्ष की छाया में आ खड़ी हुई थी और अपनी खुली हुई छतरी की नोक से फ़िफ़ी का कान सहला रही थी) और उसी गति से उत्तर दिया—

"हाँ,—अकेली हूँ!"

"अच्छा," मैडम ने मुस्कराकर कहा—"तो मैं समझती हूँ, वह अन्दर गये हैं ?"

"सम्भव है !"

"तू उनके साथ पढ़ रही थी न ?"

"हाँ !"

एना सर्जीवना ने कतिया की ठुड्डी पकड़ ली, और उसका चेहरा अपने सामने कर लिया।

"तू उनके साथ लड़ी तो नहीं ?" उसने कहा।

"नहीं तो !" कतिया ने जवाब दिया और चुपचाप अपनी बहन का हाथ ठुड्डी पर से हटा दिया।

"कैसा गम्भीर उत्तर है ! मैं यहाँ इसलिए आयी हूँ कि हम लोग दूर तक टहलने चलें, क्योंकि वे हमेशा दूर चलने के लिये कहा करते हैं। पर अन्य विषयों पर भी बातें करनी हैं—तेरे लिये शहर से कुछ जूते मँगाये गये हैं, अच्छा हो, जाकर उन्हें पहनकर देख कि ठीक हैं या नहीं। मैंने कल देखा कि तेरे पुराने जूते कैसे भद्दे हो गये हैं। साधारणः तू कभी इन बातों पर ध्यान ही नहीं देती। तेरे पैर बड़े सुन्दर हैं; हाथ भी बुरे नहीं हैं, यद्यपि कुछ बड़े अवश्य हैं। तुझे अपने पैरों का ख़याल रखना चाहिए। तू यहाँ कभी भी अच्छी तरह नहीं रहती।"

मैडम अपने गाउन की हल्की सरसराहट के साथ आगे बढ़ी, और कतिया ने बेंच से उठकर 'हीन' कृत पुस्तक हाथ में ले दूसरी दिशा को चल पड़ी,—किन्तु जूते देखने नहीं।

"'तेरे पैर बड़े सुन्दर हैं !'" उसने चबूतरे की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए मन-ही-मन दुहराया—"बड़े सुन्दर पैर हैं ! अच्छा, बहुत जल्द इनकी सराहना कोई और ही करेगा।"

वह घबरा गयी और बाक़ी सीढ़ियों पर धीरे-धीरे चढ़ी।

इधर आरकाडी अपने कमरे की ओर बढ़ा; पर वह अभी बड़े हाल को पार भी नहीं कर पाया था कि खानसामा ने उसे सूचना दी कि महाशय बज़ारोव ऊपर बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"इवजिनी वैसिलिच ?" आरकाडी ने कुछ चौंकते हुए पूछा—"क्या वह यहाँ देर से आया हुआ है ?"

"नहीं, कुछ ही मिनट हुए। उन्होंने मुझ से कहा कि मैडम को सूचित न करके मैं उन्हें सीधे आपके कमरे में पहुँचा दूँ।"

"मुझे आशा है कि घर पर कोई दुर्घटना नहीं हुई है।" आरकाडी मन-ही-मन सोचते हुए ऊपर दौड़ गया और जाकर अपने शयनागार का दरवाज़ा खोला। किन्तु बज़ारोव का चेहरा देखते ही उसका भ्रम दूर होगया, यद्यपि कोई भी अधिक अनुभवी व्यक्ति यह देख सकता था कि इस आकस्मिक आगन्तुक के सदैव-दृढ़ता-द्योतक मुख-मण्डल पर हृद्गत अस्थिरता के चिह्न विद्यमान हैं। वह सफ़री टोपी और गर्द से ढका हुआ कोट पहने हुए खिड़की पर बैठा था; और तब भी वहाँ से नहीं उठा, जब आरकाडी आश्चर्य-सूचक सम्बोधनके साथ अत्यन्त प्रसन्नता का प्रदर्शन करते हुए उसकी ओर बढ़कर चिल्लाया।

"कैसे आश्चर्य की बात है। कैसे आगये ? घर पर तो सब ख़ैरियत है ? सब स्वस्थ हैं न ?"

"तुम्हारे घर पर सब अच्छा है," बज़ारोव ने कहा—"पर सब स्वस्थ नहीं हैं। तो भी, यदि तुम्हारा दिमाग़ बहुत अस्थिर न हो रहा हो, तो पहले बैठ जाओ, और फिर थोड़े-से चुने हुए शब्दों में सारा हाल सुना दूँगा।"

इस पर आरकाडी शान्त होगया, और बज़ारोव ने उसे पाल पिट्रोविच के द्वन्द्व-युद्ध का हाल कह सुनाया। बात समाप्त होने पर आरकाडी आश्चर्य-चकित और व्यथित होकर खड़ा रह गया। उसने अपनी मनोदशा व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं समझी और केवल यही पूछा कि उसके चाचा का ज़ख़्म वास्तव में बेख़तर है, या नहीं; पर जब बज़ारोव ने उसे बतलाया कि ज़ख़्म बिल्कुल मामूली है और सिवा चिकित्सक के और किसी के ध्यान देने योग्य भी नहीं है, तब उसके ओठों पर बलात् मुस्कराहट आगयी। किन्तु वह मन-ही-मन दुखी हो रहा था और गुप्त रूप से एक प्रकार की लज्जा का अनुभव भी कर रहा था। उसकी यह अवस्था बज़ारोव ताड़ गया।

"देखो," उसने कहा—"ज़मींदारों के संसर्ग से क्या लाभ ! यदि किसी का भाग्य उनके अन्दर रहकर बनता है, तो यह अनिवार्य है कि उसे उनकी शूरतापूर्ण युद्ध की ओर खिंचना पड़े। मैं पिता के पास जाते समय घूमकर इधर होते चलने के विचार से यहाँ आया हूँ—किन्तु नहीं, मैं मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ

की झूठ बात क्यों बोलूँ। मेरे इधर आने का वास्तविक कारण यह है कि न-जाने क्यों मैं यहाँ आगया! मनुष्य के जीवन में ऐसे समय आते हैं, जब उसे अपनी गर्दन पकड़कर अपने-आपको इस तरह उखाड़ देना चाहिए, जैसे बाग़ के किनारे से निवाड़ के वृक्ष उखाड़ फेंकते हैं। मैंने गत बार यहाँ से जाते समय यही किया था। किन्तु मेरे मन में यह इच्छा होगयी कि जिन चीज़ों को पहले छोड़ चुका हूँ, उन्हें एक नज़र देख लूँ—उस जगह को देख लूँ, जहाँ मैं जम रहा था।"

"इस शब्द से कि 'जिन चीज़ों को पहले छोड़ चुका हूँ' मुझे आशा है कि तुमने उसमें मुझे भी नहीं सम्मिलित किया है?" आरकाडी ने चिन्तित होकर ऊँचे स्वर में कहा—"यह मत कहना कि तुम्हारी इच्छा मुझे भी अपनी मित्रता से वञ्चित रखने की है?"

बज़ारोव ने उसकी ओर देखा। बड़ी ही स्थिर और तीक्ष्ण दृष्टि से देखा।

"तो क्या अन्तिम परिणाम सुनकर तुम्हें कष्ट होगा?" उसने पूछा—"उल्टे तुम्हीं मुझे भूले हो—तुम अनुभवशून्य हो और तुम्हारी आत्मा स्वच्छ है। साथ ही मुझे आशा है कि एना सर्जीवना के साथ तुम्हारा मामला मज़े में चल रहा है?"

"'एना सर्जीवना के साथ मेरा मामला'?"

"तो क्या शहर से उसी के लिये तुम यहाँ नहीं आये? कैसे भोले हो! उन रविवार के स्कूलों का क्या हुआ? मुझ-

से यह मत कहो कि तुम उसे प्रेम नहीं करते। क्या तुम बातें छिपानी भी सीख गये ?"

"जैसा कि तुम जानते हो, मैं तुमसे सदा सब बातें स्पष्ट कहता रहा हूँ। इसलिये कृपया मेरी बात का विश्वास करो। ईश्वर को साक्षी देकर मैं कहता हूँ कि तुम्हारा अनुमान ग़लत है।"

"सचमुच यह तो एक नया ही राग है!" बज़ारोव ने धीरे से कहा—"पर ऐसे बेचैन न हो—कुछ भी हो, मेरे लिये दोनों बातें बराबर हैं। निश्चय ही एक 'विलक्षणता'-प्रेमी तो यही कहता कि हमारे मार्ग अब विलग होने लगे हैं; किन्तु मैं स्पष्टतः इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कहूँगा कि हमें अब एक-दूसरे की आवश्यकता नहीं रही है।"

"ओह, इवजिनी!

"प्यारे भाई, यह कोई दुर्भाग्य की बात नहीं है। संसार में सदा कोई-न-कोई ऐसी चीज़ निकलती रहती है, जिसे दूसरी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती। इसलिये अब हमें एक-दूसरे से विदा लेनी चाहिए। जब से मैं यहाँ आया हूँ, तब से ऐसा बेचैन हो रहा हूँ, जैसे गवर्नर की स्त्री गागोल* की रचना किसी के द्वारा ज़ोर-ज़ोर से पढ़े जाने पर होती है। वास्तव में मैंने गाड़ी से अपने घोड़े नहीं खुलवाये हैं।"

---

*रूसका क्रान्तिकारी लेखक-जिसकी सुन्दर रचनाओं का अनुवाद नवयुग साहित्य मन्दिर प्रकाशित करेगा।

"पर तुम ऐसा नहीं कर सकते !"

"क्यों नहीं ?"

"इसलिये कि मेरी भावनाओं के अतिरिक्त, इस प्रकार तुरन्त चला जाना एना सर्जीवना के प्रति एक बड़ा कठोर व्यवहार होगा। मैं जानता हूँ कि वह तुमसे मिलकर प्रसन्न होगी।

"नहीं, प्रसन्न नहीं होगी।"

"मुझे निश्चय है कि वह प्रसन्न होगी। बहाना क्यों कर रहे हो ? क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम उसी के लिये यहाँ नहीं आये हो ?"

"तुम्हारे पास ऐसा अनुमान करने का आधार है; पर मैं कहता हूँ कि बात ग़लत है।"

किन्तु आरकाडी की बात सत्य सिद्ध हुई, क्योंकि एना सर्जीवना वास्तव में बज़ारोव से मिलना चाहती थी। ख़ानसामा से उसने उक्त बात कहला भी भेजी। इसलिये अपने कपड़े आदि झाड़ने के बाद बड़े कोट को बग़ल में दबाये हुए (मुलाक़ात के समाप्त होते ही रवाना होजाने की सूचना के रूप में) वह नीचे गया और बजाय उस कमरे में मिलने के, जिसमें उसने अपनी अप्रत्याशित आसक्ति प्रकट करदी थी, मैडम से ड्राइंग रूम में मिला। एना सर्जीवना ने अपनी उँगलियों का छोर उसकी ओर बढ़ाते समय काफ़ी प्रसन्नता का परिचय दिया, किन्तु उसके चेहरे से अनिच्छापूर्ण खिंचाव का चिह्न प्रकट हुए बिना नहीं रहा।

"आरम्भ में," बज़ारोव ने शीघ्रतापूर्वक कहा—"मैं आपको निश्चय दिलाना चाहता हूँ। आप अपने सामने एक लाश देख रही हैं, जो बहुत पहले ही चैतन्यता प्राप्त कर चुकी है, और इस आशा से रहित नहीं है कि दूसरे व्यक्ति उसकी मूर्खता को भूल चुके हैं। बहुत दिनों तक अब मुझे आपसे पुनः मिलने की आशा नहीं है; किन्तु यद्यपि (जैसा कि आप जानती हैं) मैं भावना में नहीं बह रहा हूँ, फिर भी मैं अपने मनमें यह बात रखना चाहूँगा कि मेरी प्रतिमा अब भी आपके मस्तिष्क को घृणा से भर देती है।"

वह इस प्रकार श्वास लेने लगी जैसे कोई किसी उच्च पर्वत की चोटी पर पहुँचने पर लेता है। इसके बाद उसके मुख-मण्डल पर मुस्कराहट नज़र आयी और उसने दुबारा बज़ारोव की ओर अपना हाथ बढ़ाकर उसका हाथ ज़ोर से दबा दिया।

"जब शोकाग्नि सुषुप्त हो, तो उसे प्रज्वलित न कीजिए," उसने कहा—"ख़ासकर इसलिये कि मेरा अन्तःकरण मुझे अपराधी ठहराता है, केवल उस अवसर पर इतराने के लिए ही नहीं; बल्कि किसी और बात के लिये भी। एक शब्द और कहूँगी। हम लोगों में पुनः मित्रता स्थापित होनी चाहिए, क्योंकि वह सब तो स्वप्न-मात्र था। क्यों था न? स्वप्नों को भला कौन याद रखता है?"

"सचमुच कौन याद रखता है? और प्रेम—प्रेम तो केवल अनुभव-गम्य भावना है।"

"मैं आपकी यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुई।"

इस प्रकार दोनों की बातें हुईं। दोनों ही ने समझा कि वे सच बोल रहे हैं। पर क्या वह वास्तव में सत्य था?—सर्वकालीन और पूर्ण सत्य? यह बात उन्हें स्वयं नहीं मालूम थी; अतः लेखक नहीं बता सकता। कुछ भी हो, पर दोनों ही ने उस समय ऐसी बातें कीं, जिनसे पारस्परिक विश्वास का वातावरण उत्पन्न हो गया।

इसके बाद एना सर्जीवना ने बज़ारोव से पूछा कि उसने किरसानोव के यहाँ समय किस प्रकार व्यतीत किया, और यद्यपि वह पाल पिट्रोविच के साथ अपने द्वन्द्व-युद्ध का हाल उससे कहने ही वाला था, पर समय रहते उसने अपने-आपको रोक लिया, और बतलाया कि वह कार्य में बहुत व्यस्त था।

"और" उसने कहा—"मैं किसी अज्ञात कारण से उदासीन रहने लगी थी, और विदेश जाने की बात सोच रही थी; किन्तु वह धुन अब दूर होरही है (आपके मित्र आरकाडी के आगमन को भी इसका श्रेय है), और अब मैं पुनः अपनी पुरानी लकीर पर फिर चलती नज़र आरही हूँ और अपना वास्तविक पार्ट अदा कर रही हूँ।"

"आपका वास्तविक पार्ट क्या है?"

"अपनी बहन की मौसी, गुरुवानी या माँ का पार्ट। हाँ, शायद आपको मालूम नहीं होगा कि किसी समय मैं अपनी तथा आरकाडी निकोलाईविच की घनिष्ट मित्रता को नहीं समझती थी?

किसी भी तरह हो, आपके लिये वह कोई विशेष महत्व की चीज़ नहीं थे। पर अब मैं उन्हें अच्छी तरह समझ गयी हूँ और मेरा यह विश्वास हो गया है कि वह समझदार आदमी हैं। इन सब बातों के अतिरिक्त वह युवक हैं—युवक; हमारी आपकी तरह नहीं हैं।"

"पर वह तो आपके सामने अब भी लजाता है?" बज़ारोव ने पूछा।

"वह—" एना सर्जीवना कहते-कहते रुककर फिर बोली—"नहीं; वह अब पूर्णतः विश्वास करते जा रहे हैं, और अब मुझसे बिल्कुल स्वतंत्रतापूर्वक बातें करने लगे हैं। एक समय था, जब यद्यपि मैं उनका साथ नहीं करना चाहती थी, पर जब कभी मैं उनके पास जाती, तो वह दूर भागते नज़र आते थे। हाँ, प्रसंग-वश यह भी कह दूँ कि कतिया के साथ उनकी बड़ी मित्रता हो गयी है।"

बज़ारोव को इस बात से प्रसन्नता नहीं हुई।

"औरत कभी बहुरूपियापन नहीं छोड़ सकती," बज़ारोव ने सोचा। फिर रूखी हँसी हँसकर प्रकटतः बोला—"तो आप यह कहती हैं कि वह आपसे दूर भागता था? किन्तु निश्चय ही यह बात गुप्त नहीं है कि पहले वह आपके प्रति अत्यन्त आसक्त था?"

"क्या? वह भी थे?"

"हाँ, वह भी," बज़ारोव ने स्वीकारात्मक ढंग से सिर

हिलाकर कहा—"पर मैं समझता हूँ कि आप यह जानती थीं। आपके लिये यह कोई नयी ख़बर नहीं है ?

मैडम की आँखें फ़र्श पर जमी रहीं।

"मैं समझती हूँ कि आप ग़लती पर हैं।" उसने कहा।

"मैं ऐसा नहीं समझता। पर शायद मुझे इसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए थी ?" फिर उसने मन-ही-मन सोचा—"और शायद भविष्य में तुम फिर मुझसे छल नहीं करोगी।"

"आपको इसकी चर्चा क्यों नहीं करनी चाहिए थी ?" उसने पूछा—"वास्तव में मेरा विश्वास है कि आप साधारण-सी बात को बहुत अधिक महत्व दे रहे हैं, और मैं शीघ्र ही यह सोचने लग जाऊँगी कि आपमें अतिशयोक्ति की प्रवृत्ति है।"

"अगर हम लोग किसी और विषय पर बात करें, तो कैसा हो ?" बज़ारोव ने कहा।

"किसलिये ?"

तो भी, मैडम ने स्वयं वार्तालाप का प्रवाह दूसरी ओर मोड़ दिया। यह सच है कि उसने बज़ारोव को निश्चय दिलाया और स्वयं भी इस पर विश्वास किया कि उसने भूतकाल को पूर्णतः भुला दिया; फिर भी उसकी तबीयत प्रसन्न नहीं हुई और वह इस बात से सचेत रही कि सिर्फ़ दिल्लगी या मामूली बातचीत से भी उस पर एक भारी दबाव पड़ रहा है। दर-असल उसकी अवस्था जल-यात्रियों की सी हो रही थी। जल-यात्री उसी प्रकट बेपर्वाही के साथ हँसते-बोलते हैं, जैसे स्थल का यात्री;

किन्तु यदि जहाज़ का इंजन बिगड़ जाय, या अन्य कोई असाधारण घटना होजाय, तो हरेक जल-यात्री के चेहरे पर ऐसी चिन्ता छा जाती है, जो केवल सदा-उपस्थित ख़तरे के कारण ही उत्पन्न होती है।

एना सर्जीवना की बज़ारोव के साथ मुलाक़ात भी इसी प्रकार की थी। यह मुलाक़ात लम्बी इसलिये नहीं हुई कि मैडम शीघ्र ही अन्यमनस्क-सी होने लगी और प्रश्नों का उत्तर ऐसी अस्पष्टतापूर्वक देने लगी कि उसने शीघ्र ही वहाँ से हटकर हाल में जाने का प्रस्ताव किया, जहाँ कतिया और प्रिंसेज़ मौजूद थीं।

"आरकाडी निकोलाईविच कहाँ गये?" मैडम ने पूछा, और यह जानकर कि घण्टे-भर से वह दिखायी नहीं दिया, उसने उसे बुलाने के लिये आदमी भेजा। किन्तु इस कार्य में काफ़ी विलम्ब हुआ, क्योंकि आरकाडी बाग़ के दूसरे छोर के एक कोने में चला गया था और वहाँ हाथों पर ठुड्डी रक्खे विचार-मग्न था। वे विचार बड़े ही महत्वपूर्ण और गम्भीर थे; किन्तु उनमें शोक की मात्रा बिल्कुल नहीं थी, और यद्यपि वह जानता था कि एना सर्जीवना बज़ारोव के साथ अकेली है; फिर भी उसमें वह पुरानी ईर्ष्या नहीं जागृत हुई, और वह इस प्रकार प्रसन्न मालूम होता था, जैसे किसी बात से उसे ख़ुशी और आश्चर्य हुआ हो, और वह किसी निश्चय पर पहुँच गया हो।"

———

२६

यद्यपि स्वर्गीय ओडिन्तसोव नयी रीति प्रचलित करना नापसन्द करता था; किन्तु वह एक विशेष प्रकार के परिष्कृत-रुचि-सम्पन्न नाटकों में आनन्द लेने का विरोधी भी नहीं था, और इसके अभिनय के लिये उसने ग्रीष्म-भवन और झील के बीच में ग्रीक-मन्दिरों के ढंग की ऐसी इमारत बनवा रक्खी थी, जिस में ईंटें रूस की ही बनी हुई लगाई गयी थीं। इस इमारत के अगले भाग की बृहदाकार दीवारों में छः ताक़ बनवाये गये थे, जिनमें एकान्तता, निस्तब्धता, विचारशीलता, उदासीनता, लज्जा और सूक्ष्म चेतनता के भावों की द्योतक छः मूर्तियाँ रक्खी थीं, जो विदेशों के कुशल कारीगरों के हाथ की उत्तम कीर्ति का नमूना थीं; किन्तु इनमें से निस्तब्धता-देवी की मूर्ति, जो ओठों पर उँगली

रक्खे हुए थी, सुरक्षित अवस्था में रूस पहुँच पायी थी। उसकी भी घर के नौकरों की कृपा से उठाते-धरते समय उसी दिन नाक टूट गयी थी। यद्यपि एक पड़ोसी कारीगर ने निस्तब्धता-देवी को पहले की अपेक्षा दुगनी नाक प्रदान करने का कौशल दिखलाया था, फिर भी ओडिन्तसोव ने उसे हटवाकर चक्की-घर में रखवा दिया था, जहाँ अनेक वर्षों तक वह ज़िले की किसान-स्त्रियों के अन्ध-विश्वासपूर्ण भय का कारण बनी रही। इमारत के आगे की दीवार पर इतने पौदे जमे हुए थे कि केवल उसके स्तम्भ ही दिखायी देते थे। इस हरियाली के कारण दोपहर के समय भी इमारत में काफ़ी ठण्डक रहती थी, और यद्यपि एना सर्जीवना ने जिस दिन से वहाँ एक विषैला साँप देखा था, तब से उस स्थान को बिलकुल पसन्द नहीं करती थी, किन्तु कतिया वहाँ बहुधा जाया करती थी और एक पत्थर की बड़ी बेंच पर, जो मूर्तिवाले एक ताक़ के नीचे थी, बैठकर कुछ पढ़ती, या कोई काम करती अथवा अपने को उस विश्राम-प्रियता के हवाले कर देती, जो ऐसे स्थानों पर प्रत्येक व्यक्ति के, अर्द्ध-अचेतनावस्था में जीवन की उन महान तरंगों पर विचार करने से, उत्पन्न होती है, जो हमारे चारों ओर तथा विरुद्ध दिशाओं में उठती हैं।

बज़ारोव के आने के दूसरे दिन प्रातःकाल कतिया उपरोक्त बेंच पर जा बैठी थी और उसके बगल में आरकाडी भी बैठा था, क्योंकि वह आज कतिया को विशेष रूप से अपने साथ वहाँ लिवा लेगया था।

यद्यपि भोजन के समय में अभी एक घण्टे की देरी थी, किन्तु प्रभातकालीन ताज़गी और ओस-कण का स्थान अब उष्णिमा और शुष्कता ने ले लिया था। आरकाडी के चेहरे से कल का-सा भाव व्यक्त हो रहा था; किन्तु कतिया के मन पर आज एक बोझ-सा रक्खा मालूम होता था। इसका कारण यह था कि नाश्ते के बाद उसकी बहन ने उसे अपने अन्तःपुर में बुलाया था और बहुत लाड़-प्यार की बातें करने के बाद (जिससे कतिया हमेशा त्रस्त हो उठती थी) यह आदेश दिया कि आरकाडी के साथ वार्तालाप करने में उसे अधिक सावधानी से काम लेना चाहिए और सब से बड़ी बात यह कि सदैव उसके साथ एकान्त में मिलकर गुप्त रूप में वार्तालाप करने से बचती रहना चाहिए, क्योंकि घरवालों का—और विशेषतः प्रिंसेज़ का—ध्यान उधर विशेष रूप से आकर्षित हो रहा है। चूँकि कल सन्ध्या को एना सर्जीवना उदास थी और कतिया का अन्तःकरण उस (उदासी) के कारण से अपने को बरी नहीं समझता था, इसलिए आरकाडी के यह कहने पर कि वह उसके साथ चले, उसने उसे सूचित कर दिया कि आज वह अन्तिम बार एकान्त में उसके साथ चल रही है।

"कतिया," आरकाडी ने एक प्रकार की हल्की बेचैनी का अनुभव करते हुए कहा—"जिस दिन से मुझे आपके घर में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, तब से मैं आपके साथ विचित्र विषयों पर वार्तालाप कर चुका हूँ। किन्तु एक विशिष्ट प्रश्न

ऐसा है जो मेरे लिए उच्चतम महत्त्व का है। उस प्रश्न की अभी मैंने चर्चा नहीं की है। कल आपने कहा था कि मैं यहाँ रहकर काफ़ी सुधारों में से गुज़र चुका हूँ," (उसने न तो कतिया से नज़र ही मिलायी, न उससे बचने का ही प्रयत्न किया) "और यदि स्पष्टरूप से कहा जाय, तो इस प्रकार का सुधार आंशिक-रूप में मुझ में हुआ है। और सब की अपेक्षा आप यह बात अच्छी तरह जानती हैं—और अन्य लोगों से बढ़कर आपने ही यह बात कही भी है।"

"मैंने ?" कतिया ने पूछा।

"हाँ, आपने," आरकाडी ने दुहराया—"मैं अब वैसा अभिमानी लड़का नहीं रहा हूँ, जैसा कुछ दिनों पहले यहाँ आने पर आया था—मैंने अपनी तेईस वर्ष की उम्र व्यर्थ नहीं गँवायी है। मैं अब भी जीवन में कुछ उपयोगी बनने का अभिलाषी हूँ; मैं अब भी सत्य की सेवा में अपनी सारी योग्यता अर्पण करने के लिए तैयार हूँ। मेरे आदर्श अब मुझे अधिक निकट दीख रहे हैं। अब तक मैं अपने व्यक्तित्व का ज्ञान नहीं रखता था; अब तक मैं अपनी शक्ति से बाहर का कार्य करता रहा हूँ, किन्तु अब मेरे अन्दर एक ऐसी अनुभूति उत्पन्न हो गयी है, जिसने मेरी आँखें खोल दी हैं। हाँ, यह और कह दूँ कि जिस रूप में मैं अपने विचार व्यक्त कर रहा हूँ, उसमें स्पष्टता का अभाव हो सकता है, फिर भी मैं यह आशा करने का दुस्साहस करता हूँ कि मेरी बातें आपने समझ ली होंगी।"

कतिया ने कुछ नहीं कहा; किन्तु उसने आरकाडी की ओर देखना बन्द कर दिया।

"मेरी राय में," आरकाडी भावावेश में बोलता रहा—साथ ही सनोवर के वृक्ष पर सिर के ऊपर ही एक पक्षी अपना अनवरत गान सुना रहा था—"मेरी राय में, एक प्रतिष्ठित आदमी का कर्त्तव्य है कि वह उनके साथ, उनके साथ—मतलब यह कि उनके साथ स्पष्ट व्यवहार करे, जो उसके जीवन में निकट-सम्बन्धी हैं। फलतः मैंने, मैंने सोचा कि—कि—"

आरकाडी आगे नहीं बोल सका। वह रुकने लगा और उसकी ज़बान लड़खड़ाने लगी। थोड़ी देर तक वह अवाक् रहा। इधर कतिया की आँखें नीचे को ही झुकी हुई थीं—देखनेवाला यही समझता कि आरकाडी की यह भूमिका उसकी समझ में बिल्कुल नहीं आयी, और वह बिल्कुल भिन्न बात सुनना चाहती है।

"मैं पहले ही जानता था कि मेरी बातों से आपको आश्चर्य होगा," आरकाडी ने फिर कहा—"और वह आश्चर्य मेरी यह बात सुनकर और भी बढ़ जायगा कि जिस भावना में मैं विचरण कर रहा हूं, कुछ हद तक—हाँ कुछ हद तक उसका सम्बन्ध आपसे है। क्योंकि आपको याद होगा कि कल आपने मुझ पर गम्भीरता के अभाव का आरोप किया था,"—वह उस आदमी की तरह बातें कर रहा था, जो किसी दलदल में फंसकर यह समझता हो कि वह हर क़दम पर अधिकाधिक गहराई में

फँसता जा रहा है, और फिर भी इस आशा से पैर मारता ही जाता हो कि अन्ततः वह दलदल से मुक्त हो जायगा—"और ऐसा कलङ्क बहुधा युवकों पर लगाया जाता है, जो इसके पात्र नहीं होते। यदि मुझ में अधिक अन्ध-विश्वास होता ("ईश्वर मेरी मदद करे!" उसने निराशा-पूर्वक सोचा, किन्तु कतिया ने अपना मुँह नहीं फेरा),—"यदि मुझे यह आशा करने का अधिकार होता कि—"

"यदि मुझे यह निश्चय हो जाता कि आप जो बातें करते हैं, वह दिल से करते हैं—" सहसा एना सर्जीवना की स्पष्ट आवाज़ सुनाई पड़ी।

आरकाडी जैसे गूँगा बन गया, और कतिया का चेहरा पीला पड़ गया, क्योंकि इमारत की ओटवाली झाड़ी के बग़ल से आयी हुई सड़क पर बज़ारोव और मैडम बातें करते हुए टहल रहे थे। कतिया और आरकाडी उपरोक्त जोड़े को देख नहीं रहे थे। किन्तु उनकी बातें साफ़ सुन रहे थे, यहाँ तक कि उनके साँस लेने और मैडम के वस्त्रों के हिलने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। कुछ क़दम आगे चलकर वे दोनों रुके और इमारत के सामने खड़े हो गये।

"यह इस प्रकार हुआ," एना सर्जीवना ने बज़ारोव से फिर कहा—"एक मामूली ग़लती के कारण आपने तथा मैंने भारी भूल कर डाली। मतलब यह कि यद्यपि हम में से किसी के भी उठती जवानी के दिन नहीं हैं—जिसमें मेरे लिये तो यह बात

और भी लागू है—और हम दोनों ही काफ़ी जीवन व्यतीत करके क्लान्त होचुके हैं, तो भी हम (मैं यह कहने में कोई सङ्कोच न करूँगी) दोनों का व्यक्तित्व बुद्धिमत्तापूर्ण व्यक्तित्व है। फलतः यद्यपि आरम्भ में हम दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुए थे और हमारी पारस्परिक उत्सुकता जाग्रत हो उठी थी, किन्तु परिणाम यह हुआ कि—"

"परिणाम यह हुआ कि मैं आपकी दृष्टि में फीका लगने लगा।" बज़ारोव ने कह डाला।

"नहीं, नहीं! आप अच्छी तरह जानते हैं कि इस स्थिति का कारण यह नहीं था। किन्तु कारण कुछ भी हो, मुझे और आपको बाध्यतः एक-दूसरे की आवश्यकता नहीं है। यह मुख्य बात है। दूसरे शब्दों में, हम दोनों में—मैं इसे किस प्रकार व्यक्त करूँ?—हम दोनों परस्पर एक-से हैं। यह तथ्य समझने में हमने बहुत देरी की। अब आरकाडी—"

"तो क्या आपको आरकाडी की बाध्यतः आवश्यकता है?" बज़ारोव बोल उठा।

"शर्म की बात है, इवजिनी वैसिलिच। आपने स्वयं कहा है कि आरकाडी मेरे प्रति पूर्णतः लापर्वाह नहीं हैं, और मुझे भी बहुत दिनों से सन्देह था कि वह मेरे प्रति कम-से-कम प्रशंसा के भाव रखते हैं। चूँकि हम इस विषय पर बात कर रहे हैं, अतः मैं आपसे यह छिपाने की चेष्टा नहीं करूँगी कि यह सोचकर भी कि मेरी उम्र इतनी है कि मैं आरकाडी की

चाची-सी लगती हूँ, फिर भी मेरे विचार पहले की अपेक्षा उनकी ओर अधिक केन्द्रीभूत होते हैं। उनकी ताज़ी युवावस्था-प्रसूत भावुकता में एक आकर्षण है।"

"यहाँ 'मोहकता' शब्द अधिक उपयुक्त होता," बज़ारोव ने गम्भीर और स्थिर स्वर में कहा (जो सदैव उसके व्यङ्ग का परिचायक होता था)—"वास्तव में मैंने कल आरकाडी को बहुत गुप्त पाया—उसने आपके और आपकी बहन के प्रति बहुत थोड़ी बात कही। यह एक महत्वपूर्ण लक्षण है।"

"कतिया और वह भाई-बहन की तरह हैं," मैडम ने कहा—"वास्तव में मैं यह देखकर प्रसन्न हूँ—"यद्यपि शायद मुझे ऐसी घनिष्ठता से चश्मपोशी नहीं करनी चाहिए।"

"मैं समझता हूँ कि आपके अन्दर भगीत्व बोल रहा है।" बज़ारोव ने कहा।

"अवश्य! पर क्या हमें यहाँ खड़े होने की ज़रूरत है। चलिए आगे बढ़ें। हम लोग अद्भुत वार्तालाप करते हैं न? वास्तव में जो बातें मैं आपसे कर रही हूँ, इन पर विचार करने से आश्चर्य होता है! फिर भी मैं आपसे कुछ डरती हूँ, यद्यपि मेरा विश्वास है कि आप हृदय के अच्छे आदमी हैं।"

"मैं अच्छाई से बहुत दूर हूँ; और आप यह इसलिये कह रही हैं कि मैं आपकी नज़रों में कोई महत्व नहीं रखता। मरे को मारना अच्छा नहीं होता!"

"इवजिनी वैसिलिच, हम हमेशा अपने-आप पर क़ाबू नहीं रख सकते," एना सर्जीवना ने फिर कहा; किन्तु दूसरे ही क्षण हवा का ऐसा तेज़ झोंका आया कि वृक्ष की पत्तियों की झक-झोर की आवाज़ में इसके अवशिष्ट शब्द विलुप्त हो गये। क्षण-भर बाद "आप तो स्वतंत्र हैं न ?" के अतिरिक्त बज़ारोव के मुँह से और कुछ नहीं निकला। इसके बाद दोनों के पैरों की आहट बन्द हो गयी और एक बार फिर निस्तब्धता छा गयी।

कतिया की ओर मुड़कर आरकाडी ने देखा। वह पूर्ववत् बैठी हुई थी; किन्तु उसका सिर अधिक नीचे झुका हुआ था।

"कतेरिना सर्जीवना," आरकाडी ने दोनों हाथ मिलाते हुए प्रकम्पित आवाज़ से कहा—"मैं आपको सदा, स्मृति के अन्त तक प्रेम करूँगा, और अन्य किसी स्त्री से प्रेम नहीं करूँगा। आज सुबह मैं आप से यही बात इस आशा से कहने की चेष्टा कर रहा था कि इस विषय में मैं आपके विचार जान लूँ, तब आपका पाणि-ग्रहण करूँ। मैं कोई धनी आदमी नहीं हूँ, पर तुम्हारे लिये मैं कोई भी कुर्बानी करने को तैयार मिलूँगा। मुझे जवाब दीजिए ? मेरा विश्वास कीजिए ? निश्चय ही आप यह नहीं समझ रही हैं कि मैं किसी ओछेपन से यह कह रहा हूँ ? गत कुछ दिनों की याद कीजिए—क्या आपको निश्चय नहीं है कि मेरा अवशिष्टांश (आप मेरा मतलब समझती हैं) सदा के लिये चला गया ? मेरी ओर देखिए।

मेरी ओर देखकर एक शब्द बोलिए—केवल एक ही शब्द ! मैं आपको प्रेम करता हूँ—प्रेम करता हूँ ! इस बात का विश्वास कीजिए कि मैं जो-कुछ कह रहा हूँ, वह हृदय से कह रहा हूँ।"

कतिया ने गम्भीरतापूर्वक अपनी चमकती आँखें ऊपर उठायीं, और क्षण-भर विचार करने के बाद कुछ मुस्कराकर बोली—"हाँ !"

आरकाडी उछल पड़ा।

"हाँ ? आपने 'हाँ' कहा है न ? पर इस शब्द का मतलब क्या है ? आपका मतलब यह है न कि आप मेरे प्रेम में विश्वास करती हैं, या आपका यह अभिप्राय है कि—? नहीं, नहीं, मुझ में यह वाक्य समाप्त करने का साहस नहीं है।"

कतिया ने फिर केवल "हाँ" कहा, किन्तु इस बार उसने ग़लतफ़हमी के लिये गुंजाइश नहीं छोड़ी। आरकाडी ने उसके बड़े और सुन्दर हाथ अपने हाथों में पकड़ लिये और आनन्द-विह्वल होकर उसे अपने छाती से लगा लिया। उसके पैर ज़मीन पर मुश्किल से पड़ रहे थे और वह बार-बार 'कतिया ! कतिया !' कह रहा था। इधर कतिया की आँखों से आनन्दाश्रु प्रवाहित हो उठे और वह अश्रुपात के साथ ही मुस्करा उठी। जिस व्यक्ति ने अपनी प्रेमिका की आँखों में ऐसे आँसू नहीं देखे, वह उस सुख की उच्चता को नहीं समझ सकता, जिसमें आकर हर्ष, कृतज्ञता और लज्जालुता के मिश्रित भाव स्त्री प्रकट करती है।

दूसरे दिन प्रातःकाल एना सर्जीवना ने बज़ारोव को अपने अन्तःपुर में बुलवाया, और जब वह आया, तो उसने एक ज़बर्दस्ती की मुस्कराहट के साथ उसे एक मुड़ा हुआ लिखित काग़ज़ पकड़ा दिया। वह पत्र आरकाडी की तरफ़ से था, जिसमें मैडम को लिखा गया था कि वह अपनी बहन का विवाह उसके साथ कर दे।

बज़ारोव ने पत्र खोलकर देखा और क्षण-भर के लिए अपनी ईर्ष्याग्नि मुश्किल से रोक सका।

"देखिए, मैंने आपसे पहले ही कहा था न ?" उसने कहा—"अभी कल ही आप मुझसे कह रही थीं कि कतेरिना सर्जीवना के प्रति उसका व्यवहार भाई-बहन का सा है! अब आप क्या करेंगी ?"

"आप मुझे क्या करने की सलाह देते हैं ?" उसने मुस्कराकर कहा।

"मेरी समझ में"—वह खुद मुस्कराकर बोल रहा था, यद्यपि मैडम की तरह वह भी वास्तविक हँसी नहीं हँस रहा था—"मेरी समझ में हमारे लिए सिवा इस युगल-जोड़ी को आशीर्वाद देने के और कोई चारा नहीं है। प्रत्येक दृष्टि से यह जोड़ी अच्छी रहेगी, क्योंकि आरकाडी के पिता के पास एक छोटी-सी अच्छी ज़मींदारी है, और यही उनका एकमात्र पुत्र है। आरकाडी के पिता ऐसे सरल प्रकृति के आदमी हैं कि वे कोई कठिनाई भी नहीं उपस्थित करेंगे।"

मैडम ओडिन्त्सोव उठकर कुछ देर कमरे में टहलती रही—उसकी मुखाकृति क्षण-भर रक्ताभ नज़र आती थी, तो क्षण-भर पीली दिखायी देने लगती थी।

"अच्छा, आपके यह विचार हैं ?" अन्ततः उसने कहा— "मैं भी इसमें कोई रुकावट नहीं देखती। वास्तव में सम्बन्ध को सोचकर मैं कतिया के और—और उनके लिए भी आह्लादित होती हूँ। किन्तु पहले मुझे उनके पिता की स्वीकृति की प्रतीक्षा करनी चाहिए, और इस काम के लिए मैं स्वयं आरकाडी को निकोलाई पिट्रोविच से मिलने के लिए भेजूंगी।...... कल मैं ठीक कह रही थी न ? कल मैं यह ठीक ही कह रही थी कि मैं और आप तो अब वयःप्राप्त हो चुके हैं ? मैं यह बात देखने में असफल क्यों रही ? मुझे इस बात पर सचमुच आश्चर्य है !"

वह फिर मुस्करायी; किन्तु वह मुस्कराहट तुरन्त ग़ायब हो गयी।

"हमारे युवक-युवतियाँ सचमुच बड़े चालाक हैं।" बज़ारोव ने कहा। क्षण-भर ठहरने के बाद वह फिर बोला—"अच्छा, अब विदा कीजिए। मुझे आशा है कि यह कार्य भली भाँति सुसम्पन्न होगा। दूर से मैं भी आनन्द मनाऊँगा।"

मैडम ने फिरकर उसकी ओर देखा।"

"क्या सचमुच आपके जाने की आवश्यकता है ?" उसने पूछा—"कुछ दिन और क्यों न ठहरिये ? कृपया ठहर जाइये,

क्योंकि आपसे बातें करके मेरे अन्दर स्फूर्ति आ जाती है— ऐसा मालूम पड़ता है, जैसे कोई चट्टान की कगर पर चल रहा हो—पहले तो डर लगता है; फिर हिम्मत बँधती है। मत जाइये।"

"मैं आपके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद देता हूँ, साथ ही अपनी वाक्-शक्ति की प्रशंसा के लिए भी," बज़ारोव ने कहा— "तो भी बहुत समय से मैं एक ऐसी दुनिया में आगया हूँ, जो मेरे व्यक्तित्व के लिए विरोधी है। उड़ाकू मछली हवा में थोड़ी ही देर तक ठहर सकती है। फिर उसे अपने स्वाभाविक स्थान पर जाना ही पड़ेगा। मुझे अपने स्थान को वापस जाने दीजिए।"

यह सब कहने पर भी उसके पीले चेहरे पर एक कड़वी हँसी नाच रही थी। मैडम को उसकी यह अवस्था देखकर दुःख हुआ।

"यह आदमी अब भी मुझे प्रेम करता है।" उसने सोचा, और सहानुभूति के साथ हाथ आगे बढ़ा दिया।

बज़ारोव ने उसका भाव समझ लिया।

"नहीं, नहीं!" उसने पीछे हटते हुए कहा—"मैं ग़रीब हूँ सही; किन्तु अभीतक मैंने किसी का दान नहीं स्वीकार किया है। अब तो विदा कीजिए। आप सदा सुखी रहें।"

"तो भी हम फिर मिलेंगे," मैडम ने अनिच्छित सङ्केत के साथ कहा—"इसका मुझे निश्चय है।"

"संसार में सब-कुछ हो सकता है।" कहकर बज़ारोव झुका और चुपचाप वहाँ से चलता बना।

तीसरे पहर उसने प्रस्थान की तैयारी में अपना बक्स बन्द करते हुए आरकाडी से कहा—

"मैंने सुना है कि तुम अपने लिए घोंसला बनाने जा रहे हो? क्यों न बनाओ? यह सर्वोत्तम मार्ग है। पर तुम्हारे लिये यह बहुरूपियापन व्यर्थ है, और मुझे मुश्किल से आशा थी कि तुम ऐसा करोगे। क्या इन सब बातों के पूर्व-प्रबन्ध ने तुम्हारी ज़बान बन्द कर दी है?"

"जब मैं तुम्हें मॅरिनो में छोड़कर आया था, तो मेरे मन में इस बात का विचार नहीं था," आरकाडी ने कहा—"यद्यपि बहुरूपिया तो तुम हो, क्योंकि जब तुम यह कहते हो कि 'यह सर्वोत्तम मार्ग है,' तो यह बहुरूपियापन नहीं, तो और क्या है?— इसके अतिरिक्त तुम अपना समय भी व्यर्थ गँवा रहे हो, विशेषतः उस अवस्था में जबकि मैं तुम्हारे विवाह-सम्बन्धी सिद्धान्तों से परिचित हूँ।"

"मैं तो केवल अपने विचार प्रकट कर रहा हूँ। इस समय मैं और क्या कर रहा हूँ? मेरे बक्स में अभी जगह ख़ाली है। इस जगह में फूस भर रहा हूँ। जीवन-रूपी बक्स के लिये भी यही बात लागू है। रिक्त स्थान की पूर्ति के लिये हम कोई चीज़ भरते हैं। इसके लिये तुम्हें क्रुद्ध नहीं होना चाहिए। तुम इस बात को विस्मरण नहीं कर सकते कि मैं कतेरिना सर्जीवना

के प्रति कैसे भाव रखता हूँ। जबकि अधिकांश कुमारियाँ ठीक अवसर पर केवल मुस्कराकर प्रशंसा और ख्याति प्राप्त करती हैं, तुम्हारी कतिया कुछ अधिक दिखा सकती है—वास्तव में इतना अधिक कि तुम शीघ्र ही (और यह उचित ही होगा) उसके इशारे पर नाचने लगोगे।"

बक्स का ढक्कन बन्द करके बज़ारोव फ़र्श पर से उठ खड़ा हुआ।

"अच्छा, अब विदा," उसने कहा—"नहीं, मैं तुम्हें धोखा नहीं दूँगा, हम दोनों अब सदा के लिये पृथक् हो रहे हैं, और तुम यह बात जानते भी हो। मेरी राय में तुमने बुद्धिमतापूर्ण कार्य किया है, क्योंकि तुम्हारे लिये निहिलिज़्म का कठोर, कटु और प्रमादपूर्ण जीवन व्यतीत करना सम्भव नहीं था—तुम्हारे अन्दर आवश्यक शीतलता और विषाक्तता का अभाव है। किन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि तुम्हारे अन्दर युवकोचित उत्साह की कमी है। मेरे कहने का मतलब यह है कि उस कार्य के लिये केवल यही गुण पर्याप्त नहीं है। हमारे कार्य की उन्नति नम्रता और क्षणिक उफान से नहीं हो सकती; और यह दोनों ही भाव व्यर्थ हैं। उदाहरण के लिये, अभी तुम्हारी परीक्षा भी नहीं हुई है, और तुम अपने आपको मर्द समझने लगे—जबकि हमारे अस्तित्व की दो प्रधान शर्तें युद्ध और रक्तपात हैं। हमारे पैरों की धूल से तुम्हारी आँखें दुःखने लगती हैं, और हमारे शरीर पर मैल देखकर तुम्हें कै होने लगती है। दूसरे शब्दों में,

यद्यपि तुम अपनी अलोचना सुनकर कुछ सन्तोष प्राप्त करते हो, और अपनेको बहुत ऊँचा भी समझते हो, किन्तु तुम हमारी तोल में पूरे नहीं उतरे। हमारे लिये ऐसी चीज़ें निस्सार हैं। हमें जिस प्रकार के हथियारों—साधनों की आवश्यकता है, वे बिल्कुल ही भिन्न तरह के हैं। फलतः मैं इस बात को दुहराता हूँ कि यद्यपि तुम एक सुन्दर नवयुवक हो, किन्तु साथ ही तुम्हारा मस्तिष्क छोटा, और नामधारी नरम दल के विचारों के उन छोटे वर्गक्षेत्रों से बना हुआ है, जिसे मेरे पिता 'विकास का फल' कहा करते हैं।"

"इवजिनी," आरकाडी ने दुःखपूर्ण स्वर में कहा—"हम लोग सदा के लिये बिछुड़ रहे हैं, फिर भी तुम मुझे ऐसी-ऐसी बातें सुना रहे हो!"

बज़ारोव सिर खुजाने लगा।

"मैं कुछ और भी कह सकता था, आरकाडो," उसने कहा—"पर अब मैं वह बात नहीं कहूँगा—उसमें वैचित्र्यवाद की अत्यधिक गन्ध आयेगी। जितनी जल्दी हो सके, शादी कर लो और अपना घोंसला बनाकर प्रचुर संख्या में सन्तान पैदा करो। तुम्हारी सन्तति बिल्कुल बेवकूफ़ नहीं होगी, विशेषतः इसलिये भी कि वह उचित समय पर उत्पन्न होगी; ऐसे समय पर नहीं, जब मैं और तुम हुए थे।......मेरे घोड़े तैयार हैं और मुझे अब प्रस्थान करना ही होगा। इस घर के और लोगों से मैं विदा ले चुका हूं। क्या हम एक बार फिर एक-दूसरे को आलिङ्गन करें?"

आरकाडी की आँखों से आँसुओं की अटूट धारा बह चली—वह अपने पुराने मित्र और पथ-प्रदर्शक के ऊपर गिर पड़ा।

"ओह, युवावस्था, युवावस्था !" बज़ारोव ने कहा—"देखो, जवानी का फल क्या होता है ! पर मैं जानता हूँ कि कतेरिना सर्जीवना शीघ्र ही सब ठीक कर लेगी। हाँ, वह तुम्हें ढाढ़स बँधायेगी।"

अन्तिम विदा लेने के बाद वह गाड़ी में जा बैठा और ऐसा करते हुए उसने अस्तबल की छत पर बैठे हुए दो कौओं की ओर इशारा किया

"देखो !" उसने उच्च स्वर से आरकाडी से कहा—"तुम्हारे लिये एक शिक्षाप्रद सबक़ यह है।"

"इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है ?" आरकाडी ने पूछा।

"क्या ?" बज़ारोव ने कहा—"क्या तुम ऐसे अज्ञान हो, या प्राकृतिक इतिहास को ऐसा भूल गये हो कि यह भी नहीं जानते कि पक्षियों में कौआ अत्यन्त प्रतिष्ठित माना जाता है ? अपने समक्ष इसके उदाहरण देखकर शिक्षा ग्रहण करो। नमस्कार !"

गाड़ी रवाना हो गयी।

बज़ारोव ने ग़लत नहीं समझा था, क्योंकि रात होने के पहले ही आरकाडी कतिया के साथ बातें करने में मस्त होकर अपने उपदेशक को भूल चुका था। इसके अतिरिक्त युवक आरकाडी

दुबारा अपनी भावी पत्नी की अधीनता स्वीकार करने लगा, जिस पर कतिया को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। परिणाम यह हुआ कि दूसरे ही दिन आरकाडी अपने पिता के विचार जानने के लिये मैरिनो चला जाय, और तब तक एना सर्जीवना ने युगल जोड़ी के मार्ग में कोई बाधा न उपस्थित करते हुए भी ऐसा प्रबन्ध किया कि वे दोनों अधिक समय तक घर के लोगों से पृथक् न रहें, किन्तु साथ ही बुढ़िया को जब इस सम्बन्ध का समाचार मिला, तो प्रबल क्रोध के मारे उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। एना सर्जीवना पहले डरी थी कि वर-कन्या के सौख्य का दृश्य उसे बहुत विचलित करनेवाला सिद्ध होगा; किन्तु मामला उससे बिल्कुल उल्टा हुआ और वह न-केवल उस दृश्य से दुःखी नहीं हुई, वरन् वह उसके मनोरंजन और फलतः सुख का कारण हुआ— किन्तु यह एक ऐसा अन्त था, जिसमें सुख के साथ खेद भी मिला हुआ था।

"बज़ारोव ने यह ठीक ही कहा था," उसने सोचा— "वास्तव में यह केवल उत्सुकता, केवल सहज प्रेम, केवल अहंकार है और है, केवल—"

"बच्चो, क्या प्रेम प्रयोग-सिद्ध भाव है ?" उसने एक बार आरकाडी और कतिया से पूछा था; किन्तु दोनों में से किसीने उसका अभिप्राय नहीं समझा। इसके अतिरिक्त वे दोनों उससे कुछ लज्जित हुए, क्योंकि उन्हें वे बातें भूली नहीं थीं, जो

उन्होंने थियेटरवाली इमारत में बेंच पर बैठे हुए अनिच्छापूर्वक सुनी थीं; किन्तु समय आने पर एना सर्जीवना ने इस लज्जा पर विजय प्राप्त कर ली और उसे वह कार्य अधिक सहज-साध्य प्रतीत हुआ, साथ ही उसे अपनी निराशा पर भी विजय मिल गयी ।

२७

बुड्ढे वैसिली और उसकी पत्नी की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था, क्योंकि उनका पुत्र अप्रत्याशित रूपसे वापस आ गया। एना व्लासीवना ने ऐसा शोरोगुल और उछल-कूद मचायी कि वैसिली आइवनिच ने उसकी उपमा मुर्ग़ी से दे डाली (निस्सन्देह उसके ब्लाउज़ की छोटी लटकन पूँछ की तरह लटक-कर उसे पक्षी का-सा रूप दे रही थी); यद्यपि वैसिली स्वयं काँख-काँखकर पाइप सुड़कते हुए और अपने विस्तृत ओंठ फैलाकर हँस रहा था।

"मैं अब पूरे छः सप्ताह तक तुम्हारे पास रहूँगा," बज़ारोव ने कहा—"पर मैं काम करना चाहता हूँ, इसलिए मेरे काम में बाधा न डाली जाय।"

"बाधा डालने की कौन कहे, हमारी याद भी तुम्हारे काम में बाधक नहीं सिद्ध हो पायेगी।" वैसिली आइवनिच ने जवाब दिया।

बुड्ढे ने अपने वचन का पालन भी किया; क्योंकि अध्ययन-कक्ष अपने लड़के के लिए नियत कर देने के बाद वह न-केवल स्वयं अदृश्य रहने लगा, प्रत्युत अपनी स्त्री को भी प्रेम-प्रदर्शन करने से उसने बिल्कुल रोक दिया।

"जब इवजिनी पहले आया था," उसने बुढ़िया से कहा—"तो हम-तुम उसके कार्य में कुछ बाधक सिद्ध हुए थे, इसलिए इस बार हमें अधिक सावधान रहना चाहिए।"

एना सर्जीवना ने बात मान ली, और अब नये प्रबन्ध के अनुसार वह केवल भोजन के समय अपने पुत्र को देख पाती थी और तब भी उससे बोलते डरती थी।

"इन्युश्का," वह बोलना शुरू करती—और जब तक बज़ारोव उसकी ओर मुँह करता, वह घबराकर अपनी टोपी की डोर खींचते हुए कहती—"नहीं, कुछ नहीं।" और बदले में वैसिली आइवनिच से (हाथ पर मुँह टेककर) इस प्रकार बोल उठती—"हमारा परम-प्रिय इन्युश्का गोभी का शोरबा पसन्द करेगा, या गोश्त?" और जब वैसिली आइवनिच जवाब देता—"तुम खुद क्यों नहीं पूछ लेतीं?" तो वह कहती—"नहीं, कहीं वह खीज उठे तो!"

किन्तु अन्ततः बज़ारोव ने अध्ययन-कक्ष में बन्द रहना

बन्द कर दिया, क्योंकि उसका काम हल्का हो गया और इसके बाद उदासी, चिन्ताशीलता और अत्यधिक बेचैनी बढ़ने लगी। उसकी प्रत्येक गति से विलक्षण असन्तोष टपकने लगा। उसकी चाल से जो दृढ़ता और क्रियात्मक आत्म-विश्वास टपकता था, वह अदृश्य हो गया, और अब एकान्त-भ्रमण बन्द करके वह अपने को अधिक सामाजिक बनाने लगा—वह ड्राइंग रूम में चाय पीता, रसोईघर के पासवाले बगीचे में टहलता और वैसिली आइवनिच के साथ चुपचाप तम्बाकू पीता। यही नहीं, एक मौक़े पर तो वह फ़ादर अलेक्सिस से मुलाक़ात करने भी गया!

आरम्भ में इस परिवर्तन ने वैसिली आइवनिच के हृदय में आह्लाद भर दिया; किन्तु वह आनन्द स्थायी नहीं सिद्ध हुआ।

"मैं कह नहीं सकता क्यों, एन्युश्का के कारण मुझे चिन्ता होती है," उसने अपनी स्त्री से कहा—"इसलिये नहीं कि वह असन्तुष्ट और चिड़चिड़ा हो गया है—ऐसी बातों से तो कोई हर्ज नहीं था—बल्कि बात यह है कि वह उदास तथा चिन्तित रहता है और कभी कुछ कहता भी नहीं। क्या यह सम्भव है कि वह तुम्हें और मुझे कोसता हो! वह दुबला भी हो गया है; उसके चेहरे का रंग भी मुझे अप्रिय लगता है।"

"हे भगवान्!" बुढ़िया ने कहा—"फिर भी मैं उसका गला अपनी बाँह में पकड़कर प्यार नहीं कर सकती!"

इसके बाद वैसिली आइवनिच, बज़ारोव से उसके काम, उसके स्वास्थ्य और उसके मित्र आरकाडी के सम्बन्ध में

सावधानी के साथ प्रश्न करने लगा; किन्तु बज़ारोव सदा अनिच्छा और बेपर्वाही के साथ जवाब देता, और एक बार जब उसका बाप उक्त विषयों की चर्चा शुरू करने लगा, तो उसने चिढ़कर उत्तर दिया—

"तुम हमेशा मेरे पीछे क्यों पड़े रहते हो ? तुमने तो पहले से भी अधिक नाक में दम कर दिया।"

"नहीं, नहीं—मेरा मतलब यह नहीं था।" बेचारे वैसिली आइवनिच ने जवाब दिया।

राजनीतिक चर्चा से भी कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि एक बार जब वैसिली आइवनिच ने उसका ध्यान ग़ुलामों की मुक्ति और उनकी उन्नति की ओर आकर्षित किया, तो उसने बेपर्वाही से जवाब दिया—

"कल आँगन से गुज़रते समय, मैंने कुछ किसान लड़कों का गाना सुना था, किन्तु उनमें से एक भी पुराने गाने नहीं गा रहा था, बल्कि सब—'वह नवयुग आरहा है, जब हृदय प्रेम से प्रफुल्लित हो उठेंगे।' गारहे थे। यह तो आपकी उन्नति के लक्षण हैं।"

बज़ारोव कभी-कभी गाँवों में चला जाया करता, और अपने विनोदप्रिय स्वभाव के कारण किसी-किसी किसान से बातें करता।

"अच्छा," उसने एकबार एक किसान से कहा—"कृपया मुझे जीवन के सम्बन्ध में अपने विचार समझाओ, क्योंकि

लोग कहते हैं कि तुम्हीं लोगों पर रूस की सारी शक्ति और उसका भविष्य निर्भर है और तुम्हीं हमारे इतिहास में नवयुग का आरम्भ करने जा रहे हो, साथ ही तुम्हीं हमें वास्तविक भाषा और नये विधान देने जा रहे हो।"

किसान ने पहले तो कोई जवाब नहीं दिया। फिर बोला—

"हम वह सब कर लेते, पर पहले यहाँ एक गिरजाघर बन जाता, तो अच्छा था।"

"अच्छा ! तो संसार के बारे में मुझे कोई साधारण बात बताओ," बज़ारोव ने कहा—"संसार का आधार तीन मछलियों पर है न ?"

"हाँ, यह तो सच है," किसान ने मग्न होकर पुराने ज़माने की सी मीठी हँसी हँसते हुए कहा—"सबसे बड़ी मछली तो हमारे पिता लोग हैं, कड़ी (मछली) अमीर लोग हैं और बढ़िया (मछली) किसान लोग हैं।"

बज़ारोव ने यह बात सुनकर घृणापूर्वक मुंह फेर लिया और किसान अपने घर की ओर चल दिया।

"क्या कहा उसने ?" एक शोक-संतप्त-से अधेड़ किसान ने, जो अपनी झोंपड़ी के दरवाज़े पर खड़ा बज़ारोव से किसान का वार्तालाप देख रहा था, पड़ोसी किसान से पूछा—"क्या वह बक़ाया टैक्स (कर) के बारे में कुछ कह रहा था ?"

"बक़ाया टैक्स के बारे में !" पहले किसान ने जवाब दिया–उसके स्वर से वह माधुर्य लुप्त हो गया था, जो उसने बज़ारोव

के समक्ष प्रकट किया था और उसकी जगह शुष्क घृणा ने ले ली थी—"वह तो यों ही गप-शप कर रहा था—वह अपनी चापलूसी सुनना चाहता था। क्या हम लोग नहीं जानते कि एक अमीर और उसकी श्रेणी के लोग कैसे होते हैं ?"

"हमेशा !" दूसरे किसान ने स्वीकार किया, जिसके बाद टोपी और मुक्का हिलाते हुए वे वर्तमान मामलों और आवश्यकताओं पर बहस करने लगे। इस प्रकार बज़ारोव का घृणापूर्वक मुँह फेरना, और उसका किसान के साथ बात करने का ढंग (जिस-की कि यह युवक निहिलिस्ट पाल पिट्रोविच से बातें करते समय डींग हाँका करता था) व्यर्थ गया ! वास्तव में इस आत्म-विश्वासी बज़ारोव के दिमाग़ में कभी इस बात का ज्ञान ही नहीं हुआ था कि एक किसान की दृष्टि में वह मटर की पकौड़ियों से अधिक महत्व नहीं रखता।

तो भी उसने अपने लिए एक काम निकाल लिया। वह यह था कि जब वैसिली आइवनिच एक किसान के पैर में पट्टी बाँध रहा था, तो उसका हाथ बुढ़ापे के कारण कुछ काँप उठा और बज़ारोव उसकी मदद के लिए तैयार हो गया। उसी समय से बज़ारोव अपने पिता का सहकारी हो गया, यद्यपि उसने अपनी बतलायी हुई तथा पिता द्वारा निर्दिष्ट औषधियों का मज़ाक उड़ाना बन्द नहीं किया। किन्तु बेटे की यह ठठोली किसी भी रूप में बाप को क्रुद्ध नहीं करती थी, बल्कि बुड्ढे को उल्टे हर्ष ही होता था। पाइप पीते हुए और गन्दे स्वेटर

को दोनों अंगूठों से कमर तक खींचकर वह आनन्दपूर्वक अपने बेटे की दिल्लगी का मज़ा लूटता और फिर हँसकर अपने काले-से दाँत दिखा देता। दिल्लगी की ये बातें प्रायः अर्थशून्य होती थीं; पर कभी-कभी बुड्ढा उन्हें पकड़ लेता, और बार-बार दुहराता था। उदाहरण के लिए, वह कई दिनों तक शहर और गाँवों के प्रत्येक व्यक्ति से कहता था कि "हमारा दफ़्तर नौ घण्टे का है"—जिसका मतलब यह था कि बज़ारोव ने अपने पिता की यह आदत देखकर कि वह मतीन* में सम्मिलित होने जाया करता है, उपरोक्त वाक्य† कह दिया था।

"ईश्वर को धन्यवाद है कि इवजिनी की उदासीनता दूर हो गयी है," उसने अपनी बुढ़िया पत्नी से कहा—"वास्तव में आज उसने मुझसे जो दिल्लगी की है, वह तुम्हारे सुनने-योग्य थी।"

बुड्ढा मन-ही-मन यह भी सोचता था कि उसके काम में अब बज़ारोव सहायक हो गया है, और वह इस विचार से गर्वान्वित हो जाता था।

"हाँ, हाँ," उसने, एक किसान-स्त्री को, जिसने अभाव-वश पुरुष का जाकेट पहन रक्खा था, औषधि का जल और ठण्डी क्रीम देते हुए कहा—"तुम्हें रोज़ ईश्वर को धन्यवाद देना

---

* एक धार्मिक क्रिया।

† इस वाक्य का आशय यह है कि आठ घण्टा काम करके नवाँ घण्टा धार्मिक क्रिया में व्यतीत होता है।

चाहिए कि मेरा लड़का घर पर ठहरा हुआ है, नहीं तो तुम्हारा इलाज आधुनिक वैज्ञानिक विधि से नहीं हो सकता था। समझती हो ? मैं कहता हूं कि फ्रांस के बादशाह नेपोलियन के पास भी ऐसा चिकित्सक नहीं था, जैसा मेरा लड़का है।"

और वह किसान स्त्री (जो शायद उदर-पीड़ा की शिकायत लेकर आयी थी—और जो बुड्ढे डाक्टर की यह बात सम्भवतः समझ भी नहीं पायी) झुककर तीन-या चार अण्डे, जो उसने रूमाल में बाँध रक्खे थे, निश्शुल्क डाक्टर को भेंट किये। इसी प्रकार जब बज़ारोव ने एक बर्तनों की फेरी करनेवाले का एक दाँत उखाड़ा, तो वैसिली आइवनिच ने उसे बड़ी हिफ़ाज़त से फ़ादर अलेक्सिस को दिखाने के लिये रख छोड़ा।

"देखिए कैसी बड़ी खाँग है," उसने फ़ादर आलेक्सिस से कहा—"इवजिनी में इतनी ताक़त है कि उसने फेरीवाले को फ़र्श पर से उठा लिया ! इसका उखाड़ना बलूत का पेड़ उखाड़ने के सदृश है !"

"ख़ूब," फ़ादर अलेक्सिस ने कहा। उसे यह नहीं मालूम था कि वह उसके अतिरिक्त और क्या कहे, क्योंकि इस उमंग-पूर्ण बुड्ढे से वह इसके अतिरिक्त और क्या कहकर छुटकारा पा सकता था।

अन्ततः एक ऐसा अवसर भी आया, जब पास के गाँव का एक किसान अपने बीमार भाई को इलाज कराने के लिये ले आया। रोगी को मियादी बुख़ार था और शरीर पर लाल चकत्ते निकले

थे। वह गाड़ी पर बिछाये हुए फूस के ढेर पर औंधे-मुँह पड़ा हुआ मौत की घड़ियाँ गिन रहा था, क्योंकि वह अचेत था और उसके शरीर पर असाध्यता के लक्षण विद्यमान थे। वैसिली आइवनिच उपचार के लिये पहले ही न लाने पर खेद प्रकट करके रोगी के जीवन की आशा छोड़ देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सका। उसकी ग़लती भी नहीं थी, क्योंकि किसान रोगी को लेकर अपने गाँव पहुँच भी नहीं पाया था कि रास्ते में उसका देहान्त हो गया।

इसके तीन दिन बाद बज़ारोव ने अपने पिता के कमरे में आकर 'हेल-स्टोन' (खनिज औषधि) माँगा।

"हाँ, मेरे पास थोड़ा है," वैसिली आइवनिच ने पूछा—"पर तुम उसे चाहते किसलिये हो ?"

"ज़ख्म दाग़ने के लिये।"

"किसका ज़ख्म ?"

"अपना।"

"तुम्हारा ? मुझे दिखाओ। ज़ख्म कहाँ है ?"

"यहाँ, उँगली में। आज मैं उस गाँव में गया था, जहाँ से किसान मियादी बुख़ारवाला मरीज़ लाया था, और यद्यपि उन्होंने लाश छिपाने की चेष्टा की थी; किन्तु मैंने पता लगा लिया। इस तरह का काम करने का अवसर मुझे बहुत दिनों बाद मिला था।"

"हाँ, तब ?"

"परिणाम यह हुआ कि चीर-फाड़ करते समय मेरी उँगली में ज़ख्म आगया। मैं इस दवा के लिये ज़िला-डाक्टर के पास गया; किन्तु उनके पास यह चीज़ थी ही नहीं।"

वैसिली आइवनिच का चेहरा बिल्कुल सफ़ेद होगया। वह चुपचाप अपने अध्ययन-कक्ष को दौड़ गया और वहाँ से अभीष्ट दवा लेकर वापस आया। बज़ारोव दवा लेकर फ़ौरन वहाँ से चलने लगा।

"नहीं नहीं!" वैसिली आइवनिच ने चिल्लाकर कहा—"खुदा के लिये मुझे खुद देखने दो।"

बज़ारोव मुस्कराया।

"तुम सचमुच बड़े तेज़ चिकित्सक हो।" उसने कहा।

"मैं विनती करता हूँ कि दिल्लगी मत करो; उँगली मुझे दिखाओ। नहीं, घाव तो बड़ा नहीं है। यहाँ दबाने पर दर्द हो रहा है?"

"बिल्कुल नहीं। डरो नहीं। अगर चाहो, तो और ज़ोर से दबा सकते हो।"

वैसिली आइवनिच रुक गया।

"क्या तुम्हारा खयाल है," उसने कहा—"कि इसे फ़ौलाद से दाग़ना अच्छा नहीं होगा?"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता। इसके अतिरिक्त यह उपचार तो पहले हो सकता था; अब तो घाव लगने के बाद इतना समय व्यतीत हो चुका है कि इस हेल-स्टोन से दाग़ने पर

भी अभीष्ट लाभ नहीं होगा, क्योंकि तुम जानते हो कि कीटाणु जब एक बार शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं, तो बहुत देर से औषधि-उपचार करने पर असर नहीं होता।"

"बहुत देर से कैसे?" वैसिली आइवनिच ने पूछा।

"मैंने कहा न कि घाव को लगे बहुत विलम्ब—चार घण्टे—हो गया।"

वैसिली आइवनिच ने ज़ख़्म को दाग़ दिया।

"तो ज़िला-डाक्टर के पास यह हेल-स्टोन नहीं था?" उसने पूछा।

"नहीं।"

"ख़ुदा पनाह है! वह आदमी अपने-आपको डाक्टर कहता है, और ऐसी अनिवार्य औषधि भी उसके पास नहीं रहती!"

"तुम्हें उसके चीर-फाड़ के औज़ार देखने चाहिए थे।" बज़ारोव ने कहा। इसके बाद वह कमरे के बाहर चला गया।

उस दिन शाम को, और कई दिन बाद तक वैसिली आइवनिच तरह-तरह के बहाने बनाकर अपने पुत्र के कमरे में जाता रहा, और यद्यपि उसने ठीक ज़ख़्म के सम्बन्ध में कोई प्रश्न नहीं किया और केवल अन्य विषयों पर ही वार्तालाप करता रहा; किन्तु वह अपने पुत्र को लगातार ऐसी चिन्तित दृष्टि से देखता रहा कि अन्ततः बज़ारोव ने अधीर होकर उसे वहाँ से चले जाने के लिए कह दिया। यह बात निश्चित है कि वैसिली

आइवनिच ने पुनः उस कमरे में न आने का वादा भी कर लिया, और उसने अपना वह वचन पूरा भी किया; किन्तु एरिना व्लासीवना (जिसे पति ने पुत्र के ज़ख़्म के सम्बन्ध में कुछ नहीं बतलाया था) को जैसे हवा में उसकी कुछ गन्ध-सी मिल रही थी, जिसका प्रमाण यह था कि कल रात को उसने देखा कि उसके पतिको नींद नहीं आयी। इसके अनुसार आगामी दो दिनों तक वैसिली आइवनिच ने अपना वादा पूर्णतः निभाया; और यद्यपि गुप्त रूप से पुत्र को देखना भी उस (पुत्र) की इच्छानुकूल नहीं प्रतीत होता था; किन्तु तीसरे दिन भोजन के समय वैसिली आइवनिच से वह अवस्था असह्य हो गयी, क्योंकि बज़ारोव आँखें नीची किये हुए बैठा था और उसके सामने भोजन ज्यों-का-त्यों रक्खा था।

"तुम कुछ भी नहीं खा रहे हो, इवजिनी ?" उसने अपने चेहरे पर अत्यन्त बेपर्वाही का भाव प्रकट करते हुए कहा— "मेरी राय में खाना तो अच्छा बना है।"

"मेरे न खाने का कारण केवल यही है," बज़ारोव ने जवाब दिया—"कि मुझे भूख नहीं है।"

"तुम्हें भूख नहीं है ?" बुड्ढे ने कातर-भावसे पूछा—"और क्या—क्या तुम्हारे सिर में दर्द भी है ?"

"हाँ, दर्द क्यों नहीं होगा ?"

एरिना व्लासीवना के कान खड़े हो गये।

"क्रोध मत करो, इवजिनी," वैसिली आइवनिच ने फिर

कहा—"पर क्या मैं तुम्हारी नब्ज़ देखकर परीक्षा कर सकता हूँ ?"

बज़ारोव ने उसकी ओर देखा।

"नब्ज़ देखने की ज़रूरत नहीं," उसने कहा—"मैं वैसे ही बतला सकता हूँ कि मुझे कुछ हरारत-सी है।"

"और कुछ जाड़ा भी है ?"

"हाँ। मैं समझता हूँ, मुझे जाकर लेट रहना चाहिए। कृपया मुझे थोड़ी लाइम-जूस की चाय बनवा दो, क्योंकि मालूम होता है, मुझे ठण्ड लग गयी है।"

"हाँ," एरिना व्लासीवना ने कहा—"कल रात मैं तुम्हारा खाँसना सुन रही थी।"

"पर यह मामूली-सी सर्दी है।" कहकर बज़ारोव कमरे से निकल गया।

एरिना व्लासीवना लाइम-जूस की चाय बनाने में लग गयी और वैसिली आइवनिच बग़लवाले कमरे में जाकर सिर के बाल नोचने लगा।

उस दिन बज़ारोव बिस्तरे से नहीं उठा, और रात गहरी नींद में व्यतीत की। एक बजे उसने चेष्टा करके आँख खोली, तो लैम्प की रोशनी में अपने पिता का ज़र्द चेहरा देखा और उसे वहाँ से चले जाने के लिये कहा। किन्तु बुड्ढे ने तुरन्त कमरे में जाने का एक और बहाना बना लिया; और दबे-पाँवों वापस आकर आलमारी के खुले दरवाज़े के पीछे छिप गया।

वहीं से वह अपने पुत्र को देखता रहा। एरिना व्लासीवना भी उस रात बिस्तरे पर नहीं गयी, और थोड़ी-थोड़ी देरी पर अध्ययन-कक्ष का दरवाज़ा थोड़ा खोलकर झाँक जाया करती थी कि इन्युशा किस तरह सो रहा है, और फिर वैसिली आइवनिच की ओर देखकर—जिसकी झुकी और गतिहीन पीठ के अतिरिक्त और कुछ दिखायी नहीं देता था—वह कुछ सन्तोष प्राप्त करती थी।

प्रातःकाल बज़ारोव उठने की चेष्टा करने लगा, किन्तु उसका सिर चक्कर खाने लगा और उसकी नाक से खून गिरने लगा, इसलिये वह फिर पड़ रहा। वैसिली आइवनिच चुपचाप उसकी सेवा में उपस्थित रहा और एरिना व्लासीवना उसकी तबीयत का हाल पूछने आयी। बज़ारोव ने यह कहकर अपना मुँह दीवार की ओर फेर लिया कि "तबियत अच्छी है!" वैसिली आइवनिच ने दोनों हाथ ज़ोर से हिलाकर और बुरी तरह से मुँह बनाकर अपनी स्त्री की तरफ़ देखा, जिसका फल ऐसा आशातीत हुआ कि अपने ओठ चबाकर उसने आँसू पी जाने की चेष्टा की और चुपचाप कमरे से निकल गयी। सहसा सारे घर में अन्धकार-सा छागया। हरेक के चेहरे पर मुर्दनी छा गयी। सब जगह विलक्षण सन्नाटा छागया, जिसका एक कारण यह भी था कि गाँव के मैदान में जो मुर्गा ज़ोर से बाँग दे रहा था और चुप रहने का कोई भी कारण जिसकी समझ में नहीं आ रहा था, फ़ौरन् वहाँ से मारकर भगा दिया गया।

बज़ारोव दीवार की तरफ़ मुँह किये पड़ा रहा । एक दो बार वैसिली आइवनिच ने स्वास्थ्य की परीक्षा के तौर पर दो-एक प्रश्न किये, किन्तु इससे बज़ारोव अधिक परेशान नज़र आया, और बुड्ढा अन्त में आराम-कुर्सी में पड़ रहा और घबराहट के साथ अपनी उंगलियाँ खींचता रहा। इसके बाद वैसिली थोड़ी देर के लिये बाग़ में चला गया, और वहाँ एक ऐसी मूर्ति की तरह खड़ा रहा, जो बेहद आश्चर्य-स्तब्धावस्था में खड़ी करदी गयी हो (उसके चेहरे से आश्चर्य का भाव क्षण-भर के लिये भी दूर नहीं हुआ)। इसके बाद वह अपनी स्त्री के प्रश्नों से बचने के लिये फिर अपने लड़के के ही कमरे में चला गया; किन्तु उसने आकर उसका हाथ पकड़ लिया और उग्रता एवं धमकी-भरे स्वर में पूछा— "हमारे इन्युशा को हो क्या गया है ?" और जब वैसिली ने चेष्टा करके चेहरे पर मुस्कराहट लानी चाही, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, क्योंकि मुस्कराहट की बजाय उसके मुंह से अनुपयुक्त हास्य-ध्वनि निकल पड़ी।

तड़के ही उसने अपनी मदद के लिये एक डाक्टर को बुलालाने को आदमी भेजा था, इसलिये उसने अब यह उचित समझा कि यह समाचार अपने पुत्र को सुना दे, नहीं तो शायद डाक्टर के आगमन पर बज़ारोव क्रुद्ध हो उठे।

वैसिली आइवनिच ने सारी अवस्था समझा दी । बज़ारोव ने करवट लेकर क्षण-भर पिता की ओर देखा और फिर पीने को पानी माँगा। वैसिली आइवनिच ने उसे पीने को

पानी दिया, और इस प्रकार उसके सिर पर हाथ रखने का सुअवसर भी प्राप्त कर लिया। सिर आग-सा जल रहा था।

"पिताजी," बज़ारोव ने मोटे और रुकते हुए स्वर में कहा—"मुझे डर है कि मेरा समय पूरा हो गया। कीटाणुओं की छूत लगकर मेरे शरीर में व्याप्त हो गयी और कुछ ही दिनों में तुम्हें मुझे दफ़नाना पड़ेगा।"

वैसिली आइवनिच इस प्रकार लड़खड़ा उठा, जैसे किसी ने उसे अचानक धक्का दे दिया हो।

"इवजिनी," उसने हाँपते हुए कहा—"यह क्यों कह रहे हो? ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे! तुम्हें सिर्फ़ सर्दी लग गयी है।"

"सुनो!" बज़ारोव ने टोकते हुए पूर्ववत् स्वर में कहा—"एक डाक्टर से इस प्रकार बातें करना व्यर्थ है। संक्रामक रोग के सभी लक्षण स्पष्ट हैं। यह तो तुम खुद जानते हो।"

"लेकिन—लेकिन छूत के लक्षण—लक्षण कहाँ हैं?"

"इधर देखो। इसका क्या मतलब है?"

बज़ारोव ने अपनी क़मीज़ की आस्तीन हटाकर दिखाया। लाल रंग के विकृत ढंग के चकत्ते बाँहों पर पड़े हुए थे।

वैसिली आइवनिच चौंक उठा और भय के मारे उसका शरीर ठण्डा पड़ गया। अन्त में उसने लड़खड़ाती ज़बान से बोलने की चेष्टा की।

"तो भी—अगर मान भी लिया जाय कि, कि छूत-जैसी कोई चीज़ लग गयी है—"

"तुम्हारा मतलब रुधिर-विकार से है ?" बज़ारोव ने शीघ्रतापूर्वक कहा।

"कोई भी छूत का रोग—"

"मैं कहता हूँ रुधिर-विकार।" बज़ारोव ने हठपूर्वक संशोधन किया—"क्या तुम अपनी पढ़ायी की किताबें भूल गये ?"

"हाँ—अच्छा, जो तुम कहते हो, वही सही। फिर भी हम तुम्हें स्वस्थ कर देंगे।"

"यह फ़ज़ूल बात है ! पर इसके अतिरिक्त, मैंने ऐसा नहीं समझा था कि मैं इतनी जल्दी मरूँगा। स्पष्ट बात तो यह है कि मुझे यह अन्त बहुत अखर रहा है। और अब तुम्हें और मेरी माँ को अपने धार्मिक आधार का सहारा लेना पड़ेगा। परीक्षा का समय आ पहुंचा है।" उसने कुछ पानी और पिया—"अभी चूँकि मेरा मस्तिष्क साफ़ है, इसलिये मैं एक विशेष प्रार्थना और करता हूँ, क्योंकि कल या परसों तक, जैसा कि तुम जानते हो, यह गतिशून्य होजायगा। अब भी मुझे निश्चय नहीं है कि मैं अपने विचार ठीक-ठीक होश के साथ व्यक्त कर रहा हूँ; विशेषतः यह देखते हुए कि अभी यहाँ लेटे-लेटे मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि लाल कुत्तों का झुण्ड मेरे चारों ओर कूद रहा है और तुम मेरी ओर ऐसे देख रहे हो, जैसे कुत्ता तीतर को देखता है। ऐसा मालूम होता था, जैसे मैंने शराब पी रक्खी हो। तुम समझ सकते हो, मैं क्या कह रहा हूँ ?"

"हाँ, हाँ, इवजिनी; तुम बिल्कुल होश की बातें कर रहे हो !"

"बहुत अच्छा। अब, मैं समझता हूँ, तुमने एक डाक्टर बुलवा भेजा है, और अगर इससे तुम्हें कुछ तसल्ली हुई, तो मैं भी प्रसन्न होऊँगा। पर मेरी प्रार्थना यह है कि तुम एक सन्देश—"

"एक सन्देश आरकाडी निकोलाईविच को भेज दूँ ?" बुड्ढे ने कहा—

"किसको ? आरकाडी निकोलाईविच को ?" बज़ारोव ने विस्मित होकर कहा—"तुम्हारा मतलब हमारे उस युवक मुर्ग़े से है ? नहीं, नहीं उसे छेड़ने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि उसने कौओं का संसर्ग ग्रहण कर लिया है। तुम्हें इन शब्दों पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए—इसका मतलब यह नहीं है कि मैं मूर्च्छा में बक रहा हूँ; यह तो मैंने दृष्टान्तमात्र दिया है। मेरा मतलब मैडम ओडिन्तसोव से है, जो पास की ही एक ज़मींदारी की मालकिन हैं। उनके पास आदमी भेजो। मैं समझता हूँ, तुमने उनका नाम सुना होगा ?" (वैसिली आइवनिच ने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया) "वह आदमी—सन्देश-वाहक—वहाँ जाकर उनसे केवल इतना कह आये कि इवजिनी वैसिलिच ने अभिवादन कहा है, और वह मर रहा है ! क्या तुम यह काम कर दोगे ?"

"अवश्य कर दूँगा, इवजिनी ! पर यह क्यों सोचते हो कि तुम मर जाओगे ? ऐसा हुआ, तो संसार में न्याय कहाँ रहेगा ?"

"मैं नहीं कह सकता। मैं तो यही जानता हूँ कि मैं सन्देश-वाहक भिजवाना चाहता हूँ।"

"फ़ौरन् भिजवाता हूँ, और मैं स्वयं पत्र लिखूँगा।"

"नहीं, नहीं—उसकी ज़रूरत नहीं होगी। सिर्फ़ सन्देश-वाहक मेरा अभिवादन कह दे। बस, और कुछ नहीं। अब मैं फिर लाल कुत्तों का झुण्ड देखूँगा। कैसी विलक्षण बात है कि जब मैं अपने विचार मृत्यु की ओर केन्द्रित करना चाहता हूँ, तो उसका कोई भी परिणाम नहीं होता—मैं अपने सम्मुख अन्धकार देखता हूँ!"

उसने चिन्तित भाव से फिर दीवार की ओर मुँह फेर लिया। वैसिली आइवनिच कमरे के बाहर जाकर ऊपर शयनागार में पहुँचा और पवित्र मूर्तियों के सम्मुख घुटनों के बल बैठ गया।

"एरिना, प्रार्थना करो!" उसने विलाप करके कहा—"हमारा इकलौता पुत्र मर रहा है!"

डाक्टर के आने पर मालूम हुआ कि वह वही ज़िला-डाक्टर है, जिसके पास हेल-स्टोन नामक औषधि भी नहीं मिली थी। रोगी की परीक्षा करके उसने बतलाया कि मरीज़ की काफ़ी देख-भाल रखनी चाहिए—साथ ही उसने कुछ शब्द स्वस्थ हो जाने की सम्भावना पर भी कहे।

"क्या आपने मेरी-जैसी अवस्था के एक भी ऐसे रोगी को देखा है, जो मृत्यु से बच गया हो?" बज़ारोव ने अपनी शय्या

के पास पड़ी हुई मेज़ का पाया पकड़कर पूछा—और उसे ऐसे ज़ोर से हिलाया कि मेज़ अपने स्थान से हट गयी। "मेरी ताक़त देखिए।" उसने कहना जारी रक्खा—"अब भी शक्ति मौजूद है, किन्तु मुझे इस लोक से प्रयाण करना ही पड़ेगा! यह सोचकर कि एक वृद्ध पुरुष जीवन का संस्पर्श खो चुका है, मैं—! ओह, आप चाहे मृत्यु को कितना ही अस्वीकार करें, मृत्यु आपको अस्वीकार नहीं कर सकती।......किसी के रोने की आवाज़ आ रही है। कौन है?" कुछ देर के लिये वह रुक गया। "मेरी माँ है? बेचारी! अब उसका सुस्वादु भोजन ठूँस-ठूँसकर खाने के लिये कोई नहीं रहेगा। और तुम, वैसिली आइवनिच—तुम भी बिलख रहे हो? अगर ईसाई-धर्म तुम्हारी मदद नहीं कर रहा है, तो स्टोइक* दार्शनिक बनने की चेष्टा करो। तुम प्रायः अपने ईसाई-मत पर गर्व किया करते थे।"

"मैं तो अच्छा दार्शनिक बन चुका!" बुड्ढे वैसिली ने कपोलों पर बहती हुई अश्रु-धाराओं को पोंछते हुए कहा।

इसके बाद बज़ारोव की अवस्था घण्टे-घण्टे पर ख़राब

---

*ईसा मसीह से ३०८ वर्ष पूर्व एथेन्स में जेनो-महोदय ने स्टोइक दर्शन को जन्म दिया था, जिसके मतानुसार केवल सदाचार को ही सब-कुछ माना जाता है; इन्द्रिय-निग्रह की शिक्षा दी जाती है तथा सुख-दुख को उदासीनता की दृष्टि से देखा जाता है।

होती गयी, क्योंकि बीमारी ऐसी स्थिति में अनिवार्य शीघ्रता के साथ रोगी को दबाती जा रही थी। फिर भी उसकी स्मरण-शक्ति वैसी ही तीव्र बनी हुई थी, और उससे जो-कुछ कहा जाता था, वह उसे अच्छी तरह समझता था, क्योंकि अपनी शक्तियों और योग्यताओं को वह अब तक वीरतापूर्वक क़ायम रक्खे हुए था।

"नहीं, मैं अपने को बेहोश नहीं होने दूँगा," उसने मुट्ठी दाबकर मन-ही-मन कहा—"पर ओह, यह सब बेवक़ूफ़ी !" फिर वह इस प्रकार की बातें बार-बार दुहराने लगा कि 'आठ और दस,—कितने हुए ?'"

इधर वैसिली आइवनिच विक्षिप्त-सा होकर टहलने लगा—कभी एक दवा पर विचार करता, तो कभी दूसरी पर, और बराबर अपने पुत्र के पैर को ढक रखने की व्यवस्था करता रहा।

"अगर इसका शरीर बरफ़ से ढक दिया जाय, तो ?" उसने एक बार दारुण दुःख का अनुभव करते हुए कहा—"वमन-विरेचन की औषधि देना, या पाकस्थली के ऊपर राई का पलस्तर बाँधना कैसा होगा ? और यदि फस्त खोलकर थोड़ा रक्त निकाल दिया जाय, तो कैसा रहे ?"

किन्तु इन सभी दवाइयों पर डाक्टर ने (जिसे वैसिली आइवनिच ने रुके रहने की प्रार्थना की थी) आपत्ति की। साथ ही डाक्टर ने रोगी के लिये लाया हुआ लेमोनेड दिया और अपने लिये तम्बाकू का पाइप तथा 'कुछ शक्तिदायक गर्म पदार्थ' माँगा,

जिसका अभिप्राय एक गिलास वोदका* से था । इधर एरिना व्लासीवना दरवाज़े के पास बैठी रही । केवल बीच-बीच में प्रार्थना के लिये ऊपर जाती थी । ऐसा प्रतीत हुआ कि कुछ दिनों पहले उसके हाथ से आइना गिरकर टूट गया था, और उसने अपने सारे जीवन-भर इस प्रकार की घटना को अप-शकुन समझा था । उसके पास ही एन्फ़ीसुश्का भी चुपचाप बैठी थी—रहा टिमोथिच, वह मैंडम ओडिन्तसोव के पास सन्देश लेकर गया था ।

रात-भर बज़ारोव की अवस्था नहीं सुधरी, क्योंकि बुख़ार बढ़ता ही जा रहा था; किन्तु ज्यों-ज्यों सुबह का वक़्त क़रीब आने लगा, बुख़ार कुछ-कुछ घटने लगा । उसने एरिना व्लासी-वना से अपने कपड़े आदि ठीक करवाये और उसका हाथ चुम्बन करने के बाद थोड़ी-सी चाय भी पी, जिससे वैसिली आइवनिच की हिम्मत बंध गयी, और वह बोला—

"ईश्वर को धन्यवाद है कि सङ्कट आकर चला गया !"

"इसकी पक्की आशा मत करो," बज़ारोव ने कहा—"क्योंकि 'सङ्कट' शब्द का क्या मतलब है—किसी ने कभी इसका आविष्कार किया और उसे 'सङ्कट' का नाम देकर सदा के लिये यशस्वी बन गया । कैसी असाधारण बात है कि मनुष्य-जाति शब्दमात्र का ऐसा विश्वास कर लेती है ! उदाहरण के लिये अगर किसी आदमी को 'बेवक़ूफ़' कह दिया जाय, और

---

* अंगूर की शराब ।

उसे मारा-पीटा न भी जाय, तो वह लज्जित हुए बिना नहीं रहेगा; इसी प्रकार किसी व्यक्ति को यदि 'बुद्धिमान' कह दिया जाय, और उसे किसी प्रकार का धन या दौलत न भी दी जाय, तो भी वह प्रसन्न हुए बिना नहीं रहेगा।"

वज़ारोव की यह छोटी-सी वक्तृता उसकी पूर्वकालीन मानसिक तरङ्गों की ऐसी स्मरण दिलानेवाली थी कि वैसिली आइवनिच उसे सुनकर प्रसन्नता से गद्गद हो गया।

"शाबाश," वह हाथ झटकते हुए उच्च स्वर से बोला—"ख़ूब कहा!"

बज़ारोव के मुख पर शोकपूर्ण मुस्कराहट दौड़ गयी।

"तो तुम समझते हो," उसने कहा—"कि 'सङ्कट' आ रहा है, या टल रहा है?"

"मैं जानता हूँ कि अब तुम्हारी तबियत अच्छी है। यह तो मैं ख़ुद देख रहा हूँ।"

"अच्छा, ख़ुश होना हमेशा बुरी चीज़ तो नहीं है। पर आपने उनको सन्देश भेज दिया? आप समझ गये कि मेरा मतलब किससे है?"

"ज़रूर, मैंने भेज दिया, इवजिनी।"

किन्तु यह सुधरी हुई अवस्था देर तक नहीं क़ायम रह सकी, क्योंकि इसके बाद ही दर्द शुरू हो गया। वैसिली-आइवनिच बिछौने के पास ही बैठ गया, और ऐसा करते हुए ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई बात बुड्ढे को अत्यन्त चिन्ताग्रस्त

बना रही है। उसने कई बार बोलने की चेष्टा की; किन्तु उसका मुँह नहीं खुला। अन्त में उसने हाँपते हुए कहा—

"बेटा! इवजिनी! प्यारे पुत्र! मेरे प्यारे!"

खुद बज़ारोव भी इस प्रकार की अनभ्यस्त प्रार्थना से निरपेक्ष नहीं रह सका। अपने सिर को ज़रा घुमाते हुए और उस अचेनता को भगाने का-सा प्रयत्न करते हुए, जो उसे प्रति-क्षण दबा रही थी, बज़ारोव बोला—

"क्या है, पिताजी?"

"इवजिनी," सहसा बुड्ढा शय्या के पास अपने घुटनों के बल बैठ गया—"इवजिनी, तुम अब अच्छी हालत में हो, और ईश्वर की कृपा से स्वस्थ हो जाओगे; पर किसी भी तरह इस घड़ी मुझे और अपनी माँ को दिलासा देने के लिये ईसाई-धर्म का कर्त्तव्य पालन कर दो। यद्यपि मेरे लिये यह कहना अत्यन्त दुःखद सिद्ध हो रहा है, और यदि यह मौक़ा निकल गया, तो मालूम नहीं इससे मुझे कैसी असह्य यंत्रणा होगी। इवजिनी! सोचो तो सही—"

बुड्ढा और कुछ न कह सका, और बेटे के चेहरे तथा उसकी बन्द आँखों पर एक अद्‌भुत भाव छा गया। थोड़ी देर तक शान्ति छायी रही। इसके बाद बज़ारोव बोला—

"तुम्हें ढाढ़स देने के लिये मैं तुम्हारी बात को बिल्कुल अस्वीकार नहीं कर सकता; पर चूँकि तुमने स्वयं कहा है कि मेरी अवस्था अच्छी है, इसलिये जल्दी करने की तो कोई ज़रूरत नहीं है?"

"हाँ, तुम्हारी हालत अच्छी है, इवजिनी," बुड्ढे ने कहा—"पर कौन कह सकता है कि ईश्वर को क्या मंज़ूर है ? एक बार यह कार्य सम्पन्न हो जायगा, तो—"

"तो भी अभी मैं कुछ देर रुकूँगा," बज़ारोव ने बात काटकर कहा—"इतना मैं मान लूँगा कि अगर तुम्हारा अनुमान मेरे स्वस्थ होने के सम्बन्ध में ग़लत सिद्ध हो गया, तो मैं अन्तिम क्रिया* स्वीकार कर लूँगा।"

"और इवजिनी, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि—"

"मैं फिर कहता हूँ कि अभी मैं कुछ देर ठहरूँगा। अब मुझे सोने दो। मुझे छेड़ो नहीं।"

उसने फिर अपना सिर पहली जगह पर रख लिया और बुड्ढा फ़र्श पर से उठकर फिर कुर्सी पर बैठ गया और ठुड्डी हाथों पर रखकर अपनी उंगलियाँ दाँतों से काटने लगा।

उसी समय वैसिली के कानों में किसी हल्की गाड़ी के चलने की आवाज़ आयी, जो गाँवों की निस्तब्धता में स्पष्ट सुनायी पड़ा करती है। पहियों के लुढ़कने की आवाज़ निकट आती प्रतीत हुई। कुर्सी से उठकर वह खिड़की की ओर लपका। कोठी के आँगन में दो सवारीवाली चार घोड़ों की बग्गी आती दिखायी दी। बिना किसी प्रकार का विचार किये ही, वह सामने के दरवाज़े की ओर बढ़ा, जहाँ प्रसन्नता से मग्न

---

* ईसाई-धर्म के अनुसार मृत्यु के समय जो क्रिया की जाती है।

होकर उसने एक वर्दीधारी नौकर को गाड़ी का दरवाज़ा खोलते देखा, जिसने गाड़ी में से काले रंग का वस्त्र और उसी रंग की मुख-रक्षक जाली पहनी हुई एक महिला को उतारा।

"मैं मैडम ओडिन्तसोव हूँ," आगन्तुक स्त्री ने कहा—"इवजिनी वैसिलिच अभी जीवित हैं ? मैं समझती हूँ, आप उनके पिता हैं ? मैं अपने साथ डाक्टर लायी हूँ।"

उसे यह कहने के साथ ही डाक्टर—जो शक्ल-सूरत से जर्मन मालूम पड़ता था और जो एक छोटे क़द का चश्माधारी व्यक्ति था—बग्गी से आहिस्ते-आहिस्ते शान के साथ उतरा।

"हे करुणा की देवी !" वैसिली आइवनिच ने चिल्लाकर महिला का हाथ झटके के साथ अपने ओठों से लगाते हुए कहा—"हमारा इवजिनी अभी जीवित है ! और अब वह बच जायगा ! एरिना ! एरिना ! हमारे यहाँ तो स्वर्ग की देवी आ गयी हैं !"

"क्या ?" बुढ़िया ने कमरे से दौड़कर बाहर आ हाँपते हुए कहा। वह ऐसी आश्चर्य-चकित हो रही थी कि दौड़कर आगन्तुक-महिला के पैरों पर गिर पड़ी और उसके वस्त्रों की कोर चूमने लगी।

"सुनिए !" मैडम ने कहा—"इन सब बातों का मतलब क्या है ?"

किन्तु एरिना व्लासीवना तो बहरी हो रही थी, और वैसिली आइवनिच केवल यही दुहराता रह गया—

"स्वर्ग की देवी आ गयी हैं! स्वर्ग की देवी आ गयी हैं!"

"रोगी कहाँ है?" डाक्टर ने अधीर होकर जर्मन-भाषा में पूछा।

इससे वैसिली आइवनिच को होश आया।

"इधर से आइये, इधर से," उसने टूटी-फूटी जर्मन-भाषा में कहा—"कृपया मेरे साथ आइये, मान्यवर महोदय!"

जवाब में जर्मन डाक्टर के मुँह पर अजीब-सी हँसी अङ्कित हो गयी।

वैसिली आइवनिच उसे अध्ययन-कक्ष की ओर लिवा ले गया।

"मैडम एना सर्जीवना ओडिन्तसोव इन डाक्टर साहब को साथ लिवा लायी हैं।" उसने बज़ारोव के ऊपर झुककर कहा—"वह ख़ुद भी यहाँ आ गयी हैं।"

बज़ारोव ने चौंककर आँखें खोल दीं।

"क्या कहते हो?" उसने पूछा।

"मैं कहता हूँ कि मैडम एना सर्जीवना ओडिन्तसोव यहाँ आ गयी हैं, और अपने साथ एक अच्छे डाक्टर को भी लायी हैं।"

बज़ारोव ने चारों ओर देखा।

"एना सर्जीवना कहाँ हैं?" उसने कहा—"तुम कहते हो कि वे यहाँ आ गयी हैं? मैं उन्हें देखना चाहता हूँ।"

"तुम उन्हें देखोगे, इवजिनी; पर पहले मैं इन सज्जन से

बातें कर लूँ और तुम्हारे मर्ज़ का हाल तो बतला दूँ, क्योंकि साइडर सिडोरोविच (ज़िला-डाक्टर) अपने घर गये और हमें अब मशविरे की ज़रूरत है।"

बज़ारोव ने जर्मन डाक्टर की ओर देखा।

"अच्छा," उसने कहा—"अपना मशविरा जितनी जल्दी चाहिए, कीजिए। पर, लैटिन न बोलिए, क्योंकि मैं 'जाम मारीटर' शब्द का अर्थ समझता हूँ।"

"यह महाशय जर्मन समझते मालूम होते हैं।" इस्कुलेपियस के नवागन्तुक शिष्य ने वैसिली आइवनिच से कहा।

"मैं......?" बुड्ढे ने कहना शुरू किया—"पर अच्छा हो, आप रूसी-भाषा में ही बोलें, महाशय ?"

मशविरा शुरू हुआ।

आध घण्टा बाद वैसिली आइवनिच एना सर्जीवना को अध्ययन-कक्ष में ले गया। डाक्टर ने बाहर जाते समय उससे धीरे से कह दिया कि रोगी के बचने की आशा नहीं है।

मैडम ने बज़ारोव की ओर देखा और मूर्तिवत् खड़ी रह गयी। बज़ारोव का आरक्त, मृतवत् और धुँधली आँखोंवाला मुर्झाया मुँह उसकी ओर सतृष्ण भाव से फिरा हुआ था। मैडम के विचार में केवल कँपकँपी और भारी भय भर रहा था; किन्तु उसी क्षण उसके मन में यह विचार भी आया कि यदि वह उसे प्रेम करती, तो आज ऐसी भावना उसके अन्दर न होती।

"मैं आपको धन्यवाद देता हूँ," बज़ारोव ने ज़ोर लगाकर कहा—"मुझे इसकी आशा नहीं थी। आपने यहाँ आकर बड़ी ही कृपा की। जैसा कि आपने कहा था, हम लोग एक बार फिर मिल गये।"

"मैडम एना सर्जीवना ने बड़ी कृपा की है न ?" वैसिली आइनिच बोल पड़ा।

"पिताजी, कृपया हमारे पास से चले जाओ।" बज़ारोव ने कहा—"एना सर्जीवना, मैं जानता हूँ कि आप मुझे माफ़ कर देंगी। क्योंकि ऐसे समय पर—" उसने अपने कृश शरीर की ओर इशारा किया।

वैसिली आइवनिच कमरे के बाहर चला गया।

"मैं आपको फिर धन्यवाद देता हूँ।" बज़ारोव ने कहा—"आपने शाहंशाही काम किया है, क्योंकि लोग कहते हैं कि प्रार्थना करने पर बादशाह भी मृत्यु-शय्या के पास आ जाते हैं।"

"इवजिनी वैसिलिच, मैं आशा करती हूँ कि—"

"हमें स्पष्ट रूप से बात करनी चाहिए। मेरा समय पूरा हो चुका। मैं तो पहिये के नीचे आ चुका हूँ, इसलिये हमें भविष्य की बातें नहीं सोचनी चाहिए। तो भी यह कैसी विलक्षण बात है कि प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु—यद्यपि यह एक पुरानी चीज़ है—नूतन रूप में आती है !............तो भी मैं साहस नहीं छोड़ूँगा—फिर पटाक्षेप होगा, और तदुपरान्त—'कूच' लिखा जायगा।" इसके बाद एक निर्बलतापूर्ण सङ्केत करके वह

फिर बोला—"पर मैं आपसे कहना क्या चाहता था ? यही, कि मैंने आपको प्रेम किया है ? कोई समय था, जब 'मैं प्रेम करता हूँ' मेरे लिये कोई अर्थ नहीं रखता था; और अब यह देखते हुए यह और भी कम अर्थ रक्खेगा कि प्रेम एक रूप है और मेरा विशिष्ट देह-तत्व विलुप्तता की ओर जा रहा है। यह—ओह, आप कैसी उत्कृष्ट हैं ! आप ऐसी सुन्दर दीख रही हैं, जैसे······"

एना सर्जीवना के कन्धे अनिच्छित रूप में हिल उठे ।

"नहीं," बज़ारोव ने फिर कहा—"आप डरिये नहीं। पर क्या आप बैठ नहीं सकतीं ? मेरे पास बैठ जाइये, पर बहुत सटकर नहीं, क्योंकि मेरी बीमारी छूत को है।"

वह जल्दी से आगे बढ़कर उस सोफ़े के पास ही बैठ गयी, जिसपर बज़ारोव लेटा हुआ था।

"हे दयालु देवी !" उसने धीरे से कहा—"आप फिर एक बार मेरे पास बैठी हैं। आप-जैसी शुद्ध, अभिनव और तरुण महिला इस रोगी-भवन में बैठी हैं। अच्छा, विदा; आप चिरंजीवी हों और आनन्द भोगें। इस संसार में दीर्घ जीवन परम वाञ्छनीय वस्तु है—फिर भी आप स्वयं देख सकती हैं कि आपके सम्मुख मैं एक कैसे कुदृश्य के रूप में—एक अध-कुचले, पर फिर भी कुलबुलाते हुए कीड़े की भाँति—उपस्थित हूँ। कोई समय था, जब मैं कहा करता था—'मैं जीवन में अनेक कार्य करूँगा, और जब तक वे कार्य पूरे न हो जायँगे, मैं मर नहीं

सकता, क्योंकि मैं शूर हूँ'—किन्तु अब वास्तव में मुझे शूर का काम करना है—वह काम है मृत्यु, यद्यपि यह मेरे लिए कोई चीज़ नहीं थी।·········कोई हर्ज नहीं। मैं अब भी दुम नहीं दबाऊँगा।"

उसका गला रुक-सा गया और वह गिलास टटोलने लगा। मैडम ने बिना दस्ताना निकाले ही गिलास उसे पकड़ा दिया। वह (मैडम) साँस मुश्किल से ले रही थी।

"बहुत समय नहीं व्यतीत होगा, जब आप मुझे भूल जायँगी," बज़ारोव ने फिर कहा—"क्योंकि मृतक स्मृति में जीवित नहीं रह सकता। मैं कह सकता हूँ, मेरे पिता आपको बतायेंगे कि रूस एक कैसे आदमी को खो रहा है; किन्तु यह सब फ़ज़ूल है। तो भी उन्हें थकाइयेगा नहीं, क्योंकि बेचारे बुड्ढे आदमी हैं। उन्हें इस तरह दिलासा दीजिएगा, जैसे बच्चे को दिया करते हैं; मेरी माँ पर भी दया कीजिएगा। अपने महान् संसार में आपको ऐसे दो नश्वर नहीं मिलेंगे—चाहे आप दिन में रोशनी करके ही क्यों न ढूँढें।·········रूस को सचमुच मेरी ज़रूरत थी! प्रकटतया उसे मेरी ज़रूरत नहीं है। तो फिर उसे किसकी ज़रूरत है? उसे मोचियों, दर्ज़ियों और क़साइयों की ज़रूरत है।·········क़साई क्या बेचता? गोश्त बेचता है न?········· मैं समझता हूँ, मैं भटक रहा हूँ—मेरे सामने जंगल खड़ा है।···"

उसने अपना हाथ सिर पर रखकर दबाया, और एना सर्जोविना उसके ऊपर झुकी।

"इवजिनी वैसिलिच," उसने कहा—"मैं यहीं हूँ।"

एक सजीव गति के साथ बज़ारोव ने उसका हाथ पकड़ लिया, और थोड़ा ऊपर उठा।

"विदा," उसने सहसा कुछ शक्ति-सी प्राप्त करते हुए कहा—"विदा।·········मैंने उस समय आपका चुम्बन लिया था न, जब, जब—?·········ओह अब बुझते हुए दीपक पर अन्तिम साँस ले लीजिए, जिससे शान्ति के साथ उसका विसर्जन हो।"

मैडम ने कोमलतापूर्वक उसके माथे का चुम्बन लिया।

"बस।" उसने तकिये पर सिर डालते हुए कहा—"अब अन्धकार को आने दीजिए।"

वह चुपचाप कमरे के बाहर निकल गयी।

"कहिए?" वैसिली आइनिच ने धीरे से पूछा।

"वे सो रहे हैं।" उसने ऐसे स्वर में कहा, जो मुश्किल से सुनायी पड़ा।

किन्तु बज़ारोव के भाग्य में निद्रा नहीं थी। बल्कि ज्यों-ज्यों रात निकट आने लगी, वह सुषुप्त होने लगा और दूसरे दिन संसार से चल बसा। फ़ादर-अलेक्सिस ने उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया धार्मिक रीति से समाप्त की थी और जिस समय एक्सट्रीम अंकशन* करके उसके सीने पर पवित्र तैल का स्पर्श कराया

---

* ईसाई-धर्म के अनुसार की जानेवाली मृत्यु के समय की क्रिया-विशेष।

गया था, तो मरणासन्न बज़ारोव की एक आँख खुल गयी थी और अपने सामने धार्मिक पोशाक पहने पुरोहित और मूर्ति के समक्ष जलता हुआ धूपदान तथा मोमबत्तियाँ देखकर उसके मुँह पर अप्रियता का भाव लक्षित हुआ था।

अन्ततः जब बज़ारोव ने अन्तिम श्वास ली थी, और घरमें कुहराम मच गया था, तो वैसिली आइवनिच पागल-सा हो गया था।

"मैं घोषणा करता हूँ कि मैं विरोधी हूँ," उसने चिल्लाकर कहा था; साथ ही उसका चेहरा क्रोध के मारे जल रहा था; और घूँसा हवा में हिलाकर वह किसी को धमकी दे रहा था—"मैं घोषिण करता हूँ कि मैं विरोधी हूँ।"

इस पर बुढ़िया एरिना व्लासीवना ने आँखों में आँसू-भरे हुए उसके गले में बाँह डाल दी थी और दोनों फ़र्श पर बैठ गये थे। एन्फ़ीसुश्का ने बाद में नौकरों के मकान में उसकी विलाप-कथा सुनाते हुए कहा था—"दोनों एक साथ झुके थे—एक दूसरे के बग़ल में लगे हुए उन्हों ने सिर इस तरह झुका रक्खा था, जैसे दोपहर के समय दो भेड़ें झुका रखती हैं।"

× × × ×

किन्तु शोक! समय पर दोपहरी ढलती है, और उसके बाद गो-धूलि और रात्रि का आगमन होता है, जिसकी शान्तिमयी गोद में क्लान्त और भाराक्रान्त प्राणी निद्रा,—मधुर निद्रा लेता है।

———

२८

छः महीने बीत गये। जाड़े का मौसिम आया और देश-भर में 'श्वेत शीत-काल' का साम्राज्य छा गया—चारों ओर गहरी और चटकती हुई बरफ़, गुलाबी रंग के कोरवाले वृक्षों, पीतिमा-खचित नभ-मण्डल, धूम्राच्छादित चिमनियों, क्षण-भर के लिये खुलनेवाले वाष्प-निष्कासन-युक्त दरवाज़ों, ताज़े और कठिनाई झेलनेवाले चेहरों, बरफ़ से ठिठुरे हुए शरीर में गर्मी लाने के लिये सरपट दौड़ते हुए घोड़ों का स्वच्छ, तीक्ष्ण और स्थिर दृश्य व्याप्त होगया। जनवरी का महीना समाप्ति पर है और अरुणिमापूर्ण नभ-मण्डल में सूर्यास्त होते समय स्थिर वायु में शीत विशेष रूप में वर्द्धित होरहा है।

किन्तु मैरिनो की खिड़कियों में रोशनी जलती दीख रही

है, और काले रंग का लम्बा कोट और सफ़ेद दस्ताने पहने प्रोकोफ़िच गम्भीरता के विलक्षण वातावरण में मेज़पर सात दस्तरख़ान बिछा रहा है। इस तैयारी का कारण यह है कि एक सप्ताह पहले पार्श्ववर्ती छोटे गिरजे में दो वैवाहिक क्रियाएँ चुपचाप—बिना साक्षी के—सम्पन्न हुई थीं, जिनमें से एक शादी तो आरकाडी की कतिया के साथ हुई थी, और एक निकोलाई पिट्रोविच की थेनिश्का के साथ। आज निकोलाई पिट्रोविच अपने भाई को विदाई की दावत दे रहा है, क्योंकि पाल अब मास्को जाने की तैयारी कर चुका है, और एना सर्जीवना नव-दम्पति को काफ़ी दहेज देकर पहले ही विदा हो चुकी है।

ठीक तीन बजे सब एकत्रित होते हैं। मितिआ भी अपनी नियानिया (जो अब दाई की पोशाक में है) के साथ मौजूद है, पाल पिट्रोविच कतिया और थेनिश्का के बीच में बैठा है, और वर-द्वय अपनी-अपनी विवाहिताओं के बग़ल में विराजमान हैं। हमारे इन परिचितों में तब से अब एक परिवर्तन हो चुका है, जब हमने उन्हें पहले देखा था—वे बहुत आगे बढ़ गयी हैं—विशेषतः अल्पवयस्कों की आकृति और व्यावहारिक गम्भीरता बढ़ गयी है। केवल पाल पिट्रोविच ही कुछ दुबला नज़र आता है, यद्यपि परिस्थिति ने उसके चेहरे पर अमीरी तथा शान और भी बढ़ा दी है। थेनिश्का पहले की अपेक्षा बिल्कुल परिवर्तित होगयी है। उसने नया रेशमी गाउन पहन रक्खा है, और केश पर एक चौड़ा मखमली फ़ीता बाँध रक्खा है—गले

में एक हार है, और वह बड़े गौरव-युक्त भाव से स्थिर-रूप में बैठी है। उस वातावरण को वह एक स्थिर मर्यादा की दृष्टि से देख रही है। बीच-बीच में वह मुस्कराकर कहती है—"क्षमा कीजिए; पर इसके लिये मैं उत्तरदायी नहीं हूँ।" और अन्य व्यक्ति भी इसी प्रकार मुस्कराते हैं। मानों वे भी इस कृति में अपने भाग के लिये क्षमा माँगकर प्रसन्न होंगे। किन्तु यह सच है कि जहाँ सभी उपस्थित व्यक्तियों में गम्भीरता पायी जाती है, वहाँ अन्य बातों के साथ उनके दिलमें घबराहट के चिह्न भी हैं। सब जगह पारस्परिक आवश्यकताओं के लिये ऐसी चिन्ता-पूर्ण व्याकुलता नज़र आरही है कि मालूम होता है यह दल कोई सुखान्त नाटक खेलने जारहा है, और यद्यपि सबसे अधिक स्थिरता कतिया के चेहरे पर है, किन्तु इसका स्पष्ट कारण यह नहीं है कि उसका स्वभाव ऐसा ही है, वरन् यह है कि वह पुत्र-बधू बनकर इस घर में आयी है, और निकोलाई पिट्रोविच की कृपापात्र बनना चाहती है।

अन्ततः भोजन समाप्त होता है और निकोलाई उठकर एक गिलास शराब चढ़ाकर पाल को सम्बोधन करता है:—

"प्रियवर भाई साहब, तुम अब जारहे हो। तुम अब हमें छोड़-कर जारहे हो। किन्तु तुमको बहुत दिनों तक अनुपस्थित नहीं रहना चाहिए, क्योंकि मैं कभी अपने हृदय के भाव प्रकट नहीं कर सकता कि मैं कितना—कितना—,पर सच तो यह है कि मैं भाषण देना नहीं जानता। आरकाडी, यह काम मैं तुम्हें सौंपता हूँ।"

"पर मैं तैयार नहीं हूँ, पिताजी।"

"मैं भी तैयार नहीं हूँ। तो भी, पाल मैं तुम्हारा आलिङ्गन करता हूँ और चाहता हूँ कि तुम सदा आनन्दपूर्वक रहो—साथ ही यह भी प्रार्थना है कि शीघ्र ही वापस आना।"

इसके बाद पाल पिट्रोविच सबसे मिलकर (जिसमें मितिआ भी सम्मिलित था)—और विशेषतया थेनिश्का का हाथ (जिसे वह बेचारी समुचित रूप में आगे बढ़ाना भी नहीं जानती थी) चूमकर सब के नामपर दोबारा शराब पीता है और एक ठण्डी साँस लेकर कहता है—"दोस्तो, आप लोग सानन्द रहें! विदा!"* और यद्यपि अँग्रेज़ी भाषा की 'विदा' पर किसी का विशेष ध्यान नहीं जाता, किन्तु उसके पीछे जो शुभ कामना छिपी है, वह सबके हृदयों पर असर डालती है।

"हाँ, और मैं स्वर्गीय बज़ारोव की स्मृति के नामपर भी पीती हूँ।" कतिया अपने पति के साथ गिलास उठाते हुए धीरे से कहता है, किन्तु यद्यपि जवाब में आरकाडी उसका हाथ पकड़ता है, फिर भी वह इस भोज-प्रस्ताव को सार्वजनिक नहीं बनने देना चाहता।

× × × ×

प्रत्यक्षतः यही 'समाप्त'-शब्द-आना चाहिए था; किन्तु पाठकों में से कुछ को यह जानने की इच्छा शेष रह सकती है

---

* रूसी भाषा की मूल पुस्तक में यह वाक्य अंग्रेज़ी में है।

कि पुस्तक के पात्र आजकल* किस अवस्था में हैं, अतः मैं उनकी उत्सुकता शान्त कर दूंगा।

पहले एना सर्जीवना का हाल सुनिये—उसने एक उदीयमान युवक राजनीतिज्ञ से शादी कर ली है; किन्तु प्रेम के लिये नहीं, न कर्त्तव्य की दृष्टि से ही। उसका पति एक कुशल शासन-व्यवस्थाकार और पूर्णतः क्रियात्मक विचारक है। वह बड़ा दृढ़ेच्छु और सुन्दर वक्ता है। उसकी प्रेम-भावना इतनी शीतल है, जैसे हिम। तो भी यह जोड़ी पारस्परिक सौहार्द्र के साथ रहती है, और समय आने पर सुख प्राप्त कर सकती है—इतना ही नहीं, दोनों एक-दूसरे को प्रेम भी कर सकते हैं।

बुढ़िया प्रिंसेज़ का देहान्त हो चुका है, और उसके साथ उसकी स्मृति भी सदा के लिये विलुप्त होगयी है।

किरसानोव—पिता और पुत्र—मेरिनो में ही बसे हैं और अब शिल्प-कार्य में अग्रसर होते दीख रहे हैं, जिसमें आरकाडी सुयोग्य मैनेजर का काम करने लगा है। ज़मींदारी में भी अब अच्छी आमदनी होने लगी है। निकोलाई पिट्रोविच जायदाद में शान्ति-स्थापन की चेष्टा में लगा रहता है और बराबर गाँवों में दौरा करके इस अभिप्राय से लम्बे-चौड़े भाषण देता रहता है कि किसानों को केवल समझाने की ज़रूरत है—अर्थात् बार-बार उनके सम्मुख एक ही बात रखते रहने की आवश्यकता है—इससे किसान क्रमशः क़ाबू में रहनेवाले जानवर बन

* आजकल का मतलब मूल पुस्तक के लेखन-काल से है।

जायँगे। फिर भी निकोलाई की प्रशंसा न तो वे शिक्षित किसान ही करते हैं, जो आगामी 'मुक्ति'* की धूम-धाम के प्रभाव में आकर बातें करते हैं, न वे अशिक्षित ज़मींदार ही, जो 'मुक्ति' को '....'मुक्ति कहकर गाली देते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि इन दोनों ही श्रेणी के आदमी निकोलाई को 'नरम' आदमी समझते हैं।

कतेरिना सर्जीवना के एक लड़का पैदा हो गया है, जिसका नाम कोलिया रक्खा गया है—मितिआ अब बड़ा और फुर्तीला लड़का हो चुका है; और थेनिश्का (बल्कि थिवोडोसिया निकोलाइवना कहना अधिक उपयुक्त होगा) अपनी पुत्र-बधू को केवल अपने पति और पुत्र की अपेक्षा ही कम चाहती है। वास्तव में यह चाह उस वक़् अपनी हद पर पहुँच जाती है, जब कतिया प्यानों बजाने बैठती है। फिर तो थेनिश्का उसके पास से उठ नहीं सकती, चाहे वह समस्त दिन बाजा बजाती रहे।

पीटर (नौकर) के सम्बन्ध में भी एकाध शब्द कहना उचित होगा। वह मूर्खता और दम्भ का पुतला अब भी नाक-भौं चढ़ाकर बातें करता है; किन्तु यह सब होते हुए भी उसकी शादी हो गयी है, जिसमें उसे अच्छा दहेज प्राप्त हुआ है। पास के शहर के माली की लड़की उसकी बहू है। अविवाहित अवस्था में उसने दो ग्रहणीय दावतों में जाने से इसलिये इन्कार कर दिया था कि उसके पास घड़ी नहीं थी; किन्तु पीटर के पास

*ग़ुलामों की मुक्ति जो १८६१ ई० में अमल में आयी थी।

अब न-केवल घड़ी है, वरन् एक जोड़ा बढ़िया जूता भी है।

फिर, ब्रूल भवन, ड्रेसडन में जाकर कभी भी आप दिन में दो बजे से चार बजे के दरम्यान (जो शौक़ीनों के सैर-सपाटे का खास वक़्त है) पचास वर्ष के एक बुड्ढे से मिल सकते हैं, जिसके बाल सफ़ेद हैं और घुटनों में गठिया हो रहा है, किन्तु फिर भी जिसकी आकृति सुन्दर है। उसके वस्त्र सुन्दर हैं और रूप-रंग पर ऐसी छाप है, जो अधिक समय तक उच्च कोटि के समाज में रहने पर ही प्राप्त हो सकती है। यह वही—पाल पिट्रोविच है। स्वास्थ्य-सुधार के लिये वह मास्को से विदेश-भ्रमण के लिये रवाना हो गया था, और ड्रेसडन में इसलिये ठहर गया है कि यहाँ उसके बहुत से अंग्रेज़ और घर-बार-हीन रूसी परिचित रहते हैं। पहली कोटि के लोगों पर तो वह अपनी सादगी का प्रदर्शन करता है और लगभग अपनी सच्चरित्रा तक की धाक जमा देता है; किन्तु उसमें गौरव का अंश भी होता है। बदले में अंग्रेज़ उसे ढोंगी समझते हैं, किन्तु 'सज्जन' होने के कारण उसकी इज़्ज़त भी करते हैं। रूसी लोगों की उपस्थिति में पाल पिट्रोविच बड़ा ही स्वतंत्र और सरल प्रकृति का बन जाता है। वह अपने व्यंग-वाण पर असीम रोक-थाम रखता है, और अपने देश-भाई और अपने-आपको संगठित रूप में देखता है। फिर भी उसके मुँह से कभी-कभी ऐसी बात ज़रूर निकल जाती है, जिसको वह बड़ी शान के साथ प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त वह स्लैवोफिल-विचार रखता है, जो (जैसा

कि हम सब जानते हैं) समस्त संसार को ज़मींदारों की श्रेष्ठता मानने के लिये कहता है। यह सच है कि पाल कभी कोई रूसी पुस्तक पढ़ने का कष्ट नहीं उठाता, किन्तु इसके बदले उसने अपनी लिखने की मेज़ पर एक ऐसी चाँदी की रकाबी रख छोड़ी है, जिसकी शक्ल रूसी किसानों के पादत्राण-जैसी है। इसके अतिरिक्त जब हमारे कुछ रूसी पर्यटक उस शहर से होकर गुज़रते हैं, तो वह उनकी ओर काफ़ी ध्यान देता है, और हमारे पुराने दोस्त मट्वी इलिच कोलियाज़िन ने उस (पाल) में 'स्थायी विरोध' की मात्रा कम देखकर जल-चिकित्सा के लिये बोहेमिया जाते समय उससे मुलाक़ात भी की थी। वास्तव में यदि कोई पाल पिट्रोविच की प्रतिष्ठा नहीं करता, तो वह हैं केवल जर्मनी में रहनेवाले जर्मन, जिनसे मेल-जोल रखना उसे पसन्द नहीं है। किन्तु इतना तो वे भी मानते हैं कि गिरजे के कोर्ट और थियटर के टिकट हासिल करने में कोई भी व्यक्ति ऐसा चालाक और कुशल नहीं होगा, जैसा कि 'महाशय बैरन वान किरसा-नोव' हैं। वास्तव में वह हमेशा अपनी योग्यता के अनुसार ठीक काम करता है, और अब भी हलचल पैदा करने की क्षमता रखता है, क्योंकि उसे एक बार अच्छे ही उद्देश्य के लिये सामाजिक सिंह बनकर युद्ध करना पड़ा था! यह सब होते हुए भी उसे जीवन कम भारी नहीं मालूम होता—वह इतना भारी है, जिसका अनुभव भी वह नहीं कर पाता। उसे रूसी गिरजे के एक कोने में दीवार के सहारे बैठा, ओठ बुरी तरह दबाये हुए

विचार-मग्न अवस्था में देखना चाहिए, जहाँ वह तब तक बैठा रहता है, जब तक उसे अपने चारों ओर के वातावरण का ध्यान नहीं आता, और वह अज्ञात भाव से क्रास का निशान बनाता रहता है।

इसी प्रकार मैडम कुकशिन भी विदेश गयी हुई है। वह हीडलबर्ग में ठहरी है। वहाँ वह अध्ययन कर रही है। किन्तु प्रकृति-विज्ञान का नहीं, वरन् निर्माण-शिल्प का, जिसमें उसके कथनानुसार 'अनेक नये सिद्धान्त' आविष्कृत हुए हैं। इसके अतिरिक्त वह अब भी विद्यार्थियों के साथ काफ़ी मेल-जोल रखती है, विशेषतः कुछ ऐसे रूसी विद्यार्थियों से, जो रसायन और औषधि-विज्ञान का अध्ययन करते हैं, और जिनका दल-का-दल हीडलबर्ग में आ ठहरा है। ये आरम्भ में अपने सीधे-सादे जर्मन प्रोफ़ेसरों को अपनी विचार-मर्यादा से आश्चर्यान्वित कर देते हैं, और बाद में आलस्य से। वास्तव में रसायन के इन विद्यार्थियों में से दो या तीन ऐसे हैं, जो प्राणप्रद वायु और प्राणान्तक वायु का भेद भी नहीं जानते, फिर भी वे मिथ्या-भावना और गर्व के पुतले बने रहते हैं। मैडम कुकशिन के मेल-जोलवाले विद्यार्थी इसी कोटि के हैं।

इसी प्रकार हमारा मित्र सितनीकोव बड़ा आदमी बनने की तैयारी कर रहा है और इस कार्य-सिद्धि के लिये वह सेण्ट पीटर्सबर्ग में छाती ऊँची करके चल रहा है। उसके ही शब्दों में कहें, तो कह सकते हैं कि वह 'स्वर्गीय बज़ारोव का कार्य सम्पन्न करने में' लगा है। यह सच है कि हाल की अफ़वाहों से मालूम

होता है कि किसी ने उस पर दुबारा डण्डे बरसाये हैं, और उसने उस झगड़े का मुक़ाबला न करके एक अज्ञात पत्र में एक अज्ञात लेख छपवाया है कि उस पर आक्रमण करनेवाला कायर है, किन्तु सितनीकोव इस ख़बर को 'व्यङ्ग' कहता है। रहीं अन्य बातें, सो उसका पिता उसे रुपये भेजता रहता है, और उसकी स्त्री उसे साहित्यिक और मूर्ख समझती है।

अन्ततः, रूस के एक दूरस्थ कोने में एक क़ब्रगाह है। अन्य क़ब्रगाहों की भाँति उसका दृश्य भी विकृति की सूचना दे रहा है। उसके घेरे पर घनी घास जमी हुई है और अन्दर भूरी लकड़ी के क्रास कमज़ोर और कुरूप होकर मिटे हुए रंगवाली मण्डप के नीचे खड़े हैं। क़ब्रगाह के रास्ते के पत्थर अपनी पंक्ति से हट गये हैं और ऐसा मालूम होता है कि किसी ने उन्हें भीतर ही से इधर-उधर हटा दिया है। इसमें दो-तीन जीर्ण-शीर्ण वृक्ष हल्की छाया दे रहे हैं, और क़ब्रों के ऊपर भेड़ें अबाध रूप से टहलती हैं। किन्तु उन क़ब्रों के बीच में एक ऐसी क़ब्र है, जिस पर न कोई मनुष्य आता-जाता है; न जानवर चढ़ते हैं—उस पर केवल पक्षियाँ बैठती हैं, जो सन्ध्या के आगमन के साथ गान गाती हैं। उस क़ब्र के चारों ओर लोहे के छड़ों का घेरा लगा हुआ है और उसके सिरहाने तथा पैंताने की ओर सनोवर के छोटे-छोटे दो वृक्ष लगे हैं। यही इवजिनी वैसिलिच बज़ारोव की क़ब्र है। कभी-कभी पड़ोस के मकान से दो बुड्ढे व्यक्ति—एक मर्द और उसकी स्त्री—यहाँ आते हैं, जो

एक दूसरे को पकड़कर चलते हैं और जिनका एक-एक पग मुश्किल से आगे पड़ता है। घेरे के पास आकर वे घुटनों के बल बैठ जाते हैं और उनकी आँखों से अनवरत अश्रु-धारा बह चलती है। इस कटु-रोदन के पश्चात् वे उस पत्थर के ऊर्ध्व भाग की ओर ताकते रहते हैं, जहाँ उनका पुत्र सोया हुआ है। इसके बाद एक-दो शब्द मुंह से निकालकर वे अत्यन्त सावधानी और परिश्रम के साथ पत्थर को झाड़ते और उसपर सनोवर की कोमल फुनगियाँ रखकर अन्तिम प्रार्थना करते हैं। इस स्थान से प्रथक् होते हुए उनके हृदय को मर्मान्तक वेदना होती है, क्योंकि यहाँ आकर वे अपने पुत्र और उसकी स्मृतियों के अधिक निकट पहुँच जाते हैं।

किन्तु क्या वे आँसू और वे प्रार्थनाएँ व्यर्थ हैं? क्या उनका वह प्रेम, वह पवित्र और निस्स्वार्थ प्रेम, बिल्कुल विफल होगा? नहीं, नहीं; हज़ार बार नहीं! क्योंकि यद्यपि वह हृदय, जो क़ब्र में है, आसक्तियुक्त, तीव्र और भ्रमपूर्ण हो सकता है; किन्तु उस जगह जो फूल पुष्पित होते हैं, वे हमें केवल शान्त और निष्कलङ्क-भाव-पूर्ण दृष्टि से देखते हैं, और हमें इङ्गित करते हैं केवल अनन्त निर्विकार प्रकृति की विशाल प्रशान्तता की ओर, जो अविच्छिन्न मिलन की एक प्रतिकृति है; और उस जीवन की ओर, जिसका कोई अन्त नहीं है।

समाप्त